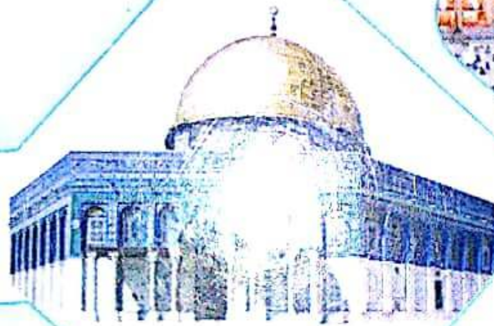
सच्ची हिकायात

हज़रत मौलाना अबुन्नूर मौहम्मद बशीर साहब









अदबी दुनिया

इल्तिज़ा है कि इस किताब को अपनी मोबाईल की मैमोरी में सेव करके ना रखे वल्कि आप से गुजारिश है कि इस किताब का मुताला कीजिये ये किताब बहुत शानदार है।

दुआ की गुजारिश
डॉ ज़ाहूर रज़वी
अल अश्हर अकडमी

दुआ की ग़ुज़ारिश
मोहम्मद अहतिराम क़ुरैशी

हिस्सा दोम

आप हज़रात से गुजारिश है कि इस किताब को आप अपना निम्ती वक़्त दे और इस किताब का मुताला करे और हम ना चीज़ को अपनी अपनी दुआओं में याद रखे

नाम किताब	:	सच्ची हिकायात मुकम्मल
तालीफ़	:	मौलाना अबु अलनूर बशीर
सन इशाअत	:	2013
सफ़हात	:	936
मतबअ	:	नाहिद प्रेस, देहली
हदिया	:	
नाशिर	:	अदबी दुनिया, देहली

इस किताब में

कुतब अहादीस और दीगर मुसतनिद इस्लामी किताबों से दिलचस्प, मुफ़ीद और सबक़ आमोज़ हिकायात जमा कर दी गई हैं और हर हिकायत के बाद इससे जो सबक़ हासिल होता हैए लिख दिया गया है और हर हिकायत को असल किताब से देखकर दर्ज किया गया है और किताब का नाम, सफ़हा और जिल्द सब कुछ दिया गया है।

Publisher

ADABI DUNIYA

399, Matia mahal, jama masjid,
Delhi - 110006
Phone : 23250122

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

पहली नज़र

इस ज़माने में अफ्साने, ड्रामे, किस्से और कहानियाँ बड़े शौक़ से पढ़ी जाती हैं और ये शौक़ बिलअमूम हर छोटे बड़े मर्द और औरत में पाया जाता है, आज कल हर वो तहरीर जिसमें अफ्सानवी तर्ज़ और हिकायती रंग मौजूद हो, पसंदीदगी की नज़र से देखी जाती है, क़ौम का यही रूहजान तबअे इस अम्र का बाइस है के मुल्क के अक्सर रसायल व जरायद अपने अपने "कहानी नम्बर" और "अफ्साना नम्बर" शाय करते हैं और अफ्साना पसंद अफ्राद इन्हें हाथों हाथ लेते हैं।

ये अफ्साने, ड्रामे और आज कल की हिकायात व कहानियाँ ज़्यादा तर दरोग़ व कज़िब और ग़ैर वाक़ेई बिना पर मुबनी होती हैं, उनकी कोई हक़ीक़त और असल नहीं होती और ऐसे अफ्साना लिखने वाले उन वज़अई हिकायात को "तबे ज़ाद" और अपनी तख़लीक़ क़रार देकर अपने वज़अे व कज़िब को अपना एक शाहकार साबित करते हैं और अफ्साना पसंद तबीअतें उन्हें उस कारनामे पर दादे तहसीन देती हैं और उसे तरक़्क़ी पसंद अदब के नाम से मोसूम करने लगती हैं।

क़िस्से और हिकायात ज़रूरी नहीं के झूट ही हों, इस आलम में क़िस्सों और सच्ची हिकायात का वजूद भी है, ख़ुद क़ुरआने पाक और अहादीसे शरीफ़ा में भी हिकायात व क़सस मौजूद हैं और वो हिकायात व क़सस ऐसे हैं जिनमें सौ फ़ीसदी सदाक़त है और जो अपनी सदाक़त के बाइस मख़्लूक़ के लिए मौजिबे रूश्दो हिदायत और वजह दर्से इब्रत हैं। ख़ुदा तआला ने अपनी सच्ची किताब मजीद में अम्बियाइक्राम अलेहिमअस्सलाम के ईमान अफ्रोज़ क़िस्से और उमम साबिक़ा की सबक़ आमोज़ हिकायात बयान फ़रमाई हैं और रसूले ख़ुदा सल-लल्लाहो-तआला-अलेह व सल्लम ने भी अपने इर्शादाते आलिया में पहली उम्मतों के इब्रत आमोज़ वाक़ेयात और सबक़ आमोज़ हिकायात सुनाई हैं और इसी तरह बुज़ुर्गाने दीन के इर्शादात और उनकी तालीफ़ात में भी इस क़िस्म की सच्ची हिकायत का वजूद पाया जाता है मगर मुश्किल ये है के ये सब पुरानी बातें हैं और इस नए दौर में उन पुरानी बातों की तरफ़ तवज्जह नहीं की जाती ऐ काश! मुसलमान आज

कल के लायानी अफ्सानों और वज़अई और झूटी हिकायात की बजाए अपने हक़ीक़ी अफ़्सानों और सच्ची हिकायात को पढ़ते पढ़ाते तो दिलचस्पी के अलावा उन्हें दीनी और दुनयवी फ़वायद भी हासिल होते।

मुद्दत से मेर दिल में ये ख़याल था के क़ुरआन व हदीस और दीगर इस्लामी लिटरेचर से हक़ीक़ी क़िस्सों और सच्ची हिकायात को जमा करूं और उन्हें सादा और आम फ़हेमो तर्ज़ में क़लमबंद कर के मुसलमानों के लिए एक ऐसी किताब लिखूं जिसका मुतअल्ला उनके लिए दिलचस्पी भी पैदा करे और साथ साथ ही उनके लिए सबक़ व इब्रत पेश करके उनके दीन व दुनिया की इसलाह भी करे चुनाँचे इसी अपने इरादे के तहेत मैंने सच्ची हिकायात को जमा करना शुरू कर दिया और क़ुरआन व हदीस के अलावा और बहुत सी इस्लामी कुतुब का मुतअल्ला करने के बाद इस सबक़ आमोज़ सिसिले की इब्तिदा कर दी।

मेरे ज़हेन में ये सिलसिला बड़ा तवील है और इरादा है के मुबारक सिलसिला को दूर तक ले जाऊँ, मैंने इस तालीफ़ के लिए जो बाब तजवीज़ किए हैं वो हस्बे ज़ेल हैं:-

Scanned by CamScanner

चूँके ये सिलसिला बहुत तवील है इसलिए इस किताब को तीन हिस्सों पर तक़सीम कर दिया है इसका ये पहला हिस्सा जो आपके हाथ में है पहले चार अबवाब पर मुशतमिल है, इसमें पहला, दूसरा, तीसरा, और चौथा बाब है और बाक़ी दूसरे अबवाब इंशाअल्लाह दूसरे हिस्सों में आएँगे इस किताब के पहले बाब में ऐसी हिकायात का इन्तिख़ाब है जिनका ताल्लुक़ "तौहीदे बारी" से है और दूस.. बाब में उन रिवायात व हिकायात का ज़िक्र है जिनका ताल्लुक़ हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ातेग्रामी से है, उन सच्ची हिकायात व रिवायात से हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मरातिब व मदारिज, आपके इख़्तियारात व कमालात और आपके उलूम का पता चलता है और ये बात साबित होती है के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मालिक व मुख़्तार हैं और दानाए ग़यूब हैं और हर गिज़ हर गिज़ हमारी मिस्ल नहीं हैं, तीसरे बाब में अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल सलाम के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे पता चलता है के अम्बियाऐक्राम की बहुत बड़ी शानें हैं और अल्लाह तआला ने उन्हें बड़े बड़े इख़्तियारात अता फ़रमाए हैं, चौथे बाब में खुल्फ़ाऐ राशिदीन यानी हज़रत सिद्दिके अक्बर, हज़रते उमर फ़ारूक़ आज़म हज़रत उस्मान ज़ुलनोरैन और हज़रते मौला अली रिज़वानउल्लाही अलेहिम अजमईन के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे इन चार याराने नबी के मरातिब व मदारिज ज़ाहिर होते हैं और पता चलता है के ये चारों ही अल्लाह के महबूब के महबूब हैं और उनकी मोहब्बत ऐन ईमान है और उनकी अदावत से ईमान जाता रहता है। इस हिस्से में ये चारों बाब हैं बाक़ी के छः अबवाब दूसरे और तीसरे हिस्से में हैं।

ज़रूरत है के आज वो मुसलमान जो क़िस्सों के शौक़ीन हैं वो झूटी हिकायात को छोड़ कर उन सच्ची हिकायात को पढ़ें ताके उन के लिए दीनी तरक़्क़ी का सबब हो और वो मुसलमान औरतें जो रातों में बच्चों को झूटी कहानियाँ सुनाया करती हैं इन सच्ची हिकायात को पढ़ें, याद करें और अपने बच्चों को ये सच्ची हिकायात सुनाएँ ताके बच्चों के दिल में भी दीन की रग़बत पैदा हो।

(अबु अलनूर मोहम्मद बशीर)

Scanned by CamScanner

हिस्सा दोम
पाँचवाँ बाब
सहाबा इक्राम रि[illegible]नुल्लाही तआला अलैहिम अजमईन

छटा बाब

अहले बैत अेज़ाम रिज़वानुल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

सातवाँ बाब

आइम्मा इक्राम रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

Scanned by CamScanner

हिस्सा सोम

आठवाँ बाब

औलिया इक्राम रहमत-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

सच्ची हिकायत का दूसरा हिस्सा

पाँचवाँ बाब

सहाबा इक्राम

रिज़वानल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

मोहम्मदुर्रसूलअल्लाह वल्लज़ीना मआहू अशिद्दाऊ अललकुफ्फ़ारी रूहूमाहू बेनाहुम (प: 26, रूकू : 12)

मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और उनके साथ वाले काफिरों पर सख़्त हैं, और आपस में नर्म दिल (कुंज़-उल-ईमान)

हिकायत नम्बर (193) महबूब के क़दमों में

मैदाने ओहद में हज़रत अम्मार बिन ज़ियाद रज़ी अल्लाहो अन्ह के दिल में एक काफिर का तीर आ लगा। हज़रत अम्मार लड़खड़ा कर गिर गए, और दिल पर हाथ रख कर अल्लाह से अर्ज़ की। के इलाही! मुझे अपने महबूब (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) की ज़ियारत कर लेने दे फिर मेरी जान निकले। चुनाँचे ज़मीन पर गिरते ही आपने अपनी नज़रों से हुज़ूर की तलाश शुरू की और आपने देखा के हुज़ूर थोड़ी दूर पर तशरीफ़ फ़रमा हैं। चुनाँचे आप ज़मीन पर घिसटते हुए आहिस्ता आहिस्ता हुज़ूर तक पहुँच गए और फिर अपना मुंह हुज़ूर के क़दमों पर रख दिया और अपने रूख़्सारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के तलवों पर मलते जाते और कहते जाते थे।

फुरूतू बिरब्बिल काबती फुरूतू बिरब्बिल काबती

रब्बे कअबा की क़सम मैं अपनी मुराद को पहुँच गया। रब्बे कअबा की क़सम मैं अपनी मुराद को पहुँच गया।

और फिर हुज़ूर(स॰अ॰स॰) के क़दमों ही में जामे शहादत नोश फ़रमा लिया। (तारीख़-उल-इस्लाम, सफ़ा 172)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान की सब से बड़ी

मुराद ये थी के महबूबे किब्रिया हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफ़ा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के क़दमों पर जान निकले। बक़ौल शायर

निकल जाए दम तेरे क़दमों के नीचे
यही दिल की हसरत यही आरज़ू है

मालूम हुआ उन पाक लोगों की बहुत बड़ी शान है और उनसे मोहब्बत रखना महबूब किब्रिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से ही मोहब्बत रखना है।

हिकायत नम्बर(194) जन्नत की खुशबू

मैदाने ओहद में मुसलमानों की एक लग़ज़िश से वक़्ती तौर पर मुसलमान मग़लूब हो गए और दोनों तरफ़ से काफ़िरों के बीच में आ गए। जिसकी वजह से इधर उधर परेशान दौड़ रहे थे। हज़रत अनस बिन नज़र रज़ी अल्लाहो अन्ह ने देखा के सामने एक दसरे सहाबी हज़रत सअद बिन मआज़ रज़ी अल्लाहो अन्ह आ रहे हैं। उनसे कहा। ऐ सअद! कहाँ जा रहे हो? खुदा की क़सम जन्नत की खूश्बू ओहद के पहाड़ से आ रही है। ये कह कर तलवार तो हाथ में थी ही, काफ़िरों के हुजूम में घुस गए और काफ़िरों से मुक़ाबला करते हुए शहीद हो गए। शहादत के बाद उनके जिस्म को देखा गया तो छलनी हो गया था। अस्सी (80) से ज़्यादा ज़ख़्म तीर और तलवार के बदन पर थे। (हिकायत-उल-सहाबा, सफ़ा 9)

सबक़:- जो लोग सच्ची तलब और इख़्लास के साथ अल्लाह के काम में लग जायें उनको दुनिया में जन्नत का मज़ा और जन्नत की खुश्बू आने लगती है।

हिकायत नम्बर(195) एक औरत

अनसार मदीना की एक औरत का बाप और शौहर और भाई तीनों जंगे ओहद में शहीद हो गए। वो औरत लड़ाई के हालात मालूम करते हुए जब मैदाने जंग में पहुँची और उसे मालूम हुआ के उसका बाप, शौहर और भाई तीनों शहीद हो गए हैं तो

उस अफ़ीफ़ा ने ये सब सुन के कहा तो ये कहा
ये तो बतलाओ के कैसे हैं शहनशाहे उमम

यानी वो कहने लगी के मुझे हुज़ूर का हाल बताओ के वो तो ख़ैरियत

से हैं ना? लोगों ने बताया के हुज़ूर बख़ैरियत हैं तो वो खुश होकर हुज़ूर की बारगाह में हाज़िर हुई और

बढ़ के उसने रूख़े रोशन को जो देखा तो कहा
तू सलामत है तो सब हैच हैं ये रंजो अलम
मैं भी और बाप भी शौहर भी बिरादर भी फिदा
ऐ शहे दीं तेरे होते हुए क्या चीज़ हैं हम

यानी या रसूल अल्लाह! मेरे माँ बाप, शौहर भाई वग़ैरा सब तेरे नाम पर कुर्बान! आप सलामत हैं तो मुझे किसी की जुदाई का ग़म नहीं। (तारीख़ इस्लाम 172)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़्वान के दिलों में हुज़ूर की कुछ ऐसी मोहब्बत थी के उन पाक लोगों की पाक औरतें भी मोहब्बत रसूल के सामने दुनिया भर के रिश्तों को हैच समझती थीं। फिर आज जो मर्द भी मोहब्बत रसूल को नज़रअंदाज़ करके रिश्तेदारियों को मलहूज़ रखें और शरीअते मुसतफविया की परवा ना करें। किस क़द्र बद नसीब और ना आक़्बत अंदेश हैं।

हिकायत नम्बर (196) शहद की मक्खियाँ

अज़्ल और क़ारह के चन्द मुनाफिक़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे के हमारे साथ चन्द मुबल्लिग़ रवाना कर दीजिए जो हम लोगों को दीन की बातें सिखाया करें और हम लोग शरीअत के अहकाम सीख़ लें हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अपने दस असहाब जिनके सरदार हज़रत आसिम बिन साबित रज़ी अल्लाहो अन्ह थे, उनके हमराह रवाना कर दिए। ये लोग जब मुक़ाम रजीअ पर पहुँचे तो मुनाफिक़ीन ने बदअहदी करके क़बीला बनू लेहयान के दो सौ आदमियों को साथ मिलाकर उन दस सहाबा पर हमला कर दिया। हज़रत आसिम रज़ी अल्लाहो अन्ह मअे अपने सात साथियों के शहीद हो गए और हज़रत आसिम ने शहादत से क़ब्ल ये दुआ पढ़ी:

अल्लाहो इन्नी हमीतू दीनाका सदरन्नहारी फाहमी लहमी या- "ऐ अल्लाह! मैंने तेरे दीन की हिमायत में जान दी अब तू इन काफिरों के हाथ से मेरे बदन को बचा"

यानी मेरी लाश उनके हाथ ना लगे। चुनाँचे मुनाफिक़ीन हज़रत आसिम का सर काटने के इरादे से आगे बढ़ने लगे तो अल्लाह तआला ने फ़ौरन

शहद की मक्खियों का एक लश्कर भेज दिया जिन्होंने हज़रत आसिम रज़ी अल्लाहो अन्ह की लाश मुबारक पर पर्दा डाल दिया और किसी काफिर को पास फटकने ना दिया। जब रात हुई तो खुदा तआला ने एक सेलाब ऐसा भेजा के हज़रत के बदन मुबारक को बहा कर ले गया और काफिर ख़ायब व ख़ासिर फिरे। (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 181 व मिसला फी हुज्जत-उल्लाह अललआलमीन, सफ़ा 869)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम दीन की ख़ातिर ज़िन्दा रहे और दीन ही की हिमायत में वो जान भी देते रहे और ये भी मालूम हुआ के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के यारों से दुश्मनी व अदावत मुनाफिक़ीन का काम है।

हिकायत नम्बर (197) फाँसी

अज़्ल और क़ारह के चन्द मुनाफिक़ीन हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर दस सहाबा इक्राम को बग़र्ज़ तबलीग़ अपने हमराह ले गए और रास्ते में मुक़ामे रजीअ पर धोका करके उन दस सहाबा में से आठ को शहीद कर दिया। और दो को जिनका नाम हज़रत ख़बीब और हज़रत ज़ैद रज़ी अल्लाहो अन्हुमा था, गिरफ़्तार करके मक्का ले आए और क़ुरैश के पास फ़रोख़्त कर दिया। हज़रत ख़बीब रज़ी अल्लाहो अन्ह ने जंगे ओहद में हारिस बिन आमिर को क़त्ल किया था। इसलिए उनको हारिस के लड़कों ने ख़रीदा ताके बाप के बदले में क़त्ल करें। चन्द रोज़ भूका प्यासा अपने घर में क़ैद रखा। एक दिन हारिस का बच्चा तेज़ छुरी से खेलता हुआ ख़बीब रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास पहुँच गया। उन्होंने बच्चे को ज़ानो पर बिठाया। छुरी लेकर रख दी और बच्चे को खिलाने लगे। जब बच्चे की माँ ने देखा के उसका बच्चा छुरी लेकर उस क़ैदी के पास है जिसे चन्द रोज़ से उन्होंने बे आब व दाना रखा था तो वो कांप उठी और बेइख़्तियार चीख उठी। ख़बीब ने कहा क्या तू ये समझती है के मैं इसे क़त्ल कर दूंगा क्या तू नहीं जानती के मुसलमानों का काम ग़दर करना नहीं।

ख़ानदाने हारिस ने चन्द रोज़ के बाद ख़बीब और ज़ैद रज़ी अल्लाहो अन्हुमा दोनों बुज़ुर्गों को हरम की हद से बाहर ले जाकर बइरादा-ए-क़त्ल फाँसी के नीचे खड़ा कर दिया और कहा के इस्लाम छोड़ दो तो जान बख़्शी हो सकती है, दोनों बुज़ुर्गों ने जवाब दिया के जब इस्लाम ही ना रहा तो जान रख कर क्या करेंगे।

कुरैश ने पूछा के कोई तमन्ना हो तो बयान करो। ख़बीब रज़ी अल्लाहो अन्ह ने दो रकअत नमाज़ पढ़ने की इजाज़त माँगी। क़ातिलों ने मोहलत दे दी। हज़रत ख़बीब रज़ी अल्लाहो अन्ह ने नमाज़ अदा की और नमाज़ पढ़ कर फ़रमाया के देर तक नमाज़ पढ़ने को जी चाहता था, लेकिन सोचा के दुश्मन ये ना कहें के मौत से डर गया है। उसके बाद क़ातिलों ने हज़रत ख़बीब रज़ी अल्लाहो अन्ह को शहीद कर दिया। हज़रत ख़बीब रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फाँसी पाने से क़ब्ल ये शैर पढ़े।

व लस्तू आबाली हीना उक्तलू मुसलीमन
अला अय्यी शिकिन काना फी अल्लाह मसरअई

"यानी इस्लाम की हालत में मुझे किसी तरह भी मारा जाए मुझे कोई परवा नहीं"

उसके बाद हज़रत ज़ैर रज़ी अल्लाहो अन्ह की बारी आई, आपके क़त्ल के वक़्त कुरैश के बड़े बड़े सरदार तमाशा देखने आए थे एक सरदार ने बढ़ कर कहा के सच कहना अगर इस वक़्त तुम्हारे मोहम्मद (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) तुम्हारी जगह क़त्ल किए जाते और तुम बच जाते तो क्या तुम इस बात को अपनी खुश क़िसमती ना समझते? हज़रत ज़ैद रज़ी अल्लाहो अन्ह ने जवाब दिया

मुझे हो नाज़ क़िसमत पर, अगर नाम मोहम्मद पर!
ये सर कट जाए और तेरा सरे पा उसको ठुकराए
ये सब कुछ है गवारा पर ये देखा जा नहीं सकता
के उनके पाँऊ के तलवे में एक काँटा भी चुभ जाए

फिर उसके बाद हज़रत ज़ैद को भी शहीद कर दिया गया (रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा) (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 182)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान को इस्लाम जान से भी ज़्यादा अज़ीज़ था, और उन्होंने अपनी जानें इस्लाम पर क़ुर्बान करके हमें सबक़ दिया है के मुसलमान को मुश्किल से मुश्किल वक़्त में भी इस्लाम से मुंह नहीं मोड़ना चाहिए।

हिकायत नम्बर(198) हज़रत कअब की दर्दनाक कहानी

उनकी अपनी ज़बानी: तीन सहाबी हज़रत कअब बिन मालिक, बिलाल उमय्या और मिरारत इब्ने रबी रज़ी अल्लाहो अन्हुम बग़ैर किसी क़वी उज़्र के सुस्ती के बाइस जंगे तबूक में शरीक ना हो सके। हज़रत कअब बिन मालिब

रज़ी अल्लाहो अन्ह अपनी सरगज़िश्त बड़ी तफसील के साथ खुद ही बयान फ़रमाते हैं। फ़रमाते हैं के मैं जंगे तबूक से पहले किसी लड़ाई में भी इतना मालदार नहीं था। जितना के तबूक के वक़्त था। उस वक़्त मेरे पास खुद अपनी ज़ाती दो ऊँटनियाँ थीं। इससे पहले कभी मेरे पास दो ऊँटनियाँ ना हुई थीं। जंगे तबूक के मौक़े पर चूंके सफर दूर का था और गर्मी शदीद थी। इसलिए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने साफ एलान फ़रमा दिया ताके लोग तैयारी कर सकें चुनाँचे मुसलमानों की इतनी बड़ी जमात हुज़ूर के साथ हो गई के रजिस्टर में उनका नाम भी लिखना दुश्वार था और मजमअे की कसरत की वजह से कोई शख़्स अगर छुपना चाहता के मैं ना जाऊँ और पता ना चले तो हो सकता था। उसके साथ ही फल बिलकुल पक रहे थे। मैं भी सामान सफर की तैयारी का इरादा सुबह ही से करता। मगर शाम हो जाती और किसी क़िस्म की तैयारी की नोबत ना आती। लेकिन मैं अपने दिल में ख़याल करता के मुझे वुसअत हासिल है। जब पुख़्ता इरादा करूंगा। तैयारी फौरन हो जाएगी। इसी तरह कई दिन गुज़रते गए हत्ता के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम रवाना भी हो गए और मुसलमान आपके साथ साथ मगर मेरा सामाने सफर तैयार ना हुआ। फिर भी मुझे ये ख़याल रहा के एक दो रोज़ में तैयार होकर लश्कर से जा मिलूंगा। इसी तरह आज कल पर टालता रहा। हत्ता के हुज़ूर के तबूक पहुँचने का ज़माना आ गया। उस वक़्त मैंने कोशिश भी की। मगर सामान ना हो सका। अब मैं जब मदीना मुनव्वरह में इधर उधर देखता हूँ तो फिर वही लोग मिलते हैं जिनके ऊपर निफाक़ का बदनुमा दाग़ लगा हुआ था वो मअज़ूर थे। इधर हुज़ूर ने तबूक पहुँच कर दरयाफ़्त फ़रमाया के कअब नज़र नहीं आते, क्या बात हुई? एक साहब ने कहा: या रसूल अल्लाह! उसको माल व जमाल के फख्र ने रोका। हज़रत मआज़ ने फ़रमाया के ग़लत कहा हम जहाँ तक समझते हैं, वो भले आदमी हैं, मगर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने बिलकुल सकूत फ़रमाया और कुछ इर्शाद ना फ़रमाया। हत्ता के चन्द रोज़ में हुज़ूर की वापसी की ख़बर सुनी तो मुझे रंजो ग़म हुआ और फिक्र पैदा हुई। दिल में झूटे झूटे उज़्र आते थे के इस वक़्त किसी फर्ज़ी उज़्र से जान बचा लूं, फिर किसी वक़्त माफी की दरख़्वास्त कर लूंगा, और इस बारे में अपने घराने के हर समझदार से मशवरह करता रहा मगर जब मुझे मालूम हुआ के हुज़ूर तशरीफ़ ले ही आए हैं तो मेरे दिल ने फैसला किया के बग़ैर सच के कोई चीज़ निजात ना देगी और मैंने सच सच अर्ज़ करने की ठान

ली। हुज़ूर की आदत शरीफा थी के जब सफर से वापस तशरीफ़ लाते तो अव्वल मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और दो रकअत तहिय्यत-उल-मस्जिद पढ़ते और वहाँ थोड़ी देर तशरीफ़ रखते के लोगों से मुलाक़ात फ़रमाएँ। चुनाँचे हस्बे मामूल हुज़ूर तशरीफ़ लाए और मस्जिद में तशरीफ़ ले गए और वहाँ तशरीफ़ फ़रमा रहे और मुनाफिक़ लोग आकर झूटे झूटे उज़्र करते और क़समें खाते रहे। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उनके ज़ाहिर हाल को क़बूल फ़रमाते रहे और बातिन से एराज़ फ़रमाते रहे के इतने में मैं भी हाज़िर हुआ और सलाम किया। हुज़ूर ने नाराज़गी के अंदाज़ में तबस्सुम फ़रमाया और एराज़ फ़रमाया। मैंने अर्ज़ किया: या नबी अल्लाह! आपने एराज़ क्यों फ़रमा लिया? खुदा की क़सम! मैं ना मुनाफिक़ हूँ, ना मुझे ईमान में कुछ तरद्दुद है। इरशाद फ़रमाया के यहाँ आ, मैं क़रीब होकर बैठ गया। हुज़ूर ने फ़रमाया: तुझे किस चीज़ ने रोका? मैंने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! अगर मैं किसी दुनिया दार के पास उस वक़्त होता तो मुझे बात करने का सलीक़ा अल्लाह ने इनायत फ़रमाया। लेकिन या रसूल अल्लाह! आपके मुतअल्लिक़ मुझे इल्म है के आपके सामने झूट नहीं चल सकता। या रसूल अल्लाह! बेशक आपको गुस्सा आ रहा है। लेकिन क़रीब है के खुदा की ज़ात पाक आपके अताब को ज़ायल कर देगी। हुज़ूर! मैं सच ही अर्ज़ करता हूँ के वल्लाह! मुझे कोई उज़्र ना था और जैसा फ़ारिग़ और वुसअत वाला मैं इस ज़माने में था। किसी ज़माने में भी इससे पहले ना हुआ था। हुज़ूर ने फ़रमाया। इसने सच कहा। फिर फ़रमाया के अच्छा उठ जाओ, तुम्हारा फ़ैसला हक़ तआला खुद फ़रमाएगा। मैं वहाँ से उठा तो मेरी क़ौम के बहुत से लोगों ने मुझे मलामत की के तूने उससे पहले कभी कोई गुनाह ना किया था अगर तू कोई उज़्र करके हुज़ूर से असतग़फार की दरख़्वास्त करता तो हुज़ूर का असग़फार तेरे लिए काफी था। मैंने उनसे पूछा के कोई और भी ऐसा शख़्स है। जिसके साथ ये मामला हुआ हो। लोगों ने बताया के दो शख़्सों के साथ और भी यही मामला हुआ के उन्होंने भी यही गुफ़्तगू की। जो तूने की और यही जवाब उनको भी मिला है जो तुझ को मिला। एक हिलाल बिन उमय्या। दूसरे मिरारत बिन रबीअ। मैंने देखा के दो सालेह शख़्स जो दोनों बद्री (बद्री वो लोग कहलाते हैं जो बद्र की लड़ाई में शरीक हुए। उनकी बुज़ुर्गी और बड़ाई मुस्लिम है। अहादीस में भी उनकी बड़ी फज़ीलियत आई है और कितनी ही हदीसों में उनकी मग़फिरत और अल्लाह तआला के उनसे खुश होने की बशारतें आई हैं।) वो भी मेरे शरीक हाल हैं। हुज़ूर सल-लल्लाहो

तआला अलेह व सल्लम ने हम तीनों से बालेने की मुमानत भी फ़रमा दी के कोई शख़्स हम से कलाम ना करे। अब इस इर्शाद की सहाबा इक्राम रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन ने तअमील इस तरह कर के दिखाई के कअब फ़रमाते हैं के हुज़ूर की मुमानत पर लोगों ने हम से बोलना छोड़ दिया और हम से इजतिनाब किया। गोया दुनिया ही बदल गई। हत्ता के ज़मीन बावजूद अपनी वुसअत के हमें तंग मालूम होने लगी। सारे लोग अजनबी मालूम होने लगे। दरो दीवार बेगाने हो गए मुझे सब से ज़्यादा फ़िक्र इस बात की थी के मैं इस हाल में मर गया तो हुज़ूर जनाज़े की नामज़ भी ना पढ़ेंगे और खुदा न ख़्वास्ता हुज़ूर का विसाल शरीफ हो गया और मैं हमेशा हमेशा के लिए ऐसा ही रहूंगा और मुझ से कोई कलाम करेगा। ना मेरी नमाज़ जनाज़ा पढ़ेगा के हुज़ूर के इर्शाद के ख़िलाफ़ कौन कर सकता है? ग़र्ज़ हम तीनों ने पचास दिन इसी हाल में गुज़ारे। मेरे दोनों साथी तो शुरू ही से घरों में छुप कर बैठ गए थे। मैं सब में क़वी था। चलता फिरता बाज़ार में जाता। नमाज़ में शरीक होता। मगर मुझ से बात कोई ना करता। हुज़ूर की मजलिस में हाज़िर होकर सलाम करता और बहुत ग़ौर से ख़याल करता के हुज़ूर के लब मुबारक जवाब के लिए हिले या नहीं। नमाज़ के बाद हुज़ूर के क़रीब ही खड़े होकर नमाज़ पूरी करता और आँख चुरा कर देखता के हुज़ूर मुझे देखते भी हैं या नहीं। जब मैं नमाज़ में मशग़ूल होता, तो हुज़ूर मुझे देखते और जब मैं उधर मुतवज्जह होता तो हुज़ूर मुंह फैर लेते और मेरी जानिब से एराज़ फ़रमा लेते। ग़र्ज़ यही हालात गुज़रते रहे और मुसलमानों का बात चीत बन्द कर देना मुझ पर बहुत ही भारी हो गया तो मैं अबु क़तादा की दीवार पर चढ़ा। वो मेरे रिश्ते के चचाज़ाद भाई थे और मुझ से तअल्लुक़ात भी ही ज़्यादा थे, मैंने ऊपर चढ़कर सलाम किया तो उन्होंने भी सलाम का जवाब ना दिया। मैंने उनको क़सम देकर पूछा के क्या तुम्हें मालूम नहीं के मुझे अल्लाह और उसके रसूल से मोहब्बत है उन्होंने उसका जवाब ना दिया। मैंने दोबारा क़सम दी और दरयाफ़्त किया वो फिर भी चुप ही रहे मैंने तीसरी मर्तबा फिर क़सम देकर पूछा, उन्होंने सिर्फ इतना कहा "अल्लाह जाने और उसका रसूल" ये कलमा सुनकर मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े और वहाँ से लौट आया। उसी दौरान में एक मर्तबा मदीना के बाज़ार में जा रहा था के एक क़ुत्बी को जो नसरानी था और शाम से मदीना मुनव्वरह अपना ग़ल्ला फरूख़्त करने आया था। ये कहते हुए सुना के कोई कअब बिन मालिक का पता बता दो। लोगों ने उसको मेरी तरफ़ इशारा करके बताया। उसमें लिखा हुआ था "हमें मालूम

हुआ है के तुम्हारे आक़ा ने तुझ पर ज़ुल्म कर रखा है। तुझे अल्लाह ज़िल्लत की जगह ना रखे, और ना ज़ाए करे तुम हमारे पास आ जाओ हम तुम्हारी मदद करेंगे।" हज़रत कअब बिन मालिक फ़रमाते हैं के मैंने ये ख़त पढ़कर इन्नल्लाह पढ़ी के मेरी हालत यहाँ तक पहुँच गई है के काफिर भी मुझ में तमअे करने लगे हैं और मुझे इस्लाम तक से हटाने की तदबीर होने लगी हैं। ये एक मुसीबत और आई और इस ख़त को मैंने तनव्वुर में फूंक दिया और हुज़ूर से जाकर अर्ज़ किया के या रसूल अल्लाह! अब तो आपके एराज़ की वजह से काफिर भी मुझ में तमअे करने लगे। उसी हालत में हम पर चालीस रोज़ गुज़रे थे के हुज़ूर का क़ासिद मेरे पास हुज़ूर का ये इर्शाद लेकर आया के अपनी बीवी को भी छोड़ दो। मैंने दरयाफ़्त किया के क्या मनशा है? उसको तलाक़ दे दूं? कहा नहीं बल्के उससे अलेहदगी इख़्तियार कर लो और मेरे दोनों साथियों के पास भी इन ही क़ासिद की मअरफ़त यही हुक्म पहुँचा। मैंने अपनी बीवी से कह दिया के तू अपने मेके में चली जा। जब तक अल्लाह तआला इस अमर का फैसला ना फ़रमाए वहीं रहना। हिलाल बिन उमय्या की बीवी हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! हिलाल बिलकुल बूढ़े शख़्स हैं। कोई ख़बर गीरी करने वाला ना होगा तो हलाक हो जाऐंगे। अगर आप इजाज़त दें तो मैं कुछ काम काज उनका कर दिया करूं। हुज़ूर ने फ़रमाया अच्छा इस बात की तुझे इजाज़त है मगर क़ुरबत ना हो। उन्होंने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! इस बात की तरफ़ तो उनको मैलान भी नहीं, जिस रोज़ से ये वाक़ेया पेश आया है आज तक उनका वक़्त रोते ही गुज़र रहा है। हज़रत कअब फ़रमाते हैं के इस हाल में दस रोज़ और गुज़रे के हम से बात चीत मेल जोल छुटे हुए पूरे पचास दिन हो गए। पचासवें दिन सुबह की नमाज़ अपने घर की छत पर पढ़ कर में निहायत ग़मगीन बैठा हुआ था। ज़मीन मुझ पर बिलकुल तंग थी और ज़िन्दगी दूभर हो रही थी के सलअे पहाड़ की चोटी पर एक ज़ोर से चिल्लाने वाले ने आवाज़ दी के "कअब खुशख़बरी हो तुम को" मैं इतना ही सुनकर सज्दे में गिर गया और खुशी के मारे रोने लगा और समझा के तंगी दूर हो गई और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सुबह की नमाज़ के बाद हमारी माफी का एलान फ़रमाया। (खुदा तआला ने खुद फैसला फ़रमाया और तीनों हज़रात की तौबा क़बूल फ़रमाई और अपने रसूल पर ये आयत नाज़िल फ़रमाई। *वअला अस्सलातिल्लज़ीना खुल्लीफू हत्ता इज़ा ज़ाक़त अलेहिमु अरज़ू बिमा रहूबत व ज़ाक़त अलेहिम अनफुसुहुम व ज़न्नो*

अनला मलजाअ मिनल्लाही इला इलेही सुम्मा ताबा अलेहिम यतूबू। इन्नल्लाहा हुवत्तव्वाबुर्रहीम पाराः 11, रूकू : 3) जिस पर एक शख़्स ने पहाड़ पर चढ़ कर ज़ोर से आवाज़ दी, जो सबसे पहले पहुँच गई। उसके बाद एक साहब घोड़े पर सवार भागे हुए आए, मैंने अपने पहनने के कपड़े इस बशारत देने वाले की नज़र किए और फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। इसी तरह मेरे दोनों साथियों के पास भी खुशख़बरी लेकर लोग गए। मैं जब मस्जिदे नबव्वी में गया तो वो लोग जो ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर थे मुझे मुबारकबाद देने के लिए दौड़े और सबसे पहले अबु तलहा ने बढ़कर मुबारकबाद दी और मुसाफहा किया जो हमेशा ही याद रहेगा। मेंने हुज़ूर की बारगाह में जाकर सलाम किया। तो चेहरा अनवर खिल रहा था और खुशी के अनवार चेहरे मुबारक से ज़ाहिर हो रहे थे। हुज़ूर का चेहरा मुबारक खुशी के वक़्त चाँद की तरह चमकने लगता था। मैंने अर्ज़ किया: या रसूल अल्लाह! मेरी तौबा की तकमील ये है के मेरी जितनी जायदाद है। वो सब अल्लाह के रास्ते में सदक़ा है, इसलिए के ये इमारत व सरवत ही इस मुसीबत का सबब बनी थी। हुज़ूर ने फ़रमाया के इसमें तंगी होगी। कुछ हिस्सा अपने पास भी रहने दो। मैंने अर्ज़ किया। बेहतर है कुछ हिस्सा मेरे पास भी रहने दिया जाए मुझे सच ही ने निजात दी। इसलिए मैंने अहेद किया हमेशा सच ही बोलूंगा। (बुखारी शरीफ सफ़ा 675, जिल्द 3) (दरमंशूर, फतह अलबारी और रूह-उल-बयान जिल्दः1, सफ़ा 965)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम अर्रिज़वान की इताअत दीनदारी अल्लाह के खौफ़ का एक नमूना है। उन पाक लोगों की पाकीज़ा ज़िन्दगियों की मिसाल किसी उम्मत में नहीं मिलती और ये लोग वाक़ई ख़ैर-उल-उमम के सही मिसदाक़ हैं। देखिए, सच्चे व पक्के मोमिन हैं। जंग में हमेशा शरीक रहे हैं। मगर एक मर्तबा ग़ैर हाज़री पर क्या क्या अताब हुआ और उसको किस फ़रमाँबरदारी से बर्दाश्त किया के पचास दिन रो रो कर गुज़ार दिए और माल जिसकी बदौलत ये वाक़ेया पेश आया। वो भी सदक़ा कर दिया और दूसरे मुसलमान हत्ता के उन तीनों की बीबियाँ भी फ़रमान रसूल पर उन तीनों से हर क़िस्म का तअल्लुक़ मुनक़तअे कर लेती हैं और हज़रत कअब की तरफ़ एक काफिर बादशाह का ख़त भी आता है। जिसमें लालच दिया गया है। मगर हज़रत कअब बजाए किसी इश्तिआल के नादिम होते हैं और पहले से भी ज़्यादा पशेमान होकर बारगाहे नबव्वी में हाज़िर होते हैं और ख़तरा भी लाहक़ है के कहीं खुदा और रसूल की ख़फ़गी से दोनों जहाँ बर्बाद

ना हो जाएँ। एक हम भी हैं। अल्लाह और उसके रसूल के अहकाम भी सामने हैं, बड़े से बड़ा हुक्म नमाज़ ही का ले लीजिए और फिर देखिए हम उसकी तामील कहाँ करते हैं और जो करते हैं। वो भी कैसी करते हैं। उसके बाद ज़कात और हज का तो पूछना ही क्या है के उसमें माल भी खर्च होता है।

इस दर्दनाक कहानी से ये भी मालूम हुआ के सहाबा रज़ी अल्लाहो अन्हुम दीन व मज़हब के सच्चे और पक्के फिदाई और शेदाई थे और वो किसी क़ीमत पर भी दीन को छोड़ना नहीं चाहते थे और जो लोग मआज़ अल्लाह हुज़ूर के सहाबा के दीन पर एत्राज़ करते हैं, वो बड़े नाआक़बत अंदेश हैं।

हिकायत नम्बर (199) समुंद्री ग़ाज़ी

6 हि० में हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उमरा के इरादे से मक्का मोअज़्ज़मा तशरीफ़ ले जा रहे थे। कुफ़्फ़ारे मक्का को ख़बर हुई तो वो इस बात को अपनी ज़ात समझे और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मुज़ाहेमत के लिए निकल आए और मुक़ाम हुदैबिया में पहुँच कर हुज़ूर को आगे बढ़ने से रोक दिया अगरचै हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ जाँ निसार सहाबा इक्राम मौजूद थे। मगर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह सल्लम ने लड़ाई का इरादा ना फ़रमाया और मुसालेहत की तजवीज़ फ़रमाई। कुफ़्फ़ारे मक्का ने भी मुसालेहत को बेहतर समझा और उसी मुक़ाम पर सुलह का मुआएहेदा हो गया। सहाबा इक्राम रिज़वान-उल्लाही अलेहिम अजमईन की लड़ाई पर मुसतअेदी और उनकी बहादुरी के बावजूद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने कुफ़्फ़ार की इस क़द्र रिआयत फ़रमाई के उनकी हर शर्त को क़बूल फ़रमा ली। सुलह में जो शर्तें रखी गईं। उनमें से एक शर्त ये भी रखी गई के "जो काफिर मुसलमान होकर मक्का से हिजरत करके मुसलमानों के पास पहुँचे मुसलमान उसे वापस कर दें और मुसलमानों में से खुदा न ख़्वास्ता अगर कोई शख़्स मुरतिद होकर मक्के पहुँच जाए तो उसे वापस ना किया जाएगा।"

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ये शर्त भी क़बूल फ़रमा ली। सहाबा इक्राम देखकर हैरान तो हुए मगर उन्हें इल्म था के जहाँ तक नज़र नबुव्वत पहुँचती है। उनकी नहीं पहुँचती। चुनाँचे ये मुआएहेदा अभी हो ही रहा था के हज़रत अबु जिनदल रज़ी अल्लाहो अन्ह जो एक सहाबी

थे और जो मुसलमान हो जाने की वजह से काफिरों की क़ैद में ज़ंजीरों में बंधे हुए थे और तरह तरह की तकलीफें बर्दाश्त कर रहे थे, किसी तरह रिहा होकर गिरते पड़ते मुसलमानों के लश्कर में इस उम्मीद पर पहुँच गए के मुसलमानों में मिल कर मदीना मुनव्वरह पहुँच जाऊँगा। उनके बाप सुहैल जो उस वक़्त कुफ़्फ़ार की तरफ़ से वकील थे और अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे (और फतह मक्का में मुसलमान हुए) उन्होंने जो अपने बेटे को भाग कर आते हुए देखा तो उन्हें तमाचे मारे और वापस मक्के ले जाने के लिए इसरार किया हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के अभी सुलह नामा मुरत्तब नहीं हुआ, इसलिए अभी पाबंदी किस बात की, मगर उन्होंने इसरार किया तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ये भी मान लिया। अबु जिनदल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मुसलमानों से फ़रमाया के मैं मुसलमान होकर आया और कितनी मुसीबतें उठा चुका अब वापस किया जा रहा हूँ। उस वक़्त मुसलमानों के दिल पर जो गुज़री होगी अल्लाह ही को मालूम है। मगर हुज़ूर का इर्शाद था। इसलिए कोई बोल ना सका। और अबु जिनदल वापस भेज दिए गए और वापस करते करते हुज़ूर ने उनसे फ़रमाया के सब्र करो। अनक़रीब अल्लाह तआला तुम्हारे लिए कोई रास्ता निकाल देगा।

सुलह नामा मुकम्मल हो जाने के बाद एक दूसरे सहाबी अबु बसीर रज़ी अल्लाहो अन्ह मक्के से हिजरत करके मदीना मुनव्वरह पहुँच गए। काफिरों ने उनको भी वापस बुलाने के लिए दो आदमी पीछे भेज दीजिए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हस्बे मुआएहेदा उनको भी वापस कर दिया। अबु बसीर ने भी अर्ज़ की या रसूल अल्लाह मैं मुसलमान होकर आया हूँ, आप कुफ़्फ़ार के पंजे में फिर मुझे भेजते हैं। आपने उनसे भी सब्र करने को फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया के इंशा अल्लाह अनक़रीब तुम्हारे वास्ते रास्ता खुल जाएगा। चुनाँचे अबु बसीर उन दोनों काफिरों के साथ वापस हुए। रास्ते में आप उन दोनों काफिरों में से एक को कहने लगे के यार ये तेरी तलवार तो बड़ी नफीस मालूम होती है। शेख़ी बाज़ आदमी ज़रा सी बात में फूल ही जाता है। चुनाँचे वो काफिर नियाम से अपनी तलवार निकाल कर कहने लगा। हाँ मैंने बहुत से लोगों पर इसका तजुर्बा किया है। ये कहकर तलवार हज़रत अबु बसीर को पकड़ा दी। हज़रत अबु बसीर ने इस तलवार से उस काफिर को फीन्नार कर दिया। दूसरे ने देखा तो वो भागा हुआ मदीना मुनव्वरह आया, और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम

की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगा के मेरा साथी मार डाला गया है और मेरा नम्बर है। उसके बाद हज़रत अबु बसीर पहुँचे और अर्ज़ किया के या रसूल अल्लाह! आप तो अपना मुआएहेदा पूरा कर ही चुके हैं के मुझे वापस कर दिया और मुझ से कोई अहद उन लोगों का नहीं है जिसकी ज़िम्मेदारी हो। वो मुझे मेरे दीन से हटाते थे, इसलिए मैंने ये काम किया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया, तुम लड़ाई भड़काने वाले हो। वो इस इर्शाद से समझ गए के हुज़ूर मुझे फिर वापस ही कर देंगे चुनाँचे अबु बसीर वहाँ से चल कर समुंद्र के एक किनारे पर आ गए और वहीं डेरा लगा लिया। हज़रत अबु जिनदल को मक्का में जब इस वाक़ेया का इल्म हुआ तो वो भी किसी तरह मक्का से निकल कर वहीं समुंद्र के किनारे अबु बसीर के पास पहुँच गए। उसके बाद फिर जो शख़्स मुसलमान होता वो वहीं समुंद्र के किनारे अबु बसीर और जिनदल के पास पहुँच जाता। हत्ता के वहीं एक छोटी सी मुख़्तसिर की जमात हो गई। जंगल में जहाँ ना खाने का इन्तिज़ाम और ना कोई और सहूलत, इसलिए उनकी मुश्किलात तो ज़ाहिर हैं। मगर जिन ज़ालिमों के ज़ुल्म से परेशान होकर भागते थे। इस मुख़्तसिर सी जमात ने उनका नातक़ा बन्द कर दिया काफिरों का जो क़ाफ़ला इधर से गुज़रता। उससे मुक़ाबला करते और लड़ते। हत्ता के कुफ़्फ़ारे मक्का ने परेशान होकर खुद ही हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में आजज़ी और मिन्नत से अल्लाह और रिश्तेदारी का वास्ता देकर, आदमी भेजा के इस अपनी जमात को समुंद्र के किनारे से अपने पास बुला लें। हम अपने इस मुआएहेदे से खुद ही तंग आ चुके हैं। चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इस जमात के पास अपना इजाज़त नामा भेजकर उन्हें अपने पास बुलवा लिया। (हिकायत अलसहाबा सफ़ा : 11)

सबक़: नबी की नज़र अंजाम तक पहुँच जाती है, और मुसलमान अपने अहदो पैमाँ का बड़ा पक्का होता है। और सहाबा-ए-इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान अपने दीन व ईमान पर बड़े पक्के थे। उन्हें अपने ईमान से दुनिया की कोई ताक़त और मुसीबत नहीं हआ सकी।

हिकायत नम्बर (200) इसतक़लाल बिलाल

हज़रत बिलाल हबशी रज़ी अल्लाहो अन्ह जब इस्लाम ले आए तो आपको तरह तरह की तकलीफें दी जाने लगीं। उमय्या बिन ख़ल्फ जो मुसलमानों का बदतरीन दुश्मन था और जिसके आप गुलाम थे, आपको

सख़्त गर्मी में दोपहर के वक़्त तपती हुई रेत पर सीधा लिटा कर उनके सीने पर पत्थर की बड़ी चट्टान रख देता था ताके वो हिल ना सकें और कहता था! या इसी हाल में मर जाओ या ज़िन्दगी चाहते हो तो इस्लाम छोड़ दो। मगर हज़रत बिला बक़ौल शायर

तू हो के तुर्श रू मुझे गाली हज़ार दे
ये वो नशा नहीं जिसे तुर्शी उतार दे

नशा-ए-इस्लाम में ऐसे सर मस्त थे के उनके मसायब व आलाम की बिलकुल परवा ना फ़रमाते। ज़ालिम आपको रात के वक़्त ज़ंजीरों में बाँध देते और कोड़े मारते और अगले दिन उन ज़ख़्मों को गर्म ज़मीन पर डाल कर और ज़्यादा ज़ख़्मी करते। ताके बे क़रार होकर इस्लाम से फिर जाएँ या तड़प तड़प कर मर जाएँ। मगर अल्लाह रे! इसतक़लाल बिलाल के आप इश्क़े हक़ में ऐसे सरशार थे के अहद अहद के नारे लगाते और यादे हक़ में गोया यही फ़रमाते थे

हलक़ पर तीग़ रहे सीने पे जल्लाद रहे
लब पे तेरा नाम रहे दिल में तेरी याद रहे

एक दिन हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने आपको इस हाल में देखा तो उनको ख़रीदकर आज़ाद कर दिया और आपको उस इश्क़ व इसतक़लाल का ये सिला मिला के आप बारगाहे मुसतफवी के मोअज़्ज़न बने और सफर व हज़र में हमेशा अज़ान की ख़िदमत उन्हीं के सपुर्द होती। (असद-उल-ग़ाबा व हिकायत-उल-सहाबा, सफ़ा 12)

सबक़:- दुश्मनाने दीन ने अल्लाह वालों पर हमेशा सख़्तियाँ कीं और अल्लाह वालों ने हज़ारहा मसायब व आलाम के बावजूद अमन व इसतक़लाल को कभी ना छोड़ा। और हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह बड़े ही सख़ी और मुसलमानों के ख़ैर ख़्वाह थे और जो शख़्स सहाबा इक्राम बिलख़सूस सिद्दीक़े अक्बर का दुश्मन है वो बड़ा ही शक़ी और बख़ील है।

हिकायत नम्बर (201) ग़मे हिज्र

हज़रत बिलाल रज़ी अल्लाहो अन्ह को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से बड़ी मोहब्बत थी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का जब विसाल हो गया तो आप मदीना की गलियों में ये कहते फिरते थे के लोगो! तुम ने कहीं रसूल अल्लाह को देखा है? देखा है तो मुझे भी दिखा

दो या मुझे आपका पता बता दो। फिर आप इसी ग़मे हिज्र में मदीने को छोड़ कर मुल्क शाम के शहर हलब में चले गए। एक साल के बाद आपने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को ख़्वाब में देखा। हुज़ूर ने आपसे फ़रमाया। के ऐ बिलाल! तूने हम से मिलना क्यों छोड़ दिया। क्या तुम्हारा दिल हमसे मिलने को नहीं चाहता। हज़रत बिलाल ये ख़्वाब देखकर लब्बेक या सय्यदी ऐ आक़ा ग़ुलाम हाज़िर है कहते हुए उठे और इसी वक़्त रात ही को ऊँटनी पर सवार होकर मदीने को चल पड़े। रात दिन बराबर चल कर मदीने मुनव्वरह में दाख़िल हुए हज़रत बिलाल पहले सीधे मस्जिदे नबव्वी में पहुँचे और हुज़ूर को ढूंढा मगर हुज़ूर को ना देखा। फिर हुजरों में तलाश किया। जब वहाँ भी ना मिले। तब मज़ार अनवर पर हाज़िर हुए और रोकर अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! हलब से ग़ुलाम को ये फ़रमा कर बुलाया के हम से मिल जाओ और जब बिलाल ज़ियारत के लिए हाज़िर हुआ। तब हुज़ूर पर्दे में छुप गए ये कहकर आप बेहोश होकर क़ब्र अनवर के पास गिर गए। बहुत देर में जब आपको होश आया तो लोग क़ब्र अनवर से उठा कर बाहर लाए। इस अर्से में बिलाल के आने का सारे मदीने में ग़ुल हुआ के आज रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मोअज़्ज़न बिलाल आए हैं। सबने मिलकर बिलाल से दरख़्वास्त की के अल्लाह के लिए एक दफा वो अज़ान सुना दो जो रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को सुनाते थे। बिलाल फ़रमाने लगे। दोस्तो! ये बात मेरी ताक़त से बाहर है। क्योंके मैं जब हुज़ूर की उस दुनयवी ज़िन्दगी में अज़ान कहा करता था तो जिस वक़्त अशहद अन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह कहता था। रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को सामने आँखों से देख लेता था। अब बताओ के कैसे देखूंगा? मुझे इस ख़िदमत से माफ रखो! हर चन्द लोगों ने इसरार किया। मगर हज़रत बिलाल ने इंकार ही किया। बाज़ सहाबा की ये राय हुई के बिलाल किसी का कहना ना मानेंगे तुम किसी को भेजकर हज़रत हसन व हुसैन (रज़ी अल्लाहो अन्हुमा) को बुला लो। अगर वो आकर बिलाल से अज़ान की फ़रमाईश करेंगे, तो बिलाल ज़रूर मान जाऐंगे। क्योंके हुज़ूर के अहले बैत से बिलाल को इश्क़ है। ये सुनकर एक साहब जाकर हज़रत हसन व हुसैन को बुला लाए। हज़रत हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्हु ने आकर बिलाल का हाथ पकड़कर फ़रमाया के ऐ बिलाल! आज हमें भी वही अज़ान सुना दो जो हमारे नाना जान को सुनाया करते थे। हज़रत बिलाल ने इमाम हुसैन को गोद में उठाकर कहा, तुम मेरे महबूब के

कलेजे के टुकड़े हो। नबी के बाग़ के फूल हो जो कुछ तुम कहोगे, मंज़ूर करूंगा, तुम्हें रंजीदा ना करूंगा के इस रह हुज़ूर को मज़ार में रंज पहुँचेगा। और फिर फ़रमाया। हुसैन मुझे ले चलो जहाँ कहोगे अज़ान कह दूंगा। हज़रत हुसैन ने हज़रत बिलाल का हाथ पकड़ कर आपको मस्जिद की छत पर खड़ा कर दिया। बिलाल ने अज़ान कहना शुरू की। अल्लाहो अक्बर! मदीना मुनव्वरह में ये वक़्त अजब ग़म और सदमे का वक़्त था। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को विसाल फ़रमाए हुए एक ज़माना हुआ था आज महीनों के बाद अज़ाने बिलाल की आवाज़ सुनकर हुज़ूर की दुनयवी हयात मुबारका का समाँ बंध गया। बिलाल की आवाज़ सुनकर मदीना मुनव्वरह के बाज़ार गली कूचों से लोग आकर मस्जिद में जमा हुए। हर एक शख़्स घर से निकल आया। पर्दा वाली औरतें पर्दे से बाहर आ गईं। अपने बच्चों को साथ लाईं जिस वक़्त बिलाल ने *अशहद अन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह* मुंह से निकाला। हज़ारहा चीखें एक दम निकलीं। उस वक़्त रोने का कोई ठिकाना ना था औरतें रोती हैं, नन्हे मुन्हे बच्चे अपनी माँओं से पूछते थे के तुम बताओ के बिलाल मोअज़्ज़िन रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तो आ गए। मगर रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मदीने कब तशरीफ़ लाएँगे? हज़रत बिलाल ने जब *अशहद अन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह* मुंह से निकाला और हुज़ूर को आँखों से ना देखा तो हुज़ूर के ग़मे हिज्र में बेहोश होकर गिर गए और बहुत देर के बाद होश में आकर उठे और रोते हुए मुल्क शाम वापस चले गए। (मदारिज-उन-नबुव्वत, सफ़ा 236, जिल्द 2)

सबक़: हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम विसाल शरीफ के बाद ज़िन्दा हैं और अपने चाहने वालों को शर्फ़े ज़ियारत से मुशर्रफ फ़रमाते हैं और सहाबा इक्राम रिज़वानुल्लाही अलेहिम अजमईन के हर छोटे बड़े मर्द व औरत को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से बेहद मोहब्बत थी और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का ज़िक्रे ख़ैर सुनने के बाद सब बेचैन रहते थे और सहाबा के दिल में अहले बैत की बड़ी मोहब्बत थी।

हिकायत नम्बर (202) इस्लाम का झंडा

जंगे ओहद में हज़रत मसअब बिन उमैर रज़ी अल्लाहो अन्ह के हाँथ में इस्लाम का झंडा था। काफ़िरों ने इस इस्लामी झंडे को सरनिगूँ करने के

लिए हज़रत मसअब बिन उमैर पर हमला कर दिया। हज़रत झंडे को उठाए हुए उनसे लड़ने लगे। इब्ने क़ीमा एक मुशरिक ने यकायक आपके हाथ पर तलवार का एक ऐसा वार किया के आपका दाहिना हाथ कटकर अलग जा पड़ा। मगर वाह रे बहादुर व शीदा-ए-हक़! के दूसरे हाथ में झंडा ले लिया और उसे सरनिगूँ ना होने दिया। मुशरिकीन ने उस झंडे को सरनिगूँ करने के लिए और भी शिद्दत से हमले शुरू कर दिए और क़रीब पहुँच कर झंडा हाथ से छीन लेने की कोशिश करते रहे मगर आप उन्हें अपने नज़दीक तक ना आते देते और ये सब कुछ एक ही हाथ से करते रहे लेकिन ताबा के! आख़िर आपका दूसरा हाथ भी कट कर गिर पड़ा और सदाक़त के इस परवाने ने दूसरा हाथ भी कटते ही कटे हुए हाथों से झंडे को सीने से चिमटा लिया और झंडे को सरनिगूँ ना होने दिया। मुशरिकीन ने जब देखा के दोनों हाथ कट जाने पर भी झंडा नहीं गिरा तो इब्ने क़ीमा ने तैश में आकर तलवार फैंक दी और ज़रा फासले से एक ऐसा तीर मारा के सीने में पेवस्त हो गया और हज़रत मसअब बिन उमैर रज़ी अल्लाहो अन्ह इस्लाम की इज़्ज़त को सीने से चिमटाए हुए जन्नत को सिधारे।

लड़ाई के ख़ात्मे पर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हज़रत मसअब की लाश के क़रीब आए और उनके नूरानी चेहरे को देखकर ये आयत तिलावत फ़रमाई।

मिनल मोमिनीना रिजालुन सदाकू मा आहादूल्लाह अलेही मोमिनों मैं ऐसे भी हैं जिन्होंने इस अहद को पूरा किया। जो उन्होंने अपने खुदा से बाँधा था।"

फिर शहीदे हक़ की लाश को मुख़ातिब फ़रमा कर फ़रमायाः

"मैंने तुमको मक्का में देखा है, जहाँ तुम से ज़्यादा खूबसूरत और खुश लिबास कोई ना था ये आज क्या हुआ के तुम्हारे चेहरे पर गर्द पड़ी है बाल उल्झे हुए हैं, बेशक अल्लाह का रसूल गवाही देता है के तुम शोहदा! क़यामत के रोज़ अल्लाह के हुज़ूर में रहोगे।" (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 68)

सबक़:- सहाबा इक्राम ने आख़िर तक इस्लाम की मदद की है और उन्हें पाक लोगों की जुरात व शुजाअत से इस्लाम के डंके बजने लगे और उन पाक लोगों को अल्लाह के हुज़ूर एक ख़ास मुक़ाम हासिल है।

हिकायत नम्बर(203) अल्लाह की तलवार

जंग मोता में शाहे रोम हरकुल की फौज एक लाख थी और मुसलमानों

की तादाद सिर्फ तीन हज़ार थी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने ये सूरते हाल देखकर मुजाहेदीन में हस्बे ज़ेल तक़रीर फ़रमाई:-

मुसलमानो! शहादत ही के ज़ोक़ में हम घर से निकले हैं, अगरचे हमारे मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा फौज है, लेकिन हम जमअीयत के लिहाज़ से दुश्मन के साथ नहीं लड़ते, बल्के हमारा लश्कर और हमारी क़ुव्वत इस्लाम है अल्लाह तआला ने इसी इस्लाम की बदौलत ही हमें आज तक फतह मंद किया है।

ग़ाज़ियो! उठो और अल्लाह का नाम लेकर कुफ्र का मुक़ाबला करने को तैयार हो जाओ।

अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी अल्लाहो अन्ह की ये हिम्मत अफ़्ज़ा तक़रीर सुनकर सब जाँनिसाराने इस्लाम ने यक ज़बान होकर कहा। बेशक आप सच कहते हैं और सब मुक़ाबले के लिए तैयार हो गए और लड़ाई शुरू हो गई। हज़रत ज़ैद बिन हारिस के हाथ में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का झंडा था। आप बड़े जोश व ख़रोश और शुजाअत के साथ लड़ रहे थे। यहाँ तक के मुख़ालफीन के लश्कर में जा घुसे और शहीद हो गए। आपके शहीद होते ही झंडा हज़रत जाफर बिन अबी तालिब रज़ी अल्लाहो अन्ह ने थाम लिया और रिज्ज़ ख़्वानी करते हुए दुश्मनों की सफों का सफाया करने लगे। जब उनका घोड़ा ज़ख़्मी हो गया तो फिर भी पा पियादा लड़ने लगे और दुश्मनों ने जब हर तरफ़ से वार करना शुरू कर दिया तो पहले उनका एक बाज़ू कट गया, लेकिन आपने दूसरे बाज़ू से झंडा थाम लिया। और इसी तरह लड़ते रहे और जब दुश्मनों ने दूसरा बाज़ू भी जुदा कर दिया तब आपने दोनों कटे हुए बाज़ुओं को जोड़कर अलमें इस्लाम को अपने सीने से लगा लिया। लेकिन अलम को गिरने ना दिया। आख़िर इसी हालत में आपने शहादत पाई।

उनके बाद अलमे इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने उठाया और घोड़े से उतर कर पा पियादा जंग में शरीक हुए और खूब लड़े यहाँ तक के वो भी शहीद हो गए।

हज़रत अब्दुल्लाह की शहादत के बाद मुसलमान परेशान होने लगे। मगर साबित बिन अरक़म अनसारी रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अलमे इस्लाम हाथ में लेकर कहा! मुसलमानो! अब तुम हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को अपना सरदार मुक़र्रर करके जिहाद शुरू रखो। चुनाँचे सब ने इस बात पर इत्तेफाक़ किया और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्ह आगे

बढ़े और मुसलमानों को ललकार कर बड़े जोश व ख़रोश के साथ दुश्मनों पर हमला कर दिया। हज़रत ख़ालिद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की सियादत में मुसलमानों का कुछ ऐसे ज़ोर से हमला हुआ के कुफ़्फ़ार के होसले पस्त होने लगे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह सब से पेश पेश थे और जिस काफ़िर पर भी आपकी तलवार का वार पड़ता। वो एक ही वार में ठंडा हो जाता और यहाँ तक आप लड़े के आपकी नो तलवारें लड़ते लड़ते टूट गईं। हर तलवार के टूटते ही वो दूसरी तलवार लेकर दुश्मनों पर शेर की झपटते थे। हज़रत ख़ालिद की इस शुजाअत का दुश्मनों पर ऐसा रौब छाया के उनके पाँऊ डगमगाने लगे। चूंके रात हो चुकी थी। इसलिए दोनों लश्करों में लड़ाई बन्द हो गई। सुबह को जब मुक़ाबले के लिए फिर दोनों लश्कर सफ आरा हुए तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्ह ने उन मुसलमानों को जो गुज़िश्ता दिन पीछे थे आगे कर दिया और अगली सफों को पीछे कर दिया इस सफ आराई से दुश्मन को ये यक़ीन हो गया के मुसलमानों को नई कुमक आ गई है। साथ ही उसके हज़रत ख़ालिद ने जोशो ख़रोश से हमला कर दिया। उनके साथ अगली सफों के मुसलमानों ने भी ताज़ा जोश दिखाया तो दुश्मनों ने मुंह फैर लिया और सर पर पाँऊ रख कर भागे। लेकिन हज़रत ख़ालिद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मसलेहत वक़्त से उनका तआक्क़ुब ना किया और जो माले ग़नीमत हाथ आया, लेकर बाक़ी मुसलमानों को साथ लेकर मदीना शरीफ को लौट आए। (तारीख इस्लाम, सफ़ा 230)

सबक़:- हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्ह बड़े जरी और बहादुर सहाबी थे, और बारगाहे नबुव्वत से आपको अल्लाह की तलवारों में एक तलवार का लक़ब मिल चुका था। और मुसलमान अपने इस्लाम के बल बूते पर अपनी क़िल्लत की परवाह किए बग़ैर लाखों की तादाद में दुश्मन का मुक़ाबला करने से नहीं घबराता और अल्लाह तआला उसकी मदद फ़रमाता है।

हिकायत नम्बर (204) मक़ूक़स के दरबार में

शाह मिस्र मक़ूक़स की ख़्वाहिश पर हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह ने मक़ूक़स के पास दस आदमियों का एक वफ़्द भेजा। जिसके रईस हज़रत इबादा बिन सामत रज़ी अल्लाहो अन्ह थे। आपका रंग काला था मक़ूक़स ने उनको देखा तो सहम गया और कहने लगा के क्या मुसलमान

ऐसे ही होते हैं। ये क्या जंग करेंगे? मक़ूक़स की बातें सुनकर हज़रत इबादा ने यूं तक़रीर शुरू फ़रमाईः

"मैंने तुम्हारी बातें सुनीं, अब उनका जवाब सुनो। जिन आदमियों के पास से मैं आया हूँ। उनमें एक हज़ार काले आदमी और भी मौजूद हैं। जिनका रंग मुझ से भी काला है और सूरत मुझ से ज़्यादा मुहीब और जलाली अगर तुम उनको देखो तो तुम्हारा क्या हाल हो? सुनो! मैं अगरचै बूढ़ा हूँ और मेरा शबाब रूख़सत हो चुका है। लेकिन अलहम्दूल्लिाह! के सौ आदमियों से तनहा भी नहीं डरता। यही हाल मेरे और साथियों का है और उनका बाइस ये है के हमारा असली मक़्सूद खुदा की राह में जिहाद करना और उसकी रज़ा जोई है हम मुल्क गीरी या किसी दुनयवी लालच के लिए जंग नहीं करते। खुदा ने हमारे लिए माले ग़नीमत हलाल किया है। हमें दुनयवी तमव्वुल की कोई परवाह नहीं। हमारे पास लाखों दरहम हों या सिर्फ एक, दोनों हालतें हमारे लिए बराबर हैं। हमारे लिए दुनयवी नअेमतें वक़अत नहीं रखतीं। हमारी असली नअेमत अख़रवी राहत हैं हमारे बरगज़ीदा रसूल सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हम से अहद लिया है के हम माल दुनिया से सिफ इसी क़द्र लें। जिससे भूक रूक सके और सत्र छुप सके।"

मक़ूक़स ने ये तक़रीर सुनी तो कहा जो कुछ तुम ने अपने और अपने साथियों के मुतअल्लिक़ कहा। मैंने सुन लिया बेशक तुम अपनी खूबियों के बाइस हम लोगों पर ग़ालिब आते रहोगे और दुनिया की कोई ताक़त तुम्हारा मुक़ाबला ना कर सकी लेकिन इस वक़्त तुम्हारा मुक़ाबला मुझ से है और याद रखो, मुझ से तुम हर गिज़ मुक़ाबला ना कर सकोगे के मैंने इस क़द्र फौज जमा कर ली है के तुम्हारा फतहयाब होना मुश्किल है पस तुम्हारे लिए यही बेहतर है के मैं तुम से हर एक शख़्स को दो! दो! दीनार और तुम्हारे ख़लीफा को एक हज़ार दीनार देता हूँ। तुम ये रक़म लो। और वापस जाओ।

हज़रत इबादा उसकी ये बातें सुनते रहे, और फ़रमाया।

"तुम और तुम्हारे साथी धोके में ना रहे तुम हमें रोमियों के टिड्डी दल लश्कर से डराते हो, मुझे क़सम है खुदा की! के हमें उसकी रत्ती भर परवाह नहीं। बल्के तुम्हारी इस गुफ़्तगू ने हमारे जज़्बा-ए-जिहाद को और भी उभार दिया है। अब हम उन दो बर्कतों में से एक बर्कत ज़रूर हासिल करके रहेंगे। हम फतहयाब हुए तो माले ग़नीमत कसरत के साथ हाथ आएगा और अगर तुम ग़ालिब हो गए तो हम शहीद होंगे और हमारे हाथ दौलत आख़िरत आएगी। हम में से कोई शख़्स ऐसा नहीं जो सुबह व शाम खुदा से शहादत

की दुआ ना माँगता हो।"

आखिर जंग शुरू हो गई और वही कुछ हुआ जो कुछ हज़रत इबादा ने फ़रमाया था यानी खुदा की चुनी हुई कौम मिस्र पर क़ाबिज़ हो गई और मुजाहेदीन ने जो कुछ कहा। वो करके दिखा दिया। (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 53)

सबक़:- मुसलामन की जंग सिर्फ आला कलमत-उल-हक़ के लिए होती है, और वो किसी दुनयवी लालच के लिए नहीं लड़ता। जिस लड़ाई में खुदा की रज़ा मक़्सूद हो, वो जिहाद है और इसी जज़्बे की बदौलत मुसलमानों को फतह व नुसरत हासिल होती रही।

हिकायत नम्बर(205) ज़हर की पुड़िया

सिद्दीके अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्हु के दौरे खिलाफत में हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्हु की ज़ेरे कमान मुसलमानों का लश्कर मुख़्तलिफ मुमालिक में फतूहात इस्लामी के डंके बजा रहा था और अल्लाह तआला की फतह व नुसरत के परचम उड़ा रहा था। इसी सिलसिले में शहर हीरा के बाग़ी व ताग़ी काफिरों की शरारत व अहद शिकनी की खबर पाकर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्हु ने हीरा का रूख किया। बहादुराने इस्लाम की आमद की ख़बर सुनते ही अहले हीरा अपने क़िलों में घुस कर क़िले में बन्द हो गए। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्हु ने सब क़िलों को चारों तरफ़ से महसूर कर लिया और कई एक शब व रोज़ तक क़िलों को घेरे रखा और लड़ाई इसलिए ना छेड़ी के शायद ये लोग राहे रास्त पर आ जाएँ। लेकिन जब उनकी तरफ़ से कोई ऐसी तहरीक ना देखी। तो हज़रत ख़ालिद ने हमला करके शहर की आबादी और उसके अन्दर के दीरों और कनीसों पर क़ब्ज़ा कर लिया।

क़ब्ज़ा कर लेने के बाद उमरो बिन अब्दुल मसीह जो के निहायत बूढ़ा पीर फानी था अपने क़िले से निकल आया। मुसलमानों ने उसे हज़रत ख़ालिद के सामने पेश किया हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्हु ने उमरो बिन अब्दुल मसीह की तरफ़ तवज्जह फ़रमाई और दरयाफ़्त किया, तुम्हारी उमर कितनी है? उमरो ने कहा "सेंकड़ों बरस" बूढ़े के हमराही ख़ादिम के पास एक ज़हर की पुड़िया निकली। इस पर हज़रत ख़ालिद ने पूछा इसे साथ क्यों लाए हो। उसने कहा, इस ख़याल से के अगर तुम ने मेरी क़ौम के साथ अच्छा सलूक ना किया, तो मैं इसे खा कर मर जाऊँ और अपनी क़ौम की

ज़िल्लत व तबाही ना देखूं।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो अन्ह ने इस पुड़िया से ज़हर निकाल कर अपनी हथेली पर रखा और उससे कहा "बे मौत कोई नहीं मरता" अगर मौत का वक़्त ना आया हो तो ज़हर भी अपना कुछ असर नहीं कर सकता। ये कहकर हज़रत ख़ालिद रज़ी अल्लाहो अन्ह ने *बिस्मिल्लाही ख़ैरी अस्समाई रब्बिलअर्ज़ी वस्समाईल्लज़ी ला युज़ुरू मआ इसमिही राउन-उर-रहमानिर्रहमीम।*

ये कलमात अदा करके वो ज़हर फाँक लिया। उस बूढ़े काफिर ने ये ऐतक़ाद और खुदा पर ऐतमाद का मंज़र देखा, तो शशिद्र रह गया, और तमाम लोग भी हैरान रह गए, जो क़िलों से निकल आए थे और उमरो बिन अब्दुल मसीह की ज़बान से तो ये कलमा बेइख़्तियार निकल गया के :

"जब तक तुम्हारी शान का एक शख़्स भी तुम में मौजूद है, तुम अपने मक़्सद में नाकाम नहीं रह सकते" (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 376, जिल्द 2) व मिसला फी हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 867)

सबक़:- हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह इस्लाम के बहुत बड़े बुलंद रूत्बा जरनैल थे। मुसलमनों को हमेशा उन पर नाज़ रहेगा और सहाबा इक्राम रज़ी अल्लाहो अन्हुम अपने अज़्म व ऐतक़ाद की बदौलत मौत से मतलक़ हरासाँ ना थे और इसी जज़्बे की बदौलत वो हयाते जावदानी पा गए।

हिकायत नम्बर (206) मिट्टी का टोकरा

जंगे क़ादसिया के दौरान शाहे ईरान यज़्दगर्द की तरफ़ से इस्लामी लश्कर के सिपह सालार हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी अल्लाहो की खिदमत में अर्ज़ की गई के आप अपने आदमियों से एक वफ़्द हमारे पास भेजें ताके हम उनमें से इतमिनान के साथ गुफ़्तगू कर सकें। चुनाँचे यज़्दगर्द के दरबार में जाने के लिए हज़रत रबई बिन आमिर नौमान बिन मक़रन और मग़ैरह बिन ज़रारह और आसिम बिन उमर वग़ैरा रज़ी अल्लाहो अन्हुम तैयार हुए। इधर ईरानियों ने अपना रौब व अदब दिखाने के लिए दरबार यज़्दगर्द को खूब आरास्ता किया। क़ीमती फर्श क़ालीन और ज़रकार मसनदें बिछाई गईं। ज़रकार तकिए लगाए गए और सोने के तख़्त पर यज़्दगर्द खुद बैठा। जब इस्लामी वफ़्द आया तो अजब शान बे नियाज़ी से आया। हज़रत रबई इस शान से घोड़े पर सवार दरबार में दाखिल हुए के सादा सी एक तलवार और

रस्सी से बाँधा हुआ एक नेज़ह लटक रहा है। क़ीमती फ़र्श के क़रीब घोड़ा पहुँचा तो दरबारियों ने ने कहा। घोड़े से उतर पड़ो। मगर आपने कुछ परवाह ना की और दरबार के क़ीमती फ़र्श पर घोड़े को ले गए, फिर घोड़े से उतरे और दो भारी ज़रकार तकियों को नेज़े से फाड़कर उनमें रस्सी डाली और घोड़े को बाँध दिया। ईरानियों ने ये सब कुछ देखा, लेकिन वो बुलाए हुए आए थे, इसलिए चुप रहे। फिर आप नेज़ह फ़र्श पर गाड़ते आगे बढ़े और आहिस्ता आहिस्ता क़दम रखते चले गए उनकी इस आहिस्ता ख़रामी और फिर नेज़ह ने तमाम क़ीमती असबाब और फ़र्श को ख़राब कर दिया और जगह जगह नेज़ह से फ़र्श पर सूराख़ कर दिए और फिर यज़्दगर्द के क़रीब पहुँच कर आपने नेज़ह ज़मीन पर गाढ़ दिया और खुद ज़मीन पर बैठ गए। लोगों ने कहा ज़मीन पर क्यों बैठ गए, फ़रमाया, हम ज़ैब व ज़ीनत को पसंद नहीं करते और ना इन तकल्लुफ़ात से हमें कुछ रग़बत है इसी तरह हज़रत नौमान और मग़ैरह व़ आसिम भी आगे बढ़े और यज़्दगर्द ने दरयाफ़्त किया के तुम लोग क्या चाहते हो? नौमान बिन मक़रन ने फ़रमाया।

"खुदा तआला ने हम पर रहम फ़रमाया, और हमारी रहनुमाई के लिए एक रसूल भेजा जिसने हमें नेक कामों का हुक्म दिया और बुरे कामों से रोका और हम से इस बात का वादा किया है के अगर हम उसके अहकाम को मानेंगे, तो दीन व दुनिया की भलाई हम को नसीब होगी और हमारे रसूल ने हमें ये भी हुक्म दिया है के हम हर क़ौम को अद्ल व इंसाफ की दावत दें और इस्लाम की तरफ़ बुलायें। चुनाँचे हम आपको भी अद्ल व इंसाफ और इस्लाम की दावत देते हैं हमारा दीन बेहतरीन दीन है अगर तुम हमारा दीन क़बूल कर लो तो बेहतर। वरना फिर दो बातों में से एक बात मंज़ूर करो। या जिज़या दो। और अगर ये भी मंज़ूर ना हो तो फिर जंग करो अगर तुम हमारा दीन क़बूल कर लोगे। तो हम तुम्हारे पास खुदा की किताब को छोड़ जाएँगे। तुम किताबे इलाही पर क़ायम रहना और उसके अहकाम के मवाफ़िक़ हकूमत करना और उसके बाद हम चले जाएँगे और तुम्हारे मुल्क से कोई तआर्रूज़ ना करेंगे। तुम जानो और तुम्हारा मुल्क। जिज़या मंज़ूर करो। तो ये भी हमें मंज़ूर है। इस सूरत में हम दुश्मनों से तुम्हें बचाएँगे और कोई नुक़सान तुम को ना पहुँचाएँगे। और ये तमाम बातें अगर तुम्हें मंज़ूर ना हो तो फिर हम तुम से जंग करेंगे।"

यज़्दगर्द ने इसके जवाब में कहा। "मैं जानता हूँ, तुम्हारी क़ौम इन्तिहाई दर्जे की ज़लील और बदबख़्त थी। तुम अपनी हद से ना बढ़ो और फारस पर

क़ब्ज़े की तमअे दिलो दिमाग़ से निकाल दो। हमारे मुक़ाबले में तुम्हें सख़्त नुक़्सान उठाना पड़ेगा। अगर अपने इफ़्लास से मजबूर होकर तुम ने हमारे मुल्क पर हमला किया है तो मैं तुम्हारी मदद के लिए तैयार हूँ। तुम लोगों को हम ज़मीनें देंगे तुम्हारे सरदारों की इज़्ज़त करेंगे। तुम्हारे कपड़े बना देंगे और माँगोगे देंगे।"

यज़्दगर्द की ये तक़रीर सुनकर हज़रत मग़ैरा रज़ी अल्लाहो अन्ह बोलेः-

"बादशाह! ये लोग अरब के सरदार और शरफ़ा में से हैं और शरफ़ा की इज़्ज़त को जानते हैं, उन हज़रात को जिस ख़िदमत पर मामूर किया गया उसको उन्होंने पूरे तौर पर अभी तुम्हारे सामने पेश नहीं किया और आपने जो बातें जवाब में कही हैं। वो बातें उनका जवाब नहीं हो सकतीं। आप मुझ से गुफ़्तगू कीजिए। मैं आपका पयाम सरदार सिपाह को पहुँचा दूंगा। आपने हमारी सक़ीम हालत की निसबत जो कुछ फ़रमाया, बिलकुल दुरूस्त है। वाक़ेया ये है के हमारी हालत इससे भी ज़्यादा बदतर थी। लेकिन नौमान बिन मक़रन के क़ौल के मुताबिक़ खुदा ने हम पर रहम फ़रमाया और हमारी इसलाह के लिए अपना नबी हम में भेजा। जिसने हमको इंसान बना दिया और इज़्ज़त व शराफत के बुलंद तरीन मुक़ाम पर बिठा दिया लिहाज़ा ऐ बादशाह! नौमान बिन मक़रन की बातों को हिक़ारत से ना देखा और बेहतर यही है के इस्लाम ले आओ और अपने आपको बचा लो।"

यज़्दगर्द ने जवाब दिया के अगर क़ासिदों का क़त्ल ना रवा ना होता। तो मैं तुम सबको क़त्ल करा देता। तुम लोग फौरन वापस चले जाओ। तुम्हारी बातों का जवाब मेरे पास नहीं है। उसके बाद मग़रूर यज़्दगर्द ने मिट्टी का एक टोकरा मंगवाया और हुक्म दिया के उन लोगों में से जो सबसे ज़्यादा शरीफ हो ये मिट्टी से भरा हुआ टोकरा उसके सर पर रख दो और उसको मदायन से बाहर निकाल दो। चुनाँचे वो मिट्टी का टोकरा बढ़कर हज़रत आसिम बिन उमर रज़ी अल्लाहो ने अपने सर पर उठा लिया और बड़ी मुसर्रत का इज़हार किया। इस मुसर्रत को देखकर यज़्दगर्द हैरान हुआ तो हज़रत आसिम का जवाब ये था, जिसे मैं (बशीर) ने इन शैरों में बयान किया है। हज़रत आसिम ने फ़रमाया।

तेरी नज़रों में तो ये तहक़ीर की इक चाल है
पर मुसलमानों के हक़ में ये मुबारक फाल है
जानता हूँ मैं ही उस अल्लाह के इनाम को
तूने खुद अपनी ज़मीन दे डाली है इस्लाम को

ये कहा। और मुजाहेदीन उस दरबार से निकल आए।

इस्लामी वफ़्द की वापसी के बाद यज़्दगर्द और उसके हम नशीनों को मुसलमानों की जुरात व बेबाकी का अहसास हुआ और यज़्दगर्द बोला के मेरा दिल गवाही देता है के वो ज़रूर कामयाबी हासिल करेंगे लेकिन आसिम बड़ा बेवक़ूफ है के मिट्टी का टोकरा पाकर खुश हो गया। ईरानी सरदार, रूसतम बोलाः बादशाह! जिसको आप बेवक़ूफ कह रहे हैं, वो सब से ज़्यादा अक़्लमंद और समझदार है। उसने मिट्टी के इस टोकरे से नेक फाल ली है और अब ख़ैर नहीं है। यज़्दगर्द ये सुनकर ग़ज़बनाक हुआ और परेशानी के आलम में बाहर आया और इस्लामी वफ़्द के पीछे सवारों की एक जमात रवाना की और कहा के अगर तुम मुसलमानों के वफ़्द को रास्ते में पकड़ लोगे तो हम मुल्क को बचा सकेंगे और अगर वफ़्द को तुम ना पा सके तो तुम्हारा मुल्क समझो हाथों से गया। क्योंके वो वफ़्द हमारे मुल्क की कुंजी सर पर उठाए लिए जा रहा है। चुनाँचे सवारों की एक जमात ने मुजाहेदीन का पीछा किया। लेकिन नाकाम वापस आई और रूसतम ने कहा के मुसलमान हमारी ज़मीन को हैरत अंगेज़ तरीक़े पर ले गए और हम को ख़बर भी ना हुई। रूसतम चूंके मंजम और काहिन था इसलिए उसने नजूम के तरीक़े से मालूम कर लिया के मिट्टी का टोकरा ले जाना ये मानी रखता है के अरब ने सर ज़मीन फारस पर क़ब्ज़ा कर लिया।"

सबक़:- मुसलमान अपने अल्लाह और उसके रसूल का सच्चा मतीअ और फ़रमाँबरदार होता है और दुनयवी जाह व हशमत का उसकी नज़रों में कुछ वक़ार नहीं होता। और वो अपनी सदाक़त व शुजाअत के बल बूते पर बड़ी से बड़ी ताक़त को नज़रों में नहीं लाता और तबलीग़े हक़ के लिए हर वक़्त तैयार रहता है और अल्लाह तआला सच्चे मुसलमानों की बहरे नूअ मदद फ़रमाता है और दुश्मन बावजूद दुनयवी जाह व हशमत और अपनी कसरत के सच्चे मुसलमनों का मुक़ाबला नहीं कर सकता। सहाबा इक्राम अलेहिम-अर्रिज़वान ने इस हक़ीक़त को आशकारा करके दिखा दिया।

हिकायत नम्बर(207) सफर तबूक

एक क़ाफला जो शाम से आया, हुज़ूर सरवर आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कहने लगा। हुज़ूर! क़ैसरे रोम मुसलमानों से जंगे मोता में शिकस्त का बदला लेने को अपनी फौजों को तैयार कर रहा है। ताके वो मदीना मुनव्वरह पर हमला कर दे।

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया, परवा नहीं!

क़ाफ़लाः- या रसूल अल्लाह! क़ैसरे रोम को नाज़ है के वो तक़रीबन निस्फ़ दुनिया पर हुकमुरान है और उसका ये ख़याल है के ये मुट्ठी भर मुसलमान उसके सामने कुछ भी नहीं और वो दो लाख की फौजी जमीअत से मदीना पर हमला करने का इरादा रखता है।

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सहाबा इक्राम की तरफ़ तवज्जह फ़रमाते हुए क्या राय है तुम लोगों की?"

सहाबा इक्राम का जवाब ये थाः के

है जिसका खुदा हाफिज़ क्या उसको ख़त्र कोई
इंसान की क्या ताक़त पहुँचाए ज़रर कोई!

हम अपने आक़ा के साथ हैं, आप मुख़्तार हैं जो चाहें फ़रमायें हम हर तरह तैयार हैं।

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लमः अच्छा तो सुनो! मेरा इरादा है के हमला आवर अफ़्वाज की मदाफत अरब की सर ज़मीन में दाख़िल होने से पहले पहले मुनासिब है ताके अनदुरूने मुल्क कोई ख़लल वाक़अे ना हो।

सहाबा इक्राम : सर तसलीमे ख़म है जो मिज़ाज यार में आए।

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लमः खूब सोच लो। ये सफर में मेवे पक गए हैं और ये दिन मेवे खाने, साया में बैठने और आराम करने के हैं।

सहाबा इक्रामः या रसूल अल्लाह! आपकी मर्ज़ी पर ये तो क्या दुनिया की हर नअेमत क़ुर्बान है और हर राहत निछावर के यही अपना ईमान है।

है सुन्नत अरबाबे वफा सब्र व तवक्कल
छोड़ेंगे ना हम हाथ से दामाने रज़ा को

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम! अच्छा तो मैं तैयारी सामान के लिए अल्लाह की राह में कुछ ख़र्च करने का एलान करता हूँ। रज़ा-ए-इलाही के तालिब बोलें वो क्या देते हैं?

हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्हः मेरे आक़ा! ये आपका ग़ुलाम नो सौ ऊँट, एक सौ घोड़े और एक हज़ार दीनार हुज़ूर के हुक्म पर क़ुर्बान करता है के

दौलत से ना जन्नत से ना कुछ हूर से मतलब
इन आँखों को है बस रूखे पुरनूर से मतलब

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ी अल्लाहो अन्हः और हुज़ूर! ये ग़ुलाम आपका चालीस हज़ार दरहम हाज़िर करता है के

ना ऐश और इशरत ना ज़र चाहिए
हमें आपकी इक नज़र चाहिए

हज़रत अबु अक़ील रज़ी अल्लाहो अन्ह (एक ग़रीब सहाबी) मेरी ये नज़र हक़ीर दो सेर छुहारे क़बूल फ़रमाईए। हुज़ूर! रात भर पानी निकाल निकाल कर एक खेत को सैराब करके चार सेर छुहारे मज़दूरी के लाया था। दो सेर बीवी बच्चों के लिए छोड़ कर बाक़ी दो सेर ले आया हूँ।

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लमः जज़ा कल्लाह! हम तुम्हारे इस जज़्बा-ए-ईसार की क़द्र करते हैं। जाओ इन छूहारों को जुमला क़ीमती सामान के ढेर के ऊपर बखैर दो।

फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह (दिल ही दिल में): देख ऐ दिल! मेहबूब ने आज ईसार का हुक्म फ़रमा कर अपने ग़ुलामों को इस कारे ख़ैर में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने का मौक़ा मरहमत फ़रमाया है, और देख ग़ुलामाने हुज़ूर किस तरह बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते रहे हैं और तू जानता है के मैदाने इश्क़ रसूल में अबु बक्र सिद्दीक़ इन सबसे हमेशा पेश पेश है। उसके दिल में जज़्बा-ए-रसूल सबसे बैश है। जब भी कोई मौक़ा आया, सिद्दीक़ को आगे ही पाया। ले आज मौक़ा आया है। अभी तक सिद्दीक़ नहीं आए और ता हाल इस कारे ख़ैर में अपना कोई हिस्सा नहीं लाए तो हिम्मत कर और आज इस मैदान में इतना दौड़ के सिद्दीक़ को भी पीछे छोड़! (दिल से इस ख़िताब के बाद) हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह घर पहुँचे और अपने सारे असास-उल-बैत नक़्द व जिन्स का निस्फ जो कई हज़ार रुपये का था, बारगाहे रसूल में ले आए। ईसारे फारूक़ की ये शान के अपने घर की सारी पूंजी नक़्द व जिंस का निस्फ दरे यार पर ले आए। देखकर हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम रूखे़ पुरनूर पर मुसर्रत के आसार नज़र आने लगे और फारूक़ अपने मेहबूब की इस मुसर्रत पर फूले ना समाते थे के

इतने मैं वो रफ़ीक़े नबुव्वत भी आ गया
शाहिद है जिसकी मोहरो वफा पर हिरा का ग़ार

चमन रिसालत का बुलबुल ज़ार मुहिब्ब व मेहबूब अहमद मुख़्तार, यारे ग़ार व जाँनिसार सिद्दीक़े अक्बर भी आ गया और इस शान से आया के सारा असास-उल-बैत नक़्द व जिन्स, जिस क़द्र भी था। सौ फीसदी घर का सारे का सारा सामान और अपनी कुल पूंजी दरबारे रिसालत में न्यूछावर करने को साथ ले आया और आते ही सब कुछ यार के क़दमों में डाल दिया।

ये मंज़र देखकर फारूक़ भी हैरान रह गए और दिल से कहा: लो आज भी मैदान सिद्दीक़ के ही हाथ रहा। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने बकमाल उल्फत व प्यार अपने यारे ग़ार से फ़रमाया के ऐ मर्दे दीं! तुम सभी कुछ यहाँ ले आए घर भी कुछ छोड़ कर आए या नहीं यारे ग़ार ने जवाब दिया

परवाने को चिराग़ तो बुलबुल को फूल बस!
सिद्दीक़ के लिए है खुदा का रसूल बस!

इसी तरह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इर्शाद पर हर सहाबी ने फिराख़ दिली व ईसार से काम लिया और अल्लाह का नबी उन अल्लाह वालों की तीन हज़ार की जमीअत से तबूक को रवाना हुआ।

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम: हमारे पास सवारियों और रसद की कमी है। उसका कुछ ख़याल ना करना।

सहाबा इक्राम: हुज़ूर! हमें इसका कुछ ख़याल नहीं। हमें तो रज़ाऐ हक़ मतलूब है।

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम: मैं हर अठ्ठारह शख़्सों के लिए एक ऊँट मुक़र्रर करता हूँ और खाने पीने के लिए।

सहाबा इक्राम: हुज़ूर! आप इसकी फिक्र ना फ़रमाएँ, हम खुदा की राह में दरख़्तों के पत्ते भी खाकर इस राह से मुंह ना मोड़ेंगे, प्यास लगी तो ऊँटों को (अगरचै सवारी के लिए पहले ही कम हैं) ज़िबह करके उनकी अम्आ का पानी पी लेंगे और या फिर रोज़ा रखेंगे या रसूल अल्लाह

तू सलामत है तो सब हैच हैं ये रंजो अलम

फिर इस सफर में सहाबा इक्राम को वाक़ई दरख़्तों के पत्ते खाने पड़े जिससे होंट सूज गए चलते चलते पाऊँ में छाले पड़ गए और ज़ख़्म भी हो गए मगर क्या मजाल के क़दम आगे बढ़ने से रूक जाए। बिल आख़िर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम इस आलम में अपने तीस हज़ार जाँनिसारों समेत सरहदे शाम के एक मुक़ाम में पहुँच गए और एक माह वहीं क़याम फ़रमाया।

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इस दिलैराना इक़्दाम का असर क़ैसरे रोम पर ये हुआ के वो हुज़ूर के तीस हज़ार मुजाहेदीन समेत तबूक में पहुँच जाने का सुनकर हैरान रह गया और अपने मसाहिबों से यूं गोया हुआ के:

क़ैसरे रोम:- ये मुसलमान भी अजब दिल गुर्दे के आदमी हैं के मेरे इरादे

की ख़बर पाते ही मदाफत के लिए तबूक पहुँच गए।

मसाहिबः बात ये है के उनके पैग़म्बर ने उनमें कुछ अजीब जज़्बा भर दिया है और उन्हें कुछ ऐसा मज़बूत कर दिया है के ये अल्लाह की राह में लड़ने को जिहाद तसव्वुर करते हैं और इसी जज़्बे के मा तहत खूब लड़ते मारते और मरते हैं। उनके ख़याल में काफिर को मारने वाला ग़ाज़ी और काफिर से मर जाने वाला शहीद है उन्हें खाने पीने को ना मिले तो रोज़ा रख लेते हैं, मिल जाए तो कहते हैं ईद है और फिर उनका पैग़म्बरा उनके साथ साथ हो तो ये और भी ज़्यादा जज़्बे और हिम्मत से लड़ते हैं और अपने पैग़म्बर के क़दमों में मर जाने को सआदत ख़याल करते हैं।

क़ैसरे रोमः- तो फिर ये बेहतर है के फिलहाल मदीने पर चढ़ाई का इरादा मुलतवी कर दिया जाए। मुसलमानों का पैग़म्बर जब वफात पा जाए तो फिर हमला किया जाए। एलान कर दो के मदीने पर हमला हम मुलतवी करते हैं।

चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने भी ये मालूम करके के क़ैसरे रोम अपने इरादे से बाज़ आ गया है वापसी का हुक्म फ़रमाया, और ये अल्लाह वालों का मुक़द्दस लश्कर अपने आक़ा समेत एक माह के बाद मदीना मुनव्वरह वापस पहुँच गया। (तारीख़-उल-खुलफा सफ़ा 31, व रूह-उल-बयान, जिल्द 1, सफ़ा 927, तबसरफ़ मुरत्तिब)

सबक़:- सहाबा इक्राम रिज़वानल्लाही अलेहिम अजमईन ने अपनी हर दुनयवी राहत को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इर्शादात पर क़ुर्बान कर दिया था और वो अख़रवी राहत ही के जोयाँ रहे और अल्लाह की राह में उन्होंने हर मुसीबत को बर्दाश्त फ़रमा कर बता दिया के सच्चे मुसलमान अल्लाह की राह में क़ुर्बान हो जाने ही को सआदत समझते हैं और उनके मज़बूत इरादों के सामने दुनिया का कोई रिश्ता हायल नहीं हो सकता और सहाबा इक्राम की इसी नेक नीयती और सच्चे जज़्बे की बदौलत दुश्मन उनसे हमेशा मरऊब रहे और वो अपनी क़िल्लत के बावजूद कसरतों पर ग़ालिब आते रहे। आज भी हमारी तरक़्क़ी व कामयाबी का यही ज़रिया है के हमारे सामने उन अल्लाह वालों का तौर तरीक़ा रहे।

हिकायत नम्बर(208) इस्लामी फौज

फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के दौरे ख़िलाफत में मुसलमानों का लश्कर फतह बैत-उल-मुक़द्दस के लिए कोशाँ व साअई था के वहाँ

के उल्मा व अहबार की ख़्वाहिश के मुताबिक़ हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह खुद बनफ़्स नफीस मदीना मुनव्वरह से मुहाज़ जंग पर तशरीफ़ लाए। बैत-उल-मुक़द्दस के उलमा व अहबार ने जो खुद तो अगरचै हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह पर नूरे इलाही और हक़ीक़त के आसार नुमायाँ देखकर दिल से उनके क़ायल हो चुके थे। मगर अपनी क़ौम को मुसलमान के बुलंद अख़्लाक़ का क़ायल कराने के लिए ये बात पेश की के हम बैत-उल-मुक़द्दस का बड़ा बाज़ार निहायत आरास्ता व पैरास्ता करते हैं। इस बाज़ार से इस्लामी फौज एक मर्तबा गुज़र जाए। इस तरफ़ से दाख़िल होकर उस तरफ़ निकल जाए। चुनाँचे ये बात तय हो गई और उन लोगों ने शहर का बाज़ार खूब आरास्ता किया, और उसमें हर क़िस्म की अशिया मोहय्या कीं और हर एक मकान पर एक एक खूबसूरत हसीना व जमीला औरत को बिठा दिया और बाज़ार को मर्दों से बिलकुल खाली कर दिया और औरतों को हुक्म दिया के इस्लामी फौज बाज़ार में दाख़िल हो तो वो जिस चीज़ की ख़्वाहिश करें, उनको बिला क़ीमत बे ताम्मुल दे दें और बे हिजाबाना मुलात्फत व नाज़ व अदा से पेश आएँ और उनको अपनी तरफ़ मायल करें और ये सब इन्तिज़ाम मुकम्मल हो जाने के बाद फिर मुसलमानों से कहा गया के इस्लामी फौज को इस बाज़ार से गुज़रने का हुक्म दिया जाए।

इधर इस्लामी फौज बाज़ार से गुज़रने के लिए तैयार हुई तो सिपह सालार ने क़ुरआने पाक की ये आयत पढ़ी *क़ुल लिलमोमिनीना यग़ुज़्ज़ू मिन अबसारिहिम अल्ख़*

यानी "मोमिनों से फ़रमा दीजिए के वो अपनी नज़रें पस्त रखें"

इस एक ही आयत के सुनाने ने ये असर दिखाया के इस्लामी फौज बाज़ार में नज़रें नीची किए हुए दाख़िल हुई और किसी एक सिपाही ने भी आँख उठा कर ना देखा के यहाँ क्या है और कौन है? और वो खुदा के ख़ायफ बन्दे इस्लामी शान के साथ एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ निकल गए। इस्लामी फौज की इस अज़ीम बुलंदी-ए-किरदार का ये असर हुआ के दुश्मन ने मुत्तफिरक़ होकर बिला जिदाल व क़िताल बैत-उल-मुक़द्दस मुसलमानों के हवाले कर दिया। (अलफतूहात, सफ़ा 134)

सबक़:- मुसलमान बड़ा बुलंद अख़लाक़ होता है और वो खुदा के इरशादात की मज़बूत गिरफ़्त में होता है और उससे कभी कोई नाशाईस्ता हरकत सादिर नहीं होती और मुसलमानों की फतूहात ज़्यादा तर उनकी इसी अख़लाक़ी तलवार की रहीने मिन्नत हैं।

हिकायत नम्बर(209) नसरानी पहलवान

हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह जब तख़्ते खिलाफत पर सद्रनशीन हुए तो आपकी ख़िलाफत का चर्चा और आपकी शान व शौकत की धूम मशरिक़ से मग़रिब तक पहुँची। जिस वक़्त बादशाह हरकुल ने आपका ज़िक्र सुना तो बड़ा बेचैन हुआ और एक नसरानी पहलवान को इनाम का लालच देकर हज़रत को शहीद कर देने के लिए आमादा किया और उससे कह के तो मदीने जाकर अगर उमर को क़त्ल कर आएगा तो तुझे बहुत साल माल व दौलत दिया जाएगा। ये हुक्म सुन कर कर वो नसरानी पहलवान मदीने की तरफ़ रवाना हुआ। जब मदीने के क़रीब पहुँचा तो उसे पता चला के मुसलमानों का अमीर उमर फारूक़ बेवा और यतीम बच्चों की ज़मीन और बाग़ात वग़ैरा के मुलाहेज़ा के लिए बाग़ में तशरीफ़ ले गया है। ये नसरानी पहलवान इस बाग़ में पहुँचा और हज़रत उमर को देखकर एक गुनजान से दरख़्त पर चढ़ गया। कुछ देर के बाद इत्तेफाक़ से हज़रत उमर भी इस दरख़्त के नीचे तशरीफ़ लाए और ज़मीन पर बैठकर हाथ का तकीया बना कर लेटे और बग़ैर बिछोने, बग़ैर तकीये सो गए। आपको सोता पाकर वो नसरानी पहलवान दरख़्त से नीचे उतरा और बहुत जल्दी आपके क़त्ल का इरादा किया जिस वक़्त तलवार उठाई। फौरन एक शेर आपके पेरों की तरफ़ से आया जिसकी सूरत देखकर वो नसरानी पहलवान बेहोश होकर ज़मीन पर गिरा और वो शेर चारों तरफ़ आपका पहरा देने और आपके तलवे चाटने लगा। उस नसरानी के गिरने से हज़रत उमर बेदार हुए, जब आपकी आँख खुल गई, शेर ग़ायब हो गया। आपने इस नसरानी पहलसपन से पूछा के तू कौन है? नसरानी बोला, जनाब आपका रूत्बा अल्लाह ने बड़ा बुलंद किया है, मैं बेवकूफ आपको शहीद करने के इरादे से यहाँ तक आया था, लेकिन जब आप सोये तो जंगल से शेर आपकी हिफाज़तके लिए आ गया। ये सुनकर हज़रत उमर ने चारों तरफ़ देखकर फ़रमाया के यहाँ तो कोई शेर नज़र नहीं आता, वो शेर किधर गया। इतने में हातिफ से एक आवाज़ आई। "ऐ उमर तू हमारे दीन की हिफाज़त करता है हम तेरे दुश्मनों से तेरी हिफाज़त करेंगे"

ये ग़ैबी आवाज़ सुनकर नसरानी पहलवान और भी हैरान हुआ, और आपके हाथों को बोसा देकर अर्ज़ किया, हज़रत! जंगल के शेर आपका पहरा देते है। और आसमान के फरिश्ते आपकी तारीफ करते हैं, फिर आपके हाथ पर लाइलाहा इललल्लाह मोहम्मदुर रसूल अल्लाह पढ़कर मैं मुसलमान

क्यों ना हों। ये कहकर वो नसरानी मुसलमान हो गया। (आलाम वाक़दी व दरमंज़र, सफ़ा 44)

सबक़:- हज़रत फ़ारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह की बहुत बड़ी बुलंद शान है के जंगल के शेर भी आपके पाबोस होते हैं और हज़रत उमर दीन के सच्चे अलमबरदार थे इसीलिए अल्लाह तआला की ख़ास नज़रे रहमत आप पर थी और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों के पेर चूमना शेरों का काम है।

हिकायत नम्बर(210) जंगल का शेर

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का एक सहाबी जिनका सफीना था, एक दफा एक कश्ती में सवार हुआ, इत्तेफाक़ से कश्ती टकराकर टूट गई। हज़रत सफीना एक तख़्ते पर बहते हुए चले गए। कुछ देर के बाद वो तख़्ता एक किनारे पर आ लगा। हज़रत सफीना वहाँ से उतरे तो एक जंगल में जहाँ शेर और दरिंदे थे जा पहुँचे एक शेर ने जब आपको देखा तो आप पर हमला करने को दौड़ा। हज़रत सफीना ने पुकार कर कहा। ख़बरदार! ऐ शेर! देख मैं रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का ग़ुलाम हूँ। ये सुनते ही शेर ने अपना सर झुका लिया, और हज़रत सफीना के पास पहुँचकर अपनी दुम हिलाने लगा और अपने इशारे से हज़रत सफीना को अपने पीछे लगाकर आपको एक ऐसे रास्ते पर लाकर खड़ा कर दिया। जिस पर चल कर हज़रत सफीना सही सालिम घर पहुँच गए। (हुज्जत-उल्लाह अललआलमीन, सफ़ा 873, और मिशकात शरीफ, सफ़ा 537)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान की वो अज़मत थी के जंगल के शेर भी उनके ग़ुलाम थे और जो सहाबा इक्राम के ग़ुलाम हैं। वही दरअसल शेर हैं।

हिकायत नम्बर(211) शौहर या बेटा

एक दिन हज़रत अली करमल्लाहो वजह ने सुबह की नमाज़ के बाद अपने ख़ादिम से फ़रमाया के फलाँ मोहल्ले में जा। उस मोहल्ले में एक मस्जिद है। मस्जिद के पहलू में एक घर है। उसमें एक औरत और मर्द बहुत देर से लड़ रहे हैं। उनको मेरे पास बुला ला। आपका ख़ादिम उस पता पर पहुँचा तो देखा के वाक़ई एक मर्द और एक औरत बाहम तकरार कर रहे हैं। ग़ुलाम ने कहा, चलो तुम्हें हज़रत अली बुला रहे हैं। ये दोनों के दोनों हज़रत अली

की ख़िदमत में हाज़िर हुए आपने फ़रमाया! आज सारी रात तुम्हें लड़ते हुए गुज़री? मर्द ने अर्ज़ किया, हुज़ूर! मैंने इस औरत से निकाह किया था, मगर जिस वक़्त ये औरत मेरे सामने आई, मुझे उससे सख़्त नफरत पैदा हो गई। अगर मुझे ताक़त होती तो उसी वक़्त उसको निकाल देता। इस औरत ने मुझे मुतनफिर देखकर मुझ से लड़ना झगड़ना शुरू कर दिया। हज़रत अली ने तमाम हाज़रीने मजलिस को रूख़सत कर दिया। और औरत से ये फ़रमाया: के जो बात हम तुम से पूछेंगे सच सच जवाब देना ऐ औरत तुम्हारा नाम ये है। तेरे बाप का नाम ये है। औरत ने कहा ठीक है फ़रमाया एक रात तो अपने घर से बाहर निकली थी। तेरे चचा ज़ाद भाई ने तुझे पकड़ लिया, तू अपने चचाज़ाद भाई से हामला हुई। मुद्दत तक तू और तेरी माँ ने इस हमल को मख़्फी रखा। जब तेरे दर्द शुरू हुआ तो तेरी वालिदा तुझ को किसी दूसरी जगह ले गई, वहाँ तेरे हाँ लड़का पैदा हुआ, तूने उस बच्चे को गठरी में लपेट कर उस मकान से बाहर जाकर रख दिया। इत्तेफाक़ से एक कुत्ता इस बच्चे के पास आया। तेरी माँ ने कुत्ते को पत्थर मारा मगर वो पत्थर मारा मगर वो पत्थर इस बच्चे को जा लगा बच्चे का सर फूट गया। तेरी माँ ने अपना दोपट्टा फाड़कर बच्चे का सर बाँधा। फिर वहाँ से तुम चली गई। उसके बाद फिर तुम्हें इस बच्चे की कुछ ख़बर ना रही। क्या ये वाक़ेया ठीक है? औरत ने हैरान होकर कहा या हज़रत! बिलकुल ठीक है।

उसके बाद हज़रत अली ने इस मर्द से कहा के ऐ मर्द! तू अपना सर खोल कर उसे दिखा दे। मर्द ने सर खोला तो उस ज़ख़्म का निशान मौजूद था। फ़रमाया के ऐ औरत ये तेरा ख़ाविंद नहीं है बल्के तेरा बेटा है। हक़ तआला ने तुझे दूसरी क़िस्म के हराम से बचाया। अब तू अपने बेटे को ले जा। (शवाहिद-उल-नबुव्वत, सफ़ा 161)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सदक़े में आपके ग़ुलामों में भी इल्म इस क़द्र था के मुद्दतों पहले की छुपी हुई राज़ भेद की बातें वो जान जाते थे। फिर खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो ताअला अलेह व सल्लम से कोई बात कैसे ग़ैब रह सकती है।

हिकायत नम्बर(212) सुहैब व अम्मार रज़ी अल्लाहो अन्हुमा

हज़रत सुहैब और हज़रत अम्मार रज़ी अल्लाहो अन्हुमा दोनों इस्लाम लाने की ग़र्ज़ से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हज़रत अरक़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के मकान पर तशरीफ़ फ़रमा थे के ये दोनों

हज़रात अलेहदा अलेहदा हाज़िरे ख़िदमत हुए और मकान के दरवाज़ों पर दोनों इत्तेफाक़िया इकट्ठे हो गए। हर एक ने दूसरे की गर्ज़ मालूम की तो एक ही ग़र्ज़ यानी इस्लाम लाना और हुज़ूर के फ़ेज़ से मुसतफ़ीद होना दोनों का मक़सूद था। इस्लाम लाए और इस्लाम लाने के बाद जो उस ज़माने में इस थोड़ी और कमज़ोर जमाअत को पेश आता था वो पेश आया। हर तरह सताए गए, तकलीफें पहुँचाई गईं। आख़िर तंग आकर हिजरत का इरादा फ़रमाया तो काफ़िरों को ये चीज़ भी गवारा ना थी के ये लोग किसी दूसरी जगह जाकर आराम से ज़िन्दगी बसर करें। इसलिए जिस किसी की हिजरत का हाल मालूम होता था उसको पकड़ने की कोशिश करते थे के तालीफ़ से निजात ना पा सके। चुनाँचे उनका भी पीछा किया गया और एक जमाअत उनको पकड़ने के लिए गई। उन्होंने अपना तरकश संभाला जिसमें तीर थे। हज़रत सुहैब ने उन लोगों से कहा के देखो तुम्हें मालूम है के मैं तुम सबसे ज़्यादा तीर अंदाज़ हूँ। जब तक मेरे पास एक भी तीर बाक़ी रहेगा। तुम लोग हमारे नज़दीक ना आ सकोगे और जब तीर ख़त्म हो गए तो मैं तलवार से मुक़ाबला करूंगा। यहाँ तक के तलवार भी ना रहे उस वक़्त तुम जो चाहे करना। अगर तुम चाहो तो अपनी जान के बदले में मैं अपने माल का पता बतला सकता हूँ जो मक्का में है इस पर वो लोग राज़ी हो गए और हज़रत सुहैब ने अपने माल का पता बता कर अपनी जान छुड़ाई और फिर हुज़ूर की ख़िदमत में पहुँच गए हुज़ूर उस वक़्त क़ुबा में तशरीफ़ फ़रमा थे। उनको देखकर फ़रमाया के नफ़े की तिजारत की। (असद-उल-ग़ाबा व हिकायात सहाबा, सफ़ा 16)

सबक़:- सहाबा इक्राम रिज़वानल्लाही अलेहिम अजमईन को अपनी जान व माल और दुनिया की हर चीज़ से इस्लाम ज़्यादा प्यारा था और उन्होंने सब कुछ क़ुर्बान करके इस्लाम को अपनाया और उस तिजारत में वो सरासर नफ़े में रहे।

हिकायत नम्बर (213) क़िला ज़मीन में धंस गया

मुसलमानों का लश्कर इसकंद्रिया पर हमला आवर था। इसकंद्रिया का बादशाह खुद भी इस जंग में मौजूद था और बड़े ज़ोर शौर से लड़ाई का इन्तेज़ाम कर रहा था। काफ़िर लोग एक बहुत बड़े मज़बूत क़िले में थे और मुसलमान क़िले के सामने मैदान में पड़े हुए थे। बहुत रोज़ तक बाहम जंग होती रही मगर कुफ़्फ़ार बवजह क़िले के मग़लूब ना हुए और ना उन्हें कुछ

नुक़सान पहुँचा, एक दिन शरजील बिन हसना रज़ी अल्लाहो अन्ह सहाबी ने काफिरों से ये फ़रमाया के ऐ काफिरो! हमारे अन्दर इस वक़्त ऐसे अल्लाह के प्यारे बन्दे भी मौजूद हैं के अगर इस क़िले की दीवार से कहें के ज़मीन में धंस जाओ तो फौरन ये क़िला ज़मीन में धंस जाएगा ये फ़रमाकर आपने अपना हाथ क़िले की जानिब उठाया और मुंह से नारा अल्लाहू अक्बर का मारा और हाथ से क़िला की फसील को ज़मीन में धंस जाने का इशारा किया। फीअलफौर सारा क़िला जो बड़ा मज़बूत और संगीन था। ज़मीन में उतर गया और सारे काफिर जो क़िले के अन्दर थे। आन की आन मैं एक खुले मैदान में खड़े रह गए। इसकंद्रिया के बादशाह के ये वाक़ेया देखकर होश उड़ गए। शहर छोड़ कर बादशाह और उसकी फौज सब भाग गई और शहर मुसलमानों के हाथ आ गया। (तारीख़ वाक़दी व सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 22)

सबक़:- सहाबा इक्राम रिज़्वानुल्लाही अलेहिम अजमईन को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से मोहब्बत और उनकी इत्तिबा की बदौलत कायनात पर तसर्रूफ हासिल था। वो खुदा के हो चुके थे और खुदा उनका हामी व नासिर था। आज हम भी खुदा के हो जाएँ तो सारी खुदाई अपनी है।

हिकायत नम्बर(214) फसतात का क़िला

इस्लामी फौज ने हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह की सरदारी में जब मुल्क मिस्र का रूख़ किया तो छोटे छ े इलाके फतह करते हुए फसताता पहुँचे और क़िले का मुहासरा कर ि ा। बहुत मज़बूत था। मिस्री अपनी हिफाज़त के ख़याल से क़िला बंद हो गए। उधर मुसलमानों के पास सामान रसद और फौज भी कम थी। दोबारा ख़िलाफत से मदद के तलबगार हुए। हज़रत उमर ने दस हज़ार सिपाही और चार अफ़्सर मदद के लिए रवाना किए और ये लिखकर एक ख़त भी रवाना किया के इन चार अफ़्सरों में हर एक एक हज़ार सवार के बराबर है जब ये मदद फसतात पहुँच गई तो हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हज़रत ज़ुबैर के रूत्बे का ख़याल करके उन्हें मुहासरा (घेरने) करने वाली फौज का हाकिम बना दिया। हज़रत ज़ुबैर ने घोड़े पर सवार होकर पहले क़िले के चारों तरफ़ चक्कर लगाया और जिन जिन जगहों पर मुनासिब समझा, फौज के दस्ते मुक़र्रर कर दिए। इस तरह से सात महीने तक क़िले का मुहासरा रहा लेकिन हार जीत का कोई

फ़ैसला ना हो सका। आख़िर एक दिन उक्ता कर हज़रत ज़ुबैर ने कहा आज मैं इस्लाम पर फ़िदा होता हूँ। ये कहकर एक सीढ़ी लगाकर क़िले की दीवार पर चढ़ गए अेर ऊपर जाकर ज़ोर से नारा-ए-तकबीर बुलंद किया। इधर नीचे फाटक के सामने जो फौज थी। उसने भी इतने ज़ोर से नारा तकबीर बुलंद किया के क़िले की ज़मीन दहल गई। अहले क़िला समझे के मुसलमान अन्दर घुस आए हैं और वो परेशान होकर इधर उधर भागने लगे। मौक़े को ग़नीमत जानकर हज़रत ज़ुबैर ने नीचे उतर कर क़िले का दरवाज़ा खाले दिया और पूरी फौज अन्दर घुस आई। लोग घबरा कर इधर उधर भागने लगे। हाकिम शहर मक़ूक़स ने अमन की दरख़्वास्त की और फौरन अमन दे दिया गया। इस तरह हज़रत की अक़्लमंदी और बहादुरी से ये ज़बरदस्त क़िला भी मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गया। (तारीख़ इस्लाम)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान ने अल्लाह की राह में अपनी जानें क़ुर्बान करने में दरीग़ ना फ़रमाया और इसी जज़्बे के साथ वो सारी दुनिया पर छा गए। फिर आज जो लोग अल्लाह की राह में क़ुर्बानी का एक बकरा भी क़ुर्बान करने को तैयार नहीं होते और सौ सौ क़सम के हीले बहाने करते और क़ुर्बानी देने के ख़िलाफ़ मज़मून लिखते हैं। वो बराए नाम मुसलमान ना हुए तो क्या हुए।

हिकायत नम्बर(215) एक सरफ़रोश मुजाहिद

मुजाहेदीने इस्लाम हज़रत ख़ालिद और अबु उबैदा बिन जर्राह रज़ी अल्लाहो अन्हुमा की क़यादत में रोज़ अफ़्ज़ों फ़तूहात से बहरावर हो रहे थे। सामराज ताक़तों की कमर टूट चुकी थी ताहम वो लोग अपने मकरो फ़रैब से मुसलमानों का मुक़ाबला कर रहे थे। इन्हीं फ़तूहात के सिलसिले में रोमियों का एक गिरोह कुछ मुसलमान औरतों को असीर बना कर ले गया। उन गिरफ़्तार होने वाली मसतूरात में ज़रार बिन अज़्वर की बहन खोला बिन्ते अज़्वर भी थीं। जब आपके भाई को मालूम हुआ के रोमी मुसलमान औरतों को असीर करके ले गए हैं तो आप हज़रत ख़ालिद की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत ख़ालिद ने फ़रमाया घबराने की कोई बात नहीं। शिकार को हाथ से ना जाने दो। फिर आपने हज़रत अबु उबैदा बिन जर्राह को दो हज़ार लश्कर के साथ दुश्मन के मुक़ाबले पर रवाना किया और ख़ुद ज़रार और चन्द मुजाहेदीन के हमराह असीर शुदा औरतों की रिहाई के लिए रवाना हुए अभी कुछ ही फ़ासले तय

करने पाए थे के मुक़ाम असतरयाक़ के क़रीब गर्दो ग़बार का तूफ़ान उठता हुआ नज़र आया। हज़रत ख़ालिद ने फ़रमाया के "खुदा ख़ैर करे" हुबैरा जो आपके क़ायद थे। अर्ज़ करने लगे के "रोमियों का बचा कुछा लश्कर मालूम होता है।" आपने हुक्म दिया के तमाम मुजाहेदीन आने वाली मुसीबत के लिए तैयार रहें।

इधर अब उन औरतों का हाल सुनिए, जिन्हें पतरस ने क़ैद कर लिया था। पतरस जो बोलिस का भाई था (बोलिस जो मुसलमानों के क़ैद में था, मुसलमान औरतों और लूट खसूट के माल को लेकर असतरयाक़ के क़रीब फ़रोकश हुआ जब उसने इतमिनान का साँस लिया तो उसने हुक्म दिया के औरतें हाज़िर की जाएँ जब औरतें हाज़िर की गईं तो उसने हर औरत को देखा लेकिन उसकी नज़र इन्तिख़ाब खोला पर जा रूकी और उसने एलान कर दिया के वाहिद मालिक मैं हूँ। इसमें कोई मुखासमत ना करे इसी तरह हर शख़्स ने एक एक औरत को अपने लिए मुनतख़िब कर लिया।

मुसलमानों की ग़यूर माँओं, बहनों बेटियों को ये हरकत निहायत्त नागवार हुई। गुस्से से वो कांप रही थीं, लेकिन मजबूरी उनकी राह में हायल थीं। सब औरतों को खेमे में फिर वापस पहुँचा दिया गया। हज़रत खोला ने सब औरतों को इकट्ठा किया और एक पुर जोश तक़रीर की के "ऐ नामूस हमीर व तबअे और ऐ अमालक़ा की बाक़ियात सालेहात! क्या तुम चाहती हो के रोम के वहशी दरिंदे तुम को अपनी हवा व हवस का निशाना बना लें? और क्या तुम्हें ये पसंद है के तुम अपनी बक़िया उमरें अग़यार की ख़िदमत गुज़ारी में सर्फ़ करके फातेहीन अरब पर कलंक का टीका लगा दो? कहाँ गई तुम्हारी वो हमीयत व शुजाअत, जिसका चर्चा महाफिल अरब के लिए बाइस सरखरोई और सर बुलंदी था। मेरे नज़दीक अहले रोम के हाथों हमेशा ज़िल्लत उठाने से ये कहीं बेहतर है के हम सबकी सब खुदा की राह में अपनी हक़ीर जानों का हदिया पेश कर दें और अपनी क़ौम को हमेशा की बदनामी से महफ़ूज़ कर लें।"

इस पर अफीरा ने तमाम औरतों की तर्जुमानी करते हुए कहा के हमारी दिली ख़्वाहिश है के हमारे खून का आख़री क़तरा तक खुदा की राह में बहें लेकिन बिला तदबीर कुछ करना अपने आपको हलाकत में डालना है हम निहत्ते हैं।"

खोला ने कहा के बेशक हम निहत्ती हैं। लेकिन अल्लाह की मदद हमारे शामिले हाल है, खेमे की चोबें उखेड़ कर एक दम उन नामुरादों पर हमला

कर दो। अल्लाह या तो हमारी मदद फ़रमा कर हमको फतह अता फ़रमाएगा या हम इज़्ज़त की मौत से अल्लाह की राह में शहीद हो जाएँगी।"

ये सुनते ही तमाम औरतों ने खेमों की चोबें उखाड़ कर यकबारगी हमला कर दिया और ये कहती जाती थीं के देखो! सब मिलकर रहना क्योंके जो भेड़ गले से अलेहदा होती है वो लुक़मा-ए-अजल बन जाती है, खोला ने एक रोमी के सर पर इस ज़ोर से चोब मारी के वो बेहोश होकर गिरा और कुछ देर बाद व असल जहन्नुम हो गया। जब रोमियों ने ये शिकस्त व रीख़्त का आलम देखा तो बदहवास हो गए। पतरस ने हुक्म दिया के इन सब औरतों को घेरा डाल कर पकड़ लो और देखो खोला के साथ अच्छा बरताओ करना।

मोर्रिखीन ने लिखा है के जब भी कोई सवार आगे बढ़ता ये औरतें भूकी शेरनियों की तरह उस पर टूट पड़तीं और उसकी तिक्का बोटी कर देतीं। खोला फ़रमाती थीं "ऐ रोमियो! आज तुम्हारे भेजे हमारी चोबों से कुचले जाएँगे। आज तुम्हारी बीवियाँ रांड और तुम्हारे बच्चे यतीम हो जाएँगे। तुम्हारी उमरें आज के दिन मुनक़तअे हो चुकी हैं। ये सुनते ही पतरस आग बगूला हो गया और उसने अपने लश्कर को पुकारा के खराबी हो तुम्हारी, तुम से चन्द औरतें नहीं पकड़ी जातीं ये सुनते ही बहुत से सिपाहियों ने बड़ी सख़्ती से हमला किया। जिसका उन्होंने डट कर मुक़ाबला किया।"

खोला फ़रमाती थीं: ऐ मुजाहेदीने इस्लाम की माँओं, बहनों, बेटियों अल्लाह ने तुम को इस क़ाबिल समझा के वो तुम्हारा इम्तिहान ले तो तुम अब इम्तिहान में घबराना मत।

ये सख़्त हमला हो ही रहा था के हज़रत ख़ालिद अपने हमराहियों के साथ उन असीरशुदा औरतों की जुसतुजू में असतरयाक़ के क़रीब आ पहुँचे और गर्दो ग़ुबार तलवारों की चमक और झंकार देखकर फ़रमाया: के हमें जल्द अज़ जल्द वहाँ पहुँचना चाहिए। चुनाँचे उन लोगों ने अपने घोड़े सरपट दौड़ा दिए और ये वाक़ेया देखकर हैरान रह गए।

जब पतरस ने देखा के मुजाहेदीन इस्लाम उसके तआक्क़ुब में आ पहुँचे तो उसने भागकर जान बचाना चाही और ख़बासत तबअे से मुसलमानों पर अहसान रखना चाहा बोला के ऐ मुसलमानो! लो जाओ मैं तुम को तुम्हारी माँयें बहनें बेटियाँ वापस करता हूँ, हज़रत ज़रार ने तआक्क़ुब किया और मामूली तआक्क़ुब के बाद जा लिया और एक भरपुर हमला किया, जिसकी वो ताब ना लाकर फ़ौरन व असल जहन्नम हुआ और तमाम लश्करी गिरफ़्तार

कर लिए गए। मोर्रिख़ीन लिख़ते हैं के इस जंग में औरतों ने मुतअद्दिद ज़ख़्मी और कम व बेश तीस काफिरों को मौत के घाट उतारा। (तारीख़ इस्लाम)

सबक़:- मुसलमान मर्द तो मर्द, औरतें भी जज़्बा-ए-जिहाद से मामूर थीं। और कुफ़्र की यलग़ार जब सर पर आ पहुँचे तो इज़्ज़त व नामूस और दीन के बचाओ के लिए मुसलमान औरतें भी काफिरों को शिकस्त दे देती हैं। जिस क़ौम के बुज़ुर्गों में ऐसी मुजाहेदात औरतें मौजूद हों जिनके हाथों में दुश्मन के मुक़ाबले के लिए चोबें पकड़ी हों। आज अगर इस क़ौम के मर्दों के हाथों में टेनिस और हाकी हों या कंकूवे दौड़ या बटैर नज़र आए तो किस क़द्र अफसोस का मुक़ाम है आह...

था जिसे क़ुरआन पढ़ना गाने गाता है वो आज
और हॉकी खेलता है अब धनी तलवार का

हिकायत नम्बर(216) मुजाहिदा माँ

हज़रत खनसा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा मशहूर शायरा हैं आप अपनी क़ौम के चन्द आदमियों के साथ मदीना मुनव्वरह आकर मुसलमान हुईं थीं। हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के ज़माने में जंग क़ादसिया में ये अपने चार बेटों समेत शरीक हुईं लड़कों को एक दिन पहले बहुत नसीहत की, और जिहाद में शिरकत के लिए उभारा कहने लगीं: मेरे बेटो! तुम अपनी खुशी से मुसलमान हुए हो, और अपनी ही खुशी से तुम ने हिजरत की! इस ज़ात की क़सम! जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। तुम एक माँ एक ही बाप के बेटे हो। मैंने तुम्हारे बाप से ख़्यानत की ना तुम्हारी शराफत में कोई धब्बा लगाया है। ना तुम्हारे नसब को मैंने खराब किया तुम्हें मालूम है के अल्लाह तआला ने मुजाहिदों के लिए क्या सवाब रखा हैं तुम्हें ये भी याद रखना चाहिए के आख़िरत की बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी दुनिया की फना हो जाने वाली ज़िन्दगी से बेहतर है। अल्लाह का इरशाद है।

याअय्योहल लज़ीना आमनूसबिरू व साबिरू व राबितू वत्तकुल्लाह लअल्लाकुम तुफलीहून

ऐ ईमान वालो! सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी करो और अल्लाह से डरते रहो इस उम्मीद पर के कामयाब रहो, (कंज़-उल-ईमान)

लिहाज़ा कल सुबह को जब तुम सही व सालिम उठो तो बहुत होशियारी

से लड़ाई में शरीक हो और दुश्मनों के मुक़ाबले में अल्लाह से मदद माँगते हुए बढ़ो और जब तुम देखो के लड़ाई ज़ोर पर आ गई है और उसके शौले भड़कने लगे तो उसकी गर्म आग में घुस जाना और काफ़िरों के सरदार का मुक़ाबला करना इंशाअल्लाह, जन्नत में इज़्ज़त व इक्राम के साथ रहोगे। चुनाँचे जब सुबह को लड़ाई ज़ोरों पर हुई तो हज़रत खनसा के चारों लड़कों में से एक एक नम्बरवार आगे बढ़ता था और अपनी माँ की नसीहत को अश्आर में पढ़कर उमंग पैदा करता था। और जब एक शहीद हो जाता था तो दूसरा बढ़ता था और शहीद होने तक लड़ता रहता था। बिलआख़िर चारों शहीद हो गए और जब माँ को उनके शहीद होने की ख़बर पहुँची तो उन्होंने कहा के अल्लाह का लश्कर है के जिसने उनकी शहादत से मुझे शरफ़ बख़्शा, मुझे अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है के उसकी रहमत के साय में उन चारों के साथ में भी रहूंगी। (असद-उल-ग़ाबा व हिकायत-उल-सहाबा सफ़ा 109)

सबक़: सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान की माँयें भी जज़्बा-ए-जिहाद से मामूर थीं। और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नज़रे रहमत से मुक़द्दस औरतें भी अल्लाह की राह में अपना सब कुछ कुर्बान कर देने वाली बन गईं, माँओं को अपनी औलाद से बड़ी मोहब्बत होती है। मगर हज़रत खनसा ने बताया के मुसलमान औरत के दिल में औलाद से भी बढ़कर अल्लाह और उसके रसूल की मोहब्बत होती है। और बता दिया के मुसलमान माँ की अपनी औलाद के मुतअल्लिक़ ये ख़्वाहिश होती है के मेरी औलाद इबादत और शहादत की अलमबरदार हो। इसीलिए एक शायर ने उन मुक़द्दस माँओं के मुतअल्लिक़ लिखा है के

वो माँयें पैदा करती थीं नमाज़ी
धनी तलवार के मैदान के ग़ाज़ी
वो माँयें जब के लेती थीं बलायें
दिया करती थीं बेटों को दुआयें
इबादत में कटे बेटा जवानी
शहादत पर हो आख़िर ज़िन्दगानी

हिकायत नम्बर (217) हुज़ूर (स०अ०स०) की फूफी

हुज़ूर सल-लल्लाहो ताअला अलेह व सल्लम की फूफी और हज़रत हमज़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की हक़ीक़ी बहन हज़रत सफ़ीया

रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा की तक़रीबन साठ साल की उमर शरीफ थी। जब के ग़ज़वा-ए-ख़ंदक के मौक़े पर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सब मसतूरात को एक क़िले में बन्द फ़रमा दिया था। और हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को बतौर मुहाफिज़ उनमें मुक़र्रर फ़रमा दिया था। यहूदियों ने इस मौक़े को ग़नीमत जाना के हुज़ूर तो सहाबा समेत मदीना मुनव्वरह से बाहर तशरीफ़ फ़रमा हैं और औरतें क़िले में तनहा हैं इस ख़याल से यहूदियों की एक जमाअत ने औरतों पर हमला कर इरादा किया और एक यहूदी हालात मालूम करने के लिए क़िले पर पहुँचा। हज़रत सफीया ने कहीं से देख लिया और हज़रत हस्सान से कहा के ये यहूदी मौक़ा देखने के लिए आया है तो क़िले से बाहर निकलो और इस मारो, हज़रत हस्सान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ज़ईफ थे। ज़ौफ की वजह से निकल ना सके तो हज़रत सफीया ने खेमे का एक खूंटा अपने हाथ में लिया और खुद निकल कर उस यहूदी का सर कुचल दिया फिर क़िले में आकर हज़रत हस्सान से कहा के चूंके वो यहूदी मर्द था और ना महरम होने की वजह से मैंने उसका सामान और कपड़े नहीं उतारे। तुम जाओ और उसके कपड़े उतार लाओ और सर भी काट लाओ। हज़रत हस्सान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने ज़ौफ की वजह से हिम्मत ना फ़रमा सके तो दोबारा तशरीफ़ ले गईं और उसका सर काट लीं और दीवार पर से सर को यहूदियों के मजमअे में फैंक दिया। यहूदियों ने अपने मुख़बिर का सर कटा हुआ देखा तो सहम गए। और कहने लगे के हम ने ग़लत समझा है। मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम औरतों को बिलकुल तनहा नहीं छोड़ गए। ज़रूर उनके मुहाफिज़ बहुत से मर्द भी अन्दर मौजूद हैं। (कुंज़-उल-अमाल सफ़ा 278 जिल्द 5)

सबक़:- मुसलमान औरत का दीन और नामूस जब ख़तरे में हो तो मुसलमान औरत भी मुक़ाबला कुफ्र में *अशिद्दा अललकुफ़्फारी* की तफसीर बन जाती है।

हिकायत नम्बर (218) सिद्दीक़े अक्बर (र०अ०) की बेटियाँ

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जिस रात हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मईयत में हिजरत फ़रमा कर तशरीफ़ ले चले तो इस ख़याल से ना मालूम रास्ते में क्या ज़रूरत

दरपेश हो। हुजूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम भी साथ हैं इसलिए जो कुछ भी माल आपके पास मौजूद था। जिसकी मिक्दार पाँच हज़ार दरहम थी। वो सब साथ ले लिया। हज़रत सिद्दीके अक्बर रज़ी तआला अन्ह के वालिद अबु क़हाफा नाबीना हो गए थे और उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे। उन्हें जब पता चला के अबु बक्र रात को मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ मक्के से चला गया है और माल भी सारा साथ ले गया है तो पोतियों के पास तसल्ली के लिए आए और कहने लगे के मेरी बेटियो! अबु बक्र ने बड़ा सितम किया के खुद भी चला गया और माल भी सारा ले गया। हज़रत असमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा उठीं और छोटी छोटी कंकरियाँ एक थेली में भर कर बोलीं: दादा जान! आप फिक्र ना कीजिए, ये देखिए सारा माल तो वो छोड़ गए हैं। ये कहकर कंकरों से पुर थेली आगे कर दी। अबु क़हाफा ने उसे अबु क़हाफा ने उसे टटोला तो समझे के इस थेली में दरहम भरे हैं। और मुतमईन हो गए और बोले! चलो अच्छा हुआ के माल वो नहीं ले गया। (मसनद इमाम अहमद सफ़ा 350 जिल्द 5)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान की बच्चियों में भी खुदा और रसूल की मोहब्बत कूट कूट कर भरी हुई थी और खुदा और रसूल के मुक़ाबले में वो माल दुनिया की कुछ परवाह ना करती थीं।

हिकायत नम्बर(219) हज़रत मअविज़ की बेटी

हज़रत मअविज़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अबु जहल के क़त्ल करने वालों में से एक थे। आपकी बेटी हज़रत रबीअ् के घर एक रोज़ एक इत्र फ़रोश औरत आई और बातों ही बातों में उसे मालूम हुआ के ये घर क़ातिल अबु जहल हज़रत मअविज़ की बेटी का घर है ये मालूम होने के बाद इत्र फ़रोश औरत जो मुसलमान ना थी हज़रत रबीअ् को मुख़ातिब करके बोली तो उसकी बेटी है जिसने अपने सरदार को क़त्ल किया। ये सुनकर हज़रत रबीअ् को ग़ुस्सा आ गया और बोलीं। मैं उसकी बेटी हूँ। जिसने अपने ग़ुलाम को क़त्ल किया। इत्र फ़रोश औरत को भी ये बात सुन कर ग़ुस्सा आया और बोली: तुम ने एक सरदार को ग़ुलाम कहा। इसलिए मुझ पर हराम है के तेरे हाथ इत्र फ़रोख़्त करूं। हज़रत रबीअ् ने फ़रमाया और तूने एक ग़ुलाम को सरदार कहा। मुझ पर भी हराम है के मैं तुझ से इत्र खरीदूं मैंने तेरे इत्र के सिवा किसी चीज़ में गंदगी और बदबू नहीं देखी। (असद-उल-ग़ाबा और

हिकायत-उल-सहाबा सफ़ा 117)

सबक़:- सहाबा इक्राम और सहाबियात रिज़वानुल्लाही अलेहिम अजमईन में इस क़द्र दीनी ग़ैरत थी के एक दुश्मन दीन के मुतअल्लिक़ वो लफ़्ज़ "सरदार" तक ना सुन सकते थे और आज कल दीन के बड़े बड़े दुश्मनों पर इससे भी ज़्यादा ऊँचे लफ़्ज़ बोले जाते हैं

वाए नाकामी मुसलमानों में ग़ैरत ना रही
पास मज़हब ना रहा और दीन से उल्फ़त ना रही

हिकायत नम्बर (220) ग़ाज़ी व नमाज़ी

मुसलमानों का लश्कर जब मिस्र फतह कर रहा था, एक दिन क़ब्तियों के बादशाह ने अपने लश्कर के सरदारों से कहा के मैंने सुना है ये मुसलमान लोग जुमअे के दिन की बड़ी तअज़ीम करते हैं और जुमअे की नमाज़ बड़े एहतिमाम से पढ़ते हैं। पस जुमअे का दिन क़रीब है तुम अपनी फौजों को हुक्म दो के चार हज़ार जवान मुसल्लह होकर पहाड़ की आड़ में छुप जाएँ। जिस वक़्त मुसलमान जुमअे की नमाज़ पढ़ने खड़े हों वो फौज उन पर हमला करे। इस हुक्म को सुनकर सरदारों ने चार हज़ारों फौज को एक पहाड़ के पीछे छुपा कर चन्द मुख़्बिर लगा दिए के जिस वक़्त ये लोग नमाज़ के सज्दे में जायें तू फौरन हमें ख़बर करना। जब सहाबा इक्राम जुमअे की नमाज़ पढ़ने खड़े हुए। मुख़्बिरों ने ख़बर दी के अरब लोग रूकू से फारिग़ होकर सज्दे में गए हैं। काफिर तलवारें लेकर आन पड़े। सेंकड़ों मुसलमानों को सज्दे के अन्दर शहीद कर दिया और हज़ारों को ज़ख़्मी कर दिया लेकिन अल्लाहो अक्बर, क्या इश्क़े इलाही था। तलवार से कट रहे थे। मगर इसी इतमीनान से जुमआ पढ़ रहे हैं। हुज़ूरी-ए-क़ल्ब में कुछ भी फर्क नहीं पड़ता। उसी खुशू व खुज़ू के साथ दूसरी रकअत पूरी की नमाज़ का सलाम फैरा। फौरन अल्लाहो अक्बर, अल्लाहो अक्बर की आवाज़ बुलंद हुई चारों तरफ़ से क़ुत्बी फौजों को घेर लिया और आन की आन में सब को क़त्ल कर दिया। चार हज़ार फौज दुश्मन की थी। एक भी ज़िन्दा ना बचा। सबको वहीं क़त्ल कर दिया। (मग़ाज़ी इब्ने इसहाक़, 216)

सबक़:- मुसलमान नमाज़ी भी होता है और ग़ाज़ी भी। आबिद भी और मुजाहिद भी। आज कल बाज़ लोगों को अगर नमाज़ पढ़ने के लिए कहा जाए तो वो जवाब ये देते हैं के साहब! हम ग़ाज़ी हैं ग़ाज़ी! गोया जो ग़ाज़ी होता है वो बे नमाज़ी होता है। हालाँके ये बात ग़लत है। देख लीजिए।

उन सहाबा इक्राम ने मैदाने जिहाद में भी जुमअे की नमाज़ तर्क ना फ़रमाई और साबित कर दिया के मुसलमान नमाज़ी भी है और ग़ाज़ी भी और इसी वास्ते इक़बाल ने भी लिखा है के ...

आ गया ऐन लड़ाई में अगर वक़्ते नमाज़!
क़िबला रू होके ज़मीं बोस हुई क़ौमे हिजाज़

ऐसे हज़रात को कम अज़ कम इक़बाल ही का शेअर पढ़ लेना चाहिए।

हिकायत नम्बर(221) नोजवान दूलहा

जंगे ओहद के अय्याम में हनज़ला बिन अबी आमिर रज़ी अल्लाहो अन्ह की शादी हुई थी जिस रात आप अपनी दुलहन को बियाह कर लाए थे। उसी रात हुज़ूर सल-लल्लाहो ताअला अलेहव सल्लम की तरफ़ से मनादी हो गई के कुफ़्फ़ारे मक्का मदीना मुनव्वरह पर हमला करने वाले हैं। उनके मुक़ाबले के लिए मैदाने जिहाद में चलो। हज़रत हनज़ला रज़ी अल्लाहो अन्ह बावजूद यके नोजवान थे और शादी की पहली शब थी। मगर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तरफ़ से ऐलाने जिहाद सुनकर सब कुछ भूल गए और अपनी दुलहन को भी नज़रअंदाज़ करके गोया शेअर पढ़ते हुए के...

सबसे बेगाना रहे यार शनासा तेरा
हूर पर आँख ना डाले कभी शैदा तेरा

मैदाने जिहाद में चलने के लिए उठ खड़े हुए और इस महवीयत के आलम में आपको अपने ग़ुस्ल करने की ज़रूरत भी याद ना रही। उसी हालत में मारका-ए-जंग में तशरीफ़ ले गए और उसी दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सामने शहीद भी हो गए। जब लड़ाई ख़त्म हुई तो शोहदा की लाशें जमा करने का हुक्म नबव्वी हुआ। सब लाशें मिल गईं। मगर हज़रत हनज़ला की लाश मुबारक ना मिली यकायक हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने आसमान की तरफ़ निगाह उठा कर मुलाहेज़ा फ़रमाया तो आपने देखा के हज़रत हनज़ला की लाश फरिश्ते ऊपर ले जाकर एक नूरानी तख़्ते पर लिटा कर आब रहमत से ग़ुस्ल दे रहे हैं। उसी दिन से आपका लक़ब ग़ुसील-उल-मलायका हुआ। (मवाहिब लुदनिया, सफ़ा 94, जिल्द 1, व अहसन-उल-वाज़ , सफ़ा 22)

सबक़:- सहाबा इक्राम रिज़वानुल्लाही अलेहिम अजमईन ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इर्शाद पर दुनिया की हर चीज़

को कुर्बान कर दिया था और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से बढ़कर उन्हें कोई चीज़ अज़ीज़ ना थी और वो अल्लाह की राह में कुर्बान होने के लिए हर वक़्त तैयार रहते थे और अल्लाह तआला को भी सहाबा इक्राम से बड़ा प्यार था। और फरिश्ते भी सहाबा इक्राम के ख़ादिम थे। फिर जो शख़्स ऐसे पाकबाज़ और जाँनिसाराने इस्लाम नफ़ूस कुदसिया से बैर व अदावत रखे, किस कद्र गुमराह है और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की निगाह आली ऐसी चीज़ों को भी देख लेती है जिन चीज़ों को दूसरी आँखें नहीं देख सकतीं।

हिकायत नम्बर(222) शौक़े शहादत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी अल्लाहो अन्ह ने ग़ज़वा-ए-ओहद में हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ी अल्लाहो अन्ह से कहा के ऐ सअद! आओ मिलकर दुआ करें। हर शख़्स अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ दुआ करे और दूसरा आमीन कहे। फिर दोनों हज़रात ने एक कोने में जाकर दुआ की। अव्वल हज़रत सअद ने दुआ की या अल्लाह जब कल लड़ाई हो तो मेरे मुक़ाबले में एक बड़े बहादुर को मुक़र्रर फ़रमा ताके मैं उसको तेरे रास्ते में क़त्ल करूं। हज़रत अब्दुल्लाह ने दुआ की। ऐ अल्लाह! कल मैदाने जिहाद में एक बहादुर से मुक़ाबला करूं, जो सख़्त हमला वाला हो। मैं उस पर शिद्दत से हमला करूं। वो भी मुझ पर ज़ोर से हमला करे और मैं बहुत सों को क़त्ल करके फिर खुद भी शहीद हो जाऊँ और शहीद होने के बाद काफिर मेरे नाक कान काट लें। फिर क़यामत में जब तेरे हुज़ूर पेश हों तो तू कहे के अब्दुल्लाह तेरे नाक कान क्यों काटे गए हैं तो मैं अर्ज़ करूं। या अल्लाह, तेरे और तेरे रसूल के रास्ते में काटे गए, फिर तू कहेगा के सच है, मेरे ही रास्ते में काटे गए। हज़रत सअद ने आमीन कही। दूसरे दिन लड़ाई हुई तो दोनों हज़रात की दुआएँ उसी तरह क़बूल हुईं। जिस तरह माँगी थीं। (ख़मीस व हिकायात , सफ़ा 67)

सबक़:- सहाबा इक्राम अल्लाह की राह में कुर्बान हो जाने का सच्चा जज़्बा रखते थे और अल्लाह और उसके रसूल की ख़ातिर उन पाक लोगों ने अपनी जानें कुर्बान करके बता दिया के सच्चा मुसलमान अल्लाह और उसके रसूल की राह में जान दे देने की तड़प रखता है और मालूम हुआ के सहाबा की दुआएँ किसी दुनयावी जाह व हशमत एहदो हकूमत के लिए नहीं, बल्के शहादत के लिए होती थीं और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम

आयत *यक़्तुलूना व यक़्तुलूना* की तफसीर थे। यानी अल्लाह की राह में मारते थे और मरते थे। सिर्फ मरना व पिटना कोई कमाल नहीं। अल्लाह की रात में मारना और फिर बच कर ग़ाज़ी बन जाना या मर कर शहीद हो जाना ये कमाल है। ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम रिज़वानुल्लाही अलेहिम अजमईन में एक जानिब कमाल बहादुरी भी थी के बहादुर दुश्मन से मुक़ाबले की दुआ किया करते थे और दूसरी जानिब कमाले इश्क़ भी था के महबूब के रास्ते में बदन के टुकड़े टुकड़े होने की तमन्ना रखते थे ताके महबूब जब पूछे के ऐसा क्यों हुआ तो वो कहें। तुम्हारे लिए...

रहेगा कोई तो तीग़ सितम के यादगारों में!
मिरे लाशे के टुकड़े दफ़्न करना सौ मज़ारों में

फिर अगर कोई शख़्स ऐसे जाँनिसाराने इस्लाम और आशिक़ाने रसूल अनाम अलेह अस्सलाम के दीन व ईमान पर शुबह करके तो इस बदबख़्त ने अपने दीन व ईमान के टुकड़े किए या नहीं?

हिकायत नम्बर (223) हबीब बिन ज़ैद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

मुसीलमा कज़्ज़ाब ने जो अपनी नबुव्वत का मुद्दई था। अपने वतन यमामा से एक ख़त हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के नाम लिखा जो ये है।

मिन मुसीलमात रसूलिल्लाही इला मोहम्मदिन रसूलिल्लाही अम्मा बअदू फइन्ना लना निस्फलअर्ज़ी वलीक़ुरैशी निस्फन वला किन्नल क़ुरैशा ला युनसिफूना वस्सलामू अलेका।

खुदा के रसूल मुसीलमा की तरफ़ से खुदा के रसूल मोहम्मद (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) की तरफ़ वाज़ह हो के आधी ज़मीन हमारी और आधी क़ुरैश की है, लेकिन क़ुरैश इंसाफ नहीं करते। और सलाम हो आप पर"

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फौरन उस ख़त का जवाब लिखवाया। जो ये है:

बिस्मिल्लाहीर्रहमानिर्रहीम। मिन मोहम्मदिन्नबी इला मुसीलमातल कज़्ज़ाबी अम्मा बअदू फइन्नल्‌अर्ज़ा लिल्लाही यूरीसूहा मंयशाऊ वलआकिबत लिलमत्ताकीन वस्सलामु अला मिनत्तबाअल हुदा

अल्लाह के नाम से जो कमाल मेहरबान और रहम वाला है। मोहम्मद खुदा के नबी की तरफ़ से बहुत बड़े झूटे मुसीलमा की तरफ़। वाज़ेह हो के ज़मीन खुदा की है वो अपने बन्दों में जिसे चाहे वारिस बनाता है और अंजाम नेक लोगों के लिए है सलाम हो उस पर जो सीधी राह चले।"

ये मक्तूब ग्रामी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत हबीब बिन ज़ैद रज़ी अल्लाहो अन्ह को देकर यमामा रवाना फ़रमाया। हज़रत हबीब ये ग्रामी नामा लेकर मुसीलमा के दरबार में पहुँचे और आपका ख़त पेश किया। मुसीलमा ये ख़त पढ़कर जल भुन गया और गुस्से में बोला। *अतशहद अन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाही* क्या तुम इस बात की गवाही देते हो के मैं भी अल्लाह का रसूल हैं। हज़रत हबीब ने फ़रमाया, हाँ हाँ बेशक वो अल्लाह के सच्चे रसूल हैं मुसीलमा ने फिर पूछा अतशहद *इन्नी मोहम्मदन रसूल अल्लाह* क्या तुम इस बात की गवाही देते हो कि मैं भी अल्लाह का रसूल हूँ हज़रत हबीब ने फ़रमाया *इन्नी असम्मू ला असमअ्* मैं इस कलाम के सुनने से बेहरा और ये गवाही देने से गूंगा हूँ। मुसीलमा ने एक दो मरतबा फिर पूछा और आपने हर बार यही जवाब दिया। तो उस मरदूद ने हज़रत हबीब के सर से पाँऊ तक के कुल आज़ा अलग कर दिए और आप शहीद हो गए। (असाबा फी तमीज़-उल-सहाबा, सफ़ा 328)

सबक़:- सहाबा इक्राम रिज़वान-उल्लाही अजमईन *इन्नल लज़ीना क़ालू रब्बुनल्लाहा सुम्मसतक़ामू* की सच्ची तफसीर थे और उनके पाऐ इसतक़लाल में दुनिया की कोई ताक़त लग़ज़िश ना ला सकी, और उन्होंने इश्क़े रसूल की राह में ये साबित करके दिखा दिया के....

सिराते इश्क़ पर अज़ बसके है क़दम मेरा!
दम शमशीर क़ातिल पर भी खूं जाता है जम मेरा!

और उन लोगों ने अपने रसूल (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) से मोहब्बत करने का जो हक़ था वो अदा करके दिखा दिया और मुसलमानों को ये दर्स दे दिया के मुसलमानों! अपने रसूल (सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम) की मोहब्बत व उल्फत को हर हाल में सामने रखो ओर अपना विर्द यही रखो के या रसूल अल्लाह!...

मौत आ जाए मगर आए ना दिल को आराम
दम निकल जाए मगर निकले ना उल्फत तेरी

और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बाद जो नबुव्वत का मुद्दई है वो बहुत बड़ा झूटा है और ऐसे शख़्स के

हाथों मुसलमानों को नुक़सान ही पहुँचता है और ये भी मालूम हुआ के मुसीलमा कज़्ज़ाब अगरचै हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम को भी अल्लाह का रसूल मानता था, लेकिन फिर भी वो झूटा ही था। इसी तरह और कोई मुद्दई नबुव्वत भी अगरचै हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को भी मानता हो मगर वो फिर भी झूटा ही होगा और ये भी मालूम हुआ के मुसीलमा कज़्ज़ाब अस्सलाम अलेकुम भी कहता था। मगर बावजूद इसके वो फिर भी झूटा ही था। इसी तरह आज भी अगर कोई हमें अस्सलाम अलेकुम कहे तो ज़रूरी नहीं के वो सच्चा ही हो।

हिकायत नम्बर(224) मुजस्समा-ए-ईसार

हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के अहदे ख़िलाफत में जब उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह ने मुल्क मिस्र पर चढ़ाई की, तो इसाई लश्कर के सिपह सालार जरजीस ने तमाम इसाई मुमालिक से फौज जमा की और टिड्डी दल लश्कर मुसलमानों के मुक़ाबले में ले आया और इन्तिहाई कोशिश से सिपाहियों को जोश दिला दिला कर हमले पर हमले करता रहा लेकिन इस्लामी मुजाहेदीन की आहिनी दीवार सद सिकंद्री की तरह ना क़ाबिल उबूर ही साबित हुई।

जरजीस को जब कामयाबी के आसार नज़र ना आए तो उसने अपनी फौज में एलान कर दिया के जो शख़्स सिपह सालारे इस्लाम का सर काट कर लाएगा। उसको ग्राँक़द्र इनाम के अलावा मैं अपनी खूबसूरत और शेर दिल लड़की भी दे दूंगा। इस एलान से हवस परस्तों में जोश पैदा हुआ और जरजीस की लड़की हासिल करने की ख़ातिर हर इसाई सिपह सालारे इस्लाम हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह का सर क़लम करने की कोशिश करने लगा। इसका नतीजा ये हुआ के हज़रत उमरो बिन आस को अपनी हिफाज़त का ख़ास तौर पर इन्तिज़ाम करना पड़ा और जब इसकी इत्तिला बारगाहे ख़िलाफत में भेजी गई तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो अन्ह हिमायती फौज के सिपह सालार बन कर इन्तिहाई सरअत के साथ आ पहुँचे और सबसे पहले हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो के पास पहुँचे और कहा तअज्जुब है के आप जैसे मर्द मैदाने सियासत और मुदब्बिर को अपने बचाओ की कोई तदबीर ना सूझी। उसका इलाज तो बहुत आसान है। कल ही इस्लामी फौज में एलान कर दिया जाए के जो शख़्स जरजीस का सर क़लम कर के लाएगा उसको ग्राँक़द्र इनाम के अलावा जरजीस की परी पैकर लड़की

भी नज़्र की जाएगी। हज़रत उमरो बिन आस इस राय से बहुत खुश हुए और ये एलान कर दिया गया। अब जो मैदान जंग में दोनों फौजें सफ आरा हुईं तो आगाज़े जंग का इशारा पाते ही मुसलमानों ने ऐसे जोश व खरोश से हमले किए के इसाईयों के छक्के छूट गए और मुसलमान मुजाहेदीन दुश्मनों को काट काट कर रास्ता साफ करते हुए जरजीस की तरफ़ बढ़ने लगे। जरजीस की लड़की भी अपने बाप के दोश ब दोश मुक़ाबले पर तुली हुई थी। लेकिन तक़दीर ने पांसा जो पलटा तो जरजीस एक ग़ाज़ी के वार से क़त्ल हो गया और उसका एलान होते ही इसाईयों के पाँऊ उखड़ने लगे। सारा जोश व खरोश काफूर हो गया। भागना चाहा, मगर बे सूद सेंकड़ों गिरफ़्तार हुए, और उन कैदियों में जरजीस की लड़की भी पाबा ज़ंजीर हो गई।

जश्न फतह में हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह ने मुजाहेदीन की तारीफ की और फ़रमाया: मैं जरजीस का सर क़लम करने वाले मुजाहेद भाई से दरख़्वास्त करता हूँ के वो अपने आपको ज़ाहिर करे ताके हस्बे वादा इनाम से सरफ़राज़ किया जाए। इस एलान के बाद कुछ देर इन्तिज़ार किया गया। मगर किसी ने आगे बढ़ कर अपना नाम पेश ना किया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने बकमाल मुतानत फ़रमाया के कोई मुजाहिद भाई अपने आपको ज़ाहिर करने पर आमादा नहीं होता इसलिए बेहतर है के जरजीस की लड़की सिपह सालारे इस्लाम खुद क़बूल फ़रमा लें।

हज़रत उमरो बिन आस अफसोस के मैं भाई अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर का मशवरा क़बूल नहीं कर सकता। मैं इस जाँबाज़ मुजाहिद की हक़ तलफी जिसने ये मैदान सर किया है, नहीं करना चाहता। अगर मेरा क़यास ग़लत नहीं तो मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ और मेरा दिल गवाही दे रहा है के इस मुबारक इक़्दाम का सहरा अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के सर होना चाहिए।

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर आपने जो कुछ फ़रमाया मैं उसका शुक्र अदा करता हूँ, लेकिन इस मैदान का सर करने वाला अभी तक तो आगे बढ़ा नहीं।

मुजाहेदीन: भाई अब्दुल्लाह! बस अब इज़हारे हक़ीक़त में ताम्मुल ना कीजिए। आपको बे तहाशा जरजीस की तरफ़ बढ़ते हम सबने देखा है बल्के हम को अंदेशा था के कहीं दुश्मनों में घिर कर आप शहीद ना हो जाएँ। क्यों जनाब! जरजीस का क़ातिल आपके सिवा दूसरा कौन है!

हज़रत अब्दुल्लाह: अल्लाह तआला खूब जानता है के शौहरत व अनाम के लालच में नहीं बल्के अपना फर्ज़ समझ कर मैंने ये ख़िदमत अंजाम दी

है। अगर सब बुज़ुर्गों की यही ख़्वाहिश है तो मैं अपना सर तसलीम ख़म करता हूँ। चुनाँचे जरजीस की लड़की का आईने इस्लामी के मुताबिक़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो अन्ह से उक़्द कर दिया गया और मुजाहेदीन ने जोश मुसर्रत में दोगाना अदा किया और बारगाहे ख़िलाफ़त में इस अज़ीम कारनामे की इत्तिला दे दी गई। (तारीख इस्लाम, सफ़ा 224)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान तदबीर व सियासत में भी बड़े माहिर थे और दुश्मन की सियासी चाल को खूब समझ लेते थे और मालूम हुआ के मुसलमानों की लड़ाई महेज़ आला कलमत-उल-हक़ के लिए होती है। वो शौहरत व इनाम के लालच में नहीं लड़ते और माले ग़नीमत जो कुछ भी हासिल हो वो मुसलमानों का मक़्सूदे असली नहीं होता। मक़्सूदे असली रज़ाऐ हक़ ही होता है। जिस तरह गंदम बोने वाले का मक़्सूदे असली तो दाना गंदम ही होता है लेकिन उसके साथ साथ पराली व भूसा भी उसे हासिल हो जाते हैं। इस तरह मुसलमान का मक़्सूद असली तो रज़ाऐ हक़ ही होता है। लेकिन उसके साथ साथ माले ग़नीमत भी उसे हासिल हो जाता है और जिस तरह कोई दाना शख़्स गंदम इसलिए नहीं बोता ताके उसे पराली व भूसा मिल जाए। इसी तरह कोई मुसलमान सिर्फ इसलिए जंग नहीं करता के उसे कोई दुनयवी मनफ़अत हासिल हो जाए। दुनयवी मनफ़अत तो एक भूसा है जो खुद ब खुद ही हासिल हो जाता है।

हिकायत नम्बर (225) तमाँचे की हिकमत

जंग इसकंद्रिया में रोमी एक क़िले में बंद थे। और मुसलमानों ने इस क़िले का मुहासरा कर रखा था। एक रोज़ रोमी मैदान में निकले और सिपह सालार हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह चन्द सवार लेकर उनके मुक़ाबिल हुए लड़ाई घमसान की हुई। मुसलमान रोमियों को दबाते हुए बराबर क़िले की तरफ़ चले गए और रोमियों के हमराह क़िले के अन्दर दाख़िल हो गए। हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह हर एक लड़ाई में सब से आगे हुआ करते थे। इस मौक़े पर भी वो सब से आगे थे। रोमियों ने मुसलमानों को दरवाज़े में देखा तो सख़्त घबराए और चार इत्राफ़ से सिपाहियों के दल के दल दरवाज़े पर अपने हमराहियों की पुश्त पर आ गए और फिर क़िले का दरवाज़ा एक दम बन्द कर लिया। इस असना में उमरो बिन आस मअे मुस्लिमा बिन मख़ला और अपने ग़ुलाम दरदान के क़िले के अन्दर ही रह गए रोमी उनको गिरफ़्तार करके अपने आला अफ़्सर के पास

ले गए। रोमी अफ़्सर ने उन कैदियों को मामूली सिपाही समझा। क्योंके हज़रत उमरो बिन आस ने कोई जरनैली वर्दी ना पहनी हुई थी बल्के उनका लिबास बिलकुल अपने हमराही और ग़ुलाम का सा सादा था। इसलिए रोमी अफ़्सर ने बड़ी हिकारत से उन्हें मुख़ातिब करके कहा। तुम भूके नंगे और जाहिल अरबों ने इन मुमालिक में फितना बर्पा कर रखा है। हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो अन्ह ने निहायत बेबाकाना तौर पर जवाब दिया के हम फितना फैलाने नहीं आए। बल्के हम इन अक़्वाम को क़अेर पस्ती से निकाल कर तरक़्क़ी व खुशहाली के बाम पर पहुँचाने आए हैं। हम इस्लामी बरकतें साथ लाए हैं जो हम हर एक क़ौम के सामने पेश करते हैं। अगर तुम इस लाज़वाल दौलत से महरूम रहना चाहते हो तो हम तुम को अपनी हिफाज़त में लेकर मुल्क को दार-उल-अमान बना देंगे।

रोमी अफ़्सर ये दिलैराना जवाब सुनकर अपने मातहतों को रोमी ज़बान में कहने लगा के ये शख़्स अरबी लश्कर का सरदार मालूम होता है। बेहतर है के हम इसको क़त्ल कर दें ताके मुसलमान सिपाहियों में हमारी दहशत बैठ जाए। उमरो बिन आस का ग़ुलाम वरदान रोमी ज़बान समझता था। उसने अपने आक़ा को ख़तरे में देख कर उमरो बिन आस के मुंह पर ज़ोर से एक तमाँचा मारा और कहा, बेअदब, गुस्ताख़ किसने तुझ को इख़्तियार दिया है के अहले अरब की तरफ़ से ऐसे कलमात अफ़्सरों और हाकिमों के सामने कहे। चुप रहो। ये तुम्हारा काम नहीं। उमरो बिन आस ख़ामोश हो गए और मुस्लिमा ने कहा। बेशक हमें ऐसी कोई बात कहने का हक़ नहीं अगर आप अपने चन्द अफ़्सर अहले अरब के अफ़्सरों के पास भेजें तो मुमकिन है के वो सब मिलकर ऐसी शरायत बाहम तय कर लें जिन पर हम मैं और आप में सुलह हो जाए क्योंके हमें अच्छी तरह मालूम है के अरब सरदार जंग की बनिसबत सुलह को ज़्यादा पसंद करते हैं। रोमी अफ़्सर जो अहले अरब के शिद्दत मुहासरे से तंग आ चुका था। इस बात से बहुत खुश हुआ और कहा, अच्छा हम तुम्हें छोड़ देते हैं तुम जाकर अपने अफ़्सरों को कहो के वो सुलह करना चाहें तो हम बिलकुल तैयार हैं। मुस्लिमा ने रोमी अफ़्सर का शुक्रिया अदा किया और रोमी सिपाही उन्हें क़िले के बाहर छोड़ आए। इधर इस्लामी लश्कर में हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह और मुस्लिमा की गिरफ़्तारी के बाइस बड़ी परेशानी थी मगर जूंही उन्होंने अपने सरदार को सही सालिम वापस आते देखा तो मारे खुशी के अल्लाह अक्बर के नारे से आसमान सर उठा लिया। रोमियों के कानों में ये खुशी की आवाज़ पड़ी तो

वो सख़्त परेशान हुए और इस तमाँचे की हिकमत जो ग़ुलाम ने आक़ा के मुंह पर मारा था। अब समझे। (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 225)

सबक़:- मुश्किल के वक़्त मुसलमान के औसान ख़ता नहीं होते और कमाल तदब्बुर और दूर अंदेशी से काम लेकर मुश्किल पर क़ाबू पा लेता है और मालूम हुआ के मुसलमान जाबिर से जाबिर हाकिम के सामने भी हक़ बात कहने से हर गिज़ नहीं चूकता और हक़ गो अफ़राद की अल्लाह तआला ज़रूर मदद फ़रमाता है। लिहाज़ा आज भी मुसलमानों को हक़ व सदाक़त का अलम्बरदार बन जाना चाहिए और किसी हाल में भी हक़ व सदाक़त का दामन हाथ से ना छोड़ना चाहिए और अल्लाह से डरना चाहिए और उसकी रज़ा पर ही राज़ी रहना चाहिए...

डरना है तो एक अल्लाह से डर
मरना है तो उसकी राह में मर!
रख उसकी रज़ा पर अपनी नज़र
फिर सारी ये दुनिया तेरी है

हिकायत नम्बर (226) सोने की गेंद

फातह मिस्र हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक मरतबा क़ुरैश के बाज़ लोगों के साथ बग़र्ज़ तिजारत बैत-उल-मुक़द्दस की जानिब गए। इत्तेफाक़ से उन्हीं दिनों इसकंद्रिया का एक रोमी राहिब ज़ियारत की ग़र्ज़ से वहाँ आया हुआ था। और बैत-उल-मुक़द्दस के गिर्द पहाड़ों में फिर रहा था। हज़रत उमरो बिन आस भी अपने साथियों समेत यहाँ अपने ऊँट चरा रहे थे वो राहिब उस वक़्त पहाड़ों में शिद्दते प्यास से जाँ बलब हो रहा था। उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अपने मशकीज़े से उसे पानी पिलाया। और वो अपनी प्यास बुझा कर एक दरख़्त के साये में सो गया। इसी असना में उसके क़रीब एक सूराख़ में से एक ज़हरीला साँप निकला और इस राहिब की तरफ़ चला। हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो ताआला अन्ह की इस पर नज़र पड़ गई और आपने तीर के निशाने से उसे हलाक कर दिया। थोड़ी देर के बाद राहिब जब बैदार हुआ तो वो अपने क़रीब मरा हुआ साँप देखकर बहुत घबराया और उमरो बिन आस से उसका हाल पूछा और तमाम वाक़ेया सुनकर उमरो बिन आस की पैशानी को चूमा और कहने लगा। तुम ने मेरी दो दफा जान बचाई है अब तुम बताओ के तुम कैसे आए?

उमरो बिन आसः तिजारत की ग़र्ज़ से।

राहिबः तुम्हें इस दफा कितने नफे की उम्मीद है?

उमरो बिन आसः इतने नफे की के ऊँट खरीद सकूं।

राहिबः तुम्हारे मुल्क में इंसान की जान का बदला क्या है?

उमरो बिन आसः एक सौ ऊँट।

राहिबः हमारे हाँ ऊँट नहीं मगर रुपया बहुत है।

उमरो बिन आसः अगर ऊँट नहीं और रुपया बहुत है तो सौ ऊँटों की क़ीमत एक हज़ार दीनार होती है।

राहिबः तुम जानते हो के मैं मुसाफिर हूँ बग़र्ज़ तिजारत आया हूँ अगर तुम मेरे साथ मेरे वतन चलो तो मैं तुम को दो जानों का मुआवज़ा दूंगा।

उमरो बिन आसः तुम कहाँ के रहने वाले हो।

राहिबः मुल्क मिस्र में इसकंद्रिया नाम एक शहर है वही मेरा वतन है। तुम मेरे हमराह वहाँ चलो। मैं खुदा को गवाह करके कहता हूँ के मैं अपना वादा ज़रूर पूरा करूंगा और फिर बहिफाज़त तुम्हें तुम्हारे साथियों के पास पहुँचा दूंगा।

उमरो बिन आसः इसकंद्रिया आने और जाने में कितने दिन लगेंगे?

राहिबः दस दिन जाने के, दस दिन आने के और दस दिन वहाँ ठहरने के।

उमरो बिन आसः एक रफ़ीक़ के साथ राहिब के हमराह मिस्र की जानिब रवाना हो गए। मिस्र के इलाक़े में दाख़िल हुए तो वहाँ की चहल पहल और आबाद की कसरत और लोगों का तमव्वुल देख कर पुकार उठे के वाक़ई मैंने मिस्र जैसा खूबसूरत और मुतमव्वुल मुल्क कभी नहीं देखा। हज़रत उमरो बिन आस जिस दिन इसकंद्रिया पहुँचे। इत्तेफाक़न उस रोज़ वहाँ एक बहुत बड़ी ईद थी। जिसमें सरदार रऊसा और शुरफ़ा सब जमा हुआ करते थे और उसी दिन सोने का एक मरसअे गेंद उछाला जाता था और सब लोग उसे अपनी आसतीनों में लेना चाहते थे। क़दीम ज़माने से ये अक़ीदा चला आ रहा था के जिसकी आसतीन में वो गेंद चला जाए वो अपनी उमर में एक दफा मिस्र का बादशाह ज़रूर होगा।

इसकंद्रिया में पहुँच कर राहिब ने हज़रत उमरो बिन आस की बहुत ख़ातिर व मदारात की और निहायत क़ीमती कपड़े पहना कर उनको अपने साथ उसी ईद के जलसे में ले गया। जहाँ गेंद फैंका जा रहा था और वो लोग उसे अपनी आसतीनों में लेने की कोशिश कर रहे थे। इतने में गेंद फैंका गया और वो सीधा हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की आसतीन में दाख़िल हो गया। इस पर तमाम लोग हैरान रह गए। हज़रत उमरो

बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह चन्द रोज़ वहाँ रहे। राहिब ने अपना वादा पूरा किया, और आप वापस चले आए। उस वक़्त से हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दिल में फतह मिस्र का ख़याल चुटकियाँ लेने लगा और हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के अहेदे ख़िलाफत में आपने मिस्र फतह किया और उसके फ़रमाँ रवा बने। (अख़बार-उल-मिस्र वअलकाहेरा सेवती, सफ़ा 370)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान के दिलों में अल्लाह और उसके रसूल की मोहब्बत व उल्फत जागुज़ीं थीं। जिसकी बदौलत उनकी आसतीनों में सोने की गेंदें और उनके क़दमों में दुनिया की हकूमतें गिरने लगीं और खुदा तआला उन मोहम्मद अरबी सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के वफादारों के लिए ये एलान फ़रमाने लगा के...

की मोहम्मद से वफा तूने तो हम तेरे हैं
ये जहाँ चीज़ है क्या लोह व क़लम तेरे हैं

हिकायत नम्बर(227) रसूल की तलवार

जंगे ओहद में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने तलवार को हाथ में लेकर फ़रमाया। कौन है जो मेरी इस तलवार को ले और उसका हक़ अदा करे। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम का ये एलान सुनकर सहाबा इक्राम आगे बढ़े और हर एक की ये तमन्ना थी के ये तलवार मुझे मिल जाए। मगर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने किसी को ना दी। हत्ता हज़रत अबु दजाना रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जो बहुत बड़े पहलवान थे। आगे बढ़े तो हुज़ूर सल-लल्लाहो ताअला अलेह व सल्लम ने वो तलवार अबु दजाना रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को मरहेमत फ़रमाई। और फ़रमाया: अबु दजाना! इस तलवार का हक़ अदा करना। और इससे दुश्मन पर खूब वार करना। हज़रत अबु दजाना रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह रसूल सल-लल्लाहो ताअला अलेह व आलिही व सल्लम की तलवार पाकर बड़े खुश हुए और एक सुर्ख रंग का रूमाल सर पर बाँध कर और हाथ में वो तलवार लेकर अकड़ते हुए (जैसा के पहलवानों की आदत होती है) मैदाने जंग में निकले। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने उनकी ये चाल देखी तो फ़रमाया, ये चाल अल्लाह तआला को बड़ी नापसंद है। मगर उस वक़्त जब के अबू दजाना काफिरों के

मुक़ाबले में अकड़ता हुआ जा रहा है। अबु दजाना रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ये चाल अल्लाह तआला को बड़ी पसंद है चुनाँचे अबु दजाना ने उस रसूल की तलवार से वो जोहर दिखाए के जो भी सामने आया। रसूल की तलवार से काट कर फीन्नार कर दिया। (मवाहिब लुदनिया, सफ़ा 913, जिल्द 1)

सबक़:- तकब्बुर व ग़ुरूर अल्लाह को बड़ा ना पसंद है मगर दुश्मन के मुक़ाबले में अकड़ना अल्लाह को पसंद है। गोया मुसलमान *अशिद्दाऊ अललकुफ़्फारी* के मुताबिक़ काफिर के सामने तो ज़रूर अकड़े लेकिन *रूहामाऊ बेनाहुम* के मुताबिक़ अपने भाईयों के साथ हमेशा तवाज़े के साथ पेश आए ये नहीं के...

अपना आए सामने तो लड़ने को ठन जाईए
ग़ैर का हो सामना तो बस कुली बन जाईए

हिकायत नम्बर (228) ज़ात-उल-उयून

जंगे फारस में इस्लामी सिपह के मुक़दमत-उल-हबीश के सरदार हज़रत अक़रअ बिन हाबिस थे। ये ऐसे बहादुर और चुलबुली तबीयत के शख़्स थे के बग़ैर कुफ़्फार के साथ जिहाद के उनको चैन ना आता था। चुनाँचे उन्होंने जब दुश्मन से जंग जारी रखी, एक हज़ार तीर अंदाज़ों को आगे बढ़ाया और हुक्म दिया के दुश्मनों की आँखों का निशाना बाँध कर एक साथ तीरअंदाज़ी करें। चुनाँचे उन एक हज़ार तीर अंदाज़ मुजाहेदीन ने कमानों में तीर चढ़ाकर निशाने बाँध के एक हज़ार तीर ऐसे तरीक़ से फैंके के किसी तीर ने भी निशाना ख़ता ना किया और एक चुटकी बजाने में दुश्मनों के सिपाह की एक हज़ार आँख छिद गई। इसी वास्ते मुसलमानों ने उस दिन का नाम ज़ात-उल-उयून यानी "आँखों वाला दिन" रख दिया।

ईरानियों का सरदार शेरज़ाद नामी एक शख़्स था। उसने दम भर में अपने सिपाहियों की एक हज़ार आँखें ज़ाए होते देखीं तो फौरन लड़ाई से रूक कर सुलह का पैग़ाम भेज दिया मगर उसकी शरायत हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मंज़ूर ना फ़रमाईं और लड़ाई फिर ज़ोर शौर से शुरू हो गई। ईरानियों को उनके ख़ंदक महफ़ूज़ किए हुए थे। उन ख़दक़ों के बाइस मुसलमनों को उनके लश्कर तक पहुँचना दुश्वार था। आख़िर मुसलमानों ने ख़ंदक़ से पार उतरने के लिए ये काररवाई शुरू की के अपनी फौज के तमाम कमज़ोर और मरीज़ ऊँट ज़िबह करके ख़ंदक में

डाल दिए और उन ऊँटों की लाशों से ख़ंदक का एक हिस्सा पाट के पुल सा बनाया और उसी पर से होकर दुश्मन की सफों की तरफ़ बड़े। ईरानियों ने बढ़कर रोका मगर मुसलमानों के जज़्बे के सामने रह गए और शेरज़ाद ने फिर पयामे सुलह दिया और अब की मरतबा जो शर्ते पेश की गईं। वो हज़रत ख़ालिद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने क़बूल फ़रमा लीं। इस सुलह में एक शर्त ये भी थी के दुश्मनों को बग़ैर किसी माल व असबाब के ऐसी जगह पहुँचा दिया जाए जहाँ से वो अपनी हदूद में जा सकें। चुनाँचे मुसलमानों ने यही किया। शेरज़ाद को मअे उसकी फौज के सरहद अजम पर पहुँचा दिया और शहर अंबाद मअे तमाम साज़ व सामान के सहाबा इक्राम के क़ब्ज़े में आ गया। (तारीख़ इस्लाम, सफ़ा 379)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान जिहाद फी सबीलिल्लाह की तड़प रखते थे और फिनून हर्ब के बकमाल दर्जा वाक़िफ थे और आला दर्जे के तीर अंदाज़ थे और ये भी मालूम हुआ के दुश्मन सुलह पर आमादा हो जाए तो मुसलमान सुलह कर लेते थे। ख़्वाह-म-ख़्वाह लड़ाई जारी नहीं रखते।

हिकायत नम्बर (229) जर्जा पहलवान

मुसलमानों की रोमियों के साथ घमसान की जंग जारी थी के रोमी लश्कर से जर्जा पहलवान जो रोम का नामी ग्रामी बेमिस्ल पहलवान था। घोड़ा बढ़ा कर मैदान में आया, और उसने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को अपने मुक़ाबले में बुलाया। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फौरन अपने लश्कर से निकल कर गए तो जर्जा ने कहा। मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ लिहाज़ा थोड़ी देर के लिए आप मुझे अमन व अमान से मिलें और हम एक दूसरे पर हमला ना करें। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उसकी दरख़्वास्त क़बूल कर ली और जर्जा ने क़रीब आकर कहा जो मैं पूछुं उसको आप सच सच बता दें। क्योंके आज़ाद और बहादुर लोग झूट नहीं बोला करते और उम्मीद है के आप मुझे धोका ना देंगे।

आप ये बताईये के क्या खुदा ने आपके पैग़म्बर (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) पर कोई तलवार आसमान से उतारी है और उनसे वो तलवार आपको मिल गई है के जिस क़ौम पर आप उसको खींचते हैं बग़ैर शिकस्त दिए वो मियान में नहीं आती" हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी

अल्लाहो तआला अन्ह ने कहा "नहीं" फिर पूछा "तो फिर लोग आपको सेफउल्लाह क्यों कहते हैं"? हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने जवाब दिया "सुनिए। खुदा तआला ने हम में अपने पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व आलिही व सल्लम को मबऊस फ़रमाया। मैं उन लोगों में था जो इब्तिदा उनके मुख़ालिफ रहे। फिर अल्लाह ने हिदायत बख़्शी। और मैंने उनकी ग़ुलामी इख़्तियार कर ली उस वक़्त हुज़ूर ने मुझे फ़रमाया। के तुम मुशरिकीन के हक़ में अल्लाह की तलवार हो और मेरे लिए ताईद इलाही की दुआ फ़रमाई। ये सब हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दुआ ही की बर्कत है।"

जर्जा ने कहा। अच्छा बताईये! अगर कोई इस्लाम क़बूल करे और आपकी जमात में शामिल हो जाए उसका दर्जा आप लोगों में क्या होता है। फ़रमाया "हमारा और उसका दर्जा बराबर और यक्साँ होता है। बल्के वो हम से भी बढ़ जाता है।"

जर्जा ये सुनकर हज़रत ख़ालिद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हमराह लश्करे इस्लाम में आनकर मुशर्रफ ब इस्लाम हो गया। हज़रत ख़ालिद ने उसे दीन की तलक़ीन व तालीम की। फिर उसने ग़ुस्ल करके दो रकअत नमाज़ अदा की और उसके बाद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हमराह मैदान में निकल कर काफिरों से जिहाद करने लगा। (रज़ी अल्लाहो अन्ह) (तारीख इस्लाम, सफ़ा 405)

सबक़:- हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बहुत बड़े जरी और क़ौमी इस्लामी जरनैल थे। ऐसे के दुश्मन भी उनकी धाक मानते थे और आप ऐसे मक़्बूल बारगाहे नबव्वी थे के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़बाने हक़ तर्जुमान से आपको "अल्लाह की तलवार" का लक़ब अता हुआ। और इस तलवार से कुफ़्र ने हमेशा शिकस्त खाई। फिर इस "अल्लाह की तलवार" से कुफ़्र बुग़ज़ व अदावत ना रखे, तो क्या करे?

हिकायत नम्बर (230) उमरो बिन जमूह (र०अ०)

हज़रत उमरो बिन जमूह रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह पाँव से लंगड़े थे उनके चार बेटे थे जो अक्सर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम की ख़िदमत में भी हाज़िर होते और लड़ाईयों में भी शिरकत करते थे। ग़ज़्वा-ए-ओहद में हज़रत उमरो बिन जमूह रज़ी अल्लाहो अन्ह को भी

शौक़ पैदा हुआ के मैं भी चलूं। लोगों ने कहा के तुम मअज़ूर हो। लंगड़े पन की वजह से चलना भी दुश्वार है। उन्होंने फ़रमाया। कैसी बुरी बात है के मेरे बेटे तो जन्नत में जायें और मैं रह जाँऊ। बीवी ने भी उभारने के लिए ताने के तौर पर कहा के मैं तुझ को देख रही हूँ के वो लड़ाई से भाग कर आए हैं। हज़रत उमरो बिन जमूह रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने ये सुनकर हथियार लिए, और क़िबले की तरफ़ मुंह करके दुआ की *अल्लाहुम्मा ला तरूदुनी इला अहली* ऐ अल्लाह! मुझे अपने अहल की तरफ़ ना लौटाईयो" उसके बाद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी ख़्वाहिश और लोगों के मना करने का इज़हार किया। और कहा मैं उम्मीद करता हूँ के मैं अपने लंगड़े पैर से जन्नत में चलूं, फिरूं। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया के तुम मअज़ूर हो तो ना जाने में क्या हर्ज है? उन्होंने फिर ख़्वाहिश की तो आपने इजाज़त दे दी। अबु तलहा कहते हैं के मैंने उमरो को लड़ाई में देखा के अकड़ते हुए जाते थे और कहते थे के खुदा की क़सम मैं जन्नत का मुशताक़ हूँ। उनका एक बेटा भी उनके पीछे दौड़ा हुआ था। दोनों लड़ते रहे हत्ता के दोनों शहीद हो गए। उनकी बीवी अपने ख़ाविंद और अपने बेटे की नअश को ऊँट पर लाद कर दफ़्न के लिए मदीना लाने लगीं तो वो ऊँट बैठ गया। बड़ी दिक़्क़त से उसको मार कर उठाया और मदीने लाने की कोशिश की मगर वो ओहद की तरफ़ ही मुंह करता था। उनकी बीवी ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम से ज़िक्र किया। तो आपने फ़रमाया, ऊँट को यही हुक्म है। क्या उमरो चलते हुए कुछ कहकर गए थे। उन्होंने अर्ज़ किया के क़िबले की तरफ़ मुंह करके ये दुआ की थी *अल्लाहुम्मा ला तरूदुनी इला अहली* आपने फ़रमाया। इसी वजह से ऊँट इस तरफ़ नहीं जाता। (क़र्रत-उल-उयून)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान के जज़्बा-ए-जिहाद और शौक़े शहादत का ये आलम था के उन्हें कोई उज़्र और मर्ज़ भी मैदाने जिहाद में जाने से ना रोक सका और सरसवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वो सच्चे पैरूकार थे और घर बार, बीवी बच्चों की मोहब्बत, उक़्बा के मुक़ाबले में उनकी नज़र में कोई चीज़ ना थी और अल्लाह की राह में उन्होंने बड़ी खुशी से अपनी जानें क़ुर्बान कीं और शहादत पाई और अहले बैत अज़ाम की तरह जन्नत के मालिक बन गए।

हिकायत नम्बर (231) जन्नत का साथी

हज़रत वहाब बिन क़ाबूस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मदीना मुनव्वरह के क़रीब किसी गाँव में रहते थे और बकरियाँ चराया करते थे। एक दिन अपने भतीजे के साथ बकरियाँ रस्सी में बाँधे हुए मदीने मुनव्वरह पहुँचे। और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम का पता पूछा तो पता चला के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ओहद के लड़ाई में गए हुए हैं। बकरियाँ को वहीं छोड़कर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के पास पहुँच गए। इतने में एक जमात कुफ़्फार की हमला करती हुई आई। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया, जो उनको मुनतशिर कर दे वो जन्नत में मेरा साथी है। हज़रत वहब बिन क़ाबूस ने ये एलान सुनकर ज़ोर से तलवार चलाना शुरू की और सबको हटा दिया। दूसरी मर्तबा फिर वही सूरत पेश आई और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने फिर वही इर्शाद फ़रमाया और वहब बिन क़ाबूस ने फिर उन्हें हटा दिया। तीसरी मर्तबा फिर वही सूरत पेश आई और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने फिर वही एलान फ़रमाया और हज़रत वहब रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तलवार पकड़ कर कुफ़्फार के जमघटे में घुस गए और बहुत सों को फ़ीन्नार करके शहीद हो गए और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के वादे के हक़दार बन गए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने उनके सिरहाने खड़े होकर फ़रमाया। "ऐ वहाब! अल्लाह तुम से राज़ी हो मैं तुम से राज़ी हूँ" फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने खुद अपने दस्ते मुबारक से आपको दफ़्न फ़रमाया। (असाबा व हिकायत-उल-सहाबा, सफ़ा 71)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के हर इर्शाद पर पूरा पूरा यक़ीन था और उनका ईमान था के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम जो फ़रमा दें वो हो जाता है। चुनाँचे हज़रत वहब रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने इसी ईमान व यक़ीन की बिना पर के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुझे जन्नत में अपनी रफ़ाक़त अता फ़रमा देंगे और अता

फ़रमा सकते हैं। कुफ़्फ़ार के नरग़े में कूद पड़े और शहीद हो गए फिर अगर कोई शख़्स यूं कहे के जिसका नाम मोहम्मद है किसी बात का मुख़्तार नहीं तो वो किस क़द्र जाहिल और गुमराह है पस सहाबा के ईमान की तरह हमारा ईमान भी यही होना चाहिए के...

हम रसूल अल्लाह के जन्नत रसूल अल्लाह की

हिकायत नम्बर(232) यक़ीन

आहद की लड़ाई शुरू थी के एक शख़्स खजूरें खाते हुए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के पास हाज़िर हुआ और अर्ज़ की। या रसूल अल्लाह! अगर मैं जिहाद करूं और मारा जाऊँ तो कहाँ जाऊँगा? हुज़ूर(स॰अ॰स॰) ने फ़रमाया, जन्नत में उस शख़्स ने उसी वक़्त खजूरें हाथ से डालीं और तलवार पकड़ कर कुफ़्फ़ार के साथ जिहाद करने लगे और इस हद तक लड़ा के शहीद हो गया। (बुखारी शरीफ, सफ़ा 579, जिल्द 2)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान जज़्बा-ए-जिहाद से मामूर थे और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के हर वादे पर उनका यक़ीन कामिल था।

हिकायत नम्बर(233) रात का पहरा

हुज़ूर(स॰अ॰स॰) एक ग़ज़्वे से वापस तशरीफ़ ला रहे थे। शब को एक जगह क़याम फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, के आज रात को हिफाज़ और चौकीदारी कौन करेगा। एक मुहाजिर और एक अनसारी हज़रत अम्मार बिन यासिर और हज़रत इबादा बिन बशीर रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा ने अर्ज़ किया के हम दोनों करेंगे। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने एक पहाड़ी जहाँ से दुश्मन के आने का रास्ता हो सकता था, बता दी के उस पर दोनों क़याम करो। दोनों हज़रात वहाँ तशरीफ़ ले गए, वहाँ जाकर अनसारी ने मुहाजिर से कहा के रात को दो हिस्सों पर तक़सीम करके एक हिस्सा में आप सो रहें मैं जागता रहूं। दूसरे हिस्से में आप जागें मैं सोता रहूं के दोनों के तमाम रात जागने में ये भी अहतमाल है के किसी वक़्त नींद का ग़ल्बा हो जाए और दोनों की आँख लग जाए। अगर कोई ख़तरा जागने वाले को महसूस हो तो वो अपने साथी को जगा ले। रात का आधा पहला हिस्सा अनसारी के जागने का क़रार पाया और मुहाजिर सो गए। अनसारी ने नमाज़ की नीयत बाँध ली। दुश्मन की जानिब से एक शख़्स आया। और दूसर से खड़े

हुए शख़्स को देखकर तीर मारा। और जब कोई हरकत ना हुई तो दूसरा और फिर तीसरा मारा। हर तीर उनके बदन में घुसता रहा और ये हाथ से उसको बदन से निकाल कर फैंकते रहे। उसके बाद इतमिनान से रूकू किया। सज्दा किया। नमाज़ पूरी करके अपने साथी को जगाया। दुश्मन एक की जगह दो देखकर भाग गया के ना मालूम कितने हों। और साथी ने उठकर ये आलम देखा तो मुहाजिर ने फ़रमाया। सुबहान अल्लाह! तुम ने मुझे शुरू ही में क्यों ना जगा लिया। अनसारी ने कहा के मैंने सूरह कहेफ शुरू कर रखी थी। मेरा दिल ना चाहा के उसको ख़त्म करने से पहले रूकू करूं। अब भी मुझ को इस बात का अंदेशा हुआ के ऐसा ना हो के मैं बार बार तीर लगने से मर जाऊँ और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने जो हिफाज़त की ख़िदमत सपुर्द कर रखी है। वो फौत हो जाए। अगर मुझे ये ना होता तो मर जाता मगर सूरह ख़त्म करने से पहले रूकू ना करता। (बेहक़ी व हिकायत-उल-सहाबा, सफ़ा 53)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान ने ईमान व क़ुरआन के मुक़ाबले में जान की भी परवाह ना की। और वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के हर इर्शाद की तअमील में अपनी जानें भी निछावर करने को आमादा रहते थे और...

यही जज़्बा था उन मर्दाने ग़ैरतमंद पर तारी!
दिखाई जिनके हाथों हक़ ने बातिल को निगोनिसारी

ये भी मालूम हुआ के वो अल्लाह के पाक बन्दे अल्लाह के हुज़ूर खड़े होते थे तो तीरों के लग जाने की भी परवाह नहीं करते थे। एक हम भी हैं जो नमाज़ में मच्छर भी काट ले तो नमाज़ का ख़याल जाता रहता है।

हिकायत नम्बर (234) ईसार

एक सहाबी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और भूक और परेशानी की हालत की इत्तिला दी। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने अज़वाजे मुताहरात के हुजरों पर मालूम कराया, के किसी के हाँ खाने को कुछ है? मालूम हुआ के किसी बीबी सहाबा के यहाँ कुछ भी नहीं है। तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने सहाबा इक्राम से फ़रमाया, के कोई शख़्स है जो उनकी एक रात की महमानी क़बूल करे। हज़रत अबु तलहा अनसारी रज़ी अल्लाहो अन्ह खड़े हुए और अर्ज़ किया

या रसूल अल्लाह! मैं महमानी करूंगा, उनको घर ले गए, घर जाकर अपनी बीबी से फ़रमाया, ये हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के महमान हैं। उनके इक्राम में कोई कसर ना रहे और कोई चीज़ छुपा कर ना रखना। बीवी ने कहा, खुदा की क़सम बच्चों के लिए थोड़ा सा खाना रखा है, हज़रत अबु तलहा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया। तुम बच्चों को बहला कर सुला दो और जब सो जाएँ तो खाना लेकर महमान के सामने बैठ जावेंगे और तू चिराग़ दुरूस्त करने के बहाने से उठकर उसे बुझा देना ताके महमान ये ना देखे के हम नहीं खा रहे क्योंके अगर उसको मालूम हो गया के हम नहीं खा रहे तो वो इसरार करेगा के हम भी साथ खाएँ। इस तरह फिर वो भूका रह जाएगा। चुनाँचे बीवी ने बच्चों को बहला कर सुला दिया, और ये खाना खाने बैठे और बीवी ने चिराग़ दुरूस्त करने के बहाने से चिराग़ बुझाने दिया और सारा खाना महमान को ही खिला दिया और दोनों मियाँ बीवी और बच्चों ने फाक़ा से रात गुज़ारी। हज़रत अबु तलहा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के इस ईसार पर अल्लाह तआला बड़ा राज़ी हुआ और ये आयत नाज़िल फ़रमाई *"वयूसीरूना अला अनफ़ुसीहिम वलो काना बिहिम ख़सासत"* अपनी जानों पर उनको तरजीह देते हैं अगरचे उन्हें शदीद मोहताजी हो" (कुरआन करीम, पारा 28, रूकू 4)

(ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान, सफ़ा 770, रूह-उल-बयान, सफ़ा 289, जिल्द 4)

सबक़:- सहाबा इक्राम रिज़वानुल्लाही तआला अलेहिम अजमईन अखुव्वत ईसार और हमदर्दी के पेकर थे और उनके ईसार पर अल्लाह तआला बहुत खुश है और कुरआने पाक में उनकी तारीफ फ़रमाता है तो अगर कोई शख़्स यूं कहे के मैं सहाबा से खुश नहीं और उनकी तारीफ नहीं करता तो क्या ऐसा शख़्स गोया ये नहीं कह रहा के मैं अल्लाह की खुशी पर खुश नहीं और जिसकी अल्लाह तारीफ फ़रमाता है मैं उसकी तारीफ नहीं करता। सच है....

बुग्ज़ व हसद का हाल ये है जल मरे वहीं
देखा किसी का बाग़ जो फूला फला हुआ

हिकायत नम्बर (235) पानी की मश्क़

ग़ज़वाऐ यरमूक में बहुत से सहाबी शहीद हुए थे। जिस वक़्त शहीद हज़रात नीम जान धूप में पड़े खून में लौट रहे थे। हज़रत इब्ने हज़ीफा रज़ी

अल्लाहो अन्ह पानी की मुश्क कंधे पर उठा कर ज़ख़्मियों को पानी पिलाने के लिए तशरीफ़ ले चले। एक तरफ़ से आवाज़ आई *अलअतश। अलअतश* हज़रत इब्ने हज़ीफा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने ये आवाज़ सुनी तो दौड़कर वहाँ पहुँचे देखा के एक ज़ख़्मी मुसलमान प्यास के मारे नीम जान हो रहा है, चाहा के उनके हलक़ में पानी डालें फौरन मुंह अपना ज़ख़्मी ने बन्द कर लिया। और ये कहा के ऐ अल्लाह के बन्दे मुझ से भी ज़्यादा एक ज़ख़्मी मुसलमान प्यासा आगे पड़ा है। पहले उसे पानी पिलाओ। तब मुझे पिलाओ। इब्ने हज़ीफा रज़ी अल्लाहो अन्ह उस दूसरे ज़ख़्मी मुसलमान के पास पहुँचे। चाहा के उन्हें पानी पिलाएँ। उस खुदा के बन्दे ने भी पानी पीने से इंकार कर दिया और ये फ़रमाया के मुझ से ज़्यादा एक और मुसलमान भाई प्यासा अलअतश। अलअतश पुकार रहा है। पहले उसे पानी पिलाओ। हज़रत इब्ने हज़ीफा रज़ी अल्लाहो अन्ह उस तीसरे की ख़िदमत में पहुँचे मगर वहाँ तक पहुँचने ना पाए थे के वो प्यासे विसाल फ़रमा गए। दौड़ कर वापस आए तो देखा के दूसरे प्यासे भी अल्लाह के घर तशरीफ़ ले गए, यहाँ से भागे और अव्वल ज़ख़्मी के पास आए तो इतने अर्से में वो प्यासे भी होज़े कोसर पर पहुँच चुके थे। (रूह-उल-बयान, सफ़ा 289, जिल्द 4)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान ने आख़िर दम तक भी अपने मुसलमान भाईयों की हमदर्दी तर्क ना फ़रमाई और हमे इस बात का दर्स दिया के मुसलमान अपने मुसलमान भाई का हमेशा ख़याल रखता है।

हिकायत नम्बर(236) सत घिरा मोहल्ला

मदीना तय्यबा में एक मोहल्ला सत घिरा था। ये लोग बड़े मिसकीन और ग़रीब थे। हर एक घर में नौबत फाक़ा कशी की थी एक दिन इत्तिफाक़न उनमें से एक घर में एक बकरे की सिरी तोहफा आई बावजूद इस बात के के ये लोग खुद भूके और प्यासे थे लेकिन ख़याल ये किया के हमारा हमसाया हम से भी ज़्यादा भूका और फाक़ा से है। हीफ है के हमसाया भूका रहे और हम खायें, क़यामत में खुदा को क्या मुंह दिखाऐंगे। उसी वक़्त वो बकरे की सिरी हमसाया के घर भेज दी जब ये तोहफा दूसरे घर में पहुँचा वो भी इसी तरह खुदा तरस थे। हमसाया के हक़ूक़ का ख़याल करके उसे दो वक़्त के फाक़े को बदस्तूर क़ायम रख कर वो तोहफा तीसरे घर में भेज दिया। तीसरे घर वालों ने इसी जज़्बे के मातहत वो तोहफा आगे चौथे घर में भेज दिया। उन्होंने पाँचवें घर। उन्होंने छटे घर भेज दिया और छटे घर वालों ने बजिन्सीही

सातवें घर भेज दिया। ये सातवें घर वाले वही थे जिन्होंने सब से पहले ये सिरी दूसरे घर में भेज दी थी। इन लोगों ने जब देखा के ये तोहफा फिरता फिराता फिर हमारे ही पास आ गया है तो समझे के खुदा ने ये हिस्सा हमारे ही नसीब में लिखा है। नाचार इसे पकाया। और थोड़ा थोड़ा सबको तक़सीम कर दिया। (रूह-उल-बयान, सफ़ा 289, जिल्द 4)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान ने खुद भूके रह कर भी दूसरों को खिलाया और ईसार व हमदर्दी के वो मुज़ाहेरे किए के तारीख़ के तारीख़ के अवराक़ इस क़िस्म के मुज़ाहेरों से ख़ाली हैं। ये हैं वो पाक लोग जिन्होंने अपना हिस्सा भी अपने भाईयों पर सर्फ किया और एक आज कल के वो लोग भी हैं जिन का दिन रात का ये विर्द है के

"राम राम जपना पराया माल अपना"

हिकायत नम्बर (237) वफा-ए-अहेद

एक दिन हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का दरबारे ख़िलाफत सरगर्म इंसाफ व अद्ल था। अकाबिर सहाबा मौजूद थे और मुख़्तलिफ मामलात पेश हो हो कर तय हो रहे थे के नागहाँ एक खुश रू नोजवान को दो नो जवान पकड़े हुए लाए और फ़रयाद की के या अमीर-उल-मोमिनीन! इस ज़ालिम से हमारा हक़ दिलवाए। इसलिए के इसने हमारे बूढ़े बाप को मार डाला। हज़रत फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने इस नोजवान की तरफ़ देखा और फ़रमाया, हाँ इन दोनों का दावा तो सुन चुका अब बता तेरा क्या जवाब है? उसने निहायत अदब से वाक़ेया बयान किया जिसका खुलासा ये था के मुझ से ये जुर्म ज़रूर हुआ है और मैंने तैश में आकर एक पत्थर खींच कर मारा जिससे वो ज़ईफ मर्द मर गया। तैश की वजह ये थी के उसने मेरे अज़ीज़ अज़ जान ऊँट को पत्थर मार कर उसकी आँख फोड़ दी थी जो के उसके बाग़ में चला गया था। हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया, तो तुझे एत्राफ है लिहाज़ा अब क़िसास का अमल लाज़मी है और उसके अवज़ तुम्हें अपनी जान देनी होगी। नोजवान ने सर झुका कर अर्ज़ किया। मुझे शरीअत का हुक्म और इमाम का फतवा मानने में कोई उज़्र नहीं लेकिन एक बात की दरख़्वास्त करता हूँ। इर्शाद हुआ क्या? मेरा एक छोटा ना बालिग़ भाई है जिस के लिए वालिद मरहूम ने कुछ सोना छोड़ा था और मेरे सपुर्द किया था के वो बालिग़ हो तो उसके

सपुर्द कर दूं। मैंने उस सोने को एक जगह ज़मीन में दफ़्न कर दिया और उसका हाल सिवाए मेरे किसी को मालूम नहीं है। अगर वो सोना उसको ना पहुँचा तो क़यामत के दिन मैं ज़िम्मेदार होंगा इसलिए इतना चाहता हूँ के तीन दिन के लिए ज़मानत पर छोड़ दिया जाए।"

हज़रत फारूक़ आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उस बारे में ज़रा ग़ौर फ़रमाया और फिर सर अनवर उठाकर इर्शाद फ़रमाया, अच्छा तुम्हारी ज़मानत कौन देता है? के तू तीन दिन के बाद तकमील क़िसास के लिए वापस आ जाएगा।

फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के इस इर्शाद पर उस नोजवान ने चारों तरफ़ देखा और हाज़रीने मजलिस के चहरों पर एक सरसरी नज़र डाली और फिर हज़रत अबुज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ी अल्लाहो अन्ह की तरफ़ इशारा करके अर्ज़ किया ये मेरी ज़मानत दे देंगे। हज़रत फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने पूछा। क्यों अबुज़र! तुम ज़मानतत देते हो? उन्होंने फ़रमाया बेशक मैं ज़मानत देता हूँ के ये नोजवान तीन दिन के बाद हाज़िर हो जाएगा।

ये एक जलील-उल-क़द्र सहाबी की ज़मानत थी। चुनाँचे फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह राज़ी हो गए और उन दोनों मुद्दई नोजवानों ने भी अपनी रज़ामंदी ज़ाहिर की और वो शख़्स छोड़ दिया गया।

अब तीसरा दिन था। हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का दरबार बदस्तूर क़ायम हुआ। तमाम सहाबा जमा हुए वो दोनों मुद्दई भी आए। हज़रत अबुज़र रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भी तशरीफ़ फ़रमा हुए और वक़्त मुक़र्ररा पर मुज़्रिम का इन्तिज़ार करने लगे।

वक़्त गुज़रता जाता था और मुज़्रिम का कुछ पता ना था।

मुद्दय्यों ने कहा, अबुज़र! हमारा मुज़्रिम कहाँ है। उन्होंने कमाल इसतक़लाल से जवाब दिया, अगर तीसरे दिन का वक़्त मुक़र्रर गुज़र गया और वो ना आया तो ख़ुदा की क़सम मैं अपनी ज़मानत पूरी करूंगा। हज़रत फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह संभल बैठे और फ़रमाया अगर वो ना आया तो अबुज़र की निसबत वही काररवाई की जाएगी जिसकी शरीअते इस्लामिया मुताक़ाज़ी होगी।

ये सुनते ही सहाबा इक्राम में तशवीश पैदा हुई। बाज़ आबदीदा और बाज़ की आँखों से बे इख़्तियार आँसूं टपक पड़े। मजबूर होकर लोगों ने उन नो उम्र मुद्दय्यों से कहना शुरू किया के तुम खून बहा क़बूल कर लो उन्होंने इंकार किया के हम खून के बदले खून ही चाहते हैं। ग़र्ज़ लोग उसी परेशानी में थे

के नागहाँ वो मुज्रिम नमूदार हुआ, मगर इस हालत में के पसीने में शराबोर था, और सांस फूली हुई थी वो आते ही हज़रत फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के सामने आया और ख़ंदा पैशानी से सलाम अर्ज़ किया और कहा।

"मैंने उस बच्चे को उसके मामू के सपुर्द कर दिया और उसकी जायदाद उन्हें बता दी, अब जो खुदा और रसूल का हुक्म है बजा लायें, मैं हाज़िर हूँ"।

हज़रत अबुज़र रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया, अमीर-उल-मोमिनीन! खुदा की क़सम मैं जानता भी ना था के ये शख़्स कौन है और कहाँ का रहने वाला है मगर और सब को छोड़ कर मुझे उसने अपना ज़ामिन बना लिया तो मुझे इंकार करना मुरव्वत के ख़िलाफ मालूम हुआ। उसके बशरे ने यक़ीन दिलाया के ये शख़्स अपने अहेद में सच्चा होगा इसलिए ज़मानत दे दी।

उस मुज्रिम नोजवान ने अर्ज़ किया, मैं हज़रत अबुज़र का शुक्रिया अदा करता हूँ, मैं अगर ना आता तो ऐसा कर सकता था मगर एक मुसलमान अपने अहेद को बहर हाल निभाता है और वो कभी अहेद को नहीं तोड़ता।

उसके आ पहुँचने से हाज़रीन में एक मामूली जोश पैदा हो गया। हत्ता के उन नो उम्र मुद्दय्यों ने खुशी में आकर अर्ज़ किया।

अमीर-उल-मोमिनीन! हम ने अपने बाप का खून माफ किया।

सब की तरफ़ से एक नारा मुसर्रत बुलंद हुआ। और हज़रत फारूके रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का चेहरा मारे खुशी के चमकने लगा और फ़रमाया, मुद्दई नोजवानो! तुम्हारे बाप का खून बहा में बैत-उल-माल से अदा करूंगा और तुम अपनी इस नेक नफ़्सी के साथ फायदा भी उठाओगे। उन दोनों ने अर्ज़ किया। हुज़ूर!

अब हमें कुछ लेने का हक़ नहीं और ना कुछ लेंगे।

अलग़र्ज़ इस अजीबो ग़रीब वफाऐ अहेद का वाक़ेया इस मुसर्रत व शादमानी पर ख़त्म हुआ। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 479)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान मुरव्वत और नेक सलूक फ़रमाने वाले और अपने अहेद के पक्के और पूरा करने वाले थे जान देने का सवाल था। मगर क्या मजाल के जान बचाने के लिए अहेद को तोड़ देते चुनाँचे अपने वादे के मुताबिक़ पहुँच गए। एक वो भी पक्के और अहेद के सच्चे मुसलमान थे और एक आज कल के मुसलमान भी हैं जिनका वादा के मुतअल्लिक़ ये ख़याल है के

वो वादा ही क्या जो वफा हो गया

हिकायत नम्बर(238) हरकुल के दरबार में

हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के अहेदे खिलाफत में शाम की लड़ाई में हज़रत अब्दुल्लाह बिन हज़ाफा रज़ी अल्लाहो अन्ह को अस्सी (80) सहाबा इक्राम समेत इसाईयों ने गिरफ्तार कर लिया। मुसलमानों को इस का बड़ा रंज हुआ और अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उमर फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने शाह हरकुल को हस्बे ज़ैल खत लिखा।

मिन अब्दिल्लाही अमीरिलमोमिनीना उमर इब्निल खत्ताबी इला हिराकुला अज़ीमिर्रूमी अम्मा बअदू फाइज़ा वसला इलेका किताबी फबअसू इलय्या बिलअसीरिल्लज़ी इंदका वहुवा अब्दुल्लाही इब्नु हुज़ाफात फइन फअल्लता रजूतू लका अलहिदायाता वइन अबेता बअस्तू इलेका रिजालन वअय्या रिजालिन रिजालुन ला तुलहीहिम तिजारातुन वला बीअउन अन ज़िक्रिल्लाही अमामस्सलातिल अख़

ये खत अल्लाह के बन्दे की तरफ़ से जिसका लक़ब अमीर-उल-मोमिनीन है बादशाह रोम के नाम। ऐ शाहे हरकुल! जिस वक़्त मेरा ये खत तेरे पास पहुँचे उसी वक़्त अब्दुल्लाह बिन हज़ाफा को जो तेरे पास क़ैद है छोड़ दे अगर तू ऐसा करेगा तो तेरे लिए बेहतर होगा और अगर तूने ऐसा ना किया, तो याद रख! मैं ऐसा लश्कर तेरी तरफ़ भेजूंगा। जिस लश्कर के सिपाहियों का ये हाल होगा के वो ऐसे बाखुदा और ज़ाकिर बन्दे होंगे के किसी वक़्त घर में या बाज़ार में तिजारत करते, या सौदा खरीदते वक़्त ज़िक्रे इलाही और नमाज़ पढ़ने से ग़ाफिल नहीं रहते।"

जब ये खत शाहे रोम को मिला तो उसने हज़रत अब्दुल्लाह को उनके साथियों समेत तलब किया और हज़रत अब्दुल्लाह से पूछा।

शाहे रोमः तुम्हारा नबी अरबी से या उमर फारूक़ से क्या रिश्ता है?

हज़रत अब्दुल्लाहः वो हमारे रसूल हैं और ये हमारे अमीर"

शाहे रोमः तुम अगर इसाईयत क़बूल कर लो तो हम किसी बड़े घराने की लड़की तुम्हारे साथ बियाह देंगे और कोई बड़ा ओहदा भी दे देंगे।

हज़रत अब्दुल्लाहः मैं हर गिज़ हर गिज़ दीन मोहम्मदी तर्क नहीं कर सकता।

शाहे रोमः (एक बैश क़ीमत हार मंगवा कर सामने करते हुए) देखो ये हार तुम्हें दे दूंगा और बहुत से गुलाम भी दूंगा बोला क्या इरादा है?

हज़रत अब्दुल्लाहः ऐ हरकुल अगर तू अपना सारा मुल्क भी दे दे तो

इस्लाम के बदले हरगिज़ क़बूल ना करूंगा।

शाहे रोमः अच्छा तो फिर मरने को तैयार हो जाओ।

हज़रत अब्दुल्लाहः ऐ हरकुल! "तू मेरे जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर दे तो भी इस्लाम ना छोड़ूगा"

शाहे रोमः अच्छा तुम इसाईयत क़बूल ना करो, सिर्फ इतना करो के सलीब को सज्दा कर लो तो मैं तुझे उन सब साथियों के समेत छोड़ दूंगा।

हज़रत अब्दुल्लाहः हमारे रसूल ने हमें अल्लाह का ये हुक्म सुनाया है *ला तसजुदू लिश्शम्सी वला लिलक़मरी वसजुदू लिल्लाहिल्लज़ी ख़लाक़ाहुन्ना इन कुंतुम अय्याहू तअबुदूना*

ना सज्दा करो सूरज को ना चाँद को बल्के सज्दा करो अल्लाह को जिसने सूरज चाँद को पैदा किया है। अगर तुम ख़ास अल्लाह की इबादत करने वाले हो।"

शाहे रोमः अच्छा थोड़ी सी शराब ही पी लो मैं अभी छोड़ दूंगा।

हज़रत अब्दुल्लाहः मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ शराब के पीने से।

शाहे रोमः तुम्हें ज़रूर शराब भी पीना पड़ेगी और ख़िंज़ीर के कबाब भी खाना पड़ेंगे।

फिर शाह रोम ने हुक्म दिया के इस शख़्स को क़ैद ख़ाने में तनहा क़ैद कर दो और आस पास शराब और ख़िंज़ीर के कबाब रख दो। सिवाये इसके और कोई चीज़ खाने को ना दो। भूक से तंग आकर खुदबखुद ये चीज़ें खाएगा। चुनाँचे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को तीन रोज़ तक बराबर एक मकान में क़ैद रखा फिर चौथे दिन दरबार में तलब किया और क़ैद खाने के मुहाफिज़ों से पूछा के उसने कुछ खाया पिया? मुहाफिज़ ने कहा के वो सब कुछ इसी तरह रखा है। उसने नज़र उठा कर भी नहीं देखा। शाहे रोम ने हज़रत अब्दुल्लाह से पूछा।

शाहे रोमः तुम ने इन्हें क्यों इस्तेमाल नहीं किया?

हज़रत अब्दुल्लाहः महेज़ अल्लाह के ख़ौफ से।

शाहे रोमः मगर जब जान जाने का ख़तरा हो तो तुम्हारे मज़हब में हराम चीज़ भी हलाल हो जाती है फिर तुम ने इन्हें क्यों इस्तेमाल ना किया?

हज़रत अब्दुल्लाहः मगर मैं वो काम क्यों करूं जिससे एक काफिर की खुशी हो जाए और खुदा नाराज़ हो जाए।

शाहे रोमः (अपना पैर आगे करते हुए) अच्छा अगर रिहाई चाहते हो तो सिर्फ इतना करो के मेरे इस पैर के आगे झुक जाओ...

अगर जाँ को बचाना है तो झुक जा पैर के आगे

हज़रत अब्दुल्लाहः मुसलमाँ हूँ ये सर झुकता नहीं है गै़र के आगे।

शाहे रोमः अच्छा तो लो मेरे माथे को एक बोसा ही दे दो। मैं तुम्हें और तुम्हारे अस्सी भाईयों को फौरन छोड़ दूंगा।

हज़रत अब्दुल्लाहः मुझे ये मंज़ूर है। चुनाँचे आपने बादशाह के माथे को एक बोसा दे दिया जिसे अहले अरब की आदत थी के मुलाक़ात के वक़्त अपने दोस्त के माथे पर बोसा दिया करते थे, शाहे हरकुल ने हज़रत अब्दुल्लाह और अस्सी मुसलमानों को रिहा कर दिया और बहुत कुछ सामान देकर रूख़्सत किया।

जब हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मुसलमानों में वापस पहुँचे तो सब बहुत खुश हुए और बाज़ सहाबा ने खुश तबई से कहा के ये वो हैं जिन्होंने एक काफिर के माथे पर बोसा दिया तो आपने फ़रमाया, बेशक! लेकिन इस बोसे का नतीजा ये हुआ के अस्सी मुसलमानों की जानें क़ैद और मौत से बच गईं। (असद-उल-ग़ाबा व सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 49)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान का इस क़द्र पक्का ईमान था के दुनिया की कोई ताक़त और कोई मुसीबत उनके पाये इसतक़लाल में लग़ज़िश ना ला सकी और वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इस इर्शाद के *ला तुशरिक बिल्लाही वइन हुर्रिक़त ओकुतिलता* यानी हर गिज़ शिर्क ना करना ख़्वाह आग में जलाए या क़त्ल किए जाओ" पर कामिल तौर पर आमिल थे और ये भी मालूम हुआ के जान पर बन आने के वक़्त भी उन्होंने शराब व कबाब की तरफ़ आँख उठा कर भी नहीं देखा ताके एक काफिर खुश ना हो जाए फिर आज कल वो मुसलमान जो ग़ैर मुस्लिमों की दअवतें करते और उनके साथ खाते और उनको खुश करने के लिए शराबें पीते हैं किस क़द्र नाअक़्बत अंदेश और ग़ाफिल हैं और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान अपने भाईयों के बड़े हमदर्द और खैरख़्वाह थे। चुनाँचे उन्होंने जो हरकुल के माथे पर बोसा देना मंज़ूर कर लिया। वो सिर्फ इसलिए के अस्सी मुसलमानों की जान बच जाएँ और उनके पास इस बोसे का मअकूल उज़्र था। फिर आज जो आए दिन कुफ़्फ़ार की नाज़ायज़ इत्तिबा, कुफ़्फ़ार के रस्मो रिवाज की पाबंदी और बद मज़हबों से मसाफहे करना रवादारी समझना हमारा शीवा हो चुका था। सोचो! ऐसे अफ़्राद के पास कौन सा उज़्र मौजूद माकूल है? और ये

भी मालूम हुआ के हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का दुनियाऐ कुफ़्र पर वो रौब व दबदबा तारी था के आपका ख़त पाते ही शाहे रोम ने किसी ना किसी बहाने मुसलमानों को रिहा कर देना मुनासिब समझा।

हिकायत नम्बर(239) बैश क़ीमत मोती

शाम की लड़ाई में हरक़ुल शाहे रोम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हज़ाफ़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह और उनके साथ अस्सी सहाबा इक्राम को क़ैद कर लिया तो हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हरक़ुल के नाम एक ख़त लिखा जिसमें हरक़ुल को हुक्म दिया के वो मुसलमानों को रिहा कर दे वरना उस पर चढ़ाई कर दी जाएगी। शाहे रोम ने ये ख़त पाकर मुलमानों को रिहा कर दिया और रूख़्सत के वक़्त बहुत से बैश क़ीमत मोती हज़रत अमीर-उल-मोमिनीन फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदमत में भेजे। जब वो तोहफा मदीना मुनव्वरह में हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदमत में पेश हुआ तो आपने उनकी क़ीमत को अहले मदीना के जोहरियों से जाँच कराया। जोहरियों ने बताया के उनकी क़ीमत ज़ायद है इसे के जो कोई कुछ लगाए। सहाबा इक्राम ने हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से अर्ज़ किया के हरक़ुल ने ये तोहफा आपको भेजा है आपको मुबारक हो ये हदया है, आप ही क़बूल फ़रमा लीजिए। हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया, तुम्हारी इजाज़त से ये मोती मेरे लिए किस तरह दुरूस्त हो कसते हैं जब तक सारे जहाँ के मुसलमान इजाज़त ना दें। बताओ फिर किसी तरह मुझे इजाज़त मिल सक्ती है। इन मुसलमनों से जो अभी तक माँ के पेट में है। और उम्र में इतनी ताक़त नहीं के जो क़यामत के दिन उन बच्चों की हक़ तलफी की जवाब दही कर सके। फिर हुक्म दिया के इन मोतियों को फ़रोख़्त किया जाए और इसका रुपया बैत-उल-माल में दाख़िल किया जाए। (सीरत-उल-सालेहीन सफ़ा : 51)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान कमाले तक़वा के मालिक थे और दुनिया की हर बैश क़ीमत चीज़ भी उन्हें अपने मसलक से ना हटा सकती थी और वो आक़्बत के पेशे नज़र दुनिया की ज़रा भर भी परवाह ना फ़रमाते थे, फिर वो लोग जो एक एक पैसे की ख़ातिर दीनो ईमान तर्क कर देने के आदी हों। अगर हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो

तआला की ज़ात ग्रामी पर (मआज़ अल्लाह) कोई एत्राज़ करें तो वो किस क़द्र ज़ालिम और गुमराह हैं।

हिकायत नम्बर(240) मुजाहेदाना जवाब

क़ुरैशे मक्का ने मुसलमानों को तंग करने के लिए जब जंगे बद्र की बुनियाद डाली तो हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़्वान में से मुहाज्रीन ने जवाब दिया। या रसूल अल्लाह आप वही करें जिस बात का खुदा ने आपको हुक्म दिया हे। हम आपके साथ हैं। खुदा की क़सम हम ऐसा नहीं कहेंगे। जैसा के बनी इस्राईल ने अपने पैग़म्बर हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम से कहा था *इज़्हब अन्ता व रब्बुका फक़ातिला इन्ना हाहुना क़ाईदून* यानी जा तू और तेरा रब दोनों जाकर लड़ो, हम तो यहीं बैठेंगे।"

या रसूल अल्लाह! हम हुज़ूर के नाम पर क़ुर्बान हो जाने को तैयार हैं। अनसार ने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! हम आप पर ईमान ले आए हैं। उस खुदा की क़सम जिसने आपको मबऊस फ़रमाया है। अगर आप हमें दरया में कूद जाने को इर्शाद फ़रमाऐंगे तो हम उसमें कूद जायेंगे या रसूल अल्लाह! आप हम से मशवरा क्यों तलब फ़रमाते हैं? हम बे वफाई करने वाले नहीं हैं...

तआला अल्लाह ये शेवा ही नहीं है बावफाओं का
पिया है दूध हम लोगों ने ग़ैरत वाली माँओं का
नबी का हुक्म हो तो कूद जायेंगे हम समुंद्र में!
जहाँ को महू कर दें नारा-ए-अल्लाहो अक्बर में

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने सहाबा का ये मुजाहिदाना जवाब पाकर बड़े खुश हुए। (तारीखे इस्लाम व मदारिज-उल-नबुव्वत सफ़ा 53 जिल्दः 2)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़्वान हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सच्चे जाँनिसार और रफ़ीक़ थे और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इशारे पर बड़ी से बड़ी क़ुर्बानी देने को तैयार हो जाते थे और हर मौके पर उन्होंने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मईयत व रफ़ाक़त का मुज़ाहेरा फ़रमाया और किसी वक़्त भी उन्होंने अपने नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से बे वफाई नहीं की। वो पाक लोग गोया इस शैर के मिसदाक़ थे।

मोहरो वफ़ा में यार ने जब इम्तिहाँ लिया
सब आशिक़ों में नम्बर अव्वल हमीं रहे

फिर अगर कोई जफ़ा कारान बा वफ़ा हज़रात की वफ़ा पर किसी क़िस्म का शक व शुबह करे तो उसे ये रूबाई क्यों ना सुनाई जाए के

हासिद के लिए दोज़ख़ उसका सीना
जलती है जहाँ आतिशे बुग्ज़ व कीना
दिल साफ़ हो हासिद का है मुश्किल इर्शाद
कब साफ़ धुएँ में रहा है आईना

हिकायत नम्बर(241) मोहम्मद की दुहाई

मदीने मुनव्वरह के एक बाज़ार से एक दहक़ानी औरत गुज़र रही थी के चन्द यहूदी ओबाशों ने उस पर दस्त दराज़ी शुरू कर दी वो बेचारी उनकी नाजायज़ हरकतों को देख कर घबराई और

ना हिफ़्ज़े आबरू की जब कोई सूरत दिखाई दी
तो उस मज़लूम औरत ने मोहम्मद की दुहाई दी
पुकारी क्या! नहीं ग़ैरत, किसी इंसाँ के सीने में
के यूं बे आबरू हूं मैं मोहम्मद के मदीने में

उस औरत की ये फ़रयाद एक मुसलमान के कानों में पड़ी, और वो दौड़ा हुआ मदद करने वहाँ पहुँच गया। और उन यहूदियों से लड़ने लगा हत्ता के उस औरत की इज़्ज़त बचाने की ख़ातिर खुद शहीद हो गया। (तारीख़े इस्लाम सफ़ा 157, जिल्द:1)

सबक़:- मुसलमान बड़ा ग़यूर और शुजा है और वो बेहयाई फ़हाशी और बेशर्मी के हर काम के ख़िलाफ़ सीना सप्र हो जाता है।

हिकायत नम्बर(242) दो नन्हे मुजाहिद

जंगे बद्र में जब नूर व ज़ुल्मत, कुफ्र व इस्लाम का मअरका शुरू था और अबु जहल अपने लश्कर को मुसलमानों से लड़ा रहा था। तो हज़रत 'अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फ़रमाते हैं के मेरे दिल की तमन्ना थी के मैं किसी तरह इस सरगिरोह कुफ़्फ़ार अबुजहल को क़त्ल कर दूं। मगर मौक़ा ना पा सका। इसी तमन्ना में था के मेरे दायें बायें दो नन्हे मुजाहिद (मआज़ मऊज़ दो सगे भाई) तलवारें लिए आ खड़े हुए...

अभी नो उम्र थे दोनों के हाथों में थीं शमशीरें
नज़र आईं मुझे दो सादा रू मासूम तसवीरें
बहुत शाईस्ता खुश अतवार कम उम्र व हसीं दोनों
फरिश्तों की तरह आए थे बालाऐ ज़मीन दोनों

उन दोनों नन्हे मुजाहिदों ने आते ही पूछा तो क्या? फ़रमाते हैं...

निहायत राज़दारी से निशाँ अबु जहल का पूछा
शबाहत और हुलिया और मौजूदा पता पूछा

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं मैंने पूछाः बच्चू! इस बेदीन से तुम्हारा क्या काम है? तो बोले

क़सम खाई है मर जायेंगे या मारेंगे नारी को
सुना है गालियाँ देता है वो महबूबे बारी को

फरमाते हैं: मैं उनकी जुर्रात पर हैरान व शशिद्र रह गया और फिर उनकी शहादत के ख़याल से तड़प कर रह गया मगर उन बच्चों का जवाब ये था के बेशक मौत सामने है...

मगर इश्शाक़ अपनी जान की परवाह नहीं करते
खुदा से डरने वाले मौत से हरगिज़ नहीं डरते

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया बच्चू! अबु जहल तक तुम्हारी रसाई कैसे होगी के

हिफाज़त कर रहा है गर्द उसके फौज का दस्ता

बच्चों ने कहा...

ये दस्ता कब तलक रोकेगा इज़्राईल का रस्ता

आख़िर हज़रत अब्दुर्रहमान ने अबु जहल का निशान बताया, तो

खुदा हाफिज़ कहा और खींच लीं दोनों ने शमशीरें
बढ़े यकबारगी कहते हुए पुर जोश तकबीरें
अबु जहल सियाः रू पर निगाहें गाड़ के दौड़े
क़ुरैशी फौज के दल बादलों को फाड़ कर दौड़े

ये दोनों नन्हे मुजाहिद अबु जहल पर जा झप्टे, अबु जहल ने बचने की हज़ार कोशिश की, मगर उसे नन्हे मुजाहिदों के हाथों फीन्नार होना ही था। दो नन्ही नन्ही तलवारें बे दीन पर ऐसी पड़ीं के घोड़े समेत ज़मीन पर आकर गिर। और दम तोड़ने लगा। कुफ़्फार ने जब अपने सरदार को मरते देखा तो उन दोनों मासूमों बच्चों पर लश्कर टूट पड़ा। मगर अल्लाह रे इश्क़े मुसतफा के उन नन्हे मुजाहिदों ने जी ना हारा। बहुत से काफिरों को फीन्नार करके

पहले हज़रत मऊज़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह शहीद हो जाते हैं और दूसरे भाई हज़रत मआज़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तनहा कुफ़्फ़ार में रह जाते हैं। लड़ते लड़ते हज़रत मआज़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का एक बाज़ू कट जाता है ओर एक तसमा साबाक़ी रह जाता है जिससे बाज़ू लटक कर रह गया। हज़रत मआज़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तलवार दूसरे हाथ में लेकर लड़ना शुरू कर देते हैं। मगर कटा हुआ हाथ एक तसमा रह जाने की वजह से लटकता हुआ हाथ तलवार चलाने में मुख़्ल जो नज़र आया। तो अल्लाह की रहमतें उस नन्हे मुजाहिद की हिम्मत व जुर्रात पर के उस हाथ को अपने पाँओं के नीचे दबा कर ज़ोर से खींचा और इस तसमे को भी तोड़ कर हाथ अलग फैंक दिया और फिर इतमीनान से लड़ने लगा। (मदारिज-उन-नबुव्वत सफ़ा 65 जिल्द:2)

सबक़:- बड़े बड़े सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान के अलावा जो कमसिन सहाबी थे। अल्लाह की राह में क़ुर्बान हो जाने का जज़्बा उनमें भी बदर्जा उत्तम मौजूद था और हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से उन्हें इस क़द्र प्यार था के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के खिलाफ कोई बात सुनना उनके लिए ना गवार था और अल्लाह व रसूल की मोहब्बत के दरमियान वो जिस चीज़ को हायल देखते उसे फी-अल-फौर अलग कर देते थे। चाहे उनका वो बाज़ू ही क्यों ना हो और उनका ये ईमान था के

मोहम्मद है मताए आलम ईजाद से प्यारा
पद्र, मादर, बरादर, जान व माल, औलाद, से प्यारा

हिकायत नम्बर(243) आराबी का घोड़ा

हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने एक आराबी से घोड़ा खरीदा। वो बेच कर मुकर गया और गवाह माँगा। जो मुसलमान आता। आराबी को झिड़कता के खराबी हो तेरे लिए! रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हक़ के सिवा क्या फ़रमाऐंगे। हर मुसलमान यही कहता मगर गवाही कोई ना देता। इसलिए के किसी के सामने ये वाक़ेया ना था। इतने में हज़रत ख़ज़ीमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह आ गए और गुफ़्तगू सुनकर बोले! मैं गवाही देता हूँ के तूने अपना घोड़ा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के हाथ बेचा है हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया: तुम मौजूद थे

ही नहीं फिर तुम ने गवाही कैसे दी? अर्ज़ किया! या रसूल अल्लाह आप हमें आसमान की ख़बरें सुनाते हैं और हम बग़ैर देखे आपकी ज़बाने हक़ तर्जुमान पर यक़ीन करके उनकी तसदीक़ करते हैं। फिर ये ख़बरें जो ज़मीन की है। उसकी तसदीक़ क्यों ना करूं? हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हज़रत ख़ज़ीमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का जवाब सुनकर बहुत खुश हुए और उसके इनाम में हज़रत ख़ज़ीमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की गवाही दो मर्दों के बराबर फ़रमा दी और फ़रमायाः ख़ज़ीमा जिस किसी के नफ़े व ज़रर की गवाही दें एक उन्हीं की गवाही काफी है। (अबु दाऊद, सफ़ा 341 जिल्दः 2)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान ने हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम के हर इर्शाद की तसदीक़ की और उनका ईमान था के ज़बान नबुव्वी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से जो इर्शाद होता है हक़ ही होता है। और इस ज़बान से कभी ख़िलाफ़े वाक़ेया बात निकल नहीं नहीं सकती। फिर अगर कोई शख़्स अल्लाह तआला ही के मुतअल्लिक़ यूं कहने लगे के वो झूट भी बोल सकता है तो वो किस क़द्र ज़ालिम और झूटा है और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुख़्तार और अहकामे शरीअत के मालिक हैं। किसी हुक्म से जिसे चाहें मुसतसना फ़रमा लें। चुनाँचे क़ुरआन का हुक्म ये है के *वअशहिदू नवा अदूलिन मिनकुम* (प28, रूकू 17) और अपने मैं दो सक़ा को गवाह कर लो" इस हुक्मे क़ुरआन से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ख़ज़ीमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को मुसतसना फ़रमा दिया और उनकी अकेले ही की गवाही को दो मर्दों की गवाही के बराबर फ़रमा दिया। साबित हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम शारअे और मालिक व मुख़्तार हैं।

हिकायत नम्बर (244) निराली सज़ा

एक सहाबी से रमज़ान शरीफ के महीने में रोज़ा टूट गया। वो बारगाहे नबुव्वी में हाज़िर हुए और अर्ज़ की: या रसूल अल्लाह! मैंने रमज़ान में अपनी औरत से नज़दीकी की। मैं हलाक हो गया। फ़रमाईये अब मैं क्या करूं? हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमायाः ग़ुलाम आज़ाद कर सकते हो? अर्ज़ किया नहीं या रसूल अल्लाह! फ़रमाया लगातार दो महीने रोज़े रख सकते हो? अर्ज़ की नहीं

या रसूल अल्लाह! फ़रमाया साठ मिसकीनों को खाना खिला सकते हो? अर्ज़ की। या रसूल अल्लाह! ये भी नहीं कर सकता। इतने में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की खि़दमत में किसी ने कुछ खजूरें हदया हाज़िर कीं। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने वो सारी खजूरें उस शख़्स को दे दीं और फ़रमाया इन्हें खैरात कर दे। तुम्हारा कुफ़्फारा हो जाएगा। वो बोला या रसूल अल्लाह! मदीने भर में मेरे बराबर कोई मोहताज नहीं। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ये बात सुनकर हंसे यहाँ तक के दंदाने मुबारक आशकार हुए और फिर फ़रमायाः *इज़ हब फअतइमहू अहलका* जा अपने घर वालों को ही खिला दे तेरा कुफ़्फारा अदा हो जाएगा। (बुखारी शरीफ, सफ़ा 360, ज़िल्दः 1)

सबक़:- किसी सहाबा से बतक़ाज़ाऐ बशरीयत अगर कोई लग़ज़िश वाक़े हुई भी तो फौरन उसका तदारूक फ़रमाते। बे परवाही से काम नहीं लेते थे। और माफी के लिए वो बारगाहे नबव्वी ही में हाज़िर होते। इसलिए के उनका ईमान ये था के खुशनूदी उसी दरेपाक से हासिल हो सकती है और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम का ये ईमान था के हमारे हुज़ूर मालिक व मुख़्तार हैं और शरीयत उन्हीं के इर्शाद का नाम है, इसीलिए तो हुज़ूर के फ़रमाने पर के गुलाम आज़ाद कर सकता है। दो महीने के लगातार रोज़े रख सकता है, साठ मिसकीनों को खाना खिला सकता? वो सहाबी यही फ़रमाते रहे के नहीं या रसूल अल्लाह! गोया उनका ईमान था के हुज़ूर कुफ़्फारा की इन तीनों क़िस्मों के सिवा अगर चाहें तो मेरे लिए कोई चौथी क़िस्म का कुफ़्फारा भी इर्शाद फ़रमा सकते हैं। चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने भी अपने मुख़्तार होने पर अपनी मोहर तसदीक़ यूं सिब्त फ़रमा दी के अच्छा जाओ तुम्हारे लिए हम कुफ़्फारा ये मुक़र्रर फ़रमाते है। के बजाए कुछ देने के, लिए जाओ। और फिर जब इस सहाबी ने ये अर्ज़ किया के मदीने भर में मेरे बराबर कोई मोहताज नहीं तो यूं फ़रमाया के अच्छा जाओ खुद ही खा लो। तुम्हारा कुफ़्फारा हो जाएगा गोया जहाँ सारे मुसलमानों के लिए रोज़ा तोड़ने का कुफ़्फारा ये है के गुलाम आज़ाद करे या मुतावातिर साठ रोज़े रखे या साठ मिसकीनों को खानों खिलाए वहाँ सिर्फ उसी सहाबी के लिए सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने कुफ़्फारा ये मुक़र्रर फ़रमाया के तुम्हारा कुफ़्फारा ये है के तुम बजाए

कुछ देने के हमारी जानिब से ले जाओ और बजाए किसी पर खर्च करने के खुद ही खा भी लो ये है सरकार मदीना की बारगाह बेकस पनाह...

ये वही हैं जो बख़्श देते हैं
कौन इस जुर्म पर सज़ा ना करे

फिर जो लोग हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मालिक व मुख़्तार होने पर शुबह करें किस क़द्र नावाक़िफ़ हैं।

हिकायत नम्बर (245) सोने की अंगूठी

एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में बहुत ग़नीमत का माल हाज़िर था और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उसे तक़सीम फ़रमा रहे थे। जब सारा माल आप बाँट चुके तो एक सोने की अंगूठी बच गई। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नज़र मुबारक उठा कर सहाबा इक्राम को देखा और फिर नज़र मुबारक नीची कर ली। फिर नज़र उठा कर मुलाहेज़ा फ़रमाया फिर निगाह मुबारक नीची कर ली फिर नज़र उठा कर देखा और हज़रत बराअ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को बुलाया। हज़रत बराअ हाज़िर हुए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया बैठ जाओ बराअ बैठ गए हुज़ूर ने अंगूठी लेकर हज़रत बराअ की कलाई थाम ली और फिर फ़रमाया पहन ले जो कुछ तुझे अल्लाह रसूल पहनाते हैं। हज़रत बराअ ने वो अंगूठी पहन ली। उसके बाद दोस्तों ने हज़रात बराअ से फ़रमाया। इसे बराअ तुम ये सोने की अंगूठी क्यों पहनते हो जब के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उससे मुमानअत फ़रमाई है हज़रत बराअ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने सारा वाक़ेया सुनकर जवाब दिया के जो अंगूठी मुझे खुद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने ये फ़रमा करके "पहन ले" पहनाई है। मैं क्यों ना पहनूं। (इब्ने अबी शीबा, अलअम्न व अलअला सफ़ा 168)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान का ईमान था के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का इर्शाद ही शरीअत है वो जिस चीज़ से रोक दें वो ना जायज़ है और वो जिस किसी को किसी चीज़ की इजाज़त दे दें उसके लिए वो जायज़ है। चुनाँचे सोने की अंगूठी और सारे मुसलमानों के लिए तो हराम और सिर्फ हज़रत बराअ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के लिए जायज़। इसीलिए हज़रत बराअ वो अंगूठी पहनते रहे।

हिकायत नम्बर (246) सरदार हवाज़न

ग़ज़्वा-ए-हुनैन में जब मुशरिकीन भाग गए तो उस लड़ाई में क़बीला हवाज़न के सरदार मालिक बिन ओफ भी भागे और तायफ में जाकर पनाह गज़ीर हो गए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के मालिक बिन ओफ अगर ईमान लाकर हाज़िर हो तो हम उसके अहलो माल उसे वापस दे देंगे। ये ख़बर मालिक बिन ओफ को पहुँची तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और ईमान ले आए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उनके अहलो माल उन्हें वापस दे दिए और सौ ऊँट अपने ख़ज़ाने करम से अता किए रहमत आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बहेर रहमत का जोश मुलाहेज़ा फ़रमा कर हज़रत मालिक बिन ओफ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को मुख़ातिब फ़रमा कर ये क़सीदा अर्ज़ किया...

मा इन राऐतू वला समीअतू बिवाहीदिन
फीन्नास कुल्लीहिम कमिस्ली मोहम्मदी
ओफा व आता लिलजज़ीयली लिमुजतदी
व मता तशा युख़्बिरूका अम्मा फी ग़दी

मैंने तमाम जहान के लोगों में मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मिस्ल कोई ना देखा ना सुना। हुज़ूर सबसे ज़्यादा वफा फ़रमाने वाले और सबसे ज़्यादा तर सायल को कसरत के साथ अता फ़रमाने वाले हैं और जब तू चाहे हुज़ूर कल की ख़बर बता दें। " (असाबा सफ़ा 352, वअलअमन व अलअला सफ़ा 203)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान का ईमान था के हुज़ूर सल-लल्लाहे अलेह व सल्लम माँगने वालों के लिए दाता हैं और हुज़ूर कल की बात को भी जानने वाले हैं फिर अगर कोई शख़्स हुज़ूर को अपनी मिस्ल बशर कहे या यूं कहे के हुज़ूर कुछ नहीं दे सकते। या क्यों कहे के हुज़ूर को आईंदा की बात का और गैब का कोई इल्म ना था, वो किस क़द्र जाहिल और सहाबा इक्राम के अक़ीदे का मुख़ालिफ है और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम की शैरों में नअत ख़्वानी करना बिदअत नहीं बल्के सहाबा इक्राम की सुन्नत है।

हिकायत नम्बर (247) कमाले अद्ल

हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाह तआला अन्ह के अहेदे खिलाफत में हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मिस्र के गवरनर थे। एक बार हज़रत उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साहबज़ादे ने एक मिस्री शख़्स के साथ दौड़ की तो वो मिस्री शख़्स आगे निकल गया। साहबज़ादे को गुस्सा आया और वो उस मिस्री शख़्स को कोड़े मारने लगे। मिस्री इस ज़ुल्म की फ़रयाद लेकर हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की बारगाह में हाज़िर हो गया और फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से फ़रयाद की के मुझे गवरनर के बेटे ने नाहक़ कोड़े मारे हैं। हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमान नाफिज़ किया के उमरो बिन आस अपने बेटे के हमराह हाज़िर हों। चुनाँचे फ़रमान फारूकी पाकर गवरनर मअे बेटे के हाज़िर हुए। अमीर-उल-मोमिनीन फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मिस्री को हुक्म दिया के कोड़ा ले, और अपने मारने वाले को मार। उसने बदला लेना शुरू किया और फारूके आज़म फ़रमाते जाते मारो उसको। हज़रत उन्स रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फ़रमाते हैं के उसने इस क़द्र मारा के हम तमन्ना करने लगे के काश अब हाथ उठा ले। जब मिस्री फारिग़ हुआ तो फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया: अब ये कोड़ा उमरो बिन आस की चन्दिया पर रख। यानी ये वहाँ के हाकिम थे। उन्होंने क्यों ना दादरसी की और बेटे का क्यों लिहाज़ किया। मिस्री ने अर्ज़ किया! या अमीर-उल-मोमिनीन! उनके बेटे ही ने मुझे मारा था। उससे बदला मैं ले चुका। फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उमरो बिन आस रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से फ़रमाया तुम लोगों ने बन्दगाने खुदा को कब से अपना गुलाम बना लिया। हालाँके वो माँ के पेट से आज़ाद पैदा हुए थे। हज़रत उमरो बिन आस ने अर्ज़ की। या अमीर-उल-मोमिनीन ना मुझे ख़बर हुई ना ये शख़्स मेरे पास फ़रयादी आया तो फारूके आज़म ने उन्हें माफ फ़रमा दिया (अलअमन वअलअला सफ़ा 245)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान के अहेद में हर मज़लूम की फ़रयाद सुनी जाती थी और ज़ालिम चाहे गवरनर का बेटा ही क्यों ना होता। उसे सज़ा मिल जाती थी और हर शख़्स आज़ादी से बहरावर था और ये भी मालूम हुआ के फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह वाक़ई फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह थे। अद्लो इंसाफ के बादशाह

थे। और आपके ज़ात वाला सिफात पर सारी उम्मत को बजा तौर पर फख्र व नाज़ है...

हुसन दर आलम पस्ती सर रफ़अत अगरदारी
बया फर्क़ इरादत बरदर फारूके आज़म(र०अ०) सा

हिकायत नम्बर(248) खुदा की अमानत

हज़रत अबु तलहा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जब घर वापस आए तो पूछा के लड़का कैसा है? आपकी बीवी उम्मे सलीम ने जवाब दिया। आराम में है, ये कहकर अबु तलहा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के आगे खाना रखा। जब खाना खाने से फारिग़ हुए तो उम्मे सलीम बोली के एक मसला तो बताईये मेरे पास अगर किसी ने कोई अमानत रखी हो और कुछ दिनों के बाद वो शख़्स अपनी अमानत वापस तलब करे तो क्या मुझे वापस दे देना चाहिए या नहीं? हज़रत अबु तलहा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फ़रमाने लगे ये भी कोई पूछने की बात है फौरन वापस दे देना चाहिए। उम्मे सलीम ने कहा और वापस देकर उसका कोई रंजो ग़म तो नहीं करना चाहिए। अबु तलहा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बोले नहीं, वो बोलीः तो फिर सुनिए! हमारा लड़का जो खुदा वंद करीम ने हमें अमानत दी थी वो वापस ले ली है और लड़के का इन्तिक़ाल हो गया है। अब सब्र कीजिएगा। अबु तलहा ने ये सुनकर सब्र किया। और रात गुज़रने के बाद सुबह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और हुज़ूर से सारा माजरा अर्ज़ किया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। खुदा तआला आज रात तुम्हें लिए बाबर्कत करे। चुनाँचे अबु तलहा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को खुदा तआला ने एक लड़का अता फ़रमाया जब पैदा हुआ तो अबु तलहा उसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बारगाह में लाए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उसकी पैशानी पर हाथ फेरा और उसका नाम अब्दुल्लाह रखा। अब्दुल्लाह जब तक ज़िन्दा रहा। हुज़ूर के हाथ मुबारक फेरने की जगह यानी पैशनी बहुत नूरानी और रोशन नज़र आती थी। (हुज्जत-उल्लाह अलआलमीन सफ़ा 580)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान मर्द और औरतें सभी की रज़ा पर राज़ी थे। और उनके मुंह से कभी कोई ख़िलाफे शरअे आवाज़ ना निकली थी। और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम मुसीबत

के वक़्त अपना दुखः दर्द बयान करने के लिए हुज़ूर ही की बारगाह में हाज़िर होते थे। और हुज़ूर की दुआओं से मुसतफ़ीद होते थे और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर ना सिर्फ ये के खुद नूर हैं बल्के नूर अता फ़रमाने वाले भी हैं...

जो भी आता है लिए जाता है तोड़ा नूर का
नूर की सरकार है क्या उसमें तोड़ा नूर का

हिकायत नम्बर (249) खून मुबारक

हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने एक मर्तबा पछनियाँ लगवाईं लगवाईं और जो खून मुबारक निकला हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने एक सहाबी से फ़रमाया के उसे गिरा आओ वो सहाबी खून मुबारक को लेकर एक दीवार के पीछे गए और दायें बायें देखकर उस खून मुबारक को पी गए और जब वापस आए तो हुज़ूर ने फ़रमाया उस खून को क्या कर आए अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! उसे दीवार के पीछै ग़ायब कर आया हूँ फ़रमाया लेकिन किस जगह? उसने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मुझे आपका खून मुबारक ज़मीन पर गिराना या ज़मीन में दबाना बहुत गराँ मालूम हुआ के हुज़ूर के खून अक़्दस की बेअदबी ना हो और किसी का पाँऊ ऊपर ना आ जाए इसलिए मैंने तो उसे पी लिया है हुज़ूर ने फ़रमायाः *इज़ हब अहरज़ता नफसका मिनन्नार* जा तूने अपने आपको दोज़ख़ की आग से बचा लिया। (अलअनवार-उल-मोहम्मदिया, सफ़ा 140)

सबक़ः- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान के दिलों में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का बेहद अदबो एहत्राम था और उसी अदबो एहत्राम के पेशे नज़र वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का खून मुबारक पी गए हालाँके हुज़ूर ने पी जाने का इर्शाद नहीं फ़रमाया था। मालूम हुआ के जो काम हुज़ूर के अदबो एहत्राम के पेशे नज़र किया जाए वो अगरचै हुज़ूर ने ना भी फ़रमाया हो तो भी वो अच्छा और दोज़ख़ से बचा लेने वाला होता है और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ात बाबर्कत बे मिस्ल और मुमतनअे-उल-नज़ीर है एक हमारा खून भी है के कपड़े को या जिस्म को लग जाए तो कपड़ा और जिस्म नापाक हो जाता है और एक वो खून मुबारक भी है जिस जिस्म से लग गया वो जहन्नुम से आज़ाद हो गया।

हिकायत नम्बर (250) नाबीना सहाबी

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में एक नाबीना सहाबी हाज़िर हुए और अर्ज़ की या रसूल अल्लाह दुआ फ़रमाईये मैं अच्छा हो जाऊँ। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया: अगर चाहो तो ये बात मोख़्ख़िर कर दूं अगर चाहूं तो अभी दुआ करूं। उसने अर्ज़ किया या रसूल अल्ल्लाह! अभी दुआ फ़रमाईये, हुज़ूर ने फ़रमाया: अच्छा तो यूं करो। वज़ू करो और दो रकअत नमाज़ पढ़ो। और ये दुआ माँगो।

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलूका व अतावज्जाहू इलेका बिमोहम्मदिन नबीय्यी अर्रहमती या मोहम्मदू इन्नी क़द तवज्जहतू बिका इला रब्बी फी हाज्जती हाज़िही लीतुक़्ज़ा ली अल्लाहुम्मा फशफ़्फ़ीऊहू फिय्या

"इलाही मैं तुझ से माँगता और तेरी तरफ़ तवज्जह करता हूँ। तेरे नबी मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वसीले से जो मेहरबानी के बनी हैं। या रसूल अल्लाह! मैं हुज़ूर के वसीले से अपने रब की तरफ़ अपनी इस हाजत की तवज्जह करता हूँ ताके मेरी हाजत रवा हो या इलाही उन्हें मेरा शफ़ीअ कर! उनकी शफाअत मेरे हक़ में क़बूल कर। (इब्ने माजा, सफ़ा 100)

चुनाँचे उस नाबीना सहाबी ने ऐसा ही किया और रावी कहते हैं के वो यूं अच्छे हो गए जैसे कभी नाबीना थे ही नहीं। (हाशिया इब्ने माजा सफ़ा मज़कूर)

सबक़:- सहाबा इक्राम इलेहिम-उर-रिज़्वान मुसीबत के वक़्त इज़ाला मुसीबत के लिए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ करते थे और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का वसीला और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से मदद तलब करना या मोहम्मद का नारा लगाना और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को हर्फ़े निदा से पुकारना शिर्क हर गिज़ नहीं है बल्के ये हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की अपनी तालीम है और हुज़ूर ने खुद सिखाया है के दुआ माँगो, तो मेरे वसीले से और मुझे पुकार कर माँगा करो। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सामने रह कर या अलग होकर। क़रीब होकर या दूर रह कर हर हालत में "या मोहम्मद" कह सकते हैं। इसलिए के इस नाबीना सहाबी को जो ये दुआ सिखाई तो इसमें ये बात नहीं

फ़रमाई के नमाज़ पढ़कर दुआ का ऊपर का टुकड़ा तो अल्लाह तआला से अर्ज़ करना और इसके बाद फिर मेरे पास आकर "या मोहम्मद" से आख़िर तक अर्ज़ करना। मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का वसीला और आप से इसमदाद और नारा-ए-रिसालत ये सब बातें बड़ी अच्छी और मौजिबे इजाबत दुआ और बाइसे सद बर्कात हैं और सहाबा इक्राम का उन पर अमल था।

हिकायत नम्बर(251) एक हाजतमंद

एक हाजतमंद शख़्स अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की बारगाह में अपनी किसी हाजत के लिए हाज़िर हुआ करते थे। मगर हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह उनकी तरफ़ इलतिफात ना फ़रमाते थे। और ना उनकी हाजत पर ग़ौर फ़रमाते थे। एक दिन वो हाजतमंद हज़रत इब्ने हनीफ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से मिले। ओर उनसे शिकायत की के मुझे एक बड़ी ज़रूरत है। मगर अमीर-उल-मोमिनीन मेरी तरफ़ तवज्जह ही नहीं फ़रमाते। हज़रत इब्ने हनीफ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया तुम वज़ू करके मस्जिद में जाओ और दो रकअत नमाज़ पढ़ो। फिर यूं दुआ करो

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलूका वअतूवज्जाहू इलेका बिनाबय्यना मोहम्मदिन सल-लल्लाहो अलेह व सल्लमा नबय्यी अर्रहमती या मोहम्मदू इन्नी अतवज्जाहू बिका इला रब्बी फयक़्ज़ी हाजती

"इलाही! मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तेरी तरफ़ हमारे नबी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम नबी रहमत के वसीले से मुतवज्जह होता हूँ। या रसूल अल्लाह! मैं हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वसीले से मुतवज्जह होता हूँ। या रसूल अल्लाह! मैं हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वसीले से अपने रब की तरफ़ तवज्जह करता हूँ के मेरी हाजत रवा फ़रमाईये"

और फिर ये दुआ पढ़कर अपनी हाजत को याद करना और शाम को मेरे पास आना, ताके मैं तुम्हारे साथ चलूं। चुनाँचे उस शख़्स ने ऐसा ही किया और फिर अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दरवाज़े पर हाज़िर हुए तो दरबान आया। और हाथ पकड़ कर अमीर-उल-मोमिनीन के हुज़ूर ले गया। अमीर-उल-मोमिनीन ने उसे अपने साथ मसनद पर बिठा लिया और फ़रमाया कैसे आए? उसने अपनी हाजत

पेश की। अमीर-उल-मोमिनीन ने फौरन वो हाजत पूरी फ़रमा दी। और फ़रमाया के इतनी देर तुम ने ये हाजत हम से बयान क्यों ना की।

और फ़रमाया! आईंदा जब कभी कोई हो हम से कह दिया करो। हम पूरी करेंगे। अब ये साहब बाहर निकले और हज़रत इब्ने हनीफ रज़ी अल्लाह तआला अन्ह से मिले और उनसे कहाः खुदा आपको जज़ा-ए-खैर दे। अमीर-उल-मोमिनीन तो मेरी तरफ़ तवज्जह ही ना फ़रमाते थे। मगर आज तो उन्होंने बड़ी मेहरबानी फ़रमाई और मुझे खुद ही अन्दर बुला कर मेरी हाजत फौरन पूरी कर दी। इब्ने हनीफ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह कहते हैं। खुदा की क़सम मैंने तुम्हारे बारे में अमीर-उल-मोमिनीन को कुछ नहीं कहा। मगर वाक़ेया ये के मैंने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को देखा के एक नाबीना हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपनी नाबीनाई की शिकायत हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम से की तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया तुम वज़ू करके दो रकअत नमाज़ पढ़ो और ये दुआ पढ़ो। जो मैंने तुम को बताई है। खुदा की क़सम हम उठने भी ना पाए थे। बातें ही कर रहे थे के वा नाबीना हमारे पास बिलकुल बीना होकर आए। गोया कभी उनकी आँखों में कोई नुक़सान हुआ ही ना था। (तिबरानी शरीफ, सफ़ा 103 और हाशिया इब्ने माजा, सफ़ा 100)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान मुश्किल और हाजत के वक़्त हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का वसीला इख़्तियार फ़रमाते थे और अपनी दुआओं में "या मोहम्मद" का नारा लगाया करते थे और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम का ये ईमान था के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की इस दुनयवी ज़िन्दगी में भी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का वसीला ज़रूरी है और आपके विसाल शरीफ के बाद भी आपका वसीला ज़रूरी है और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की इस दुनयवी ज़िन्दगी में भी "या मोहम्मद" कहते रहे और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के विसाल शरीफ के बाद भी ये नारा लगाते रहे।

हिकायत नम्बर (252) असीर रोम

हज़रत अबु क़रसाफा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का एक बेटा था जो इसाईयों के साथ एक जंग में लड़ते हुए पकड़ा गया और रोमी इसे कैदी बना

कर अपने मुल्क में ले गए और जेल में डाल दिया। हज़रत अबु क़रसाफा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह उस वक़्त असक़लान में थे। आपको जब अपने बेटे की गिरफ़्तारी का और जेल में डाल दिए जाने का इल्म हुआ तो आप अपने शहर से हर नमाज़ के वक़्त अपने बेटे को यूं पुकारतेः

"या फलान अस्सलात" यानी ऐ बेटे नमाज़ का वक़्त हो गया।

हज़रत अबु क़रसाफा रज़ी अल्लाह तआला अन्ह की ये आवाज़ उनका बेटा जेल में सुन लेता और जवाब देता, हालाँके बाप बेटे के दरमियान समुंद्र हायल था। (तिबरानी शरीफ सफ़ा 90)

सबक़ः- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान में निदा-ए-ग़ायबाना का रिवाज था और वो दूर से हर्फ़ "या" के साथ किसी ग़ायब शख़्स को पुकारना मना नहीं समझते थे और वो दूर की आवाज़ सुन भी लिया करते थे फिर जिस मेहबूब (सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) के ग़ुलामों में दूर की आवाज़ सुन लेने की ताक़त है वो मेहबूबे पाक सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम खुद क्यों दूर की आवाज़ सुन नहीं सकते? सुनते हैं और ज़रूर सुनते हैं...

दूर व नज़दीक के सुनने वाले वो कान
काने लअले करामात पे लाखों सलाम

हिकायत नम्बर(253) नअत ख़्वानी

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जब ग़ज़्वा-ए-तबूक से वापस तशरीफ़ लाए और सहाबा इक्राम समेत मदीना मुनव्वरह में दाख़िल हुए तो मदीने वालों में मुसर्रत की एक लहर दौड़ गई और हुज़ूर के इसतक़बाल के लिए सब आगे बढ़े उस वक़्त हज़रत अब्बास रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने आगे बढ़कर अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! मेरी ख़्वाहिश है के मैं हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मुतअल्लिक़ कुछ नातिया अश्आर अर्ज़ करूं और नात पढ़ूं। या रसूल अल्लाह! मुझे नात ख़्वानी की इजाज़त दीजिए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया *"कुल ला युफज़िज़िल्लाहो फाका"* "कहो जो कहना है अल्लाह तुम्हारे मुंह को सलामत रखे"

हज़रत अब्बास रज़ी अल्लाह तआला अन्ह ने बारगाहे नबुव्वी से इजाज़त पाकर शैरों में नात ख़्वानी की और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को मुख़ातिब करके उन ख़यालाते आलिया का इज़हार फ़रमायाः

"या रसूल अल्लाह! आप क़ब्ल पैदाईश में पाक व साफ थे और नूर थे। हज़रत नूह अलेहिस्सलाम की कश्ती पर भी आप रोनक़ अफरोज़ थे और हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम की पुश्त में भी आपका नूर जलवागर था जब वो आग में डाले गए और जब आप पैदा हुए तो आपके नूर से ज़मीनो आसमान मुनव्वर हो गए और आपकी अज़मत व बुज़ुर्गी बड़े बड़े आली नसब वालों पर हावी है। हुज़ूर! हम आपकी के नूर और आप ही की रोशनी में हैं और आप ही के नूर की बदौलत हम हिदायत में तरक्क़ी कर रहे हैं।" हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हज़रत अब्बास रज़ी अल्लाह तआला अन्ह की इस नात ख़्वानी से बड़े खुश हुए। (मवाहिब-उल-लुदनिया सफ़ा 175, जिल्द:1)

सबक़:- सहाबा इक्राम रिज़वानुल्लाही अलेहिम अजमईन में नात ख़्वानी का रिवाज था और वो पाक लोग अपने हुज़ूर की नसरन व नज़मन नात ख़्वानी किया करते थे और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने गुलामों के मुंह से अपनी नात ख़्वानी सुन कर खुश हुआ करते थे और अपने नात ख़्वाह के लिए ये दुआ फ़रमाते थे के अल्लाह तुम्हारे मुंह को सलामत रखे। मालूम हुआ के जिस मुंह से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नात ख़्वानी होगी। वही मुंह सलामत है। यहाँ भी और वहाँ भी और ये भी मालूम हुआ के नात ख़्वानी बिदअत नहीं है बल्के सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान का भी यही मामूल था।

हिकायत नम्बर(254) मेहबूब का अदब

हज़रत बराअ इब्ने आज़िब रज़ी अल्लाह तआला अन्ह से किसी शख़्स ने मसला पूछा के किन किन जानवरों की क़ुर्बानी दुरूस्त नहीं? हज़रत बराअ इब्ने आज़िब रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने जवाब दिया के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम एक रोज़ हम में खड़े हुए और फ़रमाया के चार क़िस्म के जानवर हैं जिनकी क़ुर्बानी जायज़ नहीं। एक वो जिसकी आँख फूटी हो। दूसरा वो जो सख़्त बीमार हो। तीसरा वो जिसका लंग ज़ाहिर हो। चौथा वो जो निहायत दुबला हो और उसको हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अपनी उंगलियों पर गिन कर फ़रमाया था। लेकिन मेरी उंगलियाँ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उंगलियों जैसी नहीं, छोटी हैं।" (इब्ने माजा सफ़ा 234)

सबक़:- सहाबा इक्राम के दिलों में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला

अलेह व सल्लम का इन्तिहाई अदब था। चुनाँचे देख लीजिए के हज़रत बराअ रज़ी अल्लाह तआला अन्ह ने इस रिवायत को बयान किया तो अदब से इजाज़त नहीं दी के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उंगलियों की हिकायत अपनी उंगलियों से करें और जब ये कहा के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इस तरह अपने हाथ की उंगलियों पर गिन कर बताया । तो साथ ही फौरन कह दिया "लेकिन मेरी उंगलियाँ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उंगलियों जैसी नहीं गोया अपनी उंगलियों से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की उंगलियों की हिकायत को ख़िलाफ अदब समझा और गुस्ताख़ी समझा फिर जो लोग हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को बड़ी बेबाकी से अपने जेसा बशर कह देते हैं, गौर फ़रमा लीजिए वो किस क़द्र बे अदब और ना आशना-ए-रसूल हैं...

बड़े बे अदब और गुसताख़ हैं जो
उन्हे अपना जैसा बशर देखते हैं

हिकायत नम्बर (255) रसूल अल्लाह की दुहाई

हज़रत अबु मसऊद बदरी रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक रोज़ अपने गुलाम को किसी बात पर मारने लगे। वो गुलाम पिटने लगा, तो बाआवाज़ बुलंद कहने लगा "अल्लाह की दुहाई" हज़रत अबु मसऊद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हाथ ना रोका, और मारना जारी रखा। गुलाम ने देखा के जब अल्लाह की दुहाई से मेरी ख़ुलासी नहीं हुई तो उसने ज़ोर से कहना शुरू किया "रसूल अल्लाह की दुहाई", "रसूल अल्लाह की दुहाई" रसूल अल्लाह का नाम सुनते ही हज़रत अबु मसऊद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फौरन हाथ रोक लिया और छोड़ दिया इतने में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ ले आए और अबु मसऊद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से फ़रमाया: खुदा की क़सम! अल्लाह तआला तुझ पर इससे ज़्यादा क़ादिर है जितना तू इस गुलाम पर क़ादिर है।" हज़रत अबु मसऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्ह ने इर्शाद सुनकर फौरन वो गुलाम आज़ाद कर दिया। (सही मुस्लिम शरीफ अलअमन व अलअला सफ़ा 77)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान मुश्किल के वक़्त हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दुहाई दिया करते थे और अल्लाह तआला उस नाम पाक की बर्कत से उनकी मुश्किल दूर कर दिया

करता था। फिर आज हम भी अगर मुश्किल के वक़्त हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दुहाई दें और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को पुकारें तो हमारी मुश्किल भी क्यों दूर ना होगी। यक़ीनन होगी! और मालूम हुआ के मुश्किल के वक़्त हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दुहाई देना शिर्क नहीं है। बल्के सहाबा इक्राम का भी यही मामूल था पस ऐ मुसलमानो!...

बैठते उठते हुज़ूरे पाक से
इल्तिजा व इसतआनत कीजिए
या रसूल अल्लाह दुहाई आपकी
गो शुमाली अहले बिदअत कीजिए

हिकायत नम्बर(256) अहमद मुख़्तार

एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मिंबर पर जलवा अफरोज़ हुए और सहाबा इक्राम को मुख़ातिब फ़रमा कर इर्शाद फ़रमायाः सुनो अल्लाह तआला ने अपने एक बन्दे को इख़्तियार दे दिया है के वो जब तक चाहे दुनिया में रहे या वो अपने रब की मुलाक़ात को पसंद करे, पस उस बन्दे ने अपने रब की मुलाक़ात को इख़्तियार कर लिया है, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का ये इर्शाद सुनकर हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह रोने लगे। सहाबा इक्राम ने सिद्दीक़ अक्बर रज़ी अल्लाह तआला अन्ह को रोते हुए देखा तो बड़े हैरान हुए के ये रोने क्यों लगे। फिर जब हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का विसाल शरीफ हुआ तो सहाबा इक्राम ने फ़रमाया के अब हम समझे के सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह सुनकर क्यों रोए थे *फकाना रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह हुवल मुख़य्यरू व काना अबु बक्री आलमना* पस वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ही थे। जिन्हें अल्लाह ने इख़्तियार दे दिया था और सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह वाक़ई हम सबसे ज़्यादा समझदार थे। (मिशकात शरीफ सफ़ा 546)

सबक़ः- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान का ईमान था के रसूल अल्लाह सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम मुख़य्यर व मुख़्तार हैं और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने भी इसी हक़ीक़त का बयान फ़रमाया था के मैं मिनजानिब अल्लाह मुख़्तार हूँ और मेरा दुनिया में रहना

या विसाल फ़रमा जाना मेरे इख़्तियार में है और ये इख़्तियार मुझे अल्लाह तआला ही ने दिया है। मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का विसाल फ़रमा जाना हुज़ूर के अपने इख़्तियार से था। आपने चाहा तो आपका विसाल हुआ।

बरअक्स उसके हम भी हैं। जो मरना नहीं चाहते लेकिन मर जाते हैं। ना अपनी मर्ज़ी से आते है। और ना अपनी मर्ज़ी से मरते हैं बक़ौल शायर...

लाई हयात आए क़ज़ा ले चली चले
अपनी खुशी ना आते ना अपनी खुशी चले

फिर अगर कोई शख़्स हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मिस्ल बनने लगे और यूं कहे के वो हमारे जैसे बशर थे तो किस क़द्र ज़ुल्म है और ये भी मालूम हुआ के सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह सारे सहाबा इक्राम से आलम व अफ़ज़ल और बालिग़-उन-नज़र थे इसीलिए जब हुज़ूर ने फ़रमाया के अल्लाह ने अपने एक बन्दे को इख़्तियार दे दिया है तो आप फौरन समझ गए के ये खुद हुज़ूर ही हैं और हुज़ूर अपने ही विसाल की ख़बर दे रहे हैं और रोना शुरू कर दिया।

हिकायत नम्बर (257) मुक़द्दस शायर

ग़ज़्वा-ए-खैबर को जाते हुए हज़रत आमिर इब्ने अलअकूअ रज़ी अल्लाहो अन्ह कुछ अश्आर पढ़ रहे थे। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उनके अश्आर सुनकर फ़रमाया ये कौन है? सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! ये आमिर है। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया *यरहमू हुल्लाहू* यानी इस पर अल्लाह रहमत फ़रमाए और चूंके हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ऐसी जगह किसी ख़ास शख़्स के लिए दुआऐ मग़फिरत फ़रमाते थे तो वो शख़्स शहीद हो जाता था। इसलिए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का ये फैसला सुनकर हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह बोल उठे, यो रसूल अल्लाह! *लोला अमतअना बिही* आपने हमें उनसे नफा क्यों ना लेने दिया? अब तो वो इस ग़ज़्वे में शहीद हो जाएँगे हुज़ूर! आप उन्हें अभी ज़िन्दा रखते ताके हम उनसे बहरामंद होते। (बुखारी शरीफ सफ़ा 603)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान का ईमान था के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जिस शख़्स को ज़िन्दा रखना चाहें, ज़िन्दा रख सकते हैं। और जिसके मुतअल्लिक़ इस मौके पर *यरहमू हुल्लाहू*

फ़रमा दें उसके लिए शहादत वाजिब हो जाती है। फिर जो शख़्स ये कहे के रसूल अल्लाह के चाहने से कुछ नहीं होता वो किस क़द्र जाहिल है।

हिकायत नम्बर(258) मुक़द्दस पानी

एक मुक़ाम पर हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम ने वज़ू फ़रमाया। तो हज़रत बिलाल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हुज़ूर के वज़ू से बचा हुआ पानी ले लिया, दीगर सहाबा इक्राम ने जब देखा के बिलाल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वज़ू का बचा हुआ पानी है तो वो हज़रत बिलाल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की तरफ़ दौड़े और इस मुक़द्दस पानी को हासिल करने की कोशिश करने लगे और जिस किसी को इस पानी से थोड़ी बहुत तरी मिल गई। उसने उसे अपने मुंह पर मल लिया और जिस किसी को ना मिल सकी तो उसने किसी दूसरे के हाथ से तरी लेकर मुंह पर हाथ फैर लिया। (मिशकात शरीफ सफ़ा 65)

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान को हर चीज़ से जिसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कोई निसबत हासिल हो गई। मोहब्बत व प्यार था और वो उसे वाजिब-उल-ताज़ीम समझते थे और उससे बर्कत हासिल करते थे, मालूम हुआ के "तबर्रुक" कोई नई बात और बिदअत नहीं बल्के सहाबा इक्राम का भी मामूल था और ये भी मालूम हुआ के अपने वज़ू के बचे हुए पानी को बतौर तबर्रुक लेकर अपने चहरों पर मल लेने का हुक्म हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं दिया था मगर सहाबा इक्राम फिर भी ऐसा करते थे और ये उनका फैल मोहब्बत की वजह से था जो ऐन ईमान है, इसी तरह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने जलूस मीलाद, मेहफिल मिलाद या अज़ान में नाम पाक सुनकर अंगूठे चूमने का हुक्म अगर ना भी दिया हो तो भी जो शख़्स मोहब्बत की वजह से ऐसा करेगा वो इंशाअल्लाह सहाबा इक्राम के सदक़े में सवाब पाएगा।

हिकायत नम्बर(259) तबर्रुकाते आलिया

हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की एक चादर मुबारक, एक क़मीस मुबारक, चन्द बाल मुबारक और कुछ नाख़ून मुबारक थे, हज़रत मुआविया

रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को उनसे बड़ी मोहब्बत थी और इन तबर्रूकात आलिया को वो जान से भी ज़्यादा अज़ीज़ समझते थे। आपके विसाल शरीफ़ का जब वक़्त क़रीब आया तो आपने वसीयत फ़रमाई के जब मर जाऊँ तो मुझे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की क़मीस का कफ़न पहनाना और चादर मुबारक में मुझे लपेटना और मेरे सज्दे की जगहों पर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बाल मुबारक और नाखून मुबारक बाँध देना चुनाँचे आपके विसाल शरीफ़ के बाद ऐसा ही किया गया और ये अज़ीम-उल-मुरतबत सहाबी रसूल सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उन तबर्रूकात आलिया की बर्कतों और रहमतों में लिपटे हुए दफ़्न किए गए। (शरह-अल-शिफा सफ़ा 420 जिल्द 2)

सबक़:- हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से बड़ी मोहब्बत थी और हुज़ूर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के बर्कात आपकी ज़िन्दगी में भी आपके पास रहे और क़ब्र में भी ये तबर्रूकात आपके साथ ही रहे यानी रहमत हक़ यहाँ भी आपके साथ रही और वहाँ भी साथ ही रही।

हिकायत नम्बर (260) इब्रत आमोज़ ख़्वाब

हज़रत मौलाना मुफ़्ति मोहम्मद अब्दुल अज़ीज़ साहब मज़ंग लाहौर का एक मज़मून माह तय्यबा शुमारह दिसम्बर 1965ई० में शाय हुआ था। जिसमें हज़रत मोसूफ ने हज़रत मौलाना नूर बख़्श साहब तवक्कली एम ऐ रहमत-उल्लाह अलेह की किताब तज़करह नक़्शबन्दिया में से हस्बे ज़ेल एक वाक़ेया नक़्ल फ़रमाया था। इसे पढ़िये और इब्रत हासिल कीजिए!

एक सय्यद तालिब इल्म का बयान है के जो लोग हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से लड़े मुझे उनसे बिलअमूम और हज़रत मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से बिलख़ुसूस नफ़रत थी। एक रोज़ मैं मुजद्दिद अलिफ सानी अलेहिर्रहमत के मक्तूबात का मुतालेआ कर रहा था के उसमें ये लिखा देखा के हज़रत इमाम मालिक अलेहिर्रहमत हज़रत शेखेन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को गाली देने वाले को जो हद लगाते थे। वही हद हज़रत मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को गाली देने वाले पर भी जारी करते थे। मैंने ये पढ़कर गुस्से की हालत में मक्तूबात को ज़मीन पर फैंक दिया और सो गया, ख़्वाब में मैंने देखा के हज़रत मुजद्दिद अलिफ सानी अलेहिर्रहमत गुस्से की हालत में तशरीफ़ लाए और अपने हाथों से मेरे

दोनों कानों को पकड़ कर फ़रमाने लगे। ऐ तुफ़्ल नादाँ! तू भी मेरी तहरीर पर एत्राज़ करता है? और उसे ज़मीन पर फैंकता है? अगर तू मेरे कौल को मोअतबर नहीं समझता तो आ तुझे हज़रत अली अलमुर्तज़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ही के पास ले चलूं जिनकी ख़ातिर उनके भाईयों यानी सहाबा इक्राम को बुरा कहता है। चुनाँचे हज़रत मुजद्दिद साहब मुझे कुशाँ कुशाँ एक बाग़ में ले गए और मुझे उस बाग़ के किनारे ठहरा कर खुद एक महल की तरफ़ जो उस बाग़ में नज़र आ रहा था। चले गए मैंने देखा के वहाँ एक नूरानी शक्ल बुज़ुर्ग बैठे हुए थे। हज़रत मुजद्दिद अलिफ सानी अलेहिर्रहमा ने बड़ी तवाज़ो से उनको सलाम कहा, वो भी बड़ी खुशी से आपको मिले उसके बाद हज़रत मुजद्दिद साहब उस बुज़ुर्ग के आगे दो ज़ानो बैठ गए और कुछ अर्ज़ किया। हज़रत मुजद्दिद साहब और वो बुज़ुर्ग दोनों मेरी तरफ़ देखते और इशारा करते थे। मुझे यक़ीन हो गया के वो मेरी निसबत कुछ कह रहे हैं। कुछ देर के बाद हज़रत मुजद्दिद साहब ने उठ कर मुझे नज़दीक बुलाया और फ़रमाया के ये बुज़ुर्ग जो बैठे हुए हैं। हज़रत शेरे खुदा अली अलमुर्तज़ा कमरमल्लाहो वजह हैं सुनो क्या फ़रमाते हैं।

मैंने सलाम अर्ज़ किया हज़रत अली करमल्लाहो वजह ने फ़रमाया "ख़बरदार! हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के असहाब से कोई कदूरत अपने दिल में ना रखो और उनकी मलामत ज़बान पर ना लाओ। हम जानते हैं और हमारे भाई के किन नेक नीयतों से हमारे और उनके दरमियान झगड़ा होता था।"

और फिर हज़रत मुदद्दिद साहब का नाम लेकर फ़रमाया के "उनकी तहरीर से हर गिज़ मुंह ना फैरना।"

हज़रत अली अलमुर्तज़ा करमल्लाहो वजह की इस नसीहत के बावजूद मैंने देखा के सहाबा इक्राम की नफरत बदस्तूर मेरे दिल में बाक़ी है। हज़रत अली अलमुर्तज़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया के उसका दिल अभी साफ नहीं हुआ। और फिर हज़रत मुजद्दिद अलिफ सानी साहब की तरफ़ मुझे तमाँचा मारने का इशारा फ़रमाया चुनाँचे मुजद्दिद साहब ने मुझे एक ज़ोरदार तमाँचा मारा। उस वक़्त मेरे दिल सहाबा इक्राम के बुग्ज़ से पाक व साफ हो गया और इस असना मेरी नींद खुल गई। अब मैं अपने सीने को सहाबा इक्राम के कीना से पाक पाता हूँ और हज़रत मुजद्दिद अलिफ सानी रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह कें कलाम की बाबत मेरा हुस्न ऐतमाद सौ गुना ज़्यादा हो गया है।

सबक़:- सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़्वान सबके सब हमारे लिए वाजिब-उल-ताज़ीम हैं और किसी एक से भी बुग़्ज़ व नफरत रखना बेहद बुरा हज़रत अली अलमुर्तज़ा करमल्लाहो वजह की भी नाराज़गी का मौजिब है।

हिकायत नम्बर(261) भिड़ों का हमला

इब्ने मुख़्तार तलमेसी फ़रमाते हैं के एक शख़्स ने ये किस्सा बयान किया के हम एक सफर में थे और हमारे हमराह एक ऐसा बद गो शख़्स भी था जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सहाबा इक्राम से बैर रखता था। ये गुसताख़ राह में हज़ारात सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़्वान की शान में नाज़ेबा अल्फाज़ कहने लगा। हमने रोका मगर वो किसी सूरत बाज़ ना आया। रास्ते में हम एक जगह ठहरे और ये शख़्स किसी काम को बाहर निकला तो अचानक बहुत सी भिड़ों ने उस पर हमला कर दिया। ये चिल्लाया हम उसकी मदद को दौड़े तो भिड़ों ने हमारा तआक्क़ुब करके हमें उसके पास ना पहुँचने दिया के उन भिड़ों ने उस गुसताख़ को हलाक कर दिया। (हयात-उल-हैवान सफ़ा 8 जिल्दः 3)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़्वान से अदावत व बैर रखना बड़ी ख़तरनाक चीज़ है। हर मुसलमान को इस मोहलक चीज़ से इजतिनाब रखना लाज़िम है।

हिकायत नम्बर(262) गश्ती फ़रमान

जंग सफ़ैन जब ख़त्म हो गई तो हज़रत अली अलमुर्तज़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने एक गश्ती फ़रमान लिखकर इत्राफे मुल्क में रवाना फ़रमाया जिसमें ये तहरीर फ़रमाया केः

"हमारे काम का आग़ाज़ यूं हुआ के हम में और अहले शाम की एक क़ौम में मुक़ाबला हुआ, और ज़ाहिर है के हमारा और उनका खुदा एक है और हमारा और उनका नबी एक है और हमारी और उनकी दअवते इस्लाम यक्साँ है। अल्लाह पर ईमान रखने में और तसदीक़े रसूल में ना हम उनसे ज़्यादा होने के मुद्दई हैं, ना वो हमसे ज़्यादा होने के मुद्दई हैं। हमारे और उनके दरमियान सिर्फ खून उस्मान (रज़ी अल्लाहो अन्ह) का झगड़ा है और हम इस खून से बरी हैं" (नहज-उल-बलाग़त क़िस्म दो सफ़ा 118)

सबक़:- सहाबा इक्राम और अहले बैत अेज़ाम रज़ी अल्लाहो तआला

अलेहिम अजमईन सबका दीन व मज़हब एक था जो तरीक़ा व तर्ज़े अमल अहले बैत अेज़ाम का था। वही सहाबा इक्राम भी था। तौहीद व रिसालत उसूल व फरूअ, सियासत, व इमारत और इरादत व अक़ीदत में ये सब हज़रांत मुत्तहिद व मुत्तफिक़ थे। उनमें से किसी एक पर भी किसी क़िस्म का तान करना ज यज़ नहीं। ये सब हज़रात अल्लाह के मेहबूब के मेहबूह हैं। (रिज़वानुल्लाही अलेहिम अजमईन)

हिकायत नम्बर(263) मशवरा

अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह ने ग़ज़्वा-ए-रोम के मौक़े पर हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से मशवरा तलब फ़रमाया के इस ग़ज़्वे में मैं बज़ाते खुद शिर्कत करूं या ना? हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हस्बे ज़ेल मशवरा दिया।

अल्लाह तआला इस दीन वालों को ग़ालिब फ़रमाने का ज़ामिल है।

अल्लाह वो है जिसने मुसलमानों की उस वक़्त भी मदद फ़रमाई थी जब के वो थोड़े थे और दूसरा कोई उनका मददगार ना था और उनकी हिफाज़त फ़रमाई थी जब के वो थोड़े थे और दूसरा कोई उनकी हिफाज़त करने वाला ना था। ऐ उमर! अगर आप बज़ाते खुद चले गए और दुश्मन से मुक़ाबला हुआ। आपको कोई तकलीफ पहुँची तो फिर मुसलमानों की कोई जाए पनाह ना रहेगी क्योंके मुसलमानों के लिए सिवाए आपके कोई और मरजअे नहीं इसलिए आप किसी और को भेज दें, खुद ना जाएँ।" (नहज-उल-बलाग़त तक़्तीअ् खूर्द मतबूआ मिस्र सफ़ा 271)

सबक़:- इस मशवरे में हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाह तअला अन्ह ने जिस दीन की हिफाज़त का मुतकुफ़्ल और मुहाफिज़ अल्लाह को फ़रमाया था। इसी दीन को हज़रत उमर और दीगर सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान इसी सच्चे दीन के अलम्बरदार थे और जिस दीन की पसंदीदगी का एलान अल्लाह ने क़ुरआन में फ़रमाया है और वो दीन में कामिल। दीन के हामिल और दीन पर आमिल थे और जिस शख़्स को मआज़ अल्लाह सुम्मा मआज़ अल्लाह) उन पाक लोगों के दीन में किसी क़िस्म का कोई शुबह हो तो वो खुद अपने ही दीन व ईमान की फिक्र करे।

छटा बाब
अहले बैत अेज़ाम
रिज़वानुल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

इन्नामा यूरीदूल्लाहू लियुज़हिबा अनकुम रिजसा अहलल बैती व यूतहिर्रांकुम ततहीरा (पः 22, रूकूः 1)

अल्लाह तू यही चाहता है ऐ नबी के घर वालो! के तुम से हर ना पाकी दूर माफिदे और तुम्हें पाक करके खूब सुथरा कर दे। (कुंज़-उल-ईमान)

हिकायत नम्बर (264) उम्म-उल-मोमिनीन ख़दीजात-उल-कुबरा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा

ख़वील्द नामी एक शख़्स अहले कुरैश में बड़ा अमीर कबीर शख़्स था। उसकी एक लड़की थी जिसका नाम ख़दीजा था। ये लड़की निहायत ज़हीन आली दिमाग़ और सूरत व सीरत और अफ़्फ़त व असमत के लिहाज़ से मक्का भर में सबसे ज़्यादा मुमताज़ थी। खदीजा का बाप कुछ ज़र व माल छोड़ कर फौत हो चुका था, और ये भी अहेद शबाब में बेवा हो चुकी थी। सिवाए एक चचा ज़ाद भाई वरक़ा बिन नवफ़िफ़ल के उसका कोई असल वारिस ना था। लेकिन ख़दीजा ने अपनी क़ाबलियत से तिजारत का काम खुद संभाला और बड़ी तरक़्क़ी की।

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के चचा अबु तालिब की सिफ़ारिफ़ से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ख़दीजा के तिजारती सिलसिले में काम करने लगे और जब आपने ख़दीजा के कारोबार में काम फ़रमाया तो ख़दीजा (रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा) के कारोबार में चन्द दिनों ही में बहुत तरक्क़ी हुई और ये कारोबार कहीं से कहीं जा पहुँचा। इस बर्कत और तरक़्क़ी का ख़दीजा (रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा) के दिल पर असर हुआ।

एक दिन ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा अपने महल के ऊपर खड़ी थी। धूप का वक़्त था और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ ला रहे थे तो ख़दीजा ने देखा के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह

व सल्लम के सर पर बादल का साया है और जैसे जैसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम आगे बढ़ते हैं और वो बादल का टुकड़ा भी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सर पर साथ साथ बढ़ रहा है। ख़दीज़ा को देखकर बड़ा तअज्जुब हुआ, और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की इज़्ज़त व तौक़ीर उसकी नज़रों में और भी ज़्यादा हो गई और एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को बुला कर कहने लगी के मेरे क़ाफ़ला-ए-तिजारत के साथ इस दफा आप भी तशरीफ़ ले जाएँ। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया "अच्छा जाऊँगा।"

ख़दीजा की तिजारत का बड़ा मोहतमिम ख़दीजा का आज़ाद कर्दा ग़ुलाम मेसरा था जिसकी तहवील में तिजारत का सब हिसाब रहता था। हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने मेसरा को बुला कर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मुतअल्लिक़ ताकीदन कह दिया के इस साल क़ाफ़ले के साथ ये भी जाएँगे। ये जो कुछ तुम लोगों को मशवरा दें। उनके मशवरे पर अमल करना, और सफ़र में उनकी ज़ात से जो कुछ वाकेयात गुज़रें, उनको अच्छी तरह याद रखना। मेसरा ने अपनी मालिका की ये हिदायात सुनकर उन पर अमल करने का इक़रार कर लिया।

चन्द रोज़ बाद ये क़ाफ़ला मक्का से शाम की तरफ़ रवाना हुआ। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम भी साथ थे। चन्द मनाज़िल तय करके जब इस क़ाफ़ले ने एक इसाई पादरी नसतूरा नामी के गिर्जे के पास मंज़िल की तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जिस दरख़्त के पास बैठे थे उस दरख़्त का साया हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर झुक आया। पादरी ये वाक़ेया देखकर मेसरा की तरफ़ आया और मुतअज्जिब होकर पूछने लगा ऐ मेसरा! इस साल तुम्हारे क़ाफ़ले के साथ कौन नोजवान आए हैं? मेसरा ने कहा ये अहले क़ुरैश में से हैं पादरी ने कहा बेशक ये तुम्हारे क़ाफ़ले ही के सरदार नहीं बल्के किसी दिन सारे जहाँ के सरदार होंगे।

मेसरा ने कहा! आपको ये कैसे मालूम हुआ? पादरी ने कहा उनकी आँखों में सुर्ख़ी मालूम होती है और सिवाए नबी के इस दरख़्त के नीचे और कोई नहीं बैठा। मुझे तो ये नबी आख़िर-उज़्ज़माँ मालूम होते हैं। काश मैं उस वक़्त तक ज़िन्दा रहता जब के ये मबऊस होंगे। इस तमन्ना के बाद पादरी ने मेसरा को ताकीद कर दी के उनसे किसी वक़्त जुदा ना होना। सच्चे इरादे

और नेक नीयती से उनके साथ रहना क्योंके मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम वो हैं जिन्हें अल्लाह तअला शर्फे नबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाएगा।

अलावा इस वाक़्ये के और भी ऐसे ही वाक़ेयात रास्ते में गुज़रे आख़िर ये क़ाफ़ला मुल्क शाम में पहुँचा और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बर्कत से हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा का तमाम सामान तिजारत इस साल दुगने चौगने मुनाफ़े पर फ़रोख़्त हो गया तो तमाम क़ाफ़ले वाले खुश व खुर्रम अपनी मालिका ख़दीजा से इनामो इक्राम हासिल करने की ख़ुशी में मक्का शरीफ़ की तरफ़ वापस हुए।

इन बाबर्कत वाक़ेयात से सब क़ाफ़ले वालों के दिलों में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की पहले से भी ज़्यादा अक़ीदत पैदा हो गई थी। मेसरा अपनी मालिका की हिदायत के मुताबिक़ निहायत अदब से आपकी एक एक अदाऐ मुबारक और पेश आम्दा वाक़ेयात पर ग़ौर करता हुआ साथ साथ आ रहा था। जब ये क़ाफ़ला मक्का के क़रीब पहुँचा तो सब में राय ये क़रार पाई के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपनी सवारी दौड़ाते हुए सय्यदा ख़दीजा को सामान तिजारत की फ़रोख़्त और काफ़ी मुनाफ़े की खुशख़बरी देने सबसे पहले जाएँ।

चुनाँचे इस तजवीज़ के मुताबिक़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपनी सवारी दौड़ाते हुए जिस वक़्त ख़दीजा के महल की तरफ़ तशरीफ़ ला रहे थे। इत्तेफ़ाक़न उस वक़्त ख़दीजा भी अपने महल की छत पर खड़ी थीं। जिन्हें उस सवार वलअतबार की अजीब शान नज़र आई। सवार का चहरा चाँद से ज़्यादा मुनव्वर था और उसके सर पर अब्र का टुकड़ा साया किए हुए साथ साथ दौड़ रहा था। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ये शान पाक हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा के दिल पर गहरा असर फ़रमा गई। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जब तशरीफ़ लाए और माल के चौगने मुनाफ़े पर फ़रोख़्त हो जाने की ख़बर सुनाई तो ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के दिल में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बर्कत व सीरत और अक़ीदत का ख़ास जज़्बा पैदा हो गया।

इतने में क़ाफ़ले वाले भी आ गए। मेसरा ने अपनी मालिका से सफ़र के सारे हालात और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बर्कात का ज़िक्र किया और पादरी की नसीहत के अल्फ़ाज़ भी सुनाए। हज़रत ख़दीजा

रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा को पुख़्ता यक़ीन हो गया के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम खुदा के बरगज़ीदा और मुक़र्रब इंसान हैं। जो हिदायत आलम के लिए पैदा हुए हैं।

कुछ दिनों तक तो हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा खामोश रहीं और एक रोज़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को पैग़ामे निकाह दे दिया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने निहायत हया व शर्म के साथ ये जवाब मरहमत फ़रमायाः के इसके मुतअल्लिक़ मेरे चचा अबु तालिब की इजाज़त ज़रूरी है।

चुनाँचे हज़रत ख़दीजा रज़ी तआला अन्हा ने अबु तालिब के पास तोहफा तहायफ देकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ अपने निकाह का पैग़ाम इरसाल किया। अगरचे अबु तालिब को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह की उम्र शरीफ कम और हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा की उम्र शरीफ ज़्यादा होने के बाइस ये पैग़ाम क़बूल करने में कुछ ताम्मुल था। लेकिन अपनी बीवी के मशवरे से पैग़ाम क़बूल कर लिया और तारीख़ निकाह मुक़र्रर हो गई और विरक़ा बिन नवफ़िल अबु तालिब, हमज़ा और दीगर रौसा मक्का की शिर्कत व मौजूदगी में निकाह हो गया और हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के उक़्द में आ गईं और निकाह के बाद हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा ने अपना तमाम माल व असबाब, जायदाद मनक़ूला वग़ैरा मनक़ूला हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नज़्र करके बन्दगाने क़ुरैश से कहा के तुम लोग गवाह रहो मैं अपनी मर्ज़ी से तमाम माल व मताअ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में पेश करती हूँ। आज से ये सब कुछ इन्हीं का है चाहे अपने पास रखें या किसी को दें या राह खुदा में खर्च कर दें। चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा की मर्ज़ी के मुताबिक़ तमाम ज़र व माल राहे खुदा में खर्च कर दिया और सब कनीज़ों, ग़ुलामों को आज़ाद करके हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा को भी अपने साथ ज़ाहिदाना ज़िन्दगी बसर करने का अमली सबक़ दिया। (मवाहिब लुदनिया जिल्दः 1, सफ़ा : 38 और तारीख़े इस्लाम सफ़ा : 60 ता 66)

सबक़ः- उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा शराफत व निजाबत, सीरत व सूरत और खूबी क़िसमत में बहुत

मुमताज़ दर्जे पर फायज़ थीं और सबसे पहले ये शर्फ आपको हासिल हुआ के सरवरे कोनैन मेहबूबे किब्रिया, हुज़ूर अहमद मुजतबा मोहम्मद मुसतफा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के निकाह में आईं और आप बड़ी फय्याज़, दरया दिल और सखी थीं के अपना सारा ज़र व माल हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के क़दमों में निछावर कर दिया और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का सिक्का ज़मीन व आसमान पर जारी है। ज़मीन पर इस शहनशाह "आलम पनाह" पर अगर दरख़्त साया करते रहे तो आसमान पर बादल साया किनाँ रहे।

फायदाः (1) हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की इस निकाह के वक़्त उम्र शरीफ 25 साल की थी और हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो अन्हुमा की 40 साल की और जब तक हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा ज़िन्दा रहीं। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने दूसरा निकाह नहीं फ़रमाया दीगर अज़वाज मुतहरात आपके निकाह में हज़रत ख़दीजा के विसाल के बाद आईं। (मवाहिब लुदनिया सफ़ा 203 जिल्दः 1)

मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का निकाह फ़रमाना, महेज़ तालीम व तशरीह उम्मत के लिए था वरना ऐन आलम शबाब में हर कोई अपनी हम उम्र औरत से निकाह करता है।

(2) हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की जुमला औलाद अमजाद बजुज़ हज़रत इब्राहीम के, हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा से पैदा हुई। हज़रत इब्राहीम हज़रत मारिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा से पैदा हुए। (मवाहिब लुदनिया जिल्दः 1, सफ़ा 196) और हाशिया बुखारी शरीफ जिल्दः 1, सफ़ा 539)

(3) हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो अन्हा से हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की जो चार साहबज़ादियाँ पैदा हुईं। उनके नाम ये हैं ज़ैनब, रूक़य्या, उम्मे कुलसुम और फातिमा रज़ी अल्लाहो अन्हन (मवाहिब लुदनिया जिल्दः 1, सफ़ा 196)

(4) हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की चार साहबज़ादियाँ पैदा होने में मसलक की किताबें मुत्तफिक़ हैं। चुनाँचे हज़रात शिआ की मुसतनिद किताब हदीस उसूल काफी सफ़ा 278, जिल्दः असतर:2 में इसी हक़ीक़त का इज़हार है।

हिकायत नम्बर(265) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अन्हा

उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के विसाल के बाद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने बिन्ते सिद्दीक़े अक्बर हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा से निकाह फ़रमाया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने एक मर्तबा हज़रत आयशा से फ़रमाया ऐ आयशा! निकाह से क़ब्ल एक फरिश्ता तीन रात मुतावातिर ख़्वाब में तुम्हारी सूरत एक रेशमी कपड़े में लपेटे हुए मुझे दिखाता रहा और कहता रहा ये आपकी बीवी है और अब जो मैंने तुझे देखा तो तुम वही हो और फ़रमाया एक रोज़ जिब्राईले अमीन मेरे पास तुम्हारी तसवीर एक सब्ज़ रंग के रेशमी कपड़े में लपेट कर लाया और कहने लगा! या रसूल अल्लाह! ये आपकी दुनिया व आख़िरत में बीवी है। अल्लाह तआला ने आपका निकाह इससे कर दिया है। (मिश्कात शरीफ सफ़ा 565, मवाहिब लुदनिया सफ़ा 204 जिल्द:1)

सबक़:- उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा की बहुत बड़ी शान है। आप हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दोनों जहाँ में रफ़ीक़ा हैं और आपका निकाह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से खुद अल्लाह तआला ने फ़रमाया। फिर अगर कोई बदगो आपकी ज़ात वाला सिफात पर किसी क़िस्म का कोई तान करे तो यक़ीनन उसने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का दिल दुखाया और अल्लाह ताला पर भी एत्राज़ किया।

हिकायत नम्बर(266) बोहताने अज़ीम

5 हिज्री में ग़ज़्वा बनी-उल-मुसतलिक़ से वापसी के वक़्त क़ाफला क़रीब मदीना एक पड़ाव पर ठहरा। तो उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ज़रूरत के लिए एक गोशे में तशरीफ़ ले गईं। वहाँ आपका हार टूट गया और आप उसकी तलाश में मसरूफ हो गईं इधर काफले ने कूच किया और आपका मोहमिल शरीफ ऊँट पर कस दिया। क़ाफले वालों ने यही गुमान किया के उम्मुल मोमिनीन उसमें हैं। क़ाफ़ला चल दिया और जब आप वापस आईं तो देखा के क़ाफला जा चुका है। आप क़ाफले की जगह बैठ गईं। आपने ख़याल किया के मेरी तलाश में

क़ाफ़ला ज़रूर वापस आएगा। क़ाफ़ले के पीछे गिरी पड़ी चीज़ उठाने के लिए एक साहब रहा करते थे, उस मौक़े पर हज़रत सफ़वान उस काम पर मुतय्यन थे। जब वो आए तो उम्मुल मोमिनीन को देखा तो बुलंद आवाज़ से इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन पढ़ा उम्मुल मोमिनीन ने कपड़े से पर्दा कर लिया। उन्होंने अपनी ऊँटनी बिठाई आप उस पर सवार होकर लश्कर में पहुँचीं। मुनाफ़िक़ीन सियाह बातिन को मौक़ा मिल गया और उन्होंने ओहाम फ़ासिदा फ़ैलाने शुरू कर दिए और आपकी शान में बदगोई शुरू कर दी। उम्मुल मोमिनीन इस बोहतान को सुनकर बीमार हो गईं। और एक माह तक बीमार रहीं। इस अर्से में आपको इत्तिला ना हुई के मुनाफ़िक़ीन आपके मुतअल्लिक़ क्या क्या अफ़्वाहें फैला रहे हैं। एक रोज़ उम्मे मुसतह से उन्हें ये ख़बर मालूम हुई और उससे आप और भी ज़्यादा बीमार हो गईं और इस सदमे से इस क़द्र रोईं के आपका आँसू ना थमता था और ना एक लमहे के लिए नींद आती थी। इस हाल में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर वही नाज़िल हुई और हज़रत उम्मुल मोमिनीन की तहारत व पाकीज़गी की खुद अल्लाह तआला ने शहादत दी और कई आयतें सूरह नूर की आपकी तहारत और पाकीज़गी में नाज़िल फ़रमाईं और फ़रमायाः

लिकुल्लिमरिय्यन मिनहुम्म मक्तसाबा मिनल इसमी वल्लज़ी तव्वला किबराहू मिनहुम लहू अज़ाबुन अज़ीम

"उनमें हर शख़्स के लिए वो गुनाह है जो उसने कमाया और उनमें वो जिसने सबसे बड़ा हिस्सा लिया उसके लिए बड़ा अज़ाब है। (सूरह नूर)"

यानी उम्मुल मोमिनीन के बारे में बोहतान तराज़ी में जिस जिस ने जिस क़द्र भी हिस्सा लिया, किसी ने तूफ़ान उठाया, किसी ने बोहतान उठाने वाले की ज़बान मवाफ़्क़त की। कोई हंस दिया, किसी ने ख़ामोशी के साथ ही सुन लिया। जिसने जो कुछ किया इस गुनाह का उसे बदला मिलेगा और जिसने सबसे बड़ा हिस्सा लिया उसके लिए सबसे बड़ा अज़ाब है।" (क़ुरआन करी, पारा 18, रूकू 8। ख़ज़ायन-उल-इर्फ़ान, सफ़ा 497)

सबक़:- उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा की वो ज़ात ग्रामी है जिसकी तहारत व पाकीज़गी की खुद खुदा ने शहादत दी और आप पर बोहतान उठाने वाले के लिए अज़ाब का ऐलान फ़रमाया और आपको इस शरफ़ से नवाज़ा के क़ुरआने पाक के ज़रिये आपकी उफ़्फ़त व तहारत के क़यामत तक डंके बजते रहेंगे फिर जो ज़ालिम आपकी ज़ात वाला सिफात पर कोई किसी क़िस्म का ऐत्राज़ करे या

आपकी अज़मत में शक करे तो वो बड़ा ही जाहिल है और अपने आपको अज़ाब का मुसतहिक़ बनाने वाला है।

हिकायत नम्बर(267) गवाहियाँ

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा पर मुनाफिक़ीन ने जब बोहतान उठाया तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान से फ़रमाया के उसकी तरफ़ से मेरे पास कौन मअज़रत पेश कर सकता है? हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! मुनाफिक़ीन बिलयक़ीन झूटे हैं और उम्मुल मोमिनीन यक़ीनन पाक हैं, अल्लाह तआला ने आपके जिस्म अतहर को मक्खि बैठने से महफूज़ रखा है के वो नजासतों पर बैठती है। फिर कैसे हो सकता है के वो आपको बद औरत की सोहबत से महफूज़ ना रखे।

हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! अल्लाह तआला ने आपका साया ज़मीन पर नहीं पड़ने दिया ताके उस पर किसी का क़दम ना पड़े तो जो परवरदिगार आपके साये को महफूज़ रखता है किस तरह मुममिन है के वो आपके अहल को महफूज़ ना रखे।

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! एक जूं का खून लगने से अल्लाह तआला ने आपको नअलैन उतार देने का हुक्म दिया तो जो परवरदिगार आपकी नअल शरीफ की इतनी सी आलूदगी को पसंद नहीं फ़रमाता मुमकिन नहीं के वो आपके अहल की आलूदगी को पसंद करे।

इसी तरह और बहुत से सहाबा इक्राम और सहाबियात ने, उम्मुल मोमिनीन के हक़ में तहारत व पाकीज़गी के बयान दिए और क़समें खाईं। आयत नाज़िल होने से पहले ही उम्मुल मोमिनीन की तरफ़ से दिल मुतमईन थे और आयत के नज़ूल ने उम्मुल मोमिनीन का इज़्ज़ो शरफ़ और ज़्यादा कर दिया। (ख़ज़ायन-उल-इर्फान, सफ़ा 497, रूह-उल-बयान, सफ़ा 751, जिल्द 2, व मदारिज-उन्नबुव्वत, सफ़ा 101)

सबक़:- उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा की अफ़्फ़त व तहारत का हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह, हज़रत उस्मान और हज़रत अली और दीगर सहाबा और सहाबियात रज़ी अल्लाह तआला अन्हुम सभी को यक़ीन था और बोहतान तराज़ी मुनाफिक़ों का काम था। पस हमें भी हज़रत उमर, हज़रत उस्मान और हज़रत अली रज़ी

अल्लाहो तआला अन्हुमा के नक़्शे क़दम पर चलना चाहिए और मुनाफ़िक़ीन की आदत से बचना चाहिए।

फायदाः- उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा की अफ़्फ़त व तहारत का खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को भी इल्म था चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अलल ऐलान फ़रमा दिया था।

वल्लाही मा अलिम्तू अला अहली इल्ला ख़ैरा (बुखारी शरीफ, सफ़ा 595)

"क़सम अल्लाह की मैं जानता हूँ के मेरी बीवी नेक ही है।"

मगर चूंके क़ाज़ी फैसला अपने इल्म की बिना पर नहीं करता बल्के गवाहों की गवाहियों पर करता है। इसलिए हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने बाक़ायदा तहक़ीक़ की और गवाहियाँ लीं और अगर गवाहों की गवाहियाँ लेने से ये साबित होता है के क़ाज़ी को इल्म ना था। तो फिर खुदा के मुतअल्लिक़ क्या कहा जाएगा जो क़यामत के दिन *लीतकूनू शौहदाआ अलन्नासी* और *वजीअेना बिका अला हौलाई शहीदा* के मुताबिक़ मुसलमानों से हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम से गवाहियाँ लेकर फैसला फ़रमाएगा। नीज़ अगर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम खुद ही फौरन फैसला फ़रमा देते तो जो शरफ़ उम्मुल मोमिनीन को सूरह नूर के नज़ूल से और अल्लाह तआला के ऐलान बरियत से हासिल हुआ है के क़यामत तक आपकी अफ़्फ़त का ऐलान होता रहेगा, ये शरफ़ आपको हासिल ना होता।

हिकायत नम्बर(268) शौहर की मोहब्बत

एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा से फ़रमया! ऐ आयशा! जब तुम मुझ से खुश होती हो तो मुझे पता चल जाता है और जब कुछ नाराज़ सी हो जाती हो तो भी मुझे पता चल जाता है। हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने अर्ज़ किया। वो कैसे या रसूल अल्लाह! हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया। जब तुम मुझ से खुश होती हो तो यूं कहती हो।"

मुझे रब्बे मोहम्मद की क़सम! और जब कुछ नाराज़ सी होती हो तो यूं कहती हो *ला व रब्बी इब्राहीम* मुझे रब्बे इब्राहीम की क़सम। हज़रत आयशा

रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने अर्ज़ किया, हाँ या रसूल अल्लाह! बात यही है मगर हुज़ूर *मअहजुरू इल्ला इसमूका* मैं सिर्फ आपका नाम ही तो छोड़ती हूं लेकिन आपकी ज़ात ग्रामी की मोहब्बत तो मेरे दिल में बदस्तूर रहती है। (मदारिज-उन्नबुव्त, सफ़ा 276, जिल्द 2)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की हर अदा तालीम उम्मत के लिए है। इस वाक़ये में हमें ये सबक़ दिया गया है के मियाँ बीवी की कोई आपस में मामूली सी रंजिश भी हो जाए तो दिली मोहब्बत में फ़र्क़ ना आना चाहिए और ये रंजिश भी मामूली होना चाहिए उसे बढ़ाना ना चाहिए।

हिकायत नम्बर (269) सख़ावत

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा बेहद सखी थीं। हज़रत अरवा बिन ज़ुबैर फ़रमाते हैं के मैंने देखा, एक रोज़ उम्मुल मोमिनीन सत्तर हज़ार दरहम राहे खुदा में तक़सीम कर दिए और एक दफ़ा हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उनकी ख़िदमत में सौ हज़ार दरहम भेजे तो आपने वो सब दरहम एक ही रोज़ में राहे खुदा में तक़सीम कर दिए और उस रोज़ आप खुद रोज़े से थीं। शाम के वक़्त बाँदी ने अर्ज़ किया। क्या अच्छा होता अगर एक दरहम आप अपनी अफ़्तारी के लिए रख लेतीं। और आज गोश्त मंगवा लिया जाता। तो फ़रमाया मुझे याद नहीं रहा। याद रहता तो गोश्त मंगवा लिया जाता। (मदारिज-उन्नबुव्वत, सफ़ा 276, जिल्द 2)

सबक़:- उम्मुल मोमिनीन ने वुसअत के बावजूद अपनी ज़िन्दगी निहायत सादा और ज़ाहिदाना गुज़ार दी और जो दौलत भी हाज़िर हुई आपने राहे खुदा में तक़सीम फ़रमा दी। आज हमें भी उम्मुल मोमिनीन के नक़्शे क़दम पर चलना चाहिए और दौलत से इस क़द्र मोहब्बत ना रखना चाहिए के खुदा को भुला दिया जाए और ज़कात व सदक़ात व ख़ैरात का नाम तक ना लिया जाए।

हिकायत नम्बर (270) ख़ाला जान

उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा को अपने भांजे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर से बड़ा प्यार था उन्होंने ही गोया अपने भांजे को पाला था। उम्मुल मोमिनीन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा की

सखावत व फय्याज़ी का ये आलम देखकर जो कुछ आता, आप राहे खुदा में तक़सीम कर देती थीं। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने एक दिन कह दिया के ख़ाला जान! का हाथ किस तरह रोकना चाहिए। उम्मुल मोमिनीन को ये बात मालूम हुई के अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा मेरा हाथ रोकना चाहते हैं तो आप नाराज़ हो गईं और उनसे ना बोलने की क़सम खा ली। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाह तआला अन्ह को ख़ाला जान की नाराज़गी का बेहद सदमा हुआ बहुत से लोगों से सिफारिश कराई मगर उन्होंने अपनी क़सम का उज़्र पेश कर दिया। आख़िर जब अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बहुत ही परेशान हुए तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के ननिहाल के दो हज़रात को सिफारशी बनाकर साथ ले गए वो दोनों हज़रात इजाज़त लेकर अन्दर गए। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भी छुप कर साथ हो लिए। जब वो दोनों पर्दे के पीछे बैठे और उम्मुल मोमिनीन पर्दा के अन्दर बैठकर बात चीत करने लगीं तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जल्दी से अन्दर चले गए और ख़ाला जान से लिपट कर रोने लगे और बहुत रोये और खुशामद की। वो दोनों हज़रात भी सिफारिश करते रहे और मुसलमान से बोलना छोड़ने के मुतअल्लिक़ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के इर्शादात याद दिलाते रहे और अहादीस में जो मुमानिअत इसकी आई है वो सुनाते रहे जिसकी वजह से उम्मुल मोमिनीन इन अहादीस में जो मुमानिअत और मुसलममान से बोलना छोड़ने पर जो अत्ताब वारिद हुआ। उनकी ताब ना ला सकें और रोने लगें, आख़िर माफ फ़रमा दिया और बोलने लगीं। लेकिन अपनी क़सम के कुफ़्फ़ारे में बार बार ग़ुलाम आज़ाद कराती थीं हत्ता के चालीस ग़ुलाम आज़ाद किए और जब भी कभी इस क़सम के तोड़ने का ख़याल आ जाता इतना रोतीं के दोपट्टा तक आँसूओं से भीग जाता। (बुख़ारी शरीफ, हिकायात-उल-सहाबा, सफ़ा 101)

सबक़:- अल्लाह वालों की नाराज़गी सिर्फ अल्लाह ही के लिए होती है वो किसी दुनयवी मुफाद के पेशे नज़र किसी से नाराज़ नहीं होते और ये भी मालूम हुआ के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व आलिही व सल्लम के इर्शादात सुनकर मुसलमान का सर तसलीम ख़म हो जाता है, और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह का नाम लेकर जो अहेद किया जाए, उसका पूरा करना बहुत ज़रूरी है और उसको तोड़ने पर कुफ़्फ़ारा ज़रूरी

है और अल्लाह वालों के क़ुलूब में इस नाम पाक का बड़ा वक़ार होता है और खुदा का इस क़द्र ख़ौफ होता है के कुफ़्फारा अदा कर देने के बाद भी रोते रहते हैं।

हिकायत नम्बर(271) रोज़ा-ए-मेहबूब

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का जब विसाल शरीफ हो गया तो उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के रोज़ा-ए-अनवर में हाज़िर होने लगीं और चूंके हुज़ूर सल-लल्लाहो तआल अलेह व सल्लम हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के शौहर थे इसलिए हज़रत उम्मुल मोमिनीन इस ख़याल से के ये मेरे शौहर हैं। रोज़ा-ए-अनवर में खुले मुंह हाज़िर होतीं और फिर जब सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का विसाल शरीफ हुआ और वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ इसी रोज़ा-ए-अनवर में दफ़्न हुए तो फिर भी हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा इस ख़याल से एक मेरे शौहर हैं और दूसरे मेरे वालिद हैं, खुले मुंह ही हाज़िर होती रहीं और फिर जब हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का विसाल शरीफ हुआ, और वो भी इसी रोज़ा-ए-अनवर में दफ़्न हुए तो अब उम्मुल मोमिनीन ने अपना मुंह सर कपड़े से ढाँप कर हाज़िर होना शुरू किया और फ़रमाया अब यहाँ उमर भी हैं जो ग़ैर मेहरम हैं। इसलिए उनसे हया ज़रूरी है। (मिशकात शरीफ, सफ़ा 146)

सबक़:- अल्लाह वाले क़ब्र में भी तशरीफ़ ले जाएँ तो ज़िन्दा ही होते हैं। देखते और सुनते भी हैं। इसलिए हज़रत उम्मुल मोमिनीन ने हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के विसाल क बाद और क़ब्र में तशरीफ़ ले जाने के बाद भी उनसे हया ही फ़रमाई और उनसे पर्दा किया।

हिकायत नम्बर(272) उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ी अल्लाहो अन्हा

हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की साहबज़ादी हज़रत हफ़्सा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा हज़रत ख़ुनीस की बीवी थीं, हजरत ख़ुनीस के इन्तिक़ाल से ये बेवा हो गईं तो हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को उनकी फिक्र रहने लगी और जब हज़रत

उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की बीवी हज़रत रूक़य्या का जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की साहबज़ादी थीं। इन्तिक़ाल हुआ तो हज़रत फारूके आज़म ने हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से दरख़्वास्त की के वो हज़रत हफ़्सा से निकाह कर लें। हज़रत उस्मान ने इस बारे में सकूत फ़रमाया और हाँ ना की। हज़रत उमर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने इस बात की हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से शिकायत की तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के मैं हफ़्सा के लिए उस्मान से बेहतर ख़ाविंद और उस्मान के लिए हफ़्सा से बेहतर बीवी बताता हूँ। उसके बाद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत हफ़्सा से खुद निकाह फ़रमाया और हज़रत उस्मान का निकाह अपनी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसुम से कर दिया। (मदारिज-उन्नबुव्वत, सफ़ा 277, जिल्द 2)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान के रूहानी व जिस्मानी दोनों रिश्ते थे। सिद्दीके अक्बर व फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम दामाद थे और उस्मान ग़नी अली अली अलमुर्तज़ा रज़ी अल्लाहो अन्ह के आप खुस्र थे फिर जो कोई उन पाक लोगों के ख़िलाफ कुछ कहेगा तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को क्यों रंज ना पहुँचेगा।

हिकायत नम्बर(273) उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब बिनते हबश रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की फूफी ज़ाद बहन ज़ैनब का निकाह हज़रत ज़ैद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मुतनब्बे थे, हुआ था, हज़रत ज़ैद ने उनको तलाक़ दे दी थी। तलाक़ के बाद फिर उनका निकाह खुद खुदा तआला ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कर दिया था। चुनाँचे हज़रत ज़ैद रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने जब उनको तलाक़ दी और इद्दत गुज़र गई तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उनके पास पयाम भेजा। उन्होंने जवाब में अर्ज़ किया के मैं उस वक़्त तक कुछ नहीं कह सकती, जब तक अपने अल्लाह से मशवरह ना कर लूं और ये कह कर वज़ू किया और

नमाज़ की नीयत बाँध ली और ये दुआ की के या अल्लाह! तेरे रसूल मुझ से निकाह करना चाहते हैं अगर मैं इस क़ाबिल हूँ तो मेरा निकाह उनसे फ़रमा दे इधर हुज़ूर पर ये आयत उतरी *फलम्मा क़ज़ा ज़ैदन वतरन ज़व्वजना काहा* (प 23, रूकू 2)

"फिर जब ज़ैद की ग़र्ज़ उससे निकल गई तो हमने वो तुम्हारे निकाह में दे दी"

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इस आयत की खुशख़बरी भेजी तो आप खुशी से सज्दे में गिर गईं और आपको इस बात पर बड़ा फख़्र रहा के सब बीबियों का निकाह उनके वलियों ने किया और मेरा निकाह खुद खुदा जिल्लो शानहू ने किया। (मदारिज-उन-नबुव्वत, सफ़ा 279)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बदौलत अज़वाज मुतहरात की इतनी बुलंद शानें थीं के वो अपने उमूर में अपने अल्लाह से मशवरह लेती थीं और अल्लाह तआला उन्हें मसरूर फ़रमाता था फिर अगर कोई बदगौ इन पाक हस्तियों की शान में कोई एत्राज़ करे तो खुदा उस पर क्यों नाराज़ ना होगा?

हिकायत नम्बर(274) लम्बा हाथ

उम्मुल मोमिनीन हज़रत रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा बड़ी सखी थीं और बड़ी मेहनती, अपने हाथ से मेहनत करतीं जो हासिल होता वो सद्क़ा कर देतीं। एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अज़वाज मुतहरात से फ़रमाया के मुझ से सबसे पहले मरने के बाद वो मिलगी जिसका हाथ लम्बा होगा। ये इर्शाद सुनकर अज़वाज मुतहरात ने ज़ाहिरी लम्बाई समझी और लकड़ी से अपने अपने हाथ नापने शुरू कर दिए। देखा तो हज़रत सौदा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा का हाथ सबसे लम्बा निकला, और जब हज़रत ज़ैनब रज़ी अल्लाहो अन्हा का इन्तिक़ाल सबसे पहले हुआ तो फिर समझीं के हाथ की लम्बाई से मुराद सद्क़ा व ख़ैरात की कसरत थी। (मदारिज-उन्नबुव्वत, सफ़ा 279)

सबक़:- सख़ावत से खुदा और रसूल की क़ुरबत हासिल होती है।

हिकायत नम्बर(275) यसरब(1) का बादशाह

उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा हज़रत

मूसा अलेहिस्सलाम के भाई हज़रत हारून अलेहिस्सलाम की औलाद हैं और सरदार जी की बेटी हैं। आप पहले किनाना इब्ने अबी हक़ीक़ के निकाह में थीं। एक रात आपने ख़्वाब में देखा के चाँद मेरी गोद में है, आपने ये ख़्वाब अपने ख़ाविंद किनाना से बयान किया तो उसने गुस्से में आकर एक तमाँचा इस ज़ोर से मुंह पर मारा के आँख पर उसका निशान पड़ गया, और ये कहा के तू यसरब के बादशाह से निकाह की तमन्ना करती है।

खै़बर की लड़ाई में किनाना मारा गया और हज़रत सफिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा बाँदी बन कर मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गईं। हज़रत दहिया कल्बी रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से एक बाँदी माँगी। हुज़ूर ने हज़रत सफिया उन्हें दे दी। चूंके मदीने मुनव्वरह में हज़रत सफिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के क़बीले के बहुत से लोग आबाद थे और ये सरदार की बेटी थीं इसलिए लोगों ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! ये बात बहुत से लोगों को ना गवार गुज़रेगी। सफिया को अगर हुज़ूर अपने निकाह में ले लें तो बहुत से लोगों की दिलदारी होगी। चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत दहिया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को ख़ातिर ख़्वाह मुआवज़ा देकर उनको ले लिया और उनको आज़ाद फ़रमा कर उनसे निकाह फ़रमा लिया, और खै़बर से वापसी में एक मंज़िल पर उनकी रूख़सती हुई। सुबह को हुज़ूर ने फ़रमाया के जिसके पास जो चीज़ खाने की हो वो ले आए, सहाबा के पास मुताफर्रिक़ चीज़ें खजूरें, पनीर, घी वग़ैरा जो था वो ले आए, एक चमड़े का दसतरख़्वान बिछाया और उस पर वो सब डाल दिया गया और सब ने शरीक होकर खा लिया। यही वलीमा था।

बाज़ रिवायात में ये भी आया है के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत सफिया को इख़्तियार दे दिया था के अगर तुम अपनी क़ौम और मुल्क में रहना चाहो तो आज़ाद हो, चली जाओ और अगर मेरे पास मेरे निकाह में रहना चाहो तो रहो, उन्होंने अर्ज़ किया के या रसूल अल्लाह! मैं शिर्क की हालत में हुज़ूर की तमन्ना करती थी, अब मुसलमान होकर कैसे जा सकती हूँ? (मवाहिब लुदनिया, सफ़ा 205, जिल्द 1)

सबक़:- इस्लाम में तकल्लुफात का वजूद नहीं है देख लीजिए वलीमा किस सादगी से हुआ के जिसके पास जो चीज़ भी थी ले आया और एक दसतरख़्वान पर रखकर सब ने मिल कर खा लिया। फिर आज जो दुनिया भर के तकल्लुफात इख़्तियार किए जाते हैं और बिरादरी की खुशी के लिए

अंधा धुंद फिज़ूल खर्ची की जाती है। किस क़द्र ग़लत और तकलीफ़ दह रविश है। ऐसी रविश के इंसान उमर भर के लिए मक़रूज़ भी हो जाता है।

(1) मदीना मुनव्वरह का पहला नाम यसरब था और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तशरीफ़ आवरी से उसका नाम मदीना मुनव्वरह हो गया। अब मदीना मुनव्वरह को यसरब कहना जायज़ नहीं। उनवान हिकायत में यसरब इसलिए लिखा गया है के हज़रत सफ़िया रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के पहले ख़ाविद ने यसरब ही कहा था।

हिकायत नम्बर (272) नबी की बेटी, भतीजी और बीवी!

एक रोज़ हज़रत हफ़्सा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने हज़रत सफ़िया रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा से कह दिया के तू यहूदी की बेटी है। हज़रत सफ़िया रोने लगीं। इतने मैं हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ ले आए और दरयाफ़्त फ़रमाया, सफ़िया। क्यों रो रही हो? उन्होंने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! हफ़्सा ने मुझे "यहूदी की बेटी" कहा है हुज़ूर(स०अ०स०) ने फ़रमाया, सफ़िया तुम क्यों रोती हो, तुम नबी की बेटी हो, नबी की भतीजी हो और नबी की बीवी हो, यानी तुम्हारे बाप हारून अलेहिस्सलाम हैं, चचा मूसा अलेहिस्सलाम हैं और ख़ाविंद मैं हूँ। फिर ये हफ़्सा तुम पर किस बात का फख्र करती है। फिर हुज़ूर(स०अ०स०) ने हज़रत हफ़्सा से मुख़ातिब होकर फ़रमाया। ऐ हफ़्सा! अल्लाह से डरो और ऐसी बात ना करो। (मिशकात शरीफ, सफ़ा 566)

सबक़:- किसी मुसलमान का दिल नहीं दुखाना चाहिए।

फायदा:- (1) मोहद्दिसीन का अज़वाजे मुतहरात की तादाद में इख़्तिलाफ है। ग्यारह होने में तो सबका इत्तिफाक़ है ग्यारह से ज़्यादा में इख़्तिलाफ है। (मवाहिब लुदनिया, सफ़ा 201, जिल्द 1)

(2) ग्यारह अज़वाजे मुतहरात के असमाग्रामी ये हैं:- उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा। उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा। उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा। उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा। उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा। उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिनते हबश। उम्मुल मोमिनीन हज़रत मेमूना। उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिनते ख़ज़ीमा। उम्मुल मोमिनीन हज़रत जवेरिया बिनते हारिस। उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रिज़वानुल्लाही तआला अलेहिन।

(मवाहिब लुदनिया, सफ़ा मज़्कूरा)

(3) हम ने सिर्फ पाँच अज़्वाजे मुतहरात का ज़िक्र किया है।

हिकायत नम्बर(277) ख़ातूने जन्नत

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की चार साहबज़ादियों में से हज़रत ख़ातूने जन्नत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा से हुज़ूर को बहुत ज़्यादा प्यार था और आपकी बहुत बड़ी शान थी। एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुसक्कुराते हुए तशरीफ़ लाए। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने दरयाफ़्त किया। या रसूल अल्लाह! ये कैसी खुशी है? फ़रमाया। एक ताज़ा खुशखबरी की वजह से। जो अभी मेरे परवरदिगार की तरफ़ से अली और फातिमा के बारे में आई है। आज खुदा तआला ने फातिमा को अली के निकाह में दे दिया है। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 378, जिल्द 2)

सबक़:- हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा की बहुत बड़ी शान है और आपका निकाह हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ हुआ है।

हिकायत नम्बर(278) रसमे निकाह

हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा जब बालिग़ हो गईं तो हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में बहुत से पयाम पहुँचे लेकिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने किसी पयाम को मंज़ूर ना फ़रमाया। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से एक मर्तबा सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान ने आपस में मशवरा करके कहा के आप भी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में निकाह का पैग़ाम भेजें। हज़रत अबुबक्र रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने ज़र इम्दाद देने का भी वादा फ़रमाया। चुनाँचे हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए लेकिन इज़हार अर्ज़ के लिए हया मानअे थी। इसलिए सर झुका ख़ामोश बैठ गए। आखिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने खुद ही फ़रमाया क्यों ऐ अली। क्या कहना चाहते हो, कहो जो कहना है तुम्हारी अर्ज़ी सुनी जाएगी। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अपना इरादा ज़ाहिर फ़रमाया। जिसको सुनकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला

अलेह व सल्लम ने फ़रमाया, हमें मंज़ूर है। और फिर एक दिन हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के साथ चालीस दीनार चाँदी मेहर बाँधकर मस्जिदे नबव्वी में खुत्बा पढ़ा। (तारीखे़ इस्लाम, सफ़ा 162)

सबक़:- सहाबा इक्राम और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह सब आपस में एक दूसरे के खै़र ख़्वाह और दोस्त थे और हज़रत अली के निकाह क लिए सब ने कोशिश की और और हज़रत सिद्दीके़ अक्बर ने माली इम्दाद भी फ़रमाई और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह व रसूल की मर्ज़ी यही थी के हज़रत फातिमा का निकाह हज़रत अली से हो।

(मंज़ूम)

हिकायत नम्बर(279) जलवा-ए-बराअत

गोशे दिल से मोमिनो सुन लो ज़रा
है ये क़िस्सा फातिमा के अक़्द का
पंद्रह साला नबी की लाडली!
और थी बाईस साल उमर अली
अक़्द का पयाम हैदर ने दिया
मुसतफा ने मरहबा अहलन कहा
पीर का दिन सत्रह माहे रजब
दूसरा सनहे् हिजरत शाहे अरब
फिर मदीना में हुआ एलाने आम
ज़ोहर के वक़्त आएँ सारे ख़ास व आम
इस ख़बर से शोर बर्पा हो गया
कूचा व बाज़ार में ग़ुल सा मचा
आज है मौला की दुख़्तर का निकाह
आज है उस नेक अख़्तर का निकाह
आज है उस पाक सच्ची का निकाह
आज है बे माँ की बच्ची का निकाह
खै़र से जब वक़्त आया ज़ोहर का
मस्जिद नबव्वी में मजमा हो गया
एक जानिब हैं अबुबक्र और उमर
इक तरफ़ उस्मान भी हैं जलवा गर

हर तरफ़ असहाब और अनसार हैं
दरमियाँ में अहमदे मुख़्तार हैं
सामने नोशा अली अल मुर्तज़ा
हैदर करार शाहे ला फता
आज गोया अर्श आया है उतर
या के क़ुद्सी आ गए हैं फर्श पर
जमा जब ये सारा मजमा हो गया
सय्यद-उल-कोनैन ने ख़ुत्बा दिया
जब हुए ख़ुत्बे से फारिग़ मुसतफा
अक़्द ज़ौहरा का अली से कर दिया
चार सौ मिसक़ाल चाँदी मेहर था
वज़न जिसका डेढ़ सौ तोला हुआ
बाद में ख़ुर्मे लुटाए ला कलाम
मासिवा उसके ना था कोई तआम
उनके हक़ में फिर दुआऐ ख़ैर की
और हर इक ने मुबारकबाद दी
घर से रूख़्सत जिस घड़ी ज़ोहरा हुईं
वालिदा की याद में रोने लगीं
दी तसल्ली अहमद मुख़्तार ने
और फ़रमाया शहे अबरार ने
फातिमा हर तरह से बाला हो तुम
मैका व सुसराल में आला हो तुम
बाप हैं तेरे इमाम-उल-अंबिया
और शौहर औलिया के पैशवा
माह ज़िलहिज में जब रूख़्सत हुई
तब अली के घर में इक दावत हुई
जिसमें थीं दस सैर जौ की रोटियाँ
कुछ पनीर और थोड़े ख़ुर्मे बेगमाँ
इस ज़ियाफत का वलीमा नाम है
और ये दावत सुन्नते इस्लाम है

(मौलाना मुफ़्ती अहमद यार खाँ की तालीफ इस्लामी ज़िन्दगी, सफ़ा 30)

सबक़:- सबको उनकी राह पर चलना चाहिए
और बुरी रसमों से बचना चाहिए

हिकायत नम्बर (280) जहैज़

फातिमा ज़ोहर का जिस दिन अक़्द था
सुन लो उनके साथ क्या क्या नक़्द था
एक चादर सत्रह पैवंद की
मुसतफा ने अपनी दुख़्तर को ये दी
एक तोशक जिसका चमड़े का ग़िलाफ
एक तकिया ऐसा ही लिहाफ
जिसके अन्दर ऊन ना रेशम रूई
बल्के उसमें छाल खुर्मे की भरी
एक चक्की पीसने के वास्ते
एक मशकीज़ह भी पानी के लिए
एक लकड़ी का पियाला साथ में
नुक़रई कंगन की जोड़ी हाथ में
और गले में हार हाथी दांत का
एक जोड़ा भी खड़ाओं का दिया
शाहज़ादी सय्यदे कोनैन की
बे सवारी ही अली के घर गई!
साहबे लोलाक पर लाखों सलाम
इस जहैज़े पाक पर लाखों सलाम
(किताबे मज़कूरा, सफ़ा 31)

सबक़:- वास्ते जिनके बने दोनों जहाँ
उनके घर की थीं सादी शादियाँ

हिकायत नम्बर (281) शाहज़ादी की ज़िन्दगी

आई जब ख़ातूने जन्नत अपने घर
पड़ गए सब काम उनकी ज़ात पर
काम से कपड़े भी काले पड़ गए
हाथ में चक्की से छाले पड़ गए
दी ख़बर ज़ोहरा को असद-उल्लाह ने

बाँटे हैं क़ैदी रसूल अल्लाह ने
एक लौंडी भी अगर हमको मिले
इस मुसीबत से तुम्हें राहत मिले
सुनकर ज़ोहरा आईं सिद्दीक़ा के घर
ताके देखें हाथ के छाले पद्र
पर ना थे दौलत कदा पै शाहे दीं
वालिदा ने माजरा सारा कहा
फातिमा छाले दिखाने आई थीं
घर की तकलीफें सुनाने आई थीं
आपको घर में ना पाया शाहे दीं
मुझ से सब दुख दर्द अपना कह गईं
एक लौंडी आप गर उनको भी दें
चक्की और चूलहे के वो दुख से बचें
सुन लिया सब कुछ रसूले पाक ने
कुछ ना फ़रमाया शहे लोलाक ने
शब को आए मुसतफा ज़ोहर के घर
और कहा दुख़्तर से ऐ जान पद्र
हैं ये ख़ादिम इन यतीमों के लिए
बाप जिनके जंग में मारे गए
तुम पर साया है रसूल अल्लाह का
आसरा रखो फक़्त अल्लाह का
हम तुम्हें तसबीह इक ऐसी बताएँ
आप जिससे ख़ादिमों को भूल जाएँ
अव्वलन सुबहान 33 बार हो!
और फिर अलहम्द इतनी ही पढ़ो
और 34 बार हो तकबीर भी
ताके सौ हो जाएँ ये मिल कर सभी
पढ़ लिया करना इसे हर सुबह व शाम
विर्द में रखना इसे अपने मुदाम
खुल्द की मुख़्तार राज़ी हो गईं
सुन के ये इर्शाद खुश खुश सो गईं
(किताब मज़कूरा, सफ़ा 32)

सबक़:- *सालिक उनकी राह जो कोई चले*
दीन व दुनिया की मुसीबत से टले

फायदा:- अल्लामा रहावी जामअे-उल-मोजज़ात में फ़रमाते हैं, हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा हाथ से आटा गूंधतीं, ज़बान से क़ुरआन पढ़तीं, दिल से तफ़्सीर करतीं और पैर मुबारक से हुसनैन का झोला झुलातीं और आँखों से खुदा की याद में रोती थीं और आज कल की औरतें हाथ से ढोलक बजातीं, ज़बान से ग़ीबत करतीं , दिल से दुनिया को चाहतीं, आँखें से बेशर्मी का मुज़ाहेरा करतीं और पैरों से नाचतीं हैं, फिर ये जन्नत में कैसे जा सकेंगी?

हिकायत नम्बर(282) जन्नत का जोड़ा

एक यहूदी की लड़की जो बड़ी मालदार थी, बियाही गई और बहुत सी औरतें उसकी शादी में बुलाई गईं जो बड़े बैश क़ीमत कपड़े पहन कर आईं। उन औरतों ने कहा के हमारी दिली आरज़ू है के किसी तरह मोहम्मद(स०अ०स०) की बेटी फातिमा और उसके फ़ुक्र को भी देखें। चुनाँचे यहूदी की लड़की ने हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा को बुला भेजा। आपने उसकी इस तक़रीब में शामिल होने का वादा भी कर लिया अभी थोड़ी देर भी ना गुज़री थी के जिब्राईल अलेहिस्सलाम जन्नत का एक जोड़ा लेकर हाज़िर हुए और हुज़ूर(स०अ०स०) ने वो जन्नती जोड़ा हज़रत फातिमा को पहनने के लिए दिया। आपने वही जोड़ा पहना और यहूदी की लड़की की शादी में तशरीफ़ ले गईं। जब आप उन औरतों में बैठीं तो उस जोड़े से नूर के चमकारे पैदा हुए। औरतों ने हैरत में आकर पूछा, फातिमा ये लिबास तुम्हारे पास कहाँ से आया? फ़रमाया, मेरे बाप के घर से। औरतें बोलीं, तुम्हारे बाप को किस ने दिया? फ़रमाया, जिब्राईल ने, और जिब्राईल कहाँ से लाए? फ़रमाया, जन्नत से ये सुनकर सबने बाइत्तिफाक़ कलमा-ए-शहादत पढ़ा और *नशहदअन्ना लाइलाहा इलल्लाह वअन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह* के नारे से सारा मकान गूंज उठा। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 279, जिल्द 2)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और अहले बैत अेज़ाम का फ़ुक्र, फ़ुक्र इख़्तियारी था, ज़ैहदो फ़ुक्र और सादगी उनकी अपनी इख़्तियार कर्दा और तालीम उम्मत के लिए थी वरना वो जन्नत के मालिक थे और उनका लिबास भी जन्नत से बन कर आता था।

हिकायत नम्बर (283) शाही दावत

एक रोज़ हज़रत उस्मान ग़नी रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ की या रसूल अल्लाह! आज आपकी मेरे घर दावत है, हुज़ूर ने क़बूल फ़रमा लिया और अपने असहाब समेत हज़रत उस्मान के घर तशरीफ़ ले चले, हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर के पीछे पीछे चलने लगे और हुज़ूर और हुज़ूर का एक एक क़दम मुबारक जो उनके घर की तरफ़ चलते हुए ज़मीन पर पड़ रहा था गिनने लगे। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमाया। ऐ उस्मान! ये मेरे क़दम क्यों गिन रहे हो? हज़रत उस्मान ने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों। मैं चाहता हूँ के हुज़ूर के एक एक क़दम के अवज़ में आपकी तअज़ीम व तौक़ीर की ख़ातिर एक एक ग़ुलाम आज़ाद करूं। चुनाँचे हज़रत उस्मान के घर तक हुज़ूर के जिस क़द्र क़दम पड़े, उसी क़द्र ग़ुलाम हज़रत उस्मान ने आज़ाद किए।

जब ये दावत हो चुकी तो हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने घर तशरीफ़ लाए तो हज़रत फ़ातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने देखा के आप बड़े मग़मूम से थे। हज़रत फ़ातिमा ने दरयाफ़्त फ़रमाया। के आप परेशान क्यों हैं। तो फ़रमाया, फ़ातिमा! आज मेरे भाई उस्मान ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बड़ी शानदार दावत की है और हुज़ूर के एक एक क़दम के अवज़ उसने ग़ुलाम आज़ाद किए हैं ऐ काश! हम भी हुज़ूर की इसी क़िस्म की कोई दावत कर सकते। हज़रत फ़ातिमा ने फ़रमाया। आप परेशान ना हों। जाईये और हुज़ूर को आप भी दावत दे आईये। हज़रत रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया मगर इस क़द्र बड़ा इन्तिज़ाम और एक एक क़दम के बदले एक एक ग़ुलाम आज़ाद करना ये कैसे होगा? फ़रमाया, इंशा अल्लाह सारा इन्तिज़ाम हो जाएगा। चुनाँचे हज़रत अली गए और हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर दावत अर्ज़ कर दी। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने क़बूल फ़रमा ली और अपने असहाब समेत हज़रत फ़ातिमा के घर तशरीफ़ ले चले। हज़रत फ़ातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने हुज़ूर को असहाब समेत बिठाया और ख़ुद ख़लवत में तशरीफ़ ले जाकर सज्दे में गिर गईं और अल्लाह से अर्ज़ की केः

ऐ अल्लाह! तेरी बंदी फ़ातिमा ने तेरे मेहबूब और मेहबूब के असहाब

की दावत की है और तेरी बंदी का तुझी पर भरोसा है। इलाही! मेरी लाज रख और इस दावत के खाने का तू इन्तिज़ाम फ़रमा दे।"

ये दुआ माँग कर हज़रत फातिमा ने हंडिया को चूलहे पर रखा और रो रो कर फिर अपने अल्लाह से दुआ की के मौला! अपनी बंदी फातिमा को शर्मिंदा ना करना। खुदा तआला का दरयाऐ करम जोश में आया, और उसने उस हंडिया को जन्नत के खाने से भर दिया। हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने इस हंडिया में से सबको खाना भेजना शुरू फ़रमाया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और आपके सारे असहाब ने खाना तनावुल फ़रमा लिया। लेकिन, हंडिया में से कुछ भी कम ना हुआ।

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने सहाबा इक्राम से फ़रमाया जानते हो! ये खाना कहाँ से आया है? सहाबा ने अर्ज़ की, नहीं या रसूल अल्लाह! फ़रमाया, ये खाना अल्लाह ने हमारे लिए जन्नत से भेजा है। सहाबा इक्राम ये सुनकर बड़े खुश हुए।

हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो अन्हा फिर ख़लवत में गईं और सज्दे में गिर कर दुआ की के:

"ऐ अल्लाह! उस्मान ने तेरे मेहबूब के एक एक क़दम के अवज़ एक एक गुलाम आज़ाद किया है और तेरी बंदी में इतनी इसतताअत नहीं। मौला! जहाँ तूने मेरी ख़ातिर जन्नत से खाना भेज कर मेरी शर्म रख ली है वहाँ तू मेरी ख़ातिर अपने मेहबूब के इन क़दमों के बराबर जितने क़दम चलकर वो मेरे घर तशरीफ़ लाए हैं मेहबूब की उम्मत के गुनहगारों को जहन्नुम से आज़ाद कर दे।"

हज़रत फातिमा जब इस दुआ से फारिग़ हुईं तो जिब्राईले अमीन ने हाज़िर होकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! अल्लाह तआला ने मुझे ये बशारत देकर भेजा है के आपकी साहबज़ादी की दुआ क़बूल फ़रमाते हुए हमने आपके हर क़दम के अवज़ एक हज़ार गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद कर दिया। ये बशारत सुनकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम और सहाबा इक्राम बड़े खुश हुए। (जामअे-अल-मोजज़ात मिस्री, सफ़ा 65)

सबक़:- हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा का बड़ा बुलंद मर्तबा है के आपकी ख़ातिर अल्लाह ने जन्नत से खाना भेजा। और आपके तुफ़ैल खुदा ने गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद कर दिया, और ये भी मालूम

हुआ के हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बड़े सखी और हुज़ूर के सच्चे जाँबाज़ थे और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम और अहले बैत अेज़ाम सब आपस में मोहब्बत रखते थे।

हिकायत नम्बर(284) राज़ की बात

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा फ़रमाती हैं के हुज़ूर अलेहिस्सलाम के मर्ज़ विसाल के दिनों एक दिन हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुईं तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उन्हें अपने दायें जानिब बिठा लिया और फिर कोई राज़ की बात उनसे फ़रमाई। जिसे सुनकर हज़रत फातिमा रो पड़ीं हुज़ूर ने फिर कोई दूसरी बात फ़रमाई जिसे सुनकर हज़रत फातिमा हंस पड़ीं। हज़रत फातिमा ने फ़रमाया, मैं रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के राज़ को अफ़्शा ना करूंगी। फिर जब हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का विसाल हो गया तो मैंने हज़रत फातिमा से पूछा के बेटी! अब तो बता दो, के उस रोज़ क्या बातें हुईं थीं के तुम पहले रो पड़ी थीं और फिर हंस भी दी थीं। हज़रत फातिमा ने फ़रमाया, अम्मी जान! हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मुझे पहले ये फ़रमाया था के जिब्राईल मेरे साथ हर साल क़ुरआन का एक बार दौरा किया करता था मगर इस साल उसने दो दफा दौरा किया है। मुझे मालूम होता है के मेरे विसाल का वक़्त आ गया है। मैं ये बात सुन कर रो पड़ी और फिर हुज़ूर ने फ़रमाया, बेटी! मेरे अहले बैत में से सबसे पहले तुम्हारा विसाल होगा, तो मैं ये बात सुनकर हंस पड़ी थी। (बुखारी शरीफ, सफ़ा 512, जिल्द 1)

सबक़:- हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा को एक ख़ास मुक़ाम हासिल था और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को अपने विसाल शरीफ का इल्म था। और आपको हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के भी विसाल शरीफ का इल्म था।

हिकायत नम्बर(285) विसाल फातिमा

ख़ातूने जन्नत हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा जब बीमार हुईं तो हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उनसे फ़रमाया। ऐ फातिमा! मेरी ये वसीयत है के जब हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह

व सल्लम के पास पहुँचो तो मेरा सलाम अर्ज़ करना और कहना, या रसूल अल्लाह! मैं आप का बड़ा मुश्ताक़ हूँ। हज़रत फातिमा ने फ़रमाया और मेरी भी एक वसीयत है और वो ये के जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो मुझ पर चीख़ चिल्लाकर मातम ना करना और मेरे नूरे चश्म हसन व हुसैन को मारना नहीं, और ऐ शेरे खुदा! वो देखिए, हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम फरिश्तों के अंबूह में तशरीफ़ ले आए हैं। अब मैं जा रही हूँ और मेरे इन्तिक़ाल के बाद फलाँ जगह मैंने एक कागज़ का टुकड़ा बड़ी हिफाज़त से रखा है उस कागज़ को निकाल कर मेरे कफ़न में रख देना और उसे पढ़ना नहीं। हज़रत अली ने फ़रमाया, फातिमा! रसूल अल्लाह का वास्ता देकर कहता हूँ के मुझे बता दो के उस कागज़ में क्या लिखा है? हज़रत फातिमा ने फ़रमाया। मेरा निकाह जब आपसे होने लगा था तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मुझ से फ़रमाया, फातिमा! मैं अली से चार सौ मिश्क़ाल चाँदी के मेहर पर तुम्हारा निकाह करने लगा हूँ। मैंने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! अली मंज़ूर हैं लेकिन इतना मेहर मुझे मंज़ूर नहीं। इतने में जिब्राईले अमीन ने हाज़िर होकर हुज़ूर से अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! खुदा फ़रमाता है के मैं जन्नत और उसकी नओमतें फातिमा का मेहर मुक़र्रर करता हूँ। हुज़ूर ने मुझे उसकी ख़बर दी तो मैं फिर भी राज़ी ना हुई हुज़ूर ने फ़रमाया तो फिर तुम खुद ही बताओ के मेहर क्या हो? मैंने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह! आप हर वक़्त अपनी उम्मत के ग़म में रहते हैं। मैं चाहती हूँ के आपकी गुनहगार उम्मत की बख़्शिश मेरा मेहर मुक़र्रर हो। चुनाँचे जिब्राईल वापस गए और फिर ये कागज़ का टुकड़ा लेकर आए जिसमें लिखा है। *जआल्तू शिफाअता उम्मती मोहम्मदिन सदाक़ू फातिमाता* मैंनें उम्मते मोहम्मद की शफाअत फातिमा का मेहर मुक़र्रर किया" (जामअे-अल-मोजज़ात मिस्री, सफ़ा 62)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के सदक़ा में हम गुनहगारों पर अल्लाह का बड़ा फ़ज़्लो करम है के हुज़ूर की साहबज़ादी को भी हम गुनहगारों का ख़याल रहा और वो हमारी बख़्शिश का इन्तिज़ाम फ़रमा गईं। फिर ये कहना के उन अल्लाह वालों से कुछ हासिल नहीं होता। किस क़द्र जहालत की बात है है और ये भी मालूम हुआ के चीख़ चिल्ला कर मातम नहीं करना चाहिए। इस चीज़ से खुद ख़ातूने जन्नत ने भी मना फ़रमाया है।

हिकायत नम्बर (286) हज़रत अली (र०अ०) और कूफे का लश्कर

एक दफा जब हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने कूफे से लश्कर तलब फ़रमाया और बहुत सी क़ीलो क़ाल के बाद वहाँ से लश्कर भेजा गया तो लश्कर के आने से पहले ही हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने ख़बर दे दी के कूफे से बारह हज़ार आदमी आ रहे हैं। आपके साथियों में से एक साहब लश्कर की गुज़रगाह पर आन बैठे और जब लश्कर आया तो एक एक आदमी को गिनना शुरू कर दिया। चुनाँचे जितनी तादाद हज़रात अली ने बताई थी। उससे एक भी कमो बैश ना निकला, और पूरे बारह हज़ार आदमी ही निकले (शवाहिद-उन्नबुव्वत, सफ़ा 2)

सबक़:- हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का ये इल्म सब सद्क़ा था हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का फिर खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की वुसअते इल्म का कौन अंदाज़ा कर सकता है, बावजूद इसके अगर कोई हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मुतअल्लिक़ यूं कहे के आपको दीवार पीछे का भी इल्म ना था तो खुद ही फैसला कर लीजिए के वो शख़्स खुद जाहिल बल्के अजहल है या नहीं?

हिकायत नम्बर (287) क़िबाला नवैसी

हज़रत मौलाना अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुआ और अर्ज़ की के मैंने एक मकान ख़रीदा है। आप उसका क़िबाला बीअ नामा तहरीर फ़रमा दीजिए। हज़रत अली ने फ़रमाया के बीअ नामा का पहले मुसव्वदा सुन लो फिर क़िबाला लिखवा लेना।

इश्तरा मग़रूरुन मिन मग़रूरी रारन ला बक़ाआ लहा वला लिसाहिबहा व हिया फी सिक्कातिल ग़ाफीलीना अलहद्दू अव्वलु अलमौतू। वलहद्दूस्सानिल क़ब्र। वलहद्दूस्सालिसुल हशरू वलहद्दूर्राबीअ ग़ैरू मालूमिन इम्मा जन्नतू अविन्नारू।

एक मकान धोका खाने वाले ने धोका खाए हुए से ख़रीदा। ना वो मकान रहेगा, ना मकान वाला और वो मकान ग़ाफिल लोगों की गली में है और उसकी चारों हदें ये हैं।

"अव्वल हद उसकी मौत है, दूसरी हद क़ब्र है, तीसरी हद मैदाने हश्र है

और चौथी हद मालूम नहीं जन्नत है या दोज़ख़"

जब ये मुसव्वदा ख़रीदार ने सुना तो रोता हुआ चला गया। और मकान ख़रीदने से इंकार कर दिया। (सीरत-उल-सालेहीन, सफ़ा 71)

सबक़:- दुनिया और अहले दुनिया को बक़ा हासिल नहीं आख़िर फ़ना है और इंसान को लाज़िम है के वो हर वक़्त मौत, क़ब्र और हश्र को याद रखे।

हिकायत नम्बर(288) अमल का संदूक़

एक शख़्स जिनका नाम कमील था। हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हमराह कहीं जा रहे थे के रास्ते में एक क़ब्रिस्तान आ गया। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो आला अन्ह ने वहाँ अहले क़बूर को ख़िताब फ़रमाया। और फ़रमाया ऐ अहले क़बूर! ऐ वहशत व तनहाई वालो! क्या ख़बर है और क्या हाल है फिर इर्शाद फ़रमाया के हमारी ख़बर तो ये है के तुम्हारे बाद तुम्हारे अमवाल तक़सीम हो गए। तुम्हारी औलादें यतीम हो गईं तुम्हारी बीवियों ने दूसरे ख़ाविंद कर लिए।

ये तो हमारी ख़बर है, तुम कुछ अपनी तो कहो, कमीन कहते हैं के हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फिर मेरी तरफ़ मुख़ातिब हुए और फ़रमाया के ऐ कमील! अगर इन लोगों को बोलने की इजाज़त होती तो ये लोग जवाब में ये कहते के बेहतरीन तोशा तक़्वा है। ये फ़रमया और फिर हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह रोने लगे और फ़रमाया, ऐ कमील! क़ब्र अमल का संदूक़ है और मरने के बाद क़ब्र में इस बात का इल्म हो जाता है। (कंज़-उल-उम्माली व मिसलाहू फी हुज्जतुल्लाही अललआलीमीना, सफ़ा 862)

सबक़:- मरने के बाद सब कुछ यहीं रह जाता है और सब चीज़े दूसरों के क़ब्ज़े में आ जाती हैं। इंसान के साथ अगर कोई चीज़ जाती है तो नेक आमाल, बक़ौल शायर

कहा अेहबाब ने ये दफ़्न के वक़्त
के हम क्यों कर वहाँ का हाल जानें
लहद तक आपकी तअज़ीम कर दी
अब आगे आपके आमाल जानें

और ये भी मालूम हुआ के क़ब्र अमल का संदूक़ है जिस तरह संदूक़ में चीज़ मेहफ़ूज़ रहती है। इसी तरह आदमी जो कुछ अच्छा बुरा काम करता

है। वो उसकी क़ब्र में मेहफ़ूज़ रहता है।

हिकायत नम्बर(289) खुश तबई

एक दिन हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे और उनके दायें बायें दो बुलंद क़ामत सहाबी चल रहे थे। चूंके हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का क़द मुबारक उन दोनों सहाबियों से छोटा था। इसलिए उनमें से एक सहाबी ने हज़रत अली से अज़रह खुश तबई कहा के *"अंता बेनना कान्नोनी फी लना"* यानी ऐ अली! आप हम दोनों के दरमियान ऐसे होते हैं जैसे लफ़्ज़ "लना" में "नून" मतलब ये के हम दोनों आपकी निस्बत दराज़ क़द के हैं। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने जवाब में फ़रमाया: *लो लम अकुन बैनाकुमा लकुंतुमा ला* यानी अगर मैं तुम्हारे दरमियान होता तो तुम मअदूम हो जाते क्योंके "लना" से नून को निकाल दिया जाए तो बाक़ी "ला" रह जाता है और का मानी (ना) और मअदूम है। (कशफ-उल-ग़मा और मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 308)

सबक़:- पाक लोगों का मज़ाक़ भी पाक और इल्मी होता है, बस मज़ाक़ व खुश तबई ऐसी होनी चाहिए जिसमें फुक्कड़ बाज़ी और बेहूदगी ना हो।

मंज़ूम

हिकायत नम्बर(290) इम्तिहान

मुर्तज़ा शेरे खुदा के सामने
अर्ज़ की इक मुशरिक नाकाम ने
आपको कहते सुना है बारहा
हाफिज़ व नासिर हमारा है खुदा
आप का सच्चा है अगर ये कलाम
उस पे रखते हैं यक़ीं भी आप तमाम
उस मकाँ के बाम पर चढ़िए ज़रा
कह के बिस्मिल्लाह गिर पढ़िए ज़रा
हम भी तो देखें तुम्हारा वो खुदा
किस तरह मरने से लेता है बचा
आपने फ़रमाया ये तेरा सवाल
है हिमाक़त का निशाँ ऐ बे कमाल

है तेरा मतलब बनूं मैं बे अदब
इम्तिहाँ लूं उसका जो है मेरा रब
हम तो बन्दे हैं हमारी क्या मजाल
इम्तिहाँ लें उसका जो है ज़िल्लो जलाल
है हकीम व क़ादिर व मतलक़ खुदा!
काम में उसके नहीं चूं व चरा

(दर मंज़ूम तर्जुमा मसनवी शरीफ, सफ़ा 36)

सबक़:-

इख़्तियार आक़ा को है ये बारहा
आज़माए अपने बन्दे की वफा
बन्दा आक़ा का अगर ले इम्तिहाँ
उसको दीवाना कहेगा कुल जहाँ

हिकायत नम्बर(291) मसले का जवाब

मुर्तज़ा के पास इक नादाँ गया
फिक्रे जब्र व क़द्र में था मुबतला
ये कहा हज़रत मुझे समझाइये
अक़्ल है चक्कर में कुछ बतलाइये
आपने फ़रमाया मेरे सामने
सरोक़द हो जाओ इक लहज़ा खड़े
उसने इर्शाद की तामील चुस्त
आप बोले हाँ खड़े हो तुम दुरूस्त
पर ज़रा तकलीफ इतनी कीजिए!
थोड़ी इक टाँग अपनी ऊँची कीजिए
इक पाऊँ पर खड़ा फौरन हुआ
और कुछ इर्शाद? वो कहने लगा
कह रहा था ये निहायत फ़ख्र से
इख़्तार और मुक़द्दरत सब है मुझे
यूं कहा हज़रत ने किया शक है भला
दूसरी भी टाँग उठा कर पर दिखा
सुन के बोला उससे मैं मजबूर हूँ
ये तो हो सकता नहीं मअज़ूर हूँ

फिर पकड़ कर कान बोला ऐ जनाब
पा लिया अपनी ज़बाँ से खुद जवाब

(दर मंज़ूर, सफ़ा 144)

सबक़:- *गो के कहलाते हैं फाइल सब के सब*
है हकीक़ी फाइल में एक रब
आदमी में गो के हैं अक्सर सिफात
पर वो नाकिस हैं निहायत बे सिबात

(नोट) हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के मुतअल्लिक़ मुफस्सिल हिकायत इस किताब के पहले हिस्से के चौथे बाब खुलफाऐ राशिदीन में गुज़र चुकी है।

हिकायत नम्बर (292) हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तअला अलेह व सल्लम मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा थे। और साथ ही पहलू में हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भी तशरीफ़ फ़रमा थे। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम एक नज़र लोगों की तरफ़ फ़रमाते और एक नज़र इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की तरफ़। और फ़रमाते ये मेरा बेटा सरदार है और अल्लाह तआला इसके ज़रिये मुसलमानों के दो बड़े बड़े गिरोहों में सुलह कराएगा। (मिश्कात शरीफ, सफ़ा 501)

सबक़:- हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को बहुत प्यारे थे, लिहाज़ा हर मुसलमान को उनसे मोहब्बत रखना चाहिए और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने जो आपको मुसलमानों के दो गिराहों में सुलह कराने वाला फ़रमाया है वो इशारा था इस वाक़ेया की तरफ़ जब के हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के विसाल शरीफ के बाद हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तख़्ते ख़िलाफत पर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो एक गिरोह हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का हामी था और उसके इख़्तिलाफ से लड़ाई का एहमाल था इस मौक़े पर हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने चन्द शरायत पर हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हक़ में ख़िलाफत से दस्त बरदारी

फ़रमा कर तख़्ते सलतनत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के लिए ख़ाली कर दिया और मुसलमानों के दो गिराहों को आपस में टकराने से बचा लिया। मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का हामी था और इस इख़्तिलाफ़ से लड़ाई का एहमाल था इस मौके पर हज़रत पर हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने चन्द शरायत पर हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हक़ में ख़िलाफ़त से दस्त बरदारी फ़रमा कर तख़्त सलतनत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के लिए ख़ाली कर दिया और मुसलमानों के दो गिरोहों को आपस में टकराने से बचा लिया। मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के तरफ़दार भी मुसलमान ही थे। इसलिए के हुज़ूर ने मुसलमानों के दो बड़े बड़े गिरोहों का जुमला इर्शाद फ़रमाया है और ये भी मालूम हुआ के हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के वाजिब-उल-ताज़ीम सहाबी हैं। उनके मुतअल्लिक़ किसी क़िस्म की गुस्ताख़ी जायज़ नहीं इसलिए के अगर वो ऐसे ना होते तो हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह उनके हक़ में दस्त बरदार क्यों हो जाते। और क्यों ना उनकी बिलकुल इसी तरह मुख़ालफ़त फ़रमाते। जिस तरह आप के छोटे भाई हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने यज़ीद की मुख़ालफ़त की थी।

हिकायत नम्बर (293) डेढ़ लाख

हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की तरफ़ से हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का वज़ीफ़ा एक लाख सालाना मुक़र्रर था। एक साल वज़ीफ़ा पहुँचने में ताख़ीर हो गई और इस वजह से हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को सख़्त तंगी दरपैश हुई। आपने चाहा के अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को उसकी शिकायत लिखें। लिखने का इरादा फ़रमाया। और दवात मंगाई। मगर कुछ सोच कर तवक़्क़ुफ़ फ़रमाया। ख़्वाब में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के दीदार से मुशर्रफ़ हुए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमाया के ऐ मेरे फ़रज़ंद क्या हाल है? अर्ज़ किया। अलहम्दू लिल्लाह बख़ैर हूँ। और वज़ीफ़ा की ताख़ीर की शिकायत की। हुज़ूर

ने फ़रमाया तुम ने दवात मंगाई थी ताके तुम अपनी तकलीफ की ख़ैरित लिख कर भेजो। अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह मजबूर था। क्या करता, फ़रमाया। ये दुआ पढ़ो। *अल्लाहुम्मा अक़्ज़िफ़ू फी क़ल्बी रिजाअका इक़्ता रिजाई अम्मन सिवाका हत्ता ला अरजू अहादा ग़ैराका। अल्लाहुम्मा वमा ज़अफत अनहू वक़ावती व क़सरा अनहू अमली वलम तनतही इलेही रग़बती वलम तबलुग़हू मस्अलती वलम यजिर अला लिसानी मिम्मा आतेता मिनल अव्वलीना व आख़िरीना मिनल यक़ीनी फखुस्सनी बिही या रब्बिल आलमीन।*

हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह फ़रमाते हैं के इस वाक़ेये पर एक हफ़्ता ना गुज़रा था के अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मेरे पास एक लाख पचास हज़ार भेज दिए और मैंने अल्लाह तआला की हम्दो सना की और उसका शुक्र बजा लाया। फिर ख़्वाब में दौलत दीदार से बहरामंद हुआ। सरवरे आलम सल-लल्लाहो ताला अलेह व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ हसन! क्या हाल है, मैंने खुदा का शुक्र करके वाक़ेया अर्ज़ कर दिया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ फ़रज़ंद जो अपने ख़ालिक़ से लौ लगाए। उसके काम यूंही बनते हैं। (तारीख़-उल-खुल्फा, सफ़ा 135)

सबक़:- हज़रत अमीर मुआविया(र०अ०) के दिल में हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का अदब व एहत्राम था और आपने हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का एक माक़ूल वज़ीफा मुक़र्रर कर रखा था और एक साल ताख़ीर हो जाने पर उसकी तलाफी मज़ीद निस्फ लाख से कर दी और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िलाफत व इमामत को जायज़ समझते थे। वरना आप हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की तरफ़ से मुक़र्रर कर्दा वज़ीफा कभी क़बूल ना फ़रमाते।

हिकायत नम्बर(294) अच्छा सवार

एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को जब के वो बच्चे थे, अपने कंधे मुबारक पर बिठा लिया। रास्ते में एक शख़्स मिला और उसने जो इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम

के कंधे पर देखा तो कहने लगा ऐ बच्चे! बड़ी अच्छी सवारी पर सवार हो। हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने ये सुनकर फ़रमाया! और सवार भी तो बड़ा अच्छा है (तारीख़-उल-खुल्फ़ा, सफ़ा 32)

सबक़:- हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम को बड़े प्यारे थे। पस उनसे प्यार रखना हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को खुश करना है।

हिकायत नम्बर (295) ख़ताकार को इनाम

एक दिन हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने दौलत कदा में चन्द महमानों के साथ मिल कर खाना तनावुल फ़रमा रहे थे के आपने अपने ग़ुलाम को सालन लाने के लिए इर्शाद फ़रमाया। वो लाया तो अचानक उसके हाथ से बर्तन गिर पड़ा। और टूट गया। और सालन का कुछ हिस्सा हज़रत इमाम हसन पर भी गिरा। ग़ुलाम ये मंज़र देखकर घबराया। हज़रत इमाम हसन रज़ी अलाहो तआला अन्ह ने उसकी तरफ़ देखा तो उसने झट ये आयत पढ़ दी के *वलकाज़ीमीनल ग़ैज़ा* (और ग़ुस्सा पीने वाले) आपने फ़रमाया, मैंने ग़ुस्सा पी लिया। उसने फिर पढ़ा *वलआफीना अनिन्नासी* (और लोगों से दरगुज़र करने वाले) आपने फ़रमाया, जाओ, मैंने माफ भी कर दिया। उसने फिर पढ़ा *वल्लाहो युहिब्बुल मूहसीनीना* और अहसान करने वाले अल्लाह के महबूब हैं, आपने फ़रमाया। जाओ मैंने तुम्हें आज़ाद भी कर दिया। (रूह-उल-बयान, सफ़ा 367, जिल्द 1)

सबक़:- ज़ेर दस्तों पर रहम करना चाहिए और ग़ुस्से को पी लेना और ख़ताकार को माफ कर देना और उस पर एहसान भी करना ये अल्लाह के महबूबों का काम है। पस हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अल्लाह के महबूब थे।

हिकायत नम्बर (296) सख़ी घराना

एक मर्तबा हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हज को जा रहे थे के जिस ऊँट पर ज़ादे राह लदा हुआ था वो ऊँट कहीं पीछे रह गया, एक जगह भूके प्यासे होकर एक बूढ़िया की झोंपड़ी में तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कुछ पीने को है? उसने अर्ज़ की हाँ है, उस बूढ़िया के पास एक बकरी थी और उसका दूध दोह कर हाज़िर किया। उन्होंने पिया। फिर पूछा, कुछ खाने

को भी है? उसने जवाब दिया के तैयार नहीं है। उसी बकरी को ज़िबह करके खा लीजिए। चुनाँचे वो बकरी ज़िबह की गई और उसे खाकर फ़रमाया! बड़ी बी! हम कुरैश में से हैं। जब इस सफ़र से फिरेंगे तो तू हमारे पास आना। हम तेरे एहसान का बदला देंगे ये फ़रमा कर रवाना हो गए। जब उस बूढ़िया का ख़ाविंद घर पहुँचा तो ख़फ़ा होकर कहने लगा के तूने बकरी उन लोगों को खिला दी जिनको तू जानती भी नहीं के वो कौन हैं। थोड़े दिन गुज़रे थे के वो मियाँ बीवी मुफलिसी के बाइस मदीने मुनव्वरह में आ पड़े। और ऊँट की लेंडियाँ चुन चुन कर बैचने लगे। एक दिन बूढ़िया कहीं जाती थी के हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने दर दौलत पर तशरीफ़ फ़रमा थे। आपने उस बूढ़िया को देख लिया और पहचान लिया और उसे बुलाकर फ़रमाया बड़ी बी! मुझे पहचानती है? उसने अर्ज़ किया नहीं। फ़रमाया! मैं वो शख़्स हूँ जो फलाँ दिन तेरा महमान हुआ था। बूढ़िया ने बग़ौर देखा और बोली, हाँ हाँ पहचान गई वाक़ई आप मेरी झोंपड़ी में तशरीफ़ लाए थे। हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हुक्म फ़रमया के एक हज़ार बकरियाँ खरीद कर इस बूढ़िया को दी जाएँ और साथ ही एक हज़ार दीनार नक़्द भी दिया जाए। चुनाँचे तामील इर्शाद की गई और बूढ़िया को एक हज़ार बकरियाँ और एक हज़ार दीनार नक़्द दे दिया गया और फिर हज़रत इमाम हसन ने अपने ग़ुलाम को साथ करके उस बूढ़िया को हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास भेज दिया। हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उससे पूछा के भाई साहब ने तुम्हें क्या दिया? बूढ़िया ने जवाब दिया के एक हज़ार बकरियाँ और एक हज़ार दीनार। हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने भी एक हज़ार बकरियाँ और एक हज़ार दीनार उस बूढ़िया को इनायत फ़रमाए और फिर आपने ग़ुलाम के साथ उस बूढ़िया को हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर(र०अ०) के पास भेज दिया। उन्होंने पूछा के दोनों भाईयों ने तुम्हें क्या दिया। वो बोली! दो हज़ार बकरियाँ और दो हज़ार दीनार। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर (र०अ०) ने भी उसको दो हज़ार बकरियाँ और दो हज़ार दीनार अता फ़रमा दिए। वो बूढ़िया चार हज़ार बकरियाँ और चार हज़ार दीनार लेकर अपने ख़ाविंद के पास आ गई और कहने लगी। ये इनाम उन सख़ियों ने इनायत फ़रमाया है जिनको मैंने बकरी खिलाई थी। (कीमियाए सआदत, सफ़ा 259)

सबक़:- अहले बैत अेज़ाम का घराना सखी घराना है। बूढ़िया ने बग़ैर जाने पहचाने सिर्फ एक बकरी खिलाई और अहले बैत की सख़ावत से माला

माल हो गई। फिर जो उन लोगों को जान पहचान कर उनके नाम किसी नियाज़ का ईसाल करेगा तो वो क्यों ना दीन व दुनिया में कामयाब होगा।

हिकायत नम्बर (297) क़ीमती शर्बत

हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हाँ एक मेहमान आया। उसने खाना खाने के बाद शर्बत तलब किया हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने दरयाफ़्त फ़रमाया के आपको कौन सा शर्बत दरकार है। मेहमान ने जवाब दिया के वो शर्बत जो ना मिलने के वक़्त जान से ज़्यादा क़ीमती और मिल जाने के वक़्त निहायत कम क़ीमत होता है। इमाम साहब ने नौकरों से फ़रमाया के मेहमान पानी माँगता है। हाज़रीन को आपकी ज़हानत पर निहायत हैरानी हुई। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 218)

सबक़:- पानी खुदा तआला की एक बड़ी ग्राँक़द्र और क़ीमती नअेमत है। शेख सादी अलेहिर्रहमत फ़रमाते हैं के मुर्ग़ी को देखिए के एक घूंट पानी का पी कर फौरन अपना मुंह ऊपर आसमान की तरफ़ उठा कर गोया अल्लाह का शुक्र अदा कर लेती है। मगर अफ़्सोस के ग़ाफ़िल इंसान बीसियों मन पानी पी कर भी अल्लाह का शुक्र अदा नहीं करता।

हिकायत नम्बर (298) खून आलूद छुरी

एक रोज़ एक शख़्स को गिरफ़्तार करके हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के सामने लाया गया। गिरफ़्तारी एक वीरान ग़ैर आबाद मुक़ाम से हुई थी। गिरफ़्तारी के वक़्त उसके हाथ में एक खून आलूद छुरी थी। ये खड़ा हुआ था और एक लाश खाक व खून में तड़प रही थी।

उस शख़्स ने हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के सामने इक़्बाले जुर्म कर लिया और उन्होंने क़िसास का हुक्म दिया। इतने में एक और शख़्स दौड़ता हुआ आया और उसने हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के सामने इक़्बाले जुर्म किया। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मुल्ज़िम अव्वल से दरयाफ़्त किया के तूने क्यों इक़्बाल किया था उसने कहा के जिन हालात में मेरी गिरफ़्तारी की गई थी। मैंने समझा के इन हालात की मौजूदगी में मेरा इंकार कुछ भी मुफीद साबित ना होगा पूछा गया के वाक़्या क्या है? उसने कहा मैं कसाब हूँ, मैंने जाए वक़ के क़रीब ही बकरे को ज़िबह किया था। गोश्त काट रहा था के मुझे पैशाब का ज़ोर पड़ा और मैं जाए वक़ के क़रीब पैशाब के लिए

बैठा और जब फ़ारिग़ हुआ तो मेरी नज़र लाश पर पड़ गई। मैं उसे देखने के लिए क़रीब पहुँचा और देख ही रहा था के पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया सब लोग कहने लगे के यही क़ातिल है मुझे यक़ीन हो गया के उन लोगों के बयानात के सामने मेरे बयान का कुछ ऐतबार ना किया जाएगा। इसलिए मैंने इक़्बाल ही कर लेना बेहतर समझा।

अब दूसरे इक़्बाली मुजरिम से दरयाफ़्त फ़रमाया। उसने कहा मैं एक आराबी हूँ, मुफ़लिस हूँ, मक़्तूल को मैंने ब तमे माल क़त्ल किया था। इतने में मुझे किसी के आने की आहट मालूम हुई मैं एक गोशे में जा छिपा इतने में पुलिस आ गई उसने पहले मुल्ज़िम को पकड़ लिया। अब जब उसके ख़िलाफ़ फ़ैसला सुनाया गया तो मेरे दिल ने मुझे आमादा किया के मैं इस बेगुनाह को बचाऊँ और अपने जुर्म का इक़्बाल कर लूं।

ये सुनकर हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से पूछा के तुम्हारी क्या राय है? तो उन्होंने कहा। अमीर-उल-मोमिनीन अगर इस शख़्स ने एक को हलाक किया है तो उस शख़्स की जान भी बचाई है और अल्लाह ने फ़रमाया है *वमन अहयाहा फकान्नामा अहयान्नसा जमीआ* हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने ये मशवरा क़बूल कर लिया और दूसरे मुल्ज़िम को भी छोड़ दिया और मक़्तूल का खून बहा बैत-उल-माल से दिला दिया। (अत्तरक़-उल-हिकमियह फी अलसियासत-उल-शरिया, सफ़ा 56)

सबक़:- क़ाज़ी व हज को फ़ैसला करते वक़्त बड़ी सोच और समझ के साथ और सोच व समझ वालों से मशवरा लेने के बाद फ़ैसला करना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बड़े दाना और नुक्ता के मालिक थे और ये भी मालूम हुआ के बड़ा अगर छोटे के मशवरे को बेहतर जानकर उस पर अमल करे तो उसकी बड़ाई में फ़र्क नहीं आ जाता जिस तरह के हज़रत उमर फारूक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भी बाज़ अवक़ात हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के मशवरे पर अमल फ़रमा लिया करते थे।

हिकायत नम्बर(299) जन्नत का सेब

एक मर्तबा हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा ने बचपन में दो तख़्तियों पर कुछ लिखा और बाहम एक दूसरे से कहने लगे के मेरा ख़त अच्छा है, चुनाँचे दोनों इस बात का फ़ैसला लेने

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास पहुँचे। हज़रत मौला अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने इस मुक़द्दमे का मुराफ़ेआ हज़रत फ़ातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के सपुर्द फ़रमाया और हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने फ़रमाया। बेटो! इस बात का फ़ैसला तुम अपने नाना जान हुज़ूर मोहम्मद-उर-रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कराओ। चुनाँचे दोनों भाई हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। तुम्हारा फ़ैसला जिब्राईल करेंगे। जिब्राईले अमीन हाज़िर हुए। और कहने लगे। या रसूल अल्लाह! खुदा तआला ये फ़ैसला खुद फ़रमाएगा। चुनाँचे खुदा तआला का जिब्राईल को हुक्म हुआ के जिब्राईल जन्नत से एक सेब ले जाओ। और वो सेब उन दोनों की तख़्तियों पर डाल दो। सेब जिस की तख़्ती पर ठहर जाए। वही ख़त अच्छा है। चुनाँचे जिब्राईल ने जन्नत का एक सेब लाकर इन तख़्तियों पर गिरा दिया तो खुदा के हुक्म से उस सेब के दो टुकड़े हो गए और एक टुकड़ा तो हज़रत हसन की तख़्ती पर अेर दूसरा हज़रत हुसैन की तख़्ती पर जा पड़ा और फ़ैसला ये हुआ के दोनों ही का ख़त अच्छा है। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 391, जिल्द 2)

सबक़:- हज़रत इमाम हसन और हज़र इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा को खुदा तआला से एक ख़ास निस्बत थी और खुदा तआला अपने मेहबूब के इन शहज़ादों की दिल शिकनी नहीं चाहता फिर जो शख़्स इन शहज़ादों की किसी क़िस्म की तोहीन का इरतिकाब करे तो वो किस क़द्र ज़ालिम है।

हिकायत नम्बर (300) फरिश्ते की डयूटी

एक मर्तबा हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्हा बचपन में घर से कहीं बाहर तशरीफ़ ले गए तो हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा कुछ परेशान सी हुईं के शहज़ादे कहाँ चले गए इतने में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ ले आए तो हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! हसन व हुसैन आज कहीं खो गए, और मुझे मालूम नहीं के कहाँ चले गए। इतने में जिब्राईले अमीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया के या रसूल अल्लाह आपके दोनों शहज़ादे फलाँ जगह हैं। आप परेशान ना हों। खुदा ने उनकी हिफाज़ के लिए एक फरिश्ता मतय्यन कर रखा है। ये सुनकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम

इस जगह तशरीफ़ ले गए। क्या देखते हैं के दोनों साहबज़ादे तो पड़े सोते हैं और फरिश्ता एक बाज़ू उनके नीचे बिछाए हुए और दूसरे से साया किए हुए बैठा है। हुज़ूर ने दोनों का मुंह चूम लिया और उठा कर घर ले आए। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 392, जिल्द 2)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम के ये दोनों शहज़ादे फरिश्तों के भी मख़्दूम हैं। फिर इंसानों के लिए भी क्यों लाज़िम ना होगा के वो इन शहज़ादों की मोहब्बत अपने दिल में रखें और उनके नक़्शे क़दम पर चलकर उनको अपना पैशवा व मख़्दूम जानें।

हिकायत नम्बर(301) प्यास का इलाज

एक दिन हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हज़रत हुसन और हज़रत हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के रोने की आवाज़ सुनी तो आप जल्दी से घर तशरीफ़ ले गए और हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा से फ़रमाया मेरे बेटे क्यों रो रहे हैं? हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! इन्हें प्यास लग रही है और इस वक़्त पानी यहाँ मौजूद नहीं। हुज़ूर ने फ़रमाया! इन्हें इधर लाओ। चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने पहले हसन को उठाया और अपनी ज़बान मुबार उनके मुंह में डाल दी और हसन ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़बान चूसना शुरू की और उनकी प्यास जाती रही और चुप हो गए। फिर आप सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने हुसैन को उठाया और उनकी मुंह में भी ज़बान डाली और वो भी ज़बान मुबारक चूस कर सैर हो गए। और चुप हो गए। (हुज्जत-उल्लाह अललआलमीन सफ़ा 681)

सबक़:- हज़रत हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को किसी क़िस्म की तकलीफ हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर शाक़ गुज़री थी और उनके रोने से हुज़ूर को रंज पहुँचता था। फिर जिन ज़ालिमों ने हज़रत हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को सताया और रूलाया। उन्होंने हुज़ूर को किस क़द्र रंज पहुँचाया? और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सरतापा एजाज़ और मुख़्तार व मुतसर्रिफ हैं के अपनी ज़बान मुबारक के चुसाने से ही प्यास दूर फ़रमा दी आज कोई अपनी ज़बान किसी प्यासे के मुंह में डाल कर उसकी प्यास बुझा कर तो दिखाए और हुज़ूर की मिस्ल बनने

वाला कोई शख़्स अपने किसी नवासे के मुंह में अगर अपनी ज़बान डाले भी तो बहुत मुमकिन है के वो नवासा अपने दांतों से इस गुसताख़ की ज़बान ही चबा डाले।

हिकायत नम्बर(302) हैबत व शुजाअत

एक दिन हज़रत फ़ातिमा-उज़-ज़ोहरा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा अपने दोनों शहज़ादों यानी हसन व हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुमा को लेकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ की या रसूल अल्लाह इन दोनों को कुछ अता फ़रमाईये। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया हाँ मंज़ूर है और फ़िर फ़रमाया: हसन को तो मैंने अपना इल्म और अपनी हैबत अता की और हुसैन को अपनी शुजाअत और अपना करम बख़्शा। (इब्ने असाकर, अलअमन वलअला सफ़ा 99)

सबक़:- हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हैबत व शुजाअत और इल्मो करम के मालिक थे। और ये चीज़ें इन्हें अपने नाना जान से मिली थीं और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अल्लाह के ख़ज़ानों के बाज़न अल्लाह मालिक व मुख़्तार और मुतसर्रिफ हैं। वरना आप ये क्यों फ़रमाते के मैंने हसन को हैबत व इल्म और हुसैन को शुजाअत व करम बख़्शा और बख़्शता वही है जो मालिक व मुख़्तार और मुतसर्रिफ हो...

कौन देता है देने को दिल चाहिए
देने वाला है सच्चा हमारा नबी

हिकायत नम्बर(303) एक अजीब ख़्वाब

हज़रत इमाम हसन (र०अ०) ने एक रात ख़्वाब में देखा के आपकी दोनों चश्म मुबारक के दरमियान कुल हुवल्लाहो अहद लिखी हुई है, आपके अहले बैत ये ख़्वाब सुन कर बहुत खुश हुए लेकिन जब ये ख़्वाब हज़रत सईद बिन अलमसीब (र०अ०) के सामने बयान किया गया तो उन्होंने फ़रमाया के वाक़ई अगर ये ख़्वाब देखा है तो हज़रत इमाम उमर के चन्द रोज़ ही बाक़ी रह गए हैं, चुनाँचे ये ताबीर सही वाक़े हुई और थोड़े दिनों के बाद आपके दुश्मनों ने ज़ेहर देकर शहीद कर दिया। (तारीख़-उल-ख़ुल्फा, सफ़ा 134)

सबक़:- हज़रत इमाम हसन ने दुश्मनों के ज़ुल्म से जाम शहादत नोश फ़रमाया और आपकी शहादत की तरफ़ इशारा पहले ही ख़्वाब में हो गया था।

हिकायत नम्बर(304) पर्दापोशी

हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को दुश्मनो की साज़िश से ज़ेहर दे दिया गया। जिसके असर से आपको असहाल कबदी लाहक़ हुआ और आंतों के टुकड़े कट कट कर असहाल में ख़ारिज हुए। इस सिलसिले में आपको चालिस रोज़ सख़्त तकलीफ रही। क़रीब वफात जब आपकी ख़िदमत में आपके बरादर अज़ीज़ हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हाज़िर होकर दरयाफ़्त किया के आपको किसी ने ज़ेहर दिया है तो आपने फ़रमाया के तुम उसे क़त्ल करोगे? हज़रत इमाम हुसैन ने जवाब दिया। बेशक क़त्ल करूंगा। हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया के मेरा गुमान जिसकी तरफ़ है। अगर दर हक़ीक़त वही क़ातिल है तो अल्लाह तआला मुनतक़िम हक़ीक़ी है और उसकी गिरफ़्त बहुत सख़्त है अगर वो नहीं तो मैं नहीं चाहता के मेरे सबब से कोई बेगुनाह मुबतलाऐ मुसीबत हो। (तारीख़-उल-ख़ुल्फा सफ़ा 134)

सबक़:- हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का इंसाफ व अद्‌ल और आपकी एहतियात क़ाबिल सद तहसीन व आफरीन है और ये हज़रत इमाम ही का हिस्सा है के सख़्त तकलीफ के बावजूद जिसकी तरफ़ गुमान है उस क़ातिल का नाम नहीं बताते ताके गुमान सही ना होने के बाइस कोई बे गुनाह ना मारा जाए। मालूम हुआ के हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने भी वैसे ही किसी को क़ातिल नहीं क़रार दे दिया फिर आज अगर कोई ख़्वाह म ख़्वाह अपनी तरफ़ से क़ातिल को मुतय्यन करता फिरे तो ये इसकी ज़ियादती है या नहीं।

हिकायत नम्बर(305) हज़रत इमाम हसन(र०अ०)

हज़रत अब्बास की बीवी हज़रत उम्मुल फज़्ल रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने एक रात ख़्वाब में देखा के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के जिस्म अक़्दस का एक टुकड़ा उनकी गोद में रखा है। ये ख़्वाब देख कर वो बड़ी हैरान हुईं और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर बोलीं। या रसूल अल्लाह! मैंने एक अजीब ख़्वाब

देखा है और वो ये के आपके जिस्म अक्दस का एक टुकड़ा मैंने अपनी गोद में पड़ा देखा है। हुज़ूर(स०अ०स०) ने फ़रमाया तूने बड़ा अच्छा ख़्वाब देखा है। इंशा अल्ला मेरी फातिमा के हाँ एक बच्चा पैदा होगा। सो तेरी गोद में खेलेगा। चुनाँचे हज़रत फातिमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के हाँ हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह पैदा हुए और वो उम्मुल फज़्ल की गोल में खेले। (मिश्कात शरीफ सफ़ा 564)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लख़्ते जिगर हैं और आपकी मोहब्बत हुज़ूर की मोहब्बत और आपको ईज़ा देना हुज़ूर को ईज़ा देना है।

हिकायत नम्बर(306) इमाम हुसैन(र०अ०) और एक बदवी

एक बदवी ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह से अर्ज़ किया के मैंने आपके नाना यानी नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से सुना है के जब तुम किसी हाजत के ख़्वास्तगार हो। तो चार शख़्सों में से एक से दरख़्वास्त करो। या तो किसी शरीफ से और ये चारों सिफतें आपमें बदर्जा उत्तम पाई जाती हैं। इसलिए के सारे अरब को शराफत अगर मिली है तो आप ही की वजह से मिली है। और सख़ावत आपका जबली वस्फ है, रहा क़ुरआन तो वो आपके घर उतरा ही है और मिलाहत के मुतअल्लिक़ अर्ज़ है के मैंने आपके नाना सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम से सुना है के जब तुम मुझे देखना चाहो तो हसन व हुसैन को देख लो।

बदवी की ये गुफ़्तगू सुनकर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया क्या हाजत है। बयान कर। बदवी ने अपनी हाजत ज़मीन पर लिख कर बयान की इस पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया के मैंने अपने नाना जान सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से सुना है के नेकी बक़द्र मारफ़त हुआ करती है। मैं तुझ से तीन मसअले पूछता हूँ। अगर तूने उनमें से एक का जवाब दे दिया तो इस थेली का तीसरा हिस्सा तेरी नज़्र है और अगर दो का जवाब दिया तो दो हिस्सा तेरे होंगे और अगर तीनों का जवाब दे दिया तो सारी थेली तेरी नज़्र कर दूंगा। बदवी ने कहा दरयाफ़्त फ़रमाइये। आपने फ़रमाया तमाम अमलों में से कौन सा अमल अफ़्ज़ल है? कहा खुदा पर ईमान लाना, फ़रमाया, बन्दे की हलाकत से निजात किस चीज़ से है? कहा खुदा पर तवक्कुल करने में, फ़रमाया बन्दे को किस चीज़ से ज़ीनत हासिल होती है? कहा इल्म से

जिसके साथ तहम्मुल व बुर्दबारी भी हो। फ़रमाया। अगर किसी शख़्स में ये वस्फ़ ना हो तो? कहा उसके पास वो माल होना चाहिए जिसमें सख़ावत हो। फ़रमाया अगर किसी के पास ऐसा माल ना हो तो? कहा फिर उसके लिए जलाने वाली बिजली चाहिए। हज़रत हंस पड़े और बदवी को पूरी थेली दे दी। (नुज़हत-उल-मजालिस सफ़ा 393, जिल्द:2)

सबक़:- अल्लाह वालों से हाजात तलब करना इर्शादे नबव्वी है और अल्ला वाले हाजतमंदों की हाजात पूरी फ़रमा देते है। और मालूम हुआ के हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बड़े फय्याज़ और सख़ी थे और ये के पहले ज़माने के बदवी भी इल्म व इर्फ़ान के मालिक थे।

हिकायत नम्बर(307) बूऐ कर्बला

एक रोज़ हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की गोद में तशरीफ़ फ़रमा थे। और हज़रत उम्मुल फज़्ल भी पास बैठीं थीं। उम्मुल फज़्ल ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तरफ़ देखा के आपकी दोनों आँखों से आँसू बेह रहे थे। उम्मुल फज़्ल ने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह ये आँसू कैसे हैं? तो हुज़ूर ने फ़रमाया के जिब्राईल ने मुझे ख़बर दी है के मेरे इस बच्चे को मेरी उम्मत क़त्ल कर देगी। और जिब्राईल ने मुझे इस सरज़मीन की जहाँ मेरा ये बच्चा शहीद होगा। सुर्ख़ मिट्टी भी लाकर दी।

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इस मिट्टी को सूंघा और फ़रमाया इस मिट्टी से मुझे बूऐ कर्बला आती है और फिर वो मिट्टी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा को दे दी। और फ़रमाया ऐ उम्मे सलमा! इस मिट्टी को पास रखो। जब ये मिट्टी खून बन जाए तो समझ लेना। मेरा बेटा शहीद हो गया। हज़रत उम्मे सलमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा ने उस मिट्टी को एक शीशी में बंद कर लिया और फिर जिस दिन हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह कर्बला में शहीद हुए उसी रोज़ ये मिट्टी बंद शीशी में खून बन गई। (मिश्कात शरीफ सफ़ा 564, और हुज्जत-उल्लाह अललआलमीन सफ़ा 477)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को अपने लख़्ते जिगर इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की शहादत का इल्म था और इस सरज़मीन का भी जहाँ ये वाक़ेया होना था। इल्म था और

इस सरज़मीन का नाम कर्बला भी मालूम था। आपसे कोई बात पनहाँ ना थी और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को ये भी इल्म था के हज़रत उम्मे सलमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की शहादत के बाद तक ज़िन्दा रहींगी, जभी तो आपने हज़रत उम्मे सलमा से ये फ़रमाया के इस मिट्टी को पास रखो, जब ये खून बन जाए तो समझ लेना मेरा बेटा शहीद हो गया है बावजूद उसके फिर भी अगर कोई हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्मे ग़ैब में शक व शुबह करे तो ग़ौर कर लीजिए के वो किस क़द्र जाहिल है।

हिकायत नम्बर (308) दिलैराना जवाब

हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के विसाल के बाद जब यज़ीद तख़्त नशीन हुआ तो उसने अपनी बैत के लिए इत्राफ व मुमालिक सल्तनत में ख़त रवाना किए और मदीना मुनव्वरह के आमिल को भी लिखा के वो इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से भी यज़ीद की बैत ले, चुनाँचे जब आमिल मदीने हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदमत में यज़ीद की बैत लेने के लिए हाज़िर हुआ। तो हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने यज़ीद के फिस्क़ व फिजूर की बिना पर उसे ख़िलाफत के लिए ना अहल क़रार दिया और शुजाअत व दिलैरी के साथ जवाब दिया के मैं इस ज़ालिम की हर गिज़ बैत ना करूंगा, आमिल ये जवाब पाकर पलट गया और यज़ीद को इस जवाब से मतला कर दिया यज़ीद ये जवाब पाकर बड़ा मुश्तअल हुआ। (सर-उल-शहादतैन सफ़ा 13, व सवानेह कर्बला सदर-उल-फाज़िल सफ़ा 50)

सबक़:- यज़ीद बड़ा फासिक़ व फाजिर था और उसके फिस्क़ व फिजूरी ही के पैशेनज़र हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह ने उसकी बैत से इंकार फ़रमा दिया और ये भी मालूम हुआ है के हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह शुजा इब्ने अलशुजा थे। आपने ये जानते हुए भी के यज़ी की बैत से इंकार यज़ीद के लिए वजह इश्तिआल होगा और वो खून का प्यासा हो जाएगा कलमा-ए-हक़ फ़रमाने से ग़ुरैज़ ना फ़रमाया और जान बचा लेने के लिए हकीक़त को नहीं छिपाया। फिर ये कैसे हो सकता है के आपके वालिद माजिद हज़रत शेरे खुदा रज़ी अल्लाहो तआला ने कभी हकीक़त को छुपाया हो, या किसी से दब कर आपने कलमा-ए-हक़ का एलान ना फ़रमाया हो?

हिकायत नम्बर(309) मज़ारे अनवर पर

यज़ीद को जब इस बात का पता चला के इमाम हुसैन ने मेरी बैत नहीं की तो उसने मुश्तअल होकर आमिल मदीने को हुक्म भेजा, के इमाम हुसैन को मेरी बैत पर मजबूर करो। वरना उसका सर काट कर मेरे पास भेज दो। हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को जब इस यज़ीदी हुक्म का पता चला, तो आपने मदीना मुनव्वरह की सकूनत तर्क फ़रमा कर मक्का मोअज़्ज़मा चले जाने का इरादा फ़रमा लिया और मदीने मुनव्वरह से रवांगी से पहले रात को नाना जान हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मज़ार अनवर पर हाज़िर हुए और रो रो कर अर्ज़े हाल करने लगे और फिर रोज़ा-ए-अनवर से लिपट कर वहीं सो गए। ख़्वाब में देखा के नाना जान तशरीफ़ लाए हैं और आपने हुसैन को चूमा और सीना-ए-अक्दस से लगा लिया और फ़रमाया बेटा हुसैन! अनक़रीब ज़ालिम तुझे कर्बला में भूका प्यासा क़त्ल कर देंगे। तेरे माँ बाप और भाई तेरे इन्तिज़ार में हैं बहिश्त तेरे लिए आरास्ता हो रहा है। उसमें ऐसे दर्जात आलिया हैं जो शहीद हुए बग़ैर तूझे नहीं मिल सकते जाओ बेटा! सब्र व शुक्र से जामे शहादत पी कर मेरे पास आ जाओ। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ये ख़्वाब देखकर घर आए और अहले बैत को जमा करके ये ख़्वाब सुनाया और मदीने से मक्का जाने का मुसम्मिम इरादा कर लिया और फिर अपने बरादर बुज़ुर्ग हज़रत इमाम हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के मज़ार अनवर पर हाज़िर हुए और कलमात रूख़्सत ज़बान पर लाए और फिर माँ की क़ब्र अनवर पर हाज़िर हुए और अर्ज़ किया। ऐ अम्माँ जान! ये नाज़ों का पाला तुम्हारा हुसैन आज तुम से जुदा होने आया है और आख़री सलाम अर्ज़ करता है। क़ब्र अनवर से आवाज़ आई। व अलेक अस्सलाम ऐ मज़लूम और आप वहाँ कुछ देर रोते रहे और फिर वापस तशरीफ़ लाए और मक्का मोअज़्ज़मा जाने की तैयारी फ़रमा कर मक्का मोअज़्ज़मा को रवाना हो गए। (तज़करह हुसैन सफ़ा 27)

सबक़:- हज़रत इमाम की शहादत का खुद हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को भी इल्म था और ये आप ही की शान है के इल्म के बावजूद भी पाऐ इसतक़लाल में ज़र्रा भी लग़ज़िश नहीं आई और शौके शहादत में कमी नहीं आती। और जज़्बा-ए-जाँ निसारी और

भी ज़्यादा ही होता है। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अपनी सीरते पाक से बता दिया के तालिब रज़ाऐ हक़ मौला की मर्ज़ी पर फ़िदा होता है। इसी में उसके दिल का चैन और उसकी हक़ीक़ी तसल्ली है। कभी वहशत व परेशानी उसके पास नहीं फटकती, बल्के वो इन्तिज़ार की साअतें शौक़ के साथ गुज़ारता है। और वक़्त मोऊद का बेचैनी के साथ मुनतज़िर रहता है।

हिकायत नम्बर(310) कूफ़ियों के ख़तूत

हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की वफात के बाद यज़ीद तख़्त नशीं हुआ। तो अहले इराक़ को जब मालूम हुआ के हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने यज़ीद की बैत नहीं की और आप मक्का मोअज़्ज़मा तशरीफ़ ले आए हैं तो उन्होंने मुत्तफिक होकर इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदमत में ख़त भेजने शुरू किए जिसमें इस अमर का इज़हार था के हम अपने जानो माल आप पर कुर्बान कर देंगे। आप यहाँ कूफे में तशरीफ़ लायें हम आपकी बैत कर के आपके हुक्म से ज़ालिमों से मुक़ाबला करेंगे और आपका बहरहाल साथ देंगे। इस तरफ़ के इल्तिजा नामों और दरख़्वास्तों का सिलसिला बंध गया और तमाम जमातों और फ़िर्क़ों की तरफ़ से डेढ़ सौ के क़रीब ख़तूत हज़रत इमाम की ख़िदमत में पहुँचे। आप कहाँ तक ख़ामोश रहते। कूफ़ियों के पैहम इसरार पर आपने उन्हें जवाब दिया के तुम्हारे डेढ़ सौ के क़रीब ख़त पहुँचे। मैं फ़िलहाल अपने चचा ज़ाद भाई मुस्लिम बिन अक़ील को तुम्हारी तरफ़ भेजता हूँ ताके तुम्हारी सच्चाई का पता चल सके। तुम अगर वाक़ई मेरा साथ देना चाहते हो तो मेरे नुमाइंदे मुस्लिम बिन अक़ील की बैत करो जब वो तुम्हारे हाल और सिद्क़े मक़ाल से मुझे मतलअ करेंगे तो मैं भी आ जाऊँगा। (सर-उल-शहादतें, सफ़ा 14, व सवानह कर्बला, सफ़ा 52, व तज़करह, सफ़ा 300)

सबक़:- कूफ़ियों की बे वफाई मशहूर होने के बावजूद हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उनकी दरख़्वास्तों पर तवज्जह इसलिए फ़रमाई ताके कल क़यामत के दिन वो लोग ये ना कह सकें के हम ज़ालिमों से मुक़ाबला और उन से रिहाई के तलबगार थे। लेकिन इब्ने अली हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हमारी किसी दरख़्वास्त पर तवज्जह ना फ़रमाई। हज़रत इमाम आली मुक़ाम ने इतमामे हुज्जत के लिए अपने भाई को कूफ़ा भेज दिया और आप अपना फर्ज़ अदा करने को तैयार हो गए।

हिकायत नम्बर(311) बारह हज़ार

कूफ़ियों के कूफ़ियों के पैहम इसरार पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हु कूफ़े तशरीफ़ ले जाने पर आमादा हो गए। लेकिन हालात का पता लगाने के लिए आने पहले अपने चचा ज़ाद भाई हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील रज़ी अल्लाहो तआला अन्हु को वहाँ भेजा और हज़रत मुस्लिम से फ़रमाया के तुम वहाँ जाकर मेरे लिए कूफ़ियों से बैत लो। अगर उन्होंने बैत कर तो मुझे मतलअ करना मैं भी आ जाऊँगा। चुनाँचे हज़रत मुस्लिम अपने दो कमसिन बच्चों को साथ लेकर कूफ़े को रवाना हो गए। इन दो साहबज़ादों का नाम मोहम्मद और इब्राहीम था। ये दोनों अपने बाप को बहुत प्यारे थे। इसलिए ये दोनों भी इस सफर में अपने वालिद बुज़ुर्गवार के हमराह हो गए हज़रत मुस्लिम कूफ पहुँचे तो आपने मुख़्तार बिन उबैद के मकान पर क़याम फ़रमाया। आपकी तशरीफ़ आवरी की ख़बर सुन कर जूक़ दर जूक़ मख़लूक़ आपकी ज़ियारत को आई और बारह हज़ार से ज़्यादा तादाद ने आपके दस्ते मुबारक पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हु की बैत की। हज़रत इमाम मुस्लिम ने अहले इराक़ की गरवीदगी व अक़ीदत देखकर हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्हु की जनाब में अरीज़ा लिखा जिसमें यहाँ के हालात की इत्तिला दी और इल्तिमास किया के आप जल्दी तशरीफ़ ले आएँ ताके बंदगाने खुदा यज़ीद के नापाक शर से महफ़ूज़ रहें और दीने हक़ की ताईद हो। (सर-उल-शहादतें, सफ़ा 14, व सवानह कर्बला, सफ़ा 35)

सबक़:- अहले बैत अेज़ाम रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन की मनशा सिफ यही थी के बंदगाने खुदा ग़ैर शरई निज़ाम से निजात पाएँ। आला कलमत-उल-हक़ और दीने हक़ की ताईद हो और अहले हक़ हमेशा इसी मसलक पर क़ायम रहें।

हिकायत नम्बर(312) जल्लाद इब्ने ज़ियाद

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्हु जब कूफ़े पहुँचे तो बारह हज़ार से ज़्यादा इराक़ियों ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हु की बैत इमाम मुस्लिम के हाथ पर कर ली। ये सूरते हाल देखकर इमाम मुस्लिम ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हु को लिखा के आप जल्द तशरीफ़ ले आएँ उधर जब यज़ीद को इस सूरते हाल का पता चला तो

उसने हाकिम बसरा उबैद-उल्लाह बिन ज़ियाद को हुक्म भेजा के वो फौरन कूफे पहुँच कर लोगों को इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की बैत से रोके और जिन्होंने बैत कर ली है उन्हें तंबीह करे। इब्ने ज़ियाद बड़ा मक्कार और जल्लाद था। ये ज़ालिम झट कूफ पहुँचा और अहले कूफे को जमा करके यज़ीद की मुख़ालफत से डराया धमकाया और बड़े बड़े लालच देकर उन्हें हिमायत हुसैन से रोका और सब पर अपना रौब व दाब बिठाया। हज़रत इमाम मुसिल्म ये सूरते हाल देखकर रात को हानी बिन उरवा के मकान में तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया ऐ हानी! मैं यहाँ ग़रीब मुसाफिर हूँ तू अहले कूफे से खूब वाक़िफ है मैं तेरी पनाह में आया हूँ। मुझे अपने मकान में पनाह दे। हानी ने क़बूल किया और एक हुजरा अपने घर का उनके लिए खाली कर के कहा के....

रवाक़े मंज़र चश्म मन आशयाना तस्त

करम नमाव फरूद आके ख़ाना ख़ाना तस्त

इब्ने ज़ियाद को पता चल गया के मुस्लिम को हानी ने पनाह दे रखी है। चुनाँचे उसने अपनी फौज भेजकर हज़रत हानी को गिरफ्तार कर लिया और इस तरह कूफे के दीगर रऊसा व अमायद को भी क़िले में नज़रबंद कर लिया।

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को इस सूरत हाल का पता चला तो आपकी रग हाश्मी जोश में आई और अपने दोनों बच्चों को क़ाज़ी शरीह के घर में रवाना कर के मुहिब्बान अहले बैत को बुलाया तो आपकी निदा पर जूक़ दर जूक़ आदमी आने शुरू हुए। और चालीस हज़ार की जमीअत ने आपके साथ मिलकर क़स्र शाही का आहाता कर लिया और इब्ने ज़ियाद को घेर लिया। क़रीब था के इब्ने ज़ियाद और उसके साथी गिरफ्तार हो जाते के इब्ने ज़ियाद ने एक चाल चली और वो ये के उसने कूफे के जिन बड़े बड़े आदमियों को क़िले में नज़रबंद कर रखा था। उन्हें मजबूर किया के तुम छत पर जाकर अहले कूफे को समझाओ और डराओ और उन्हें मजबूर करके मुस्मिल से अलग कर दो। ये लोग इब्ने ज़ियाद की क़ैद में थे ओर जानते थे के अगर इब्ने ज़ियाद को शिकस्त भी हुई तो वो क़िला फतह होने तक़ उनका ख़ात्मा कर देगा। इस ख़ौफ़ से वो घबरा कर उठे और दीवार क़िले पर चढ़ कर चिल्लाए के भाईयो! मुस्लिम की हिमायत तुम्हारे लिए ख़तरनाक है। हकूमत तुम्हारी दुश्मन हो जाएगी। यज़ीद तुम्हारे बच्चे बच्चे को मरवा डालेगा। तुम्हारे माल लुटवा देगा तुम्हारी जागीरें और मकान ज़ब्त हो जाऐंगे और अगर तुम इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ही के साथ

रहे तो देखो हम जो इब्ने ज़ियाद की क़ैद में हैं। किले के अन्दर मारे जायेंगे। अपने अंजाम पर नज़र डालो। हमारे हाल पर रहम करो और अपने घरों को चले जाओ ये हीला कामयाब रहा। और हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का लश्कर मुनतशिर होने लगा। सब बेवफाई पर उतर आए और हज़रत इमाम मुस्लिम का साथ छोड़ने लगे। हत्ता के शाम तक हज़रत मस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साथ सिर्फ पाँच सौ की तादाद रह गई और ग़रूबे आफताब के बाद अंधेरा हुआ तो वो भी साथ छोड़ गए और इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तनहा रह गए। (सर-उल-शहादतें सफ़ा 16, व सवानह कर्बला, सफ़ा 5 तज़करह, हुसैनः सफ़ा 36)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह और अहले बैत अेज़ाम की मोहब्बत व वफा के उन दावेदारों के जुमला अहदो पैमान झूटे थे और ये लोग वक़्त पर बेवफा साबित हुए, मालूम हुआ के हर मुद्दई मोहब्बत अहले बैत ज़रूरी नहीं के सच्चा ही हो।

हिकायत नम्बर(313) इमाम मुस्लिम(र०अ०) की शहादत

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जब कूफे पहुँचे तो बेवफा कूफियों ने आपके हाथ पर बैत करके फिर आप से मुंह मोड़ लिया और आपका साथ छोड़ दिया और इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तनहा रह गए। रात का वक़्त था और इब्ने ज़ियाद ने आपकी गिरफ़्तारी के लिए शहर के चारों तरफ़ कड़ी निगरानी कर रखी थी। हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भूके प्यासे एक मस्जिद में बैठे रहे, रात को बाहर निकले, रास्ते का इल्म ना था दिल में कहते जाते थे, अफसोस हुसैन से छुटे और दुश्मनों में घिरे ना कोई हमदम है के राज़े दिल सुने ना कोई क़ासिद है के हुसैन को हमारी ख़बर करे।

ना क़ासिद ए के पियामे बिसोए यारबर्द
ना महरमे के सलामे दराँ दयार बर्द
फतादा एम बशहर ग़रीब दयारे नीस्त
के क़िस्सा ज़ग़रीबे बशहर यार बर्द

इसी तरह हैरान परेशान एक मोहल्ले में फिर रहे थे, वहाँ एक बूढ़िया तूआ नामी को देखकर उससे पानी तलब फ़रमाया। तो उसने पानी पिलाया और ये मालूम करके के ये ग़रीब-उल-वतन मुस्लिम हैं। उन्हें अपने मकान में जगह दी। इस औरत का बेटा इब्ने ज़ियाद का आदमी था। उसने इब्ने ज़ियाद

को ख़बर दे दी के मुस्लिम हमारे घर में हैं। इब्ने ज़ियाद ने अपनी फौज भेज दी जिसने बूढ़िया के मकान का मुहासरा कर लिया और चाहा के हज़रत मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को गिरफ़्तार कर लें, हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को इस मुहासरे का पता चला तो आप तनहा तलवार लेकर इब्ने ज़ियाद के लश्कर पर टूट पड़े। जैसे शेरे बब्बर बकरियों के गल्ले पर हमला आवर होता है। आपके हमले से दिल आवरों ने दिल छोड़ दिए और बहुत आदमी ज़ख़्मी हुए और बहुत से मारे भी गए। उन ज़ालिमों ने फिर दरो दीवार पर चढ़ कर आप पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिए। जिससे हज़रत मुस्लिम का बदन मुबारक ख़स्ता हो गया और एक पत्थर आपकी पैशानी पर लगा खून बहने लगा। उस वक़्त आपने मक्का की तरफ़ रूख़ करके कहा।

ऐ हुसैन! कुछ आपको आपने भाई ख़स्ता जिग्र की भी ख़बर है के उस पर क्या गुज़री और कूफियों ने उसके साथ क्या किया अफसोस मेरे हाल ज़ार की आपको ख़बर कौन पहुँचाए और कौन आपको यहाँ आने से रोके...

ना क़ासिद ने सबाऐ मुर्ग़ नामा बरे
किसे ज़बे किसी मानमे बर्द ख़बरे
सबा बगुलशन अहबाब मअगर बगुज़री
इज़ा लक़ीता हबीबी फक़ुल लहू ख़बरी

इसी असना में एक और पत्थर आकर आपके लब व दनदान पर लगा मुंह से खून जारी हुआ दाढ़ी मुबारक रंगीन हो गई तो अब मजबूर होकर एक दीवार से तकिया लगा कर बैठ गए के एक नामर्द ने घर में से आकर आपके सर पर तलवार मारी जिससे ऊपर का होंट कट गया। आपने इसी हाल में इस बुज़दिल को जहन्नुम रसीद फ़रमा दिया और फिर दीवार से तकिया लगा कर बैठ गए और फ़रमाने लगे। इलाही! मैं इस वक़्त प्यासा हूँ, आपकी ये फ़रयाद सुनकर वही बूढ़िया घर में से पानी लाई और आपको दिया। आपने मुंह से लगाया मगर उसमें खून मिल गया। इसलिए आपने फैंक दिया। बूढ़िया ने दोबारा दिया वो भी खून आलूद हो गया, फिर सहबारह दिया उसमें आपके दांत निकल कर गिर पड़े। पस आपने पियाला हाथ से रख कर फ़रमाया खुदा को मंज़ूर ही नहीं है। पीछे से किसी ने नेज़ह मारा जो पुश्त के पार हो गया। आप सरनिगों हो गए। ज़ालिमों ने दौड़कर पकड़ लिया और आपको इब्ने ज़ियाद के पास ले आए। इब्ने ज़ियाद बद निहाद ने हुक्म दिया के उन्हें छत पर ले जाकर क़त्ल किया जाए। चुनाँचे एक ज़ालिम इब्ने

बकीर आपका हाथ पकड़कर आपको छत पर ले गया। हज़रत मुस्लिम जाते थे दरूद पढ़ते और कहते जाते थे। *अल्लाहुम्मा अहकम बेनना व बयाना क़ौमिना बिलहक़्क़ी* जब छत पर पहुँचे तो नीचे देखा के अहले कूफा जमा होकर देख रहे हैं, आपने फ़रमाया ऐ कूफियो! जब मेरा सर तन से जुदा किया जाए तो बदन दफ़्न करना और कपड़े उतार कर जो क़ाफला मक्का जाता हो हुसैन के पास भेज देना और मेरे बच्चों पर रहम करना। फिर मक्का की तरफ़ रूख करके कहा *अस्सलाम अलेका या इब्ने रसूल अल्लाह*

भाई यहाँ की आपको कैसे ख़बर करें!
हर गिज़ इधर को आप ना अज़्म सफर करें

इतने में ज़ालिम क़ातिल ने आपका सर मुबारक तन अतहर से जुदा कर दिया। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेहि राजिऊन

शहीद मुस्लिम बेकस हुए हज़ार अफसोस
फरिश्ते करते हैं इस ग़म से बार बार अफसोस
शक़ी ने कुछ भी ना ग़ुर्बत का उनकी पास किया
चलाई हलक़ पे शमशीर आब दार अफसोस

(तज़करह हुसैन, सफ़ा 43)

सबक़:- दुनिया दार नशा दुनिया में बदमस्त होकर अल्लाहो वालों पर इन्तिहाई ज़ुल्म व सितम ढाने पर उतर आते हैं। लेकिन अल्लाह वालों के पास इसतक़लाल में लग़ज़िश नहीं आती और ये भी मालूम हुआ के ये सारे ज़ुल्मो सितम ढाने वाले बड़े ही झूटे और बुज़दिल थे बज़ाहिर मुहिब्ब और बबातिन दुश्मन थे। पहले मोहब्बत का दम भरते रहे और फिर इब्ने ज़ियाद से डरकर अहले बैत की जान के भी दुश्मन बन गए।

हिकायत नम्बर (314) मज़लूम बच्चे

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जब कूफे तशरीफ़ ले गए तो अपने दो नन्हे बच्चे हज़रत मोहम्मद और हज़रत इब्राहीम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को भी अपने हमराह ले गए थे। इब्ने ज़ियाद हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के क़त्ल से फारिग़ हुआ तो उसे पता चला के इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दो लड़के भी इसी शहर में हैं। इब्ने ज़ियाद ने फौरन मनादी करा दी के जो कोई मुस्लिम के लड़कों को अपने घर में जगह देगा। क़त्ल व ग़ारत किया जाएगा। उस वक़्त दोनों बच्चे क़ाज़ी शरीह के घर थे। क़ाज़ी साहब ने उन बच्चों को सामने

बुलाया। और बेइख़्तियार रोने लगे। बच्चों ने पूछा क़ाज़ी साहब आज इस तरह रोने का सबब क्या है? क्या हम दोनों यतीम तो नहीं हो गए? क़ाज़ी साहब ने बजब्र रोना रोक कर कहा बच्चो! अल्लाह तआला तुम्हें सब्र अता फ़रमाए, वाक़ई तुम यतीम हो गए हो। बच्चों ने ये ख़बर सुनी तो रोने लगे और *वअतबाहू व ग़रबताहू* के नारे लगाने लगे। क़ाज़ी साहब ने कहा, बच्चो! चुप रहो। इब्ने ज़ियाद के लोग तुम्हारी तलाश में हैं मुझे तुम्हारी और अपनी जान का ख़ौफ है मैं चाहता हूँ के तुम्हें किसी के साथ मदीना रवाना कर दूं। बच्चे ये बात सुनकर इब्ने ज़ियाद के ख़ौफ से चुपके हो रहे।

क़ाज़ी साहब ने अपने लड़के असद से कहा के आज दरवाज़ इराक़ैन से एक क़ाफला मदीना को जा रहा है तू इन बच्चों को किसी नेक आदमी के सपुर्द कर आ। ताके वो इन्हें मदीना पहुँचा दे, असद जब लेकर दरवाज़ा इराक़ैन पर आया तो क़ाफला रवाना हो चुका था और गर्द क़ाफला नज़र आ रही थी, असद ने बच्चों से कहा के वो क़ाफला जा रहा है। दौड़ कर उसमें मिल जाओ। बेकस बच्चे क़ाफले की तरफ़ दौड़ पड़े। मगर क़ाफला दूर जा चुका था। इसलिए क़ाफले को ना पा सके। असद घर को वापस आ गया था। अंधेरी रात थी। बच्चे राह भूल गए रात भर इधर उधर फिरते रहे सुबह होने लगी तो एक चश्मा देखा थके मांदे थे। इसलिए लबे चश्मा बैठ गए। इत्तिफाक़न एक लोंडी इस चश्मे पर पानी भरने आई और उनको देखकर जब उसे मालूम हुआ के ये इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के यतीम बच्चे हैं, रोने लगी और कहा साहबज़ादो मेरे साथ चलो, मेरी मालिका मुहिब्ब अहले बैत है वो तुम्हें पाकर बहुत खुश होगी। बिलकुल ना घबराओ और मेरे साथ चलो बच्चे हैरान व परेशान उसके साथ हो लिए और जब घर पहुँचे तो घर की मालिका ये मालूम करके के ये मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के यतीम बच्चे हैं दौड़ी दोनों को सीने से लगाया और उनके हाल पर रोने लगी और फिर खिला पिला कर एक कमरे में सुला दिया।

इधर ये औरत तो इतनी खुदा तरस और मुहिब्ब अहले बैत थी। और इधर उसका ख़ाविंद हारिस नामी बेहद नाखुदा तरस और दुश्मन अहले बैत था। और दिन भर उन्हीं बच्चों की तलाश में सरगर्दां था के ये बच्चे मिल जायें तो मैं उन्हें क़त्ल करके उनका सर इब्ने ज़ियाद के पास ले जा कर इनाम पाऊँ।

ये अजीब मंज़र था के हारिस दिन भर जिन बच्चों की तलाश में था वो बच्चे उसी के घर में आराम फ़रमा थे। रात को जब ये ज़ालिम घर आया तो उसकी बीवी डरी के कहीं उसे इन बच्चों का इल्म ना हो जाए, चुनाँचे

उसकी बीवी ने उसे जल्द जल्द खाना खिला कर उसे सो जाने को कहा और वो ज़ालिम दिन भर का थका मांदा सो गया।

कुछ रात गए बड़े बच्चे ने छोटे को जगाया और कहा भाई मैंने अभी अभी ख़्वाब देखा है के हमारे वालिद माजिद बहिश्त में हुज़ूर नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के साथ टहल रहे हैं। और हुज़ूर नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम उन से फ़रमा रहे हैं। ऐ मुस्लिम! तुम खुद चले आए और बच्चों को क्यों ज़ालिमों में छोड़ आए वालिद माजिद ने उनसे अर्ज़ किया के या रसूल अल्लाह! वो भी मेरे पीछे आ रहे हैं और और सुबह तक आ जाऐंगे।

छोटे बच्चे ने कहा! भाई जान! मैंने भी यही ख़्वाब देखा है ओर फिर दोनों बग़लगीर होकर रोने लगे।

उनके रोने से हारिस की आँख खुल गई। बीवी से पूछा ये शौर कैसा है? घर में कौन छुपा है? वो औरत सहम गई और डरी के खुदा जाने अब क्या हो? हारिस उठा और चिराग़ जलाकर अन्दर आया तो उन दोनों यतीमों को रोते देखकर बोला तुम कौन हो? उन दोनों साहबज़ादों ने साफ साफ कह दिया के हम फ़रज़ंदाने मुस्लिम हैं। ज़ालिम हारिस खुश हो गया और....

आया हारिस तो कहा तुम ही हो मुस्लिम के पुस्र
कल तुम्हीं ने मुझे हैरान किया चार पहर
ख़ैर अब कल के अवज़ आज मैं लूंगा जी भर
फैंक दी हाथ से फिर शमा इधर, तीग़ उधर
दस्त बैदार से इक भाई का बाज़ू खींचा
दूसरे भाई का इक हाथ से गेसू खींचा
क़त्ल के ख़ौफ से उठे ना अली के प्यारे
इस तवक़्कुफ पर सितम गर ने तमांचे मारे
खींचा इस तरह के पुरज़े हुए कुर्ते सारे
मुंह के बल गिर पड़े वो बुर्जे शरफ़ के तारे
या हुसैन इब्ने अली इक ने बस्द यास कहा
दूसरे भाई ने हज़रत अब्बास कहा

फिर ये ज़ालिम उन दोनों साहबज़ादों को घसीटता हुआ बाहर लाया, और बेचारी बहोतेरा हाथ पैर मारती रही, अपना सर उसके पैरों में रखती रही। और उसे ज़ुल्म से रोकती रही मगर इस ज़ालिम ने एक ना सुनी और वो बे रहम तलवार लेकर उठा और दोनों को फ़रात की तरफ़ ले चला और उनको

क़त्ल करने के लिए तैयार हो गया। जब उन दोनों ने देखा के ये ज़ालिम हमें क़त्ल करने वाला है तो....

की बड़े भाई ने क़ातिल की ये मिन्नत उस आन
तुझ से अर्ज़ इक मैं करता हूँ अगर तू ले मान
छोटे भाई पे मैं कुर्बान मिरा सर कुर्बान
सर मिरा पहले क़लम कर तू बड़ा हो अहसान
शौक़ से और हर एक सदमा व ईज़ा दिखला
पर ना भाई का मुझे नन्हा सा लाशा दिखला

आख़िर कार ज़ालिम व बेरहम हारिस ने तलवार पकड़ ली। उस वक़्त बच्चों ने कहा। हम यतीम हैं बे वतन हैं। हम पर रहम कर मगर इस दुनिया के कुत्ते ने एक ना सुनी और ज़ालिम ने बड़े साहबज़ादे को पहले शहीद किया और फिर देखते ही देखते छोटे को भी शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन (तज़्करह सफ़ा 48)

सबक़:- अल्लाह वालों की जान व माल और छोटे बड़ों पर बड़ी बड़ी आज़माईशें नाज़िल हुईं और उन पाक लोगों ने बड़े सब्रो शुक्र के साथ उन पर तहम्मुल फ़रमाया और "हरचै रसद ज़दो सत नकूसत" पर अमल पैरा होकर हमेशा दामन रज़ा व तसलीम को थामे रखा और कोई शिकवा शिकायत नहीं फ़रमाई।

हिकायत नम्बर(315) ज़ालिम का अंजाम

ज़ालिम हारिस ने हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दोनों साहबज़ादों को शहीद कर के चाहा के उनके सर इब्ने ज़ियाद के पास ले चलूं और इनाम पाऊँ, चुनाँचे वहाँ मुक़द्दस सरों को लेकर इब्ने ज़ियाद के पास आया। इब्ने ज़ियाद ने इन नन्हे और नूरानी सरों को देखकर पूछा ये किसके सर हैं? हारिस ने बताया के मुस्लिम के बच्चों के इब्ने ज़ियाद बजाए खुश होने के कहने लगा ऐ मलऊन! मैंने तो यज़ीद को ये लिखा है के वो मेरे पास क़ैद हैं अगर उसने ज़िन्दा मंगवाऐ तो मैं कहाँ से लाऊँगा तू इन्हें मेरे पास ज़िन्दा क्यों ना लाया? हारिस ने कहा, अगर ज़िन्दा लाता तो शहर वाले मुझ से छीन लेते और मैं इनाम से महरूम रह जाता। इब्ने ज़ियाद ने कहा के तूने मुझे ख़बर की होती मैं खुफिया मंगवा लेता। हारिस चुप हो गया इब्ने ज़ियाद ने अपने नदीमों में से मक़ातिल नामी शख़्स को जो मुहिब्ब अहले बैत था, हुक्म दिया के इस ख़बीस को लबे फिरात ले जाकर क़त्ल कर दो और जहाँ

इन बच्चों के बदन डाले गए हैं। वहीं ये दोनों सर भी डाल दो, मक़ातिल ये हुक्म सुनकर बड़ा खुश हुआ और हारिस का हाथ पकड़कर बाहर आकर अपने राज़दारों से कहने लगा के अगर इब्ने ज़ियाद मुझे तमाम मुल्क दे देता तब भी मुझे इतनी खुशी ना होती जितनी उसके हुक्म से हुई। फिर मक़ातिल ने हारिस के पसे पुश्त हाथ बाँधे। सर नंगा किया। सरे बाज़ार लेकर चला और बच्चों के सर लोगों को दिखाता जाता था। लोग इन्हें देख कर रोते और हारिस पर लानत करते। हत्ता के लबे फिरात लाकर मक़ातिल ने पहले इन दोनों मुक़द्दस सरों को नहर में डाला। क़ुद्रते इलाही से दोनों के तन पानी के ऊपर आकर सरों से मिल गए और फिर पानी में डूब गए।

फिर मक़ातिल ने ज़ालिम हारिस को भी क़त्ल कर दिया और उसकी लाश को फिरात में फैंका तो फिरात ने उसे क़बूल ना किया और बाहर फैंक दिया, फिर उसे ज़मीन में दबा दिया। तो ज़मीन ने भी क़बूल ना किया और बाहर निकाल फैंका और आखिर लकड़ियाँ जमा करके उसको जला दिया गया। (तज़रह सफ़ा 50)

सबक़:- दीन से मुंह मोड़ कर इस बेवफा दुनिया को अपनाने का फल यही मिलता है के आदमी ना दीन का रहता है ना दुनिया का और ऐसा ज़ालिम धोबी के कुत्ते की तरह ना घर का रहता है ना घाट का।

हिकायत नम्बर (316) कूफे का सफर

हज़रत इमाम मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को कूफे में जिस रोज़ शहीद किया गया। उसी रोज़ हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मक्का मोअज़्ज़मा से कूफे को रवाना हो पड़े। आपके अहले बैत मुवाली व खुद्दाम कुल बयासी नफूस आपके हमराह थे। ये मुख़्तसिर सा अहले बैत का क़ाफला मक्का मोअज़्ज़मा से जब रूख़सत हुआ तो मक्का मुकर्रमा का बच्चा बच्चा अहले बैत के इस क़ाफले को हरम शरीफ से रूख़सत होता देख कर आब दीदा और मग़मूम हो रहा था। हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह का ये क़ाफला जब मुक़ामे शक़ूक़ में पहुँचा तो कूफे से आने वाले एक आदमी ने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो अन्ह को बताया के कूफियों ने बे वफाई की और हज़रत मुस्लिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह शहीद कर दिए गए हैं। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो अन्ह ने ये ख़बर सुनकर इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन पढ़ी फिर खेमे में आए हज़रत मुस्लिम की साहबज़ादी सामने आई तो उसके सर पर शफ़्क़त से हाथ फैरा और उससे तसल्ली व

शफ़्क़त आमेज़ बातें फ़रमाईं। साहबज़ादी ने ख़िलाफ़े आदत ये मिराआत देखकर अर्ज़ की के आज तो आप मुझ पर यतीमाना नवाज़िश फ़रमा रहे हैं, शायद मेरे वालिद मारे गए। ये सुनकर हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो अन्ह बेइख़्तियार रो पड़े और फ़रमाया बेटी। ग़म ना करो। मैं तेरा बाप। मेरी बहन तेरी माँ और मेरी लड़कियाँ लड़के तेरे भाई बहन हैं। साहबज़ादी रोने लगी। फ़रज़ंदाने मुस्लिम दौड़े और वालिद की शहादत की ख़बर सुनकर वो भी रोए और फिर इन्तिहाई दिलैरी से फ़रमाने लगे। चचा जान! इंशा अल्लाह हम कूफ़ियों से बाप के खून का बदला लेंगे। या खुद भी उनकी तरह शहीद हो जाऐंगे। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फिर अपने हमराहियों में एक तक़रीर फ़रमाई। और फ़रमाया के कूफ़ियों ने बदअहदी की और मुस्लिम रज़ी अल्लाहो अन्ह को शहीद कर दिया तुम में से जिसका जी चाहे, वापस चला जाए। चुनाँचे बाज़ लोग जो इधर उधर से आकर मिल गए थे। ये सुनकर वापस चले गए और जो शहीद होने वाले थे वो रह गए। आगे बढ़े तो एक मुक़ाम सोलबा पर आकर उतरे। हज़रत इमाम अपनी बहन हज़रत ज़ैनब रज़ी अल्लाहो अन्हा के ज़ानो पर सर रखकर सो गए। थोड़ी देर के बाद रोते हुए उठे और फ़रमाया बहन! मैंने नाना जान को ख़्वाब में देखा है आप सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम रो रो कर फ़रमा रहे हैं के ऐ हुसैन! तुम जल्द हम से आकर मिलोगे। और एक सवार कह रहा है के लोग चल रहे हैं और उनकी क़ज़ायें उनकी तरफ़ चल रही हैं। हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया। अब्बा जान! क्या हम हक़ पर नहीं हैं? इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया बेशक हम हक़ पर हैं। और हक़ हमारे साथ है। पस अली अक्बर ने अर्ज़ की तो फिर मौत का क्या ख़ौफ! के एक ना एक दिन मरना ही है, अब्बा जान! हम गुलज़ार शहादत को फूला फला देख रहे हैं। दुनिया से बेहतर घर और उम्दा नऐमतें हमारे सामने हैं। (तज़करह सफ़ा 57)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह और आपके अहले बैत सभी आला कलमात-उल-हक़ की ख़ातिर कमर बस्ता थे और मौत से मतलक़ हरासाँ ना थे और यज़ीद के फिस्को फिजूर के ख़िलाफ आवाज़ बुलंद फ़रमाने में किसी दुनयवी नुक़सान का उन्हें मतलक़ ख़याल ना था।

हिकायत नम्बर(317) हुरा इब्ने रबाही

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह, की रवांगी की ख़बर

पाकर इब्ने ज़ियाद ने हुरा इब्ने रबाही को एक हज़ार लश्कर देकर हज़रत इमाम को घेर कर कूफे में लाने के वास्ते आगे भेज दिया। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने जब लश्कर को देखा तो एक शख़्स को मालूम करने के लिए भेजा के ये कैसा लश्कर है। इतने में हुरा इब्ने रबाही खुद हज़रत इमाम के सामने आया और कहने लगा। मुझे इब्ने ज़ियाद ने आपको घेर कर कूफे में ले जाने के लिए भेजा है। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने इस लश्कर में खुत्बा पढ़कर फ़रमाया के ऐ लोगो! मेरा इरादा इधर आने का ना था। मगर पै दरपै तुम्हारे ख़त पहुँचे, क़ासिद आए के जल्द आओ, तो मैं आया। अब अगर तुम अपने वादे पर क़ायम हो तो मैं तुम्हारे शहर चलूं वरना वापस चला जाऊँ, हर बोले के खुदा की क़सम मैं इन ख़तूत से ख़बरदार नहीं हूँ, हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया मगर तुम्हारे इसी लश्कर में बहुत से ऐसे आदमी मौजूद हैं जिन्होंने मुझे ख़त लिखे। फिर आपने ख़तूत पढ़कर सुनाए। अक्सर ने सर नीचा किया। और कुछ जवाब ना दिया हुर ने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से कहा के हज़रत! इब्ने ज़ियाद ने मुझे आपको घेर कर कूफे ले चलने का हुक्म दिया है। मगर मेरे हाथ कट जायें जो आप पर तलवार उठाऊँ। चूंके मुख़ालिफ मेरे साथ हैं। इसलिए मसलेहत ये है के मैं आपके हमराह रहूं। रात को आप मसतूरात का बहाना करके मुझे से अलेहदा उतरें और जब लश्कर वाले सो जायें तो आप जिस तरह चाहें चले जायें। मैं सुबह को कुछ देर जंगल में तलाश करके वापस चला जाऊँगा और इब्ने ज़ियाद से कुछ बहाना कर दूंगा। (सर-उल-शहादतें, सफ़ा 19, व तज़करह, सफ़ा 59)

सबक़:- हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो अन्ह महज़ इतमामे हुज्जत के लिए उन लोगों की दावत पर वहाँ तशरीफ़ ले गए और सिर्फ दीन की हिमायत का जज़्बा आपको आगे ले गया। जो गुसताख़ आपका मुद्दा सल्तनत का हिसूल बताते हैं। वो ग़ौर तो करें के अगर बक़ौल उनके आपका यही मुद्दा होता तो आप इस बे सरो सामानी के साथ हर गिज़ सफर ना फ़रमाते, जब के आपको इल्म था के दुश्मन बे हद क़वी है और हज़ारों की तादाद में लश्कर रखता है इधर लश्कर अज़ीम, और उधर चन्द नफूस कुदसिया किया कोई अक़्ल का दुश्मन ये कह सकता है के इस बे सरो सामानी के साथ आप सल्तनत के हिसूल के लिए निकले थे? हर गिज़ नहीं, बल्के आप को मैदान में सिर्फ हिमायत दीन का जज़्बा ले गया था...

ना अपनी आन की ख़ातिर ना अपनी शान की ख़ातिर
वो मैदाँ में निकल आए फक़्त ईमान की ख़ातिर

हिकायत नम्बर (318) दश्त कर्बला

हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की कूफे को रवांगी की ख़बर पाकर इब्ने ज़ियाद ने हुर बिन रबाही की क़यादत में एक लश्कर आगे भेज दिया था। हुर बिन रबाही मर्दे सईद ने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को मशवरा दिया के वो मसतूरात का बहाना फ़रमा कर रात को अलेहदा उतरें और रात ही को कहीं तशरीफ़ ले जायें। चुनाँचे हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने यही किया और रात को जब यज़ीदी लश्कर सो गया तो आपने वहाँ से कूच किया। अंधेरी रात में मालूम ना हुआ के किधर जा रहे हैं। सुबह को एक मैदान होलनाक में पहुँचे। यहाँ उतरे तो इस मैदान में जिस जगह मेख गाढ़ते। ज़मीन से खून निकलता। जिस दरख़्त से लकड़ियाँ तोड़ते, खून टपकता। ये हाल देखकर इमाम ने हमराहियों से पूछा। तुम में से किसी को इस दश्त का नाम मालूम है। एक ने कहा इसे मारिया कहते हैं। फ़रमाया! शायद कोई दूसरा नाम भी हो। लोगों ने कहा इसे कर्बला भी कहते हैं। ये सुनकर आपने फ़रमाया अल्लाहो अक्बर। *अरज़ो कर्बिन व बलाई व मसफका दिमाअ* ज़मीन कर्बला यही है। हमारे खून बहने की जा यही है अब हम यहाँ से कहीं नहीं जा सकते...

दुश्मन यहाँ पे खून हमारा बहायेंगे
ज़िन्दा यहाँ से हम ना कभी फिर के जाएंगे
आले नबी का होगा इसी जा पे ख़ात्मा
सब तश्ना लब यहाँ पे सर अपना कटायेंगे!

कर्ब व बला है नाम इसी सर ज़मीं का
बच्चे यहाँ पे पानी का क़तरा ना पायेंगे
होगा हर इक शहीद यहाँ मुसतफा का लाल
और लाश क़त्ल गाह से हम सबकी लायेंगे

अली अक्बर ने अर्ज़ किया, अब्बा जान! आप ये क्या फ़रमा रहे हैं, फ़रमाया बेटा! तेरे दादा जान अली अलमुर्तज़ा सफैन जाते हुए यहाँ ठहरे और बड़े भाई हसन के ज़ानो पर सर रख कर सोए। मैं सिरहाने खड़ा था के रोते हुए उठे। बड़े भाई ने रोने का सबब पूछा। तो फ़रमाया मैंने अभी ख़्वाब में इस जगह हुसैन को दरयाऐ खून में डूबता हुआ हाथ पाँव मारता हुआ

फ़रयाद करता हुआ देखा है मगर कोई उसकी फ़रयाद नहीं सुनता। फिर मुझ से फ़रमाया। बेटा! जब तुझे इस जगह वाक़ेया अज़ीम दरपैश होगा तो तू उस वक़्त क्या करेगा? मैंने अर्ज़ किया के सब्र करूंगा। इस पर फ़रमाया बेटा ऐसा ही कना के सब्र करने वालों का सवाब बेशुमार है।

अन्नामा यूतिस्साबिरूना अजराहुम बग़ैरी हिसाब

ये फ़रमा कर आपने असबाब उतरवाया। लब फिरात खैमा नस्ब फ़रमाया और दूसरी मोहर्रम 61हि॰ को आप दश्त कर्बला में क़याम पज़ीर हुए। (तज़करह, सफ़ा 61)

सबक़:- दश्त कर्बला अज़ल ही से हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के लिए इम्तिहान गाह मुक़र्रर हो चुका था और हज़रत को खुद भी अपने इस इम्तिहान देने का इल्म था और ये आप ही की शान और आप ही का हिस्सा है के इस ज़बरदस्त इम्तिहान के लिए आप हर तरह तैयार थे और आपने पाये इसतक़लाल और अज़्मो सिबात में ज़र्रा भी भी लग़ज़िश ना आने दी।

हिकायत नम्बर(319) तलक़ीन सब्र

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जब दश्त कर्बला में उतरे तो आपने अहले बैत में ये वाज़ फ़रमाया के "मेरी मुसीबत व मुफारक़त पर सब्र करना जब मैं मारा जाऊँगा तो हर गिज़ मुंह ना पीटना और बाल ना नोचना और गिरेबान चाक ना करना ऐ मेरी बहन ज़ैनब! तुम फातिमा ज़ोहरा की बेटी हो। जैसा उन्होंने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मुफारक़त पर सब्र किया था इसी तरह तुम भी मेरी मुसीबत पर सब्र करना।" (अनारत-उल-बसायर, सफ़ा 297) (बहवाला नासिख-उल-तवारिख मनकूल अज़ फ़ैसला शरीया सफ़ा 41)

सबक़:- सब का इस अमर पर इत्तिफाक़ है के हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह ने खुद भी सब्र फ़रमाया और अपने मुतअल्लिक़ैन को भी सब्रो शुक्र से रहने की तलक़ीन फ़रमाई पस हमें भी सब्रो शुक्र से काम लेना चाहिए। और जज़ै व फज़ै से बचना चाहिए। ताके इमाम साहब की खुशनूदी हासिल हो।

हिकायत नम्बर(320) इब्ने ज़ियाद का ख़त

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मुक़ामे कर्बला में

क़याम फ़रमाया तो इब्ने ज़ियाद ने एक ख़त हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की तरफ़ इस मज़मून का भेजा के या तो यज़ीद की बैत कीजिए या लड़ने को तैयार हो जाइये। हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने इस ख़त को पढ़कर फैंक दिया। और क़ासिद से फ़रमाया *मालाहू इन्दी* (जवाब) मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं। इब्ने ज़ियाद ये सुनकर ग़ुस्से में आ गया और इब्ने साद को बुला कर कहा के तुम एक मुद्दत से मुल्क रैए के हाकिम बनने की तमन्ना रखते हो लो आज मौक़ा है तुम हुसैन के मुक़ाबले के लिए जाओ और हुसैन को मजबूर करो के वो यज़ीद की बैत करे वरना उसका सर काट कर ले आओ। तो मुल्क रैए का परवानाए हकूमत तुम को दे दिया जाएगा। सग दुनिया इब्ने साद मुल्क रैए की हकूमत के लालच में आकर हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के मुक़ाबले के लिए तैयार हो गया और लश्कर लेकर कर्बला में पहुँच गया। कर्बला में पहुँच कर उसने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से दरयाफ़्त किया के आप यहाँ किस वास्ते आए हैं आपने फ़रमाया कूफ़ियों ने हज़ारों ख़त लिख लिख कर मुझे बुलाया। मैं खुद यहाँ नहीं आया मगर अब जब के तुम सबकी बेवफाई मुझे मालूम हो गई है तो मुझे अब भी तुम लोग वापस जाने दो और मुझ से मुतआर्रिज़ ना हो तो वापस चला जाऊँ। इब्ने साद ने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की इस गुफ़्तगू की इत्तिला इब्ने ज़ियाद को दी तो इब्ने ज़ियाद ने ग़ुस्से से हुक्म भेजा के तुम्हें हुसैन रज़ी अल्लाहो रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से लड़ने को भेजा है सुलह करने नहीं। हम सिवा बैत के हुसैन से कुछ भी क़बूल नहीं करेंगे। फिर इब्ने ज़ियाद ने शमरशीत वग़ैरा ज़ालिमों को सरदार बना बना कर हज़ारों की तादाद में और फौजें भी भेज दीं और हुक्म दे दिया के हुसैन का पानी भी बन्द कर दिया जाए और उसे हर तरह तंग किया जाए। (तनक़ीह-उल-शहादतैन, सफ़ा 56)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह दीन के लिए मैदान में तशरीफ़ लाए और इब्ने साद वग़ैरा यज़ीदी लोग दुनयवी हकूमत के लालच में हज़रत इमाम के मुक़ाबले में आए। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह आख़िर तक उन पर इतमामे हुज्जत फ़रमाते रहे और फ़रमाते रहे के तुम अगर अब भी मुतारिज़ ना हो तो मैं वापस चला जाऊँ। मगर वो लोग खुद ही इस सारे फ़ितने के बानी थे।

हिकायत नम्बर(321) नहर फिरात

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मैदाने कर्बला में नहर फिरात के किनारे अपने खैमे गाढ़ रखे थे मगर मोहर्रम की सातवीं तारीख को इब्ने साद को फौज ने जो बयासी हज़ार की तादाद में फिरात को घेर लिया और हज़रत इमाम को पानी लेने से रोक दिया इस फौज में अक्सर वही लोग थे। जो मुहिब्बाने अली और मुहिब्बाने हुसैन होने का दावा करते और जिन्होंने हज़रत इमाम को खत लिखकर खुद ही बुलाया था और अब खुद ही उनका पानी भी बन्द कर दिया। इब्ने साद ने हज़रत इमाम को कहा के वो अपने खैमे नहर के किनारे से उखाड़ लें। हज़रत अब्बास ने इस मौके पर फ़रमाया के ऐसा नहीं हो सकता मगर हज़रत इमाम ने फ़रमाया के भाई अब्बास जाने दो तुम बहर करम हो ये क़तरा-ए-ना चीज़ हैं उनसे झगड़ना फिज़ूल है। अपना खैमा यहाँ नहीं तो नहर से दूर ही सही। चुनाँचे हज़रत इमाम ने अपना खैमा वहाँ से उखाड़ने का हुक्म दे दिया। (तनक़ीह-उल-शहादतैन, सफ़ा 96)

सबक़:- साक़ी कोसर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के नवासे और उनके अहले बैत पर पानी बन्द कर देना यज़ीदियों की इन्तिहाई शिक़ावत और हज़रत इमाम का बकमला सब्रो शुक्र वहाँ से खेमा उखाड़ लेना आपकी इन्तिहाई बुलंद होसलगी और जुर्रातो शुजाअत का मुज़ाहेरा था और ये भी मालूम हुआ के ये सब शक़ी जिन्होंने हज़रत पर पानी बन्द किया था और जो पहले अपनी झूटी मोहब्बत का एलान करते रहे थे। अफसोस उन ज़ालिमों पर जिन्होंने....

ख़ौफ़े खुदा व पास पैग़म्बर भुला दिया
सिब्ते नबी का नहर से खेमा उठा दिया

हिकायत नम्बर(322) कुआँ

मैदाने कर्बला में ज़ालिमों ने हज़रत इमाम पर सातवीं मोहर्रम से पानी बन्द कर दिया। आठवीं तारीख़ को जब अहले बैत के छोटे बड़े प्यास से निढाल हुए और अलअतश अलअतश की आवाज़ें आने लगीं। तो हज़रत इमाम ने वहाँ एक कुआँ खुदवाया जिससे कुछ अफ़राद ने पानी पिया लेकिन वो कुआँ फिर आप ही आप ग़ायब हो गया। (तनक़ीह-उल-शहादतैन सफ़ा 57)

सबक़:- मालूम हुआ के खुद ख़ुदा वंद करीम को यही मंज़ूर था के

हुसैनी लश्कर सब्रो शुक्र का मुज़ाहेरा करके अब होज़े कोसर ही के पानी से अपनी प्यास बुझाए।

हिकायत नम्बर(323) बरीर हमदानी और इब्ने साद

मोहर्रम की नवीं तारीख़ को हुसैनी लश्कर में से हज़रत इमाम के रफ़ीक़ बरीर हमदानी हज़रत इमाम से इजाज़त लेकर इब्ने साद के पास गए और जाके उसके पास बैठ गए। इब्ने साद ने कहा के हमदानी! क्या तुम मुझे मुसलमान नहीं समझते जो मुझे सलाम अलेक नहीं कहा। हमदानी बोले के ज़ौफ है तेरे इस मुसलमान बनने पर के दावा तू इस्लाम का करता है और अहले बैत रसूल को दरया से पानी तक नहीं लेने देता। नहर फिरात से जानवर तक पानी पी रहे हैं मगर साक़ी कोसर के लख़्ते जिगर प्यास से तड़प रहे हैं....

फिटकार ज़ौफ लअन है तुझ बद मआल पर
पानी किया है बन्द मोहम्मद की आल पर

इब्ने साद ने कहा सच है लेकिन क्या करूं मुझ से मुल्क रैए की हकूमत नहीं छूटती। (तनक़ीह-उल-शहादतैन सफ़ा 58)

सबक़:- दुनिया परस्त अपनी आक़्बत से अंधा हो जाता है।

हिकायत नम्बर(324) मज़लूम सय्यद

मोहर्रम की नवीं तारीख़ सुबह से दोपहर तक इब्ने साद से गुफ़्तगू में गुज़री। बाद नमाज़ ज़ोहर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ख़ेमे से बाहर बैठे हुए कलाम अल्लाह की तिलावत फ़रमाते थे और आँखों से आँसू बहते जाते थे। इस दश्त होलनाक में इस वक़्त किसी मुसाफिर खुदा परस्त का गुज़र हुआ। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाो तआला अन्ह को इस आलम में देखकर उसने आपका हाल पूछा तो आपने फ़रमाया...

मुसाफिर सय्यद आवारा वतन हूँ
ग़रीक़ कुलज़मे रंज व महन हूँ
सितम मुझ पे किया इन शामियों ने
नबी की आल हूँ तशना दहन हूँ

कूफियों ने बड़ी बड़ी खुशामदों से ख़त और क़ासिद भेज भेज कर मुझे बुलाया और अब मेरे साथ बेवफाई और दग़ा कर रहे हें और मेरे खून के प्यासे हो गए। (तनक़ीह-उल-शहादतैन सफ़ा 58)

सबक़:- हज़रत इमाम आली मुक़ाम का ये वाक़ेया क़यामत तक

यही पुकारता रहेगा के कूफियों ने झूटी मोहब्बत का मुज़ाहेरा करके हज़रत इमाम आली मुक़ाम पर इन्तिहाई ज़ुल्मो सितम किया सफ़ा क़िस्म के झूटे मदअयान मोहब्बत से इजतिनाब ही लाज़िम है।

हिकायत नम्बर (325) सरवरे अंबिया (स०अ०स०) की आमद

मोहर्रम की दसवीं रात शाम से सुबह तक हज़रत इमाम ने इबादते इलाही में गुज़ार दी। रात के पिछले पहर आप पर एक इसतग़राक़ की कैफियत तारी हुई। हक़ तआला की याद में इस क़द्र मह्‌ू हुए के दुनिया व माफीहा की तरफ़ तवज्जह ना रही। इस आलम में हुज़ूर सय्यद-उल-अंबिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम फरिश्तों की जमात के साथ मैदाने कर्बला में तशरीफ़ लाए और हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को बच्चों की तरह गोद में लेकर खूब प्यार फ़रमाया। और फ़रमाया ऐ जानो दिल के चैन नूर-उल-ऐन मेरे हुसैन में खूब जानता हूँ के दुश्मन तेरे दरपे आज़ार हैं और तुझे क़त्ल करना चाहते हैं। बेटा! तुम सब्रो शुक्र से इस साअत को गुज़ारना! तेरे जितने क़ातिल हैं।

क़यामत के दिन सब मेरी शफाअत से महरूम रहेंगे और तुझे शहादत का बहुत बड़ा दर्जा मिलने वाला है और थोड़ी ही देर में तुम कर्बला से छूट जाओगे। बेटा! बहिश्त तेरे लिए संवारी गई है। तेरे माँ बाप बहिश्त के दरवाज़े पर तेरी राह तक रहे हैं। ये बातें इर्शाद फ़रमा कर हुज़ूर ने फिर हज़रत इमाम के सर व सीने पर हाथ मुबारक फैर कर दुआ फ़रमाई के अल्लाहुम्मा आतिल हुसैना सबरन व अजरन ऐ अल्लाह मेरे हुसैन को सब्रो अज्र इनायत फ़रमा।

हज़रत इमाम जब इस मुकाशफे से चौंके और अहले बैत से ये सारा माजरा बयान किया तो सब हैरत से एक दूसरे का मुंह तकने लगे। (तनक़ीह-उल-शहादतैन)

सबक़:- कर्बला का सारा क़िस्सा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नज़र आली में था। हुज़ूर ज़ालिमों का ज़ुल्म और साबिरों का सब्र मुलाहेज़ा फ़रमा रहे थे।

हिकायत नम्बर (326) करामात

मोहर्रम की दसवीं को हज़रत इमाम ने ख़ैमा के गिर्द जो ख़ंदक़ खुदवा रखी थी। वो लकड़ियों से भरवा कर उसमें आग रोशन कर दी ताके हरम शबखून वग़ैरा से महफूज़ रहें और दुश्मन ख़ैमे तक ना पहुँच सके। इस

यज़ीदी बेदीन ने आग रोशन देख कर कहा। ऐ हुसैन! आतिश दोज़ख़ से पहले ही तुम ने अपने आप को आग में डाल लिया है। (मआज़ अल्लाह) हज़रत इमाम ने फ़रमाया *कज़िब्ता या अदूवल्लाही* ऐ दुश्मने खुदा, तूने झूट बोला। फिर आपने रूबक़िबला होकर फ़रमाया *अल्लाहुम्मा अजीरुहू इलन्नारी* ऐ अल्लाह! इसे आग की तरफ़ खींच ये दुआ करते ही उस बेदीन के घोड़े का पाँव एक सूराख़ में फंसा, घोड़ा गिरा। लगाम हाथ से छूटी, पाँव लगाम में उलझा, घोड़ा लेकर भागा हत्ता के उसे ख़ंदक की आग में लाकर गिराया और खुद चला गया। हज़रत इमाम ने सज्दा शुक्र अदा किया और सर उठा कर बाआवाज़े बुलंद फ़रमाया। इलाही हम तेरे रसूल की आल हैं। हमारा इंसाफ ज़ालिमों से लेना। इतने में एक और बेदीन ने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को मुख़ातिब करके कहा। देख ऐ हुसैन! नहर फिरात कैसी मौजें मार रही है। मगर उससे तुझे एक क़तरा भी नसीब ना होगा। यूंही प्यासा क़त्ल किया जाएगा। इमाम ये सुनकर आज़ुर्दा हुए और आबदीदा होकर दुआ फ़रमाई। इलाही! उसे प्यासा मार, यकायक उसके घोड़े ने शोख़ी करके गिराया। ये उठ कर घोड़ा पकड़ने दौड़ता फिर। प्यास ग़ालिब हुई, प्यास प्यास पुकारता रहा मगर हलक़ से पानी ना उतरा आख़िर उसी प्यास की हालत में मर गया। (तज़करह सफ़ा 68)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के महबूब थे। खुदा आपकी सुनता था मगर शहादत चूंके आपके नाम लिखी जा चुकी थी। और अल्लाह व रसूल की यही मर्ज़ी थी इसलिए आप राज़ी बरज़ाए हक़ थे। और आपने बकमाल सब्रो रज़ा जामे शहादत नोश फ़रमाया।

हिकायत नम्बर (327) इतमामे हुज्जत

यज़ीदियों ने जब बहर सूरत हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से लड़ना ही चाहा तो हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने भी अमामा-ए-रसूल बाँध कर ज़ुलफ़िक़ार हैदर करार हाथ में लेकर और नाक़े पर सवार होकर मैदान में तशरीफ़ लाए और क़रीब लश्कर इब्ने साद होकर फ़रमाया।

"ऐ इराक़ वालो! तुम खूब जानते हो के मैं नवासा रसूल हूँ, फ़रज़ंद तबूल और दिलबंद अली अलमुतर्ज़ा और बरादर हसन मुजतबा हूँ देखो ये अमामा किस का है? ग़ौर करो के इसाई अब तक निशान पाऐ मूसा को बोसा देते हैं, ग़र्ज़ हर दीन व मिल्लत के लोग अपने पैशवाओं की यादगार को

दोस्त रखते हैं पस मैं तुम्हारे रसूल का नवासा हूँ, अली शेरे खुदा का फ़रज़ंद हूँ अगर तुम मेरे साथ कोई अच्छा सलूक नहीं कर सकते तो कम अज़ कम मुझे क़त्ल ही ना करो। बताओ तुम ने किस वजह से मेरा और मेरे अहलो अयाल का पानी बन्द कर रखा है, क्या मैंने तुम में से किसी का खून किया है या किसी की जागीर ज़ब्त की है? जिसका बदला तुम मुझ से ले रहे हो, तुम ने खुद मुझ को यहाँ बुलाया और अब ये अच्छी मेरी मेहमान नवाज़ी कर रहे हो? ज़रा सोचो के तुम क्या कर रहे हो।?"

आप ये तक़रीर फ़रमा ही रहे थे के खैमे से रोने की आवाज़ आई। आपने मुतास्सिर होकर लाहोल पढ़ी और अब्बास व अली अक्बर से फ़रमाया तुम जाकर सब को रोने से मना करो और कहो, ज़रा सब्र करो के अभी तुम्हें बहुत रोना है। दोनों हज़रात ने अहले हरम को रोने से बाज़ रखा हज़रत इमाम ने फिर लश्कर इब्ने साद से खिताब फ़रमाया के:

"ऐ कूफियो! तुम्हें मेरा हस्बो नस्ब मालूम है जिसका मिस्ल आज रूऐ ज़मीन पर नहीं है फिर सोच लो के तुम ने खुद ही मुझे खतूत लिखकर बुलाया है फिर अब मेरे खून के प्यासे क्यों हो गए हो। देखो ये तुम्हारे खतूत हैं।"

हज़रत इमाम ने खतूत दिखाए तो उन बेवफाओं ने इंकार कर दिया और कहा ये हमारे खतूत नहीं हैं। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उनके इस कज़िब व उज़्र से मुतहय्यर होकर फ़रमाया, बहम्दुलिल्लाह! हुज्जत तमाम हुई, मुझ पर कोई हुज्जत ना रही। (तज़करह सफ़ा 70)

सबक़:- हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह आखिर तक यही चाहते रहे के ये लोग अपनी बेवफाई से बाज़ आयें और मेरे खून नाहक़ से अपने हाथ ना रंगें मगर इन बदबख़्तों के नसीब ही बुरे थे। इसलिए वो अपने ज़ुल्मो सितम से बाज़ ना आए और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह अपने नाम के और झूटे मेहबूब से बेज़ार होकर दुनिया से तशरीफ़ ले गए।

हिकायत नम्बर(328) हज़रत हुर(र॰अ॰)

हिकायत नम्बर 317 में हुर बिन रबाही का ज़िक्र आपने पढ़ा। ये हुर मर्दे सईद और खुश क़िसमत थे। लश्कर इब्ने साद में हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साथ लड़ने आए थे मगर उनकी तक़दीर में कुछ और ही लिखा था। हज़रत इमाम आली मुक़ाम के अहबाब व अनसार जब यज़ीदियों के साथ लड़ते हुए शहीद हो चुके थे और हज़रत इमाम रज़ी

अल्लाहो तआला अन्ह के पास बजुज़ भाई, भतीजों, भांजों, लड़कों और तीन ख़ादिमों के और कोई बाक़ी ना रहा तो ये सूरते हाल देखकर हज़रत इमाम बेइख़्तियार रो पड़े और पुकार उठे।

हल मिन मुग़ैसिन यूग़ीसूना

"है कोई हमारी फ़रयाद सुनने और मदद करने वाला"

ये दर्दनाक आवाज़ हज़रत हुर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के कानों में पड़ी तो कलेजा दहल गया और फौरन अपने घोड़े की बाग दोज़ख़ की तरफ़ से फैर कर जन्नत की तरफ़ कर ली। यानी लश्कर इब्ने साद से घोड़ा दौड़ा कर हज़रत इमाम की ख़िदमत में हाज़िर हो गए और रकाब का बोसा देकर अर्ज़ किया: हुज़ूर! मेरा क़सूर माफ और मेरी तौबा क़बूल होगी या नहीं? इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उनके सर पर दस्त मुबारक फैर कर फ़रमाया अल्लाह तआला अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता है, मैं तुम से खुश हूँ हज़रत हुर ये बशारत सुनकर लश्कर इमाम में शामिल हो गए। (तज़करह सफ़ा 73)

सबक़:- जिनका नसीब अच्छा हो वो किसी ना किसी वक़्त गुमराही से निकल कर हिदायत की तरफ़ आ ही जाते हैं।

हिकायत नम्बर(329) हज़रत हुर(र०अ०) की शहादत

हज़रत हुर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह यज़ीदी लश्कर से निकल कर हुसैनी सिपाह में आ मिले थे और इस तरह उन्होंने अपने आपको आग से बचा कर जन्नत ख़रीद ली थी। आप बहुत बड़े बहादुर और दिलैर थे। इब्ने साद के लश्कर के आप सिपह सालार थे। इब्ने साद ने जब उन्हें हुसैनी सिपह में मिलते हुए देखा तो वो बहुत घबराया और सफवान से कहने लगा तू जा और हुर को समझा कर वापस फैर। वरना सर तन से जुदा कर। चुनाँचे सफवान ने हुर से आकर कहा, तुम मर्द दाना व आक़िल होकर यज़ीद जैसे अज़ीम हाकिम की रफ़ाक़त छोड़ कर हुसैन की तरफ़ क्यों चले आए, चलो वापस चलो, हज़रत हुर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया, अब मैं वापस नहीं जा सकता। सफवान ने पूछा क्यों? तो फ़रमाया....

क्यों छोड़ के दीं फौज में गुमराह के आऊँ
हाकिम को हंसाऊँ मैं मोहम्मद को रूलाऊँ
क्या हाकिम दुनिया का तो अहसास करूं मैं
और ज़ोहरा के रोने का ना कुछ पास करूं मैं

ऐ सफवान! यज़ीद नापाक है और हुसैन पाक और रीहान मुसतफा है। सफवान ने गुस्से में आकर नेज़ह मारा। हुर ने नेज़ह तोड़ डाला और फिर उसे एक ऐसा नेज़ह मारा के सीने से पार हो गया। और फीन्नार हो गया। ये सूरत देखकर सफवान के भाई दौड़े। हज़रत हुर ने उन्हें भी मार डाला और फिर खुद वहाँ से फिर कर हज़रत इमाम के पास आकर अर्ज़ की। हुज़ूर! अब तो आप मुझ पर राज़ी हैं। फ़रमाया मैं तुझ से राज़ी हूँ तू आज़ाद है जैसा के तेरी माँ ने तेरा नाम रखा हे। हुर ये मसदा सुनकर फिर मैदान में आए जिस तरफ़ हमला किया कश्तों के पुश्ते लगा दिए। एक यज़ीदी ने आकर आपके घोड़े को ज़ख्मी कर दिया। आप पियादा ही लड़ने लगे, इमाम ने उन्हें पियादा देख कर दूसरा घोड़ा भेज दिया हज़रत हुर इस पर सवार हो गए। लेकिन अब ज़ालिमों ने एक दम हल्ला बोल दिया। हज़रत हुर ने एक बार और खिदमत इमाम में हाज़िर होने का इरादा किया के गैब से आवाज़ आई। अब ना जाओ, हूरें तुम्हारी मुंतज़िर हैं। पस हुर ने वहीं से अर्ज़ की या इब्ने रसूल अल्लाह! ये गुलाम आपके नाना जान के पास जा रहा है कुछ फ़रमाइये तो कह दे, इमाम ने रो कर फ़रमाया हम भी तुम्हारे पीछे आ रहे हैं। उसके बाद हज़रत हुर ज़ालिमों के मुतावातिर हमलों से निढाल होकर गिर पड़े और इमाम को आवाज़ दी। हज़रत इमाम आवाज़ सुनकर दौड़े और हुर को उठा कर लश्कर में लाए। ज़ानवे मुबारक पर उनका सर रख कर चहरे का गर्दो गुबार साफ करने लगे। हुर ने अपनी आँखें खोलीं, और अपना सर इमाम के ज़ानो पर रख कर मुसकुराए और जन्नत को सिधारे। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन(तज़करह: 75, सर-उल-शहादतैन सफ़ा 22)

सबक़:- हज़रत हुर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने नाम के मुताबिक़ वाक़ई हम से आज़ाद और जन्नत के मालिक बन गए और ये दर्स दे गए के दुनिया चन्द रोज़ा है और एक दिन आखिर मरना है, फिर क्यों ना ऐसी मौत मरा जाए जिससे अल्लाह व रसूल खुश हो, और आक़्बत दुरूस्त हो जाए। फिर आज अगर कोई कहलाए हुसैनी और ना नमाज़ पढ़े ना दाढ़ी रखे। भंग पिये चरस पिये, और बुज़ुर्गों की तोहीन करे गोया कहाऐ हुसैनी और काम करे यज़ीदी तो उसके मुतअल्लिक़ क्यों ना कहा जाए के ये हुसैनी लश्कर से कट कर यज़ीदी सिपह में जा मिला है।

हिकायत नम्बर (330) दो शेर

हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के जब सब यार वफादार और रफ़ीक़ व जाँनिसार शहीद हो गए तो हज़रत की सगी और बेवा बहन हज़रत ज़ैनब रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दो यतीम साहबज़ादे हज़रत मोन और हज़रत मोहम्मद माँ और मामूँ की इजाज़त लेकर घोड़ों को दौड़ाते हुए और नअरा-ए-तकबीर बुलंद करते हुए दुश्मनों की तरफ़ बढ़े....

जंग गाह में घोड़ों को उड़ाते हुए आए
शान अपनी सवारी की दिखाते हुए आए
नेज़ों को दिलैराना हिलाते हुए आए
ईनाँ सूए अशरार बनाते हुए आए
लरज़ा था शुजाओं को दिलैरों की नज़र से
तकते थे सफे फौज को शेरों की नज़र से
लश्कर में ये ग़ुल था के वो जाँबाज़ पुकारे
लड़ना हो जिसे सामने आ जाए हमारे
हम वो हैं के जब होते हैं मैदाँ में उतारे
रूस्तम को भगा देते हैं तलवार के मारे
है क़ेहर खुदाए दो जहाँ हर्ब हमारी
रूकती नहीं दुश्मन से कभी ज़र्ब हमारी
ये रिज्ज़ पढ़ी दोनों ने जोलाँ किए घोड़े
चिल्ले में इधर तीर कमानदारों ने जोड़े
ग़ुल था के ख़बरदार कोई मुंह को ना मोड़े
ये दोनों बहादुर हैं तो हम भी नहीं थोड़े
या मार के तलवार गिरा देते हैं उनको
या नेज़ों की नोकों पर उठा लेते हैं उनको

ये दोनों शेर फौज अशकिया में घुस गए और कई यज़ीदी फीन्नार कर दिए जब अशकिया ने देखा के ये बच्चे तो शेरों की तरह लड़ रहे हैं तो उन्होंने दोनों को इस तरह नरग़े में ले लिया के दोनों भाई एक दूसरे से जुदा हो गए फिर भी किसी की हिम्मत ना पड़ती थी। ताहम एक शख़्स ने पीछे से आकर इस ज़ोर से नेज़ा मारा के हज़रत ज़ैनब का ये लाल घोड़े से खून में लहू लहान नीचे गिर पड़ा। दूसरे भाई को भी फिरऔनों ने नेज़ों से छलनी कर दिया और दोनों शेर फर्शे ख़ाक पर तड़पने लगे। उस वक़्त हज़रत इमाम

रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह दौड़े। आपको देखकर दोनों ने आँखें खोलीं। और मुसकुरा दिए। और दम तोड़ दिया। हज़रत ज़ैनब रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा आख़िर माँ थीं। बच्चों की शहादत की ख़बर पाकर उनका जिगर पाश पाश हो गया। आसमान व ज़मीन की आँखों में भी आँसू आ गए थे लेकिन उन संग दालान कूफे के दिल रहम से बिलकुल खाली थे इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन (तनक़ीह-उल-शहादतैन तबेसरूफ मोल्लिफ सफ़ा 71)

सबक़:- अहले बैत एेज़ाम के हर छोटे बड़े फर्द में जुर्रात व शुजाअत पाई जाती थी और अल्लाह की राह में कट मरने का जज़्बा अहले बैत एेज़ाम में बदर्जा उत्तम मौजूद था और वो पाक लोग दीन की ख़ातिर अपना सब कुछ कुर्बान कर गए। और हमें ये दर्स दे गए के तुम भी दीन की ख़ातिर अपना सब कुछ कुर्बान कर देने का अपने आप में जज़्बा पैदा करो।

हिकायत नम्बर(331) अज़रक़ पहलवान

मैदाने कर्बला में जब हज़रत हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के अहबाब शहीद हो चुके और आपके भतीजे और भांजे भी जामे शहादत नोश फ़रमा चुके। तो फिर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साहबज़ादे हज़रत क़ासिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मैदान में तशरीफ़ लाए। आपको देखकर यज़ीदी लश्कर में खलबली मच गई। यज़ीदी लश्कर में एक शख़्स अज़रक़ पहलवान भी था। उसे मिस्र व शाम वाले एक हज़ार जवान की ताक़त का मालिक समझते थे। ये शख़्स यज़ीद से दो हज़ार रुपये सालाना पाता था। और कर्बला में अपने चार ताक़तवर बेटों समेत मौजूद था। जब हज़रत इमाम क़ासिम मैदान में आए तो मुक़ाबला में आने के लिए कोई तैयार ना हुआ। इब्ने साद ने अज़रक़ से कहा के क़ासिम के मुक़ाबले में तुम जाओ अज़रक़ ने उसमें अपनी तोहीन समझी और मजबूरन अपने बड़े बेटे को ये कहकर भेज दिया के मेरे जाने की क्या ज़रूरत है। मेरा बेटा अभी क़ासिम का सर लेकर आता है। चुनाँचे उसका बेटा हज़रत क़ासिम के मुक़ाबले में आया और हज़रत क़ासिम के हाथों बड़ी ज़िल्लत के साथ मारा गया। उसकी तलवार पर हज़रत क़ासिम ने क़ब्ज़ा कर लिया और फिर ललकारे के कोई दूसरा है तो मेरे सामने आए अज़रक़ ने अपने बेटे यूं मरते देखा तो बड़ा रोया और गुस्सा में आकर अपना दूसरा लड़का मुक़ाबले में भेज दिया। हज़रत क़ासिम ने उस दूसरे को भी मार डाला। अज़रक़ ने दीवाना वार फिर

अपना तीसरा लड़का भेजा। अल्लाह के शेर ने उसे भी जहन्नुम रसीद कर दिया। अज़रक़ ने फिर चौथा लड़का भेजा तो क़ासिम के हाथों वो भी ना बच सका। अब तो अज़रक़ की आँखों में अंधेरा छा गया। और गुस्से में दीवाना होकर खुद मैदान में आ गया। हज़रत क़ासिम के मुक़ाबले में अज़रक़ को देखकर हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने हाथ उठाए और दुआ की के मेरे मौला! मेरे क़ासिम की लाज तेरे हाथ में है। लोग दोनों की लड़ाई देखने लगे। अज़रक़ ने पे दरपे बारह नेज़े मारे। हज़रत क़ासिम ने सब रोके। फिर उसने झल्ला कर क़ासिम के घोड़े की पुश्त पर नेज़ा मारा घोड़ा मर गया क़ासिम पैदल रह गए। हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़ौरन दूसरा घोड़ा भेज दिया। क़ासिम ने उस सवार होकर मुतावातिर तीन नेज़े मारे, अज़रक़ ने रोक लिए। और तलवार निकाल ली। हज़रत क़ासिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने भी तलवार निकाल ली। अज़रक़ ने तलवार को देखकर कहा। ये तलवार तो मैंने हज़ार दीनार से ख़रीदी थी और हज़ार दीनार में ज़ेरे आब कराई थी। तुम्हारे पास कहाँ से आ गई? क़ासिम ने फ़रमाया ये तुम्हारे बड़े लड़के की निशानी है वो तुम्हें इसका मज़ा चखाने के लिए मुझे दे गया है। और फिर साथ ही ये भी फ़रमाया के तुम एक मशहूर सिपाही होकर इस क़द्र बेएहतियाती से काम लेते हो के मैदान में लड़ने के लिए आ गए। और घोड़े का तंग ढीला रखते हो। उसे कसा भी नहीं वो देखो ज़ीन पुश्त मुरक्कब से फिसला हुआ है और अज़रक़ ये देखने को झुका ही था के हज़रत क़ासिम ने खुदा का नाम लेकर एक ऐसी तलवार मारी के अज़रक़ के वहीं दो टुकड़े हो गए। (तज़करह: सफ़ा 80)

सबक़:- अहले बैत अेज़ाम के मुक़द्दस अफ़्राद फने हर्ब से भी खूब वाक़िफ़ थे। पस आज हमें भी फ़िनूने हर्ब से आशना होना चाहिए, ताके अगर कोई ऐसा वक़्त आ जाए तो हज़रत इमाम क़ासिम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के सदक़े में हम भी बातिल के दांत खट्टे कर सकें।

हिकायत नम्बर(332) अलमबरदार की शहादत

मैदाने कर्बला में हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दोस्त अहबाब भेजते और भांजे शहीद हो गए तो हज़रत अब्बास अलमबरदार रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ख़िदमत इमाम हाज़िर हुए। और कहा के अब मुझे मैदान में जाने की इजाज़त दीजिए। अब तो हद हो गई। इन ज़ालिमों ने

हमारे जुमला अज़ीज़ शहीद कर दिए और बाक़ी जो हैं, सब प्यास के मारे निढाल हो रहे हैं मुझ से छोटे बच्चों की प्यास देखी नहीं जाती। मैं पानी लेने फ़िरात पर जा रहा हूँ।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह ने अपने भाई को चन्द बातें तालीम फ़रमा कर रूख़्सत फ़रमाया और आप मुश्क लेकर फ़िरात की जानिब से रवाना हुए फ़िरात पर चार हज़ार का मुहासरा था हज़रत अब्बास ने जो फ़िरात पर क़दम रखा। तो सब ने आपको घेर लिया, आपने उन से मुख़ातिब होकर फ़रमाया तुम लोग मुसलमान हो काफ़िर? वो बोले हम मुसलमान हैं आपने फ़रमाया मुसलमानों में ये कब रवा है के चरिंद व परिंद तो पानी पियें और फ़रज़ंदाने मुसतफ़ा प्यासे तड़पें तुम लोग क़यामत की प्यास से नहीं डरते? ज़ालिमो! जिगर गोशा रसूल हुसैन प्यासा है उसके बच्चे प्यासे हैं। कुछ ख़याल करो। बच्चों के लिए तो पानी ले लेने दो। ये सुनकर भी उन संग दिलों पर कुछ असर ना हुआ और सबने आप पर हमला कर दिया। हज़रत ने भी उन पर हमला करके उसी को क़त्ल कर डाला और बाक़ी को मुनतशिर करके फ़िरात तक पहुँचे और पानी में उतर कर मश्क भर ली। और खुद चुल्लू में पानी भर कर पीना चाहा के बहन भाई और बच्चों की प्यास याद आ गई, फ़ौरन चुल्लू का पानी फैंक दिया और मुश्क कांधे पर रख कर रवाना हुए। राह में अशक़िया ने घेर लिया। आप हर एक से लड़ते भिड़ते मुश्क पर सीना-ए-सप्र हो के जा रहे थे। कोनाफ़िल नामी एक ज़ालिम ने पीछे से आकर हाथ पर तलवार और मुश्क पर तीर मारा। हाथ कट गया और मुश्क का पानी बह गया। उस वक़्त आप अपनी मेहनत और बच्चों की प्यास पर अफ़सोस करके रोने लगे। चूंके ज़ख़्म कारी लग चुका था। घोड़े से गिरकर भाई को आवाज़ दी। इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उनकी आवाज़ सुनकर एक ऐसी आह की, जिससे ज़मीन कर्बला लरज़ गई। और फ़िर आगे जो बढ़े। तो हज़रत अब्बास को ख़ाक व ख़ून में तड़पता देखकर फ़रमाया। *अलाना इनकसारा ज़हारी* अब मेरी पीठ टूटी। हज़रत अब्बास रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने भाई को देखा और दारे बक़ा को तशरीफ़ ले गए। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन हज़रत इमाम उनकी नअश मुबारक को खैमे की तरफ़ लाए और फ़रमाने लगे...

बाद अब्बास के अब कौन है ग़मख़्वार अपना
ना तो मोनिस है कोई और ना मददगार अपना
सूऐ जंग गए सब छोड़ के तन्हा मुझ को

लुट गया आन के इस दश्त में गुलज़ार अपना
तशना लब राहे खुदा में है मिरा सर हाज़िर
काम पूरा करें अब जल्द सितमगर अपना

(तनक़ीह-उल-शहादतैन सफ़ा 194)

सबक़:- यज़ीदी बड़े ही ज़ालिम और ना आक़्बत अंदेश थे उन्हें क़यामत के होलनाक दिन का कुछ भी ख़याल ना रहा। हालाँके मुसलमान को क़यामत का होलनाक दिन कभी ना भूलना चाहिए। हज़रत इमाम हसन और उनके मुतअल्लिक़ैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम की शहादत का एक दर्स ये भी है के इस चन्द रोज़ा ज़िन्दगी में हमें क़यामत को भुला नहीं देना चाहिए।

हिकायत नम्बर(333) अली अक्बर(र०अ०)

मैदान कर्बला में जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के जुमला अहबाब व अक़्रबा जामे शहादत नोश फ़रमा चुके तो आपके साथ बजुज़ आपके तीन साहबज़ादों के और कोई बाक़ी ना रहा। ये तीन साहबज़ादे हज़रत इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन, हज़रत अली अक्बर और हज़रत अली असग़र रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम थे। हज़रत इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन तो बीमार थे। और अली असग़र भी शीर ख़्वार ही थे और हज़रत अली अक्बर की उम्र शरीफ अट्ठारह बरस की थी, हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अलाहो तआला अन्ह ने जब देखा के अब बजुज़ मेरे तीन बच्चों के और कोई बाक़ी नहीं रहा तो आपने खुद ब नफ़्से नफीस मैदान कारे ज़ार में जाने का इरादा फ़रमाया और ज़ुलजनह सवारी के लिए मंगवाया हथियार बदन पर आरास्ता फ़रमाया और रूख़्सत के वास्ते ख़ैमे के अन्दर तशरीफ़ लाए और फ़रमाने लगे....

ऐनक आमद नोबत मन अलविदा
अलविदा ऐ अतरते मन अलविदा
ज़ोद दुलहाऐ शमा ख़्वाहिद शदन
सोज़नाक अज़ फ़रक़ते मन अलविदा

हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मंज़र देखकर इमाम के क़दमों पर गिरे और अर्ज़ करने लगे, अब्बा जान! खुदा वो दिन ना दिखाए, जब के आप मेरे सामने शर्बते शहादत नोश फ़रमायें, आप मेरे होते हुए मैदान में क्यों तशरीफ़ ले जाते हैं, मुझे इजाज़त फ़रमाईये मैं जाता हूँ हज़रत इमाम ने फ़रमाया ऐ अली अक्बर! किस दिल से तुझे मरने की इजाज़त दूं, और किन आँखों से तुम को ज़ख़्मों से चूर चूर देखूं। हज़रत अली अक्बर ने इमाम

को क़समें देना और रोना शुरू किया, आखिर इमाम ने इजाज़त दे दी और अपने हाथ से उनके कदन पर हथियार लगाए। ज़िरह जोशन पहनाए। अमामा सर पर रखा टीका कमर पर बाँधा और घोड़े पर बिठा कर फ़रमाया....

मैंने दी रह की इजाज़त तुम्हें जाओ बेटा
हो फिदा मुझ पे गला अपना कटाओ बेटा

अहले बैत रकाब से आकर लिपट गए। इमाम ने सबको हटा कर फ़रमाया जाने दो के सफर आख़िरत कर रहा है। (तनक़ीह-उल-शहादतैन सफ़ा 197)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बड़े ही साबिर व शाकिर और इसतक़लाल के मालिक थे के अठ्ठारह साल के अपने लख़्ते जिगर को अल्लाह की राह में क़ुर्बान होने के लिए खुद अपने हाथों तैयार फ़रमाते हैं और शिकवा शिकायत और नाशकीबाई का लफ़्ज़ तक ज़बान पाक पर नहीं लाते।

हिकायत नम्बर(334) अली अक्बर की शहादत रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साहबज़ादे हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जब मैदाने कारज़ार में तशरीफ़ लाए, तो लश्कर अदा में एक सन्नाटा छा गया। हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अठ्ठारह साल की उम्र शरीफ़ रखते थे और शक्ल व शमायल में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से बहुत मुशाबेह थे, आपका हुस्नो जमाल व जलाल देखकर दुश्मन मुतहय्यर हो गए। हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मैदान में पहुँचते ही रिज्ज़ ख़वाँ और मुबारिज़ तलब हुए, और जब कोई सामने ना आया तो आपने खुद ही लश्कर आदा में घुस कर हमला कर दिया और अशक़िया को दरहम बरहम कर दिया और ता देर लड़ते रहे और फिर प्यास के बाइस हज़रत इमाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और प्यास का ज़िक्र किया। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उनके चेहरे का गर्दो ग़ुबार साफ करके रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अनेह व सल्लम की अंगश्तरी उनके मुंह में डाल दी जिसके चूसने से उन्हें तसकीन हुई और फिर मैदान में आए। और अक्सर को वअसल जहन्नुम करने के बाद आप फिर एक मर्तबा हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

के हुज़ूर आए और प्यास का ज़िक्र किया। तो हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने उस वक़्त रो कर फ़रमाया के जान पद्र! ग़म ना खा अनक़रीब तुम होज़े कोसर पर सैराब होगे, अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ये बशारत सुनकर फिर मैदान की तरफ़ तशरीफ़ लाए और लश्कर आदा में घुस कर बहुत सों को वअसल नार किया। दुश्मनों ने चारों तरफ़ से आपको घेर लिया और एक ज़ालिम इब्ने नमीर ने आपको एक ऐसा नेज़ा मारा के आपकी पुश्त मुबारक से पार हो गया। और आप घोड़े से गिर गए। उस वक़्त आपने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को पुकारा और फ़रमाया *या आबताह आररिक्नी* अब्बा जान अपने अली अक्बर की ख़बर लीजिए।

हज़रत इमाम ने अपने लख़्ते जिगर की ये आवाज़ सुनी तो आप दौड़े और मैदान में जाकर देखा के अली अक्बर ज़ख़्मों से चूर ज़मीन पर गिरे हुए हैं हज़रत इमाम ने वहाँ बैठ कर बेटे का सर अपने ज़ानों पर रखा और फिर.....

होश आया चन्द साअत कामिल के बाद जब
देखा के मिट रही है शबीह रसूले रब
आँसूं बहा के रख दिए बेटे के लब पे लब
फ़रमाया बेटा छोड़ के जाते हो मुझे को अब
दिल से गले लिपटने की हसरत निकाल लो
बाहें उठा के बाप की गर्दन में डाल लो
अक्बर ने आँखें खोल के देखा रूख पद्र!
गालों पे अश्क आँखों से टपके इधर उधर
फ़रमाया शेह ने ज़ानों पे रख कर सर पस्र
रोते हो किस लिए भला ऐ ग़ैरत क़मर
याँ से उठा के आले पैयम्बर मैं ले चलूं
ग़म माँ का है तो आओ तुम्हें घर में ले चलूं

हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने आँखें खोल कर कहा अब्बा जान! वो देखिये! दादा जान दो पियाले शर्बत के लिए खड़े हैं और मुझे एक दे रहे हैं मैं कहता हूँ के मुझे दोनों दीजिए के बहुत प्यासा हूँ, वो फ़रमाते हैं के एक तू पी दूसरा तेरे बाप हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के लिए है के वो भी प्यासा है, ये पियाला वो आकर पियेगा। ये कहा और आप वहीं राही जन्नत हो गए। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन (तनक़ीह-उल-शहादतैन, सफ़ा 199)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने मैदाने

कर्बला में बहुत बड़ा इम्तिहान दिया और आपने इस इम्तिहान में बहुत बड़ी कामयाबी हासिल की।

हिकायत नम्बर (335) यतीम

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साहबज़ादे हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने जब जामे शहादत नोश फ़रमा लिया तो हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तनहा रह गए। सिफ हज़रत इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन बाक़ी रह गए या हज़रत अली असग़र, मगर इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन बीमार थे और अली असग़र शीर ख़्वार, इसलिए हज़रत इमाम ने अब खुद मैदान में जाने की तैयारी फ़रमाई और आप खैमा के अन्दर तशरीफ़ लाए और अहले बैत में तशरीफ़ फ़रमा होकर फ़रमाया के मुसीबत और बला पर सब्र व शुक्र करना तुम्हारे वास्ते बेहतर है। ख़बरदार मेरे बाद तुम चाहे कैसी ही मुसीबत व बला में मुबतला हो, मगर मेरे ग़म में सर के बाल परेशान ना करना, मुंह पर तमाँचे ना मारना। और सीना ज़नी ना करना और वावेला वज़ारी ना करना। ये बातें जायज़ नहीं हैं, हाँ कसरते ग़म से आँखों से आँसूं बहाना मज़लूमों और दर्दमंदों का काम है। रोना मना नहीं फिर आप ने हज़रत सकीना को गोद में लिया और गले से लगाया और अपनी बहन हज़रत ज़ैनब से फ़रमाया बहन! ये मेरी सकीना मुझे बड़ी प्यारी और मुझ से मानूस है, मेरे बाद इसकी ग़मख़्वारी व पासदारी करना, फिर हज़रत सकीना से फ़रमाया बेटी मेरी प्यारी बेटी! आज शाम तुम यतीम हो जाओगी। हज़रत सकीना ने लफ़्ज़ यतीम सुना तो.....

नन्हे से हाथ जोड़ के कहने लगी ये तशना काम
फ़रमाईये के आज ये आएगी कैसी शाम
बतलाईये मुझे के यतीमी है किस का नाम
आँखों से खूं बहा के ये कहने लगे इमाम
बेटी! ना पूछ कुछ ये मुसीबत अज़ीम है
मर जाए जिसका बाप वो बच्चा अज़ीम है

(तनक़ीह-उल-शहादतैन, सफ़ा 200)

सबक़:- हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का आख़री वाज़ मुबारक ये था के मुसीबत और बला के वक़्त सब्र व शुक्र करना, शरीअत का हुक्म है और सब्र व शुक्र का दामन हाथ से छोड़ना देना अच्छी बात नहीं। इसलिए आज भी हर मुसलमान को हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो

तआला अन्ह का ये आखरी वाज़ मुबारक हर वक़्त पेशे नज़र रखना चाहिए और हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के इर्शाद के ख़िलाफ़ कोई हरकत ना कना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने अल्लाह की मोहब्बत पर अपने छोटे छोटे बच्चों की मोहब्बत भी कुर्बान कर डाली।

हिकायत नम्बर(336) नन्हा शहीद

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साहबज़ादे हज़रत अली अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भी जब शहीद हो गए तो हज़रत इमाम ने अहले बैत को तसल्ली व तशफ़्फ़ी देकर खुद मैदान में आने का इरादा किया। एक बार ख़ैमा से रोने की आवाज़ सुनी। आप ख़ैमे की तरफ़ फिरे और हाल दरयाफ़्त फ़रमाया तो मालूम हुआ के तुफ़्ल शीरख़्वार हज़रत अली असग़र प्यास से बेचैन हैं। छः महीने की उम्र शरीफ में ये मुसीबत के तीन दिन से भूके और प्यासे हैं। ज़बान मुंह के बाहर निकल पड़ी है। मछली की तरह तड़प रहे हैं। हज़रत इमाम ने फ़रमाया, अली असग़र को मेरे पास लाओ हज़रत ज़ैनब लेकर आईं आपने अली असग़र को गोद में लिया और मैदान में ज़ालिमों के सामने लाकर फ़रमाया ऐ क़ौम! तुम्हारे नज़दीक अगर मुज्रिम हूँ तो मैं हूँ मगर ये मेरा नन्हा बच्चा तो बेगुनाह है खुदारा तरस खाओ और इस मेरे नन्हे मुसाफिर सय्यद बेकस मज़लूम को तो चुल्लू भर पानी पिला दो...

बच्चा है शीर ख़्वार तड़पता है प्यास से
इस पर तो रहम खाओ के तकता है यास से

ऐ क़ौम! आज जो मेरे इस नन्हे मुसाफिर को पानी पिलाएगा, मेरा वादा है के मैं उसे होज़े कोसर पर सैराब करूंगा।

हज़रत इमाम की ये दर्दनाक तक़रीर सुनकर भी उन ज़ालिमों का दिल ना पसीजा और एक ज़ालिम हुरमल इब्ने काहिल ने एक ऐसा तीर मारा जो हज़रत इमाम की बग़ल से निकल गया। आह! एक फव्वारह खून का इस नन्हे शहीद के हलक़ से चलने लगा और नन्हे शहीद की आँखें अपने वालिद के चेहरे की तरफ़ तकती की तकती रह गईं। और इमाम ने बेक़रार होकर अपनी ज़बान अनवर नन्हे के मुंह में डाल दी और नन्हे सय्यद ने वहीं अपने अब्बा की गोद में शहादत पा ली और आप उसकी नन्ही सी नअश मुबारक लेकर खैमा में आए और माँ की गोद में देकर फ़रमायाः लो अली असग़र भी होज़े कोसर से सैराब हो गए इसी नन्ही नअश को देख अहले बैत बे क़रार

हो गए और हज़रत इमाम की मुबारक आँखों से भी आँसूं जारी हो गए। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन (तज़करह:87)

सबक़:- यज़ीदी ज़ुल्म की इन्तिहा तक पहुँच चुके थे और रहम व शफ़्क़त से उनके दिल बिलकुल खाली थे फिर ऐसे लोग खुदा की रहमत के उम्मीदवार कैसे हो सकते हैं।

हिकायत नम्बर(337) हज़रत शहर बानो का ख़्वाब

मैदाने कर्बला में शबे आशूर हज़रत शहर बानो ने एक ख़्वाब देखा के एक नूरानी सूरत मुक़द्दस ख़ातून हैं जो बड़ी परेशान नज़र आ रही हैं और कर्बला की ज़मीन साफ कर रही हैं, हज़रत शहर बानो ने इस मुक़द्दस ख़ातून से दरयाफ़्त फ़रमाया के आप कौन हैं? और इस ज़मीन को क्यों साफ कर रही हैं? तो उसने जवाब में फ़रमाया के....

बेटी सुन मैं फातिमा हूँ बिन्ते शाह मुशरक़ीन
सुबह इस मक़्तल में लेटेगा मेरा प्यारा हुसैन
इसलिए मैं झाड़ती हूँ कर्बला की ये ज़मीन
उसके ज़ख़्मों में ना चुभ जाए कोई कंकर कहीं

(तनक़ीह-उल-शहादतैन सफ़ा 110)

सबक़:- हज़रत असग़र की शहादत का आपकी वालिदा हज़रत ख़ातूने जन्नत रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा को इल्म था और क़ब्र अनवर में तशरीफ़ फ़रमा होकर भी अपने बेटे के इस इम्तिहान को मुलाहेज़ा फ़रमा रही थीं और चूंके माँ थीं इसलिए अपने लख़्ते जिग्र के मसायब से मुतास्सिर थीं फिर जिन ज़ालिमों ने हज़रत इमाम को इस क़द्र सताया उन्होंने हज़रत फातिमा की किस क़द्र नाराज़गी मोल ले ली।

हिकायत नम्बर(338) अलविदा

मैदाने कर्बला में दसवीं मोहर्रम को जब हज़रत इमाम के जुमला अहबाब व अक़ारिब शहीद हो गए तो हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने खुद पोशाक बदली क़बाए मिस्री पहनी, अमामा-ए-रसूले खुदा बाँधा सप्रे हम्ज़ा और ज़ुलफिक़ार हैदर करार लेकर ज़ुलजनह पर सवार होकर इरादा मैदान का किया। इतने में हज़रत के साहबज़ादे हज़रत अली ओला यानी इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह उस वक्त बीमार थे। और नतवानी से उठ ना सकते थे बड़ी मुश्किल से

असा थामे हुए ज़ौफ के बाइस लड़खड़ाते हज़रत इमाम के पास आके अर्ज़ करने लगे के अब्बा जान! मेरे होते हुए आप क्यों तशरीफ़ ले जा रहे हैं, मुझे भी हुक्म दीजिए के मैं भी लड़ कर दर्जा शहादत हासिल कर लूं और अपने भाईयों से जा मिलूं हज़रत इमाम ये गुफ़्तगू सुनकर आबदीदा हो गए और इर्शाद फ़रमाया, ऐ राहत जान हुसैन तुम खैमा अहले बैत में जाकर बैठो! और क़सद शहादत ना करो बेटा। रसूल मक़्बूल सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नस्ल तुम्हारे जीने ही से बाक़ी रहेगी और क़यामत तक मुनक़तअे ना होगी। हज़रत इमाम का ये इर्शाद सुनकर साहबज़ादे ख़ामोश हो रहे फिर हज़रत इमाम ने उनको नसीहत व वसीयत करके तमाम इलूम ज़ाहिरी व बातिनी और राज़ इमामत से आगाह फ़रमाया जो तरीक़ा तालीम सीना ब सीना रसूल मक़्बूल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से जारी हुआ था, सब उसी वक़्त उन पर मुनकशिफ फ़रमा दिया और फिर आप खैमा के अन्दर तशरीफ़ लाए और अहले बैत की तरफ़ मुख़ातिब होकर हर एक से अलविदाई कलाम फ़रमाया जिसका नक़्शा शायर ने यूं खींचा है के...

अलविदा ऐ अहले बैत मुसतफा
अलविदा आले पैयम्बर अलविदा
फिर गले लिपटा के आबिद से कहा
ऐ मिरे बीमार दिलबर अलविदा
ज़ैनब व कुलसुम से ये फिर कहा
अब है तुम से भी बिरादार अलविदा
बोले फिर बाली सकीना से हुसैन
ऐ मेरी मज़लूम दुख़्तर अलविदा
शहर बानो से यही कहते थे शाह
ऐ मेरी ग़मख़्वार मुज़तर अलविदा
बस खुदा हाफिज़ तुम्हारा दोस्तो
साबिर व मज़लूम मुज़तर अलविदा

(तनक़ीह-उल-शहादतैन, सफ़ा 78)

सबक़:- हज़रत इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन बीमारी के आलम में भी जज़्बा-ए-शहादत की तड़प का इज़हार फ़रमाते हैं फिर जो उनका नाम लेवा होकर तनदुरूस्ती के आलम में भी नमाज़ तक के राह ना जाए तो वो किस क़द्र ग़ाफिल है? और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम

ज़ैन-उल-आबेदीन की बीमारी में ये हिकमत मुज़मिर थी के आपके वजूद से नस्ल मुसतफा की बक़ा थी।

हिकायत नम्बर(339) शेर का हमला

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के जब अहबाब व अक़ारिब सब शहीद हो गए तो हज़रत इमाम खुद बनफ़्से नफीस मैदान में तशरीफ़ लाए और पहले कुछ रिजज़िया अश्आर पढ़े, फिर लश्कर इब्ने साद से इतमाम हुज्जत के लिए बहुत कुछ फ़रमाया मगर वो ज़ालिम ना माने और बहर हाल लड़ने पर आमादा हुए और सब अपनी तलवारें और नेज़े चमका कर बढ़े। हज़रत इमाम ने भी ज़ुलफिक़ार मियान से निकाली और दुश्मनों पर हमला कर दिया। अल्लाह अल्लाह! ये हमला क्या था शेर यज़दाँ का हमला था जो आपके मुक़ाबले में आया। पेक क़ज़ा ने सीधा उसको जहन्नुम में पहुँचा दिया। सेंकड़ों जफाकारों से लड़े और सेंकड़ों को फीन्नार कर दिया जिस तरफ़ निगाह पलटी सफ की सफ उलट दी.....

चली शाहे दीं की ग़र्ज़ ज़ुलफिक़ार
ना पैदल रहा सामने ना सवार
यहाँ तक किया ज़ालिमों को हलाक
छुपाया लईनों ने मुंह ज़ेरे खाक
दिए रन को पलटे कई दमबदम
शुजाअत ने भी आके चूमे क़दम
दिलैर ऐसा है और ना होगा कोई
सुना आज तक और ना देखा कोई
हज़ारों ही कुश्तों के पुश्ते बंधे
तो ज़िन्दों को जानों के लाले पड़े
सुनो इस दिलावर की ये शान है!
के रूस्तम की भी रूह क़ुर्बान है

(तनक़ीह सफ़ा 80)

सबक़:- हज़रत इमाम आली मुक़ाम बड़े जरी व बहादुर शुजा, दिलैर और शेर के बेटे शेर थे रज़ी अल्लाहो अन्ह

हिकायत नम्बर(340) आख़री दीदार

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जब खुद बनफ़्स

नफीस मैदान में तशरीफ़ लाए तो जुर्रात व शुजाअत के वो जोहर दिखाए के मलायका भी अश अश कर उठे, इतने में एक शख़्स इब्ने कुत्बा शामी सामने आया और कहने लगा के ऐ हुसैन! तमाम अहबाब व अक़ारिब को हलाक करा चुके मगर अभी भी लड़ाई की हवस बाक़ी है तुम अकेले हज़ारों का मुक़ाबला कैस कर सकोगे? हज़रत इमाम ने फ़रमाया तुम लोग मुझ से लड़ने आए हो या मैं तुम से? तुम ने मेरा रास्ता बंद किया और तुम ने मेरे अहबाब व अक़ारिब को क़त्ल किया। अब मुझे सिवाए लड़ाई के क्या चारा है ज्यादा बातें ना कर और सामने आ। ये फ़रमा कर आपने एक ऐसा नारा फलक शिगाफ मारा के तमाम लश्कर थर्रा गया और वो ज़ालिम बद हवास हो गया और हाथ पैर ना हिला सका। इमाम ने तलवार मार कर सर उड़ा दिया फिर फौज पर हमला किया और सब भागने लगे। इब्ने असतह नामी एक यज़ीदी पुकारा। ऐ मर्दो! अब एक तन बाक़ी रह गया है। उससे भाग रहे हो? ठहरो मैं उसके मुक़ाबले को जाता हूँ ये कहकर इमाम के सामने आया और तलवार मारने को उठाई हज़रत इमाम ने पेश दस्ती फ़रमा कर कमर पर तलवार मार कर दो टुकड़े कर दिया। फिर हज़रत इमरम ने फिरात पर जाने का इरादा फ़रमाया।

शमर ने पुकार कर कहा। ऐ लश्करियो! हुसैन को हर गिज़ पानी ना पीने देना अगर उसने पानी पी लिया तो फिर किसी को ज़िन्दा ना छोड़ेगा पस सबने मिलकर हज़रत इमाम पर हमला कर दिया। हज़रत इमाम तलवार खींच कर अशक़िया के सर उड़ाते हुए और सफों को दरहम बरहम फ़रमाते हुए लबे फिरात तक जा पहुँचे घोड़ा पानी में डाला, चुल्लू में पानी लेकर पीना चाहा के मक्कारों ने पुकार कर कहा: ऐ हुसैन! तुम यहाँ पानी पी रहे हो और वहाँ ख़ैमा लुट रहा है। इमाम फौरन पानी फैंक कर ख़ैमे की तरफ़ चले राह में बहतों को फीन्नार किया ख़ैमे के पास आकर देखा तो किसी को ना पाया और मक्कारों का हीला तसव्वुर फ़रमाया फिर ख़ैमे के अन्दर तशरीफ़ लाए और अहले बैत से फ़रमाया चादरें ओढ़ो जज़अे व फज़अे ना करो मुसीबत पर कमर बसता रहो। मिरे यतीमों को आराम से रखना फिर इमाम ज़ैन-उल-आबेदीन को सीनेह से लगा कर पैशानी को चूमा और फ़रमाया बेटा! जब मदीना पहुँचो तो मेरे दोस्तों को मेरा सलाम कहना और मेरी जानिब से मेरा ये पैग़ाम देना के जब तुम में कोई रंज व बला में मुबतला हो तो मेरा रंज व बला में मुबतला होना याद कर ले और जब कोई पानी पिये तो मेरी प्यास याद करे। हजरत इमाम अपना ये आखरी दीदार देकर फिर मैदान में

तशरीफ़ ले आए। (तज़करह, सफ़ा 90)

सबक़:- हज़रत इमाम की जुर्रात व हिम्मत और आपका अज़्म व इसतक़लाले क़यामत तक के मुसलमानों के लिए मशअले राह है। अज़ीज़ व अक़ारिब की जुदाई भूक प्यास और ज़ालिमों के मुतावातिर ज़ुल्मो सितम के बावजूद आपके जज़्बा-ए-सादिक़ा में सरमू भी फ़र्क़ नहीं आया। और हर हाल में आपने अल्लाह का शुक्र ही अदा किया। और शरीअत के खिलाफ़ हर हरकत से हर दम तक मना फ़रमाया। रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

हिकायत नम्बर(341) क़यामत

हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह जब ख़ैमे में अपना आख़री दीदार देकर मैदान में फिर तशरीफ़ लाए तो यज़ीदियों ने यक्बारगी आप पर हमला कर दिया। आप ने भी डट कर उनका मुक़ाबला फ़रमाया। मगर ज़ालिमों ने इस क़द्र मुतावातिर हमले किए के हज़रत का तन अनवर ज़ख़्मों से चूर हो गया और आपके घोड़े में भी चलने की ताक़त ना रही पस हज़रत इमाम एक जगह खड़े हो गए। एक शख़्स ज़दअद नामी ने बढ़कर आपको तलवार मारी। आपने उसका हाथ पकड़ कर ऐसा झटका दिया के उसका हाथ कांधे से जुदा हो गया। हज़रत इमाम उस वक़्त सबको यास भरी निगाहों से देख रहे थे। गोया ये ख़याल फ़रमा रहे थे के इतनों में कोई ग़मगुसार नहीं है। सब ही खून के प्यासे हैं। आख़िरकार उन ज़ालिमों ने दूर ही से तीर मारने शुरू किए के एक ज़ालिम का तीर आपकी पैशानी नूरानी पर आकर लगा। खून का फव्वारा जारी हुआ आपने वो खून चुल्लू में लेकर मुंह पर मला और फ़रमाया कल क़यामत के दिन इस हय्यत से अपने नाना जान के पास जाऊँगा और अपने मारने वालों की शिकायत करूंगा।

उस वक़्त हज़रत इमाम के तन अनवर पर बहत्तर(72) ज़ख़्म नेज़े और तलवार के आ चुके थे जिनके बाइस आप बहुत निढाल हो गए थे और क़िबला रू होकर अपने मौला की याद कर रहे थे और अर्ज़ कर रहे थे के....

या रब ग़नी बन्दा है इक बन्दा-ए-मोहताज
तेरी ही इनायत से हुआ ख़ल्क़ का सरताज
सरेनज़्र को दरबार में लाया है ग़ुलाम आज
है हाथ तिरे मौला मिरे आज मिरी लाज
हंगाम तरद्दुद है मदद कीजियो मौला!
ये तोहफा-ए-दुरवैश ना रद् कीजियो मौला!

कहता नहीं कुछ और ये कअबे का मुसाफिर!
इक जाँ है सौ क़ुरबान है इक सर है सौ हाज़िर
अब तक मैं तिरी राह में हूँ साबिर व शाकिर
बेकस पे करम कीजियो मौला दम आख़िर!
सीने पर मिरे ज़ानवए क़ातिल ना ग्राँ हो
ख़ंजर के तले नाम तिरा विर्द ज़बाँ हो
वाक़िफ नहीं इस मरहले सोअब से शब्बीर
तक़दीर पे राज़ी हों मैं ऐ मालिक तक़दीर
प्यासा हूँ कई रोज़ से मैं बेकस व दिलगीर
इन खुश्क रगों में कहीं रूक जाए ना शमशीर
मुज़तर मिरा होना ख़लल अंदाज़े अदब हो!
तड़पूं बशरियत से जो दम तो ग़ज़ब हो
आई ये निदा काम में फिर शाहे हुदा के
रहमत तुझे ऐ बन्दा-ए-मक़्बूल खुदा के
सह सब्र से और शुक्र से सब तीर जफा के
ले ताज शहादत मिरी सरकार में आ के
ग़मगीन ना हो हम तुझ को बहुत शाद करेंगे
ज़ेरे दम ख़ज़र तिरी इमदाद करेंगे!

इतने में एक ज़ालिम का तीर आपके हलक़ में आकर लगा और ज़रआ इब्ने शरीक ने आपके दस्ते मुबारक पर और शमर ने आपके फर्क़ अनवर पर तलवार तारी और सनान बिन अनस ने पुश्त मुबारक पर नेज़ा मारा....

तक़दीर व क़ज़ा से नहीं जब कोई भी चारा
नेज़ा किसी ज़ालिम ने पसे पुश्त से मरा
तब रूह नबी बोली उठा चैन हमारा!
इस तीग़े अलम से जिगर व दिल है दो पारा

हज़रत इमाम इन मुतावातिर ज़र्बों से चकरा कर घोड़े से गिरे...

आया ये वक़्त क़िबला-ए-हाजाते दीन पर
कअबे को ढाया संग दिलों ने ज़मीन पर

उस वक़्त दोपहर ढल चुकी थी और नमाज़ ज़ोहर का वक़्त था। हज़रत इमाम ने इस वक़्त भी उस सूरत में नमाज़ को अदा किया के गिरते हुए मुंह क़िबला की तरफ़ किया। घोड़े पर क़याम था और जब ग़श से झुके तो रूकू था और जब जब ज़मीन पर गिरे तो सर के बल के वो सिज्दे का मुक़ाम

था। इतने में शमर आया और आप के सीने मुबारक पर बैठ गया। इमाम ने आँखें खोल कर पूछा तू कौन है उसने बताया के मैं शमर हूँ फ़रमायाः ज़रा सीना खोल कर दिखा उसने सीना खोला तो दाग़ सफेद नज़र आया। आपने फ़रमाया *सदक़े जद्दी रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेही व सल्लम* सच फ़रमाया नाना जान ने रात को ख़्वाब में के तेरे क़ातिल का निशान ये है वही निशान तुझ में मौजूद है। फिर आपने फ़रमायाः ऐ शमर तू जानता हैः आज कौनसा दिन है कहाः जुमआ का, फ़रमाया वक़्त कौन सा हे? कहा खुत्बा पढ़ने और नमाज़ जुमआ अदा करने का। फ़रमाया इस वक़्त ख़तीब मिम्बरों पर खुत्बा पढ़ते होंगे मेरे नाना जान की तारीफ करते होंगे। इन पर दुरूद पढ़ते होंगे और तू उनके नवासे के साथ ये सलूक कर रहा है। जहाँ रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम बोसा दिए करते थे वहाँ तू खंजर फैरना चाहता है। देख इस वक़्त मैं अपनी दहनी तरफ़ ज़क्रया मासूम और बायें तरफ़ याहिया मासूम को देख रहा हूँ। ऐ शमर! ज़रा मेरे सीने से हट के वक़्त नमाज़ है मैं क़िबला रूख़ होकर नमाज़ पढ़ूँ तू नमाज़ पढ़ते में जो चाहे कर ताके नमाज़ में ज़ख़्मी होना मेरे बाप की मीरास है। पस शमर आपके सीने से उतरा और इमाम क़िबला रूह होकर नमाज़ में खुदा से राज़ोनियाज़ में मशग़ूल हुए और शमर ने हज़रत इमाम आली मुक़ाम का सज्दे ही में 10 मोहर्रम 60हि॰ योम जुमआ को 56 साल पाँच माह पाँच योम की उमर शरीफ में सर तन से जुदा कर दिया। इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन

डूबा शफक़ में जब मेह ताबाँ मुसतफा
यानी हुसैन इब्ने अली जान मुसतफा
बाद खिज़ाँ थी और गुलसिताने मुसतफा
जब गिर पड़ा ज़मीन पे वो जानाने मुसतफा
खुद मुसतफा ने फर्शे ज़मीन से उठा लिया
और फातिमा ने अपने गले से लगा लिया!
आया जो वक़्त ज़ोहर तो सज्दा अदा किया
तन पे जो देखते ज़ख़्म तो शुक्र खुदा किया
तय आप ने तमाम मुक़ाम रज़ा किया!
दुश्मन ने जब के सर को बदन से जुदा किया
खुद मुसतफा ने फर्शे ज़मीन से उठा लिया
और फातिमा ने अपने गले से लगा लिया
खूँ से भरा हुआ जो बदन का लिबास था

हूरो मल्क को देख के उसे दिल उदास था
पर शाहे कर्बला को ना मतलक़ हरास था
जिस दम गिरे ज़मीं पे तो कोई ना पास था
खुद मुसतफा ने फर्शे ज़मीन से उठा लिया
और फातिमा ने अपने गले से लगा लिया!

(तज़करह सफ़ा 89 ता 95, और तनक़ीह, सफ़ा 12 ता 112)

सबक़:- हज़रत इमाम मज़लूम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह पर जिस क़द्र ज़ालिमों ने ज़ुल्मो सितम किया। आपने उसी क़द्र सब्रो शुक्र का मुज़ाहेरा फ़रमाया और आपने हर हाल में अल्लाह की याद की और खुदा को किसी वक़्त भी फ़रामोश नहीं फ़रमाया और आख़री वक़्त जब के आपका तन अनवर ज़ख़्मों से चूर था, और उनके बाइस आप निढाल हो चुके थे। उस वक़्त भी आपको नमाज़ का खयाल रहा और नमाज़ की ही हालत में आपने जामे शहादत नोश फ़रमाया फिर वो लोग जो हट्टे कट्टे होकर भी कभी नमाज़ नहीं पढ़ते और जिन्होंने उम्र भर मोहर्रमात शरीआ को नहीं छोड़ा। और जो भंग व चरस पीने के शैदाई और ख़िलाफे शरअे हरकात के फिदाई हैं। ऐसे लोग किस मुंह से हज़रत इमाम आली मुक़ाम से किसी निसबत का दम भर सकते हैं? पस हमें भी चाहिए के हज़रत इमाम आली मुक़ाम के प्यारे उसवा को सामने रखें और फिस्को फिजूर के ख़िलाफ सफ आरा हो जायें और आला कलमत-उल-हक़ की ख़ातिर बातिल के मुक़ाबले में डट जायें। और अल्लाह की याद किसी हातल में भी तर्क ना करें और नमाज़ के इस क़द्र आदी बन जायें के बड़ी से बड़ी तकलीफ में भी छूट ना सके और खसूसन सय्यद हज़रत को तो एक पंजाबी शायर का ये शैर अपने सामने रखना चाहिए....

सय्यद सो जो पढ़े नमाज़ रब दी सय्यद सज्दा ना करे ताँ सज्दा नहीं
भावें सय्यद दी छाती ते शमर हूदे सय्यद ताँ दी नमाज़ थीं पहज्दा नहीं

हिकायत नम्बर(342) उम्मुल मोमिनीन का ख़्वाब

एक बी बी फ़रमाती हैं के मैं उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा के हाँ गई तो देखा के उम्मुल मोमिनीन रो रही हैं। मैंने पूछा आप क्यों रो रही हैं, तो फ़रमाया मैंने रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को ख़्वाब में देखा है के आपके सर अनवर और रेश मुबारक पर गर्दो ग़ुबार है। मैंने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! ये क्या

बात है? तो आपने फ़रमाया मैं अभी अभी कर्बला से आया हूँ। आज मेरे हुसैन को क़त्ल कर दिया गया है। (तिरमीज़ी शरीफ, सफ़ा 218, जिल्द:2)

सबक़:- हज़रत इमाम की शहादत के वक़्त हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम शहादत गाह में मौजूद थे औ अपने साहबज़ादे के इस अज़ीम इम्तिहान को आपने खुद मुलाहेज़ा फ़रमाया। मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ज़िन्दा और उम्मत के जुमला आमाल व अफआल और हालात से बा ख़बर हैं।

हिकायत नम्बर(343) फ़रैबी

बारहवीं मोहर्रम को इब्ने साद अहले बैत अेज़ाम को ऊँटों पर बिठा कर और सर हाए शोहदा को हमराह लेकर कूफे को रवाना हुआ। और जब ये लोग कूफे के क़रीब पहुँचे और इब्ने ज़ियाद को इसकी ख़बर हुई तो उसने तमाम शहर में मनादी करा दी के कोई शख़्स हथियार लेकर घर से बाहर ना निकले और फौज का पहरा लगा दिया के कोई शख़्स फितना व फसाद ना कर सके, लोग सुनकर देखने को दौड़े और असीराने कर्बला और सरहाऐ शोहदा को देख कर रोने लगे। हज़रत इमाम ज़ैनुलआबेदीन ने फ़रमाया ऐ रोने वालो! तुम लोग तो हम पर रोने वाले हो, फिर वो कौन लोग हैं जिन्होंने इन्हें क़त्ल किया है। (तज़करह: 97)

सबक़:- हर रोने वाला सच्चा ही नहीं होता। बाज़ अवक़ात ज़ालिम अपना ज़ुल्म छुपाने को मज़लूम का हामी बन जाता है। और ये उसका फ़रैब होता है।

हिकायत नम्बर(344) ज़िन्दा हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

ज़ैद बिन इरक़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जो एक सहाबी हैं फ़रमाते हैं के जब कूफी सरे इमाम को गली कूचे में फिरा रहे थे। तो मैं अपने घर की खिड़की में बैठा था जब सर अनवर मेरे क़रीब आया। तो मैंने सर अनवर को ये आयत पढ़ते हुए सुना *उम्मे हसिबता अन्ना असहाबुल कहफी वर्रकीम कानू मिन आयातिना अजाबन* पस मेरे बदन के रोंगटे खड़े हो गए और मैंने अर्ज़ किया। ऐ इब्ने रसूल अल्लाह! बखुदा आपका क़िस्सा इससे ज़्यादा तअज्जुब खैज़ है। फिर जब इब्ने ज़ियाद के पास लाकर नेज़ों से सर उतारे गए तो हज़रत इमाम के लब मुबारक हिल रहे थे। लोगों ने कान लगा कर

सुना, तो ये आयत तिलावत फ़रमा रहे थे। *फला तहसाबन्नल्लाहा ग़ाफ़िलन अम्मा यामलूज़्ज़ालीमूना* (तज़करह, सफ़ा 98)

सबक़:- अल्लाह की राह में जान देने वाले मरते नहीं, बल्के वो ज़िन्दा ही रहते हैं और शोहदा की ज़िन्दगी पर क़ुरआन शाहिद है। चुनाँचे खुदा फ़रमाता है *ला तक़ूलू लिमन युक़्तलू फी सबील्लिाही अमवात* यानी जो अल्लाह की राह में क़त्ल हों। उन्हें मुर्दा मत कहो। लिहाज़ा हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ज़िन्दा हैं और ज़िन्दा रहेंगे।

हिकायत नम्बर(345) उज़ैर बिन हारून

असीराने कर्बला और सिरहाऐ शोहदा को चन्द रोज़ कूफे में रखने के बाद इब्ने ज़ियाद ने फौज के हमराह दमिशक़ रवाना किया। दमिश्क़ जाते हुए ये क़ाफला हवाली हलब में आकर एक पहाड़ के नीचे उतरा। इस पहाड़ पर एक क़स्बा था। इस क़स्बे के अमीर का नाम अज़ीज़ बिन हारून था और ये यहूदी था। रात को हज़रत शहर बानो की लोंडी शीरीं ने रो कर अर्ज़ किया के अगर इजाज़त हो तो जो कुछ मेरे पास बक़िया है उसे बेचकर इस पहाड़ी क़स्बा से आपके वास्ते कुछ कपड़ा ख़रीद लाऊँ। बी बी साहिबा ने उसके इसरार पर इजाज़त दे दी। पस शीरीं पहाड़ पर गई और क़स्बा का दरवाज़ा बन्द पाकर खटखटाया। अमीर क़स्बा अज़ीज़ बिन हारून ने खुद आकर दरवाज़ा खोला और शीरीं का नाम लेकर पुकारा। शीरीं ने सलाम किया। वो बकमाल ताज़ीम शीरीं को अपने घर ले गया शीरीं ने पूछा। आपने मेरा नाम कैसे जान लिया? उसने जवाब दिया के मैंने अभी ख़्वाब में हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलेहिस्सलाम को परेशान हाल देखकर हाल पूछा। तो उन्होंने फ़रमाया तुझे नहीं मालूम के नबी आख़िरउज़्ज़माँ मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के फ़रज़ंद मज़लूमाना मारे गए हैं उनका सर लोग शाम को ले जा रहे हैं और आज रात इस पहाड़ के नीचे ठहरे हैं। मैंने अर्ज़ की। क्या आप मोहम्मद(सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम) को जानते हैं और मानते हैं? फ़रमाया: ऐ अज़ीज़ वो सच्चे हैं। उनके बारे में अल्लाह ने हम से अहेद लिया है। हम उन पर ईमान लाए हैं जो उन पर ईमान ना लाएगा दोज़ख़ में जाएगा। मैंने अर्ज़ की के मज़ीद यक़ीन के लिए मुझे कुछ बतलाईये। तो फ़रमाया दरवाज़ा-ए-क़िला पर जाकर खड़े हो जाओ, एक लोंडी शीरीं नाम आकर दरवाज़ा बजाएगी तो उसकी मुताबेअत करना। उसी के बाइस तू मुशर्रफ़ बा सलाम होगा। और जब सर हुसैन के पास

पहुँचे तो हमारा सलाम कहना। वो सलाम का जवाब देंगे चुनाँचे मैं ख़्वाब से चौंक कर फौरन दरवाज़े पर आया के तूने दरवाज़ा बजाया। पस शीरीं ने सारा क़िस्सा आकर बी बी साहिबा से कहा। ये क़िस्सा सुन कर सब अहले बैत हैरान हुए। और सुबह अज़ीज़ इब्ने हारून यज़ीदी लश्कर को कुछ रिश्वत देकर अहले बैत के पास आया और हर एक के लिए क़ीमती जोड़ा लाया। और हज़ार दीनार इमाम ज़ैनुलआबेदीन को नज़्र करके मुसलमान हो गया। फिर इमाम के हुज़ूर हाज़िर होकर हज़रत मूसा व हारून अलेहिस्सलाम का सलाम अर्ज़ किया तो सर अनवर ने सलाम किया जवाब दिया। (तज़करह, सफ़ा 102)

सबक़:- हज़रत इमाम आली मुक़ाम का विसाल शरीफ के बाद भी फ़ैज़ जारी है के एक यहूदी मुशर्रफ बा सलाम हो गया। मालूम हुआ के अल्लाह वाले दुनिया से तशरीफ़ ले जायें। तो भी उनके फयूज़ व बर्कात बदस्तूर जारी रहते हैं।

हिकायत नम्बर(346) गिरजे का पादरी

यज़ीदी लश्कर असीरान कर्बला और सिरहाए शोहदा को दमिश्क़ ले जाते हुए रात के वक़्त एक मंज़िल पर पहुँचे तो वहाँ एक बड़ा मज़बूत गिरजा नज़र आया। यज़ीदियों ने सोचा के रात का वक़्त है। इस गिरजे में रहना अच्छा रहेगा। गिरजे में एक बूढ़ा पादरी रहता था। शमर ने उस पादरी से कहा के हम लोग रात तुम्हारे गिरजे में रहना चाहते हैं। पादरी ने पूछा के तुम कौन हो और कहाँ जाओगे? शमर ने बताया के हम इब्ने ज़ियाद के सिपाही हैं। एक बाग़ी और उसके साथियों और उसके अहलो अयाल को दमिश्क़ लिए जा रहे हैं। पादरी ने पूछा वो सर जिसे तुम बाग़ी का सर बता रहे हो कहाँ है? शमर ने दिखाया। तो देखकर पादरी पर एक हैबत तारी हो गई और कहने लगा के तुम्हारे साथ बहुत से आदमी हैं और गिरजे में इतनी जगह नहीं। इसलिए तुम इन सरों और क़ैदियों को तो गिरजे में रखो और खुद बाहर रहो। शमर ने उसे ग़नीमत समझा के सर और क़ैदी महफ़ूज़ रहेंगे। चुनाँचे सर इमाम को एक संदूक़ में बंद करके गिरजे की एक कोठरी में और अहले बैत को गिरजे के एक माकान में रखा गया। आधी रात के वक़त पादरी को कोठरी के रोशन दानों में से कुछ रोशनी नज़र आई। पादरी ने उठकर देखा तो कोठरी में चारों तरफ़ रोशनी देखी। फिर थोड़ी देर बाद देखा के कोठरी की छत फटी और

हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहो तआला अन्हा व दीगर अज़्वाज मुतहरात आँहज़रत सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ज़ाहिर हुईं और संदूक़ खोल कर सर अनवर को देखने लगीं फिर थोड़ी देर बाद आवाज़ सुनी के ऐ बुड्ढे पादरी! झांकना बन्द कर के ख़ातूने जन्नत तशरीफ़ लाती हैं। पादरी ये आवाज़ सुनकर बेहोश हो गया और फिर जब होश आया तो आँखों पर पर्दा पड़ा देखा। मगर ये सुना के कोई रोते हुए यूं कह रहा है:

"अस्सलाम अलेक! ऐ मज़लूम मादर! ऐ शहीद मादर! ग़म ना कर मैं दुश्मनों से तेरा इन्तेक़ाम लूंगी। और खुदा से तेरा इंसाफ चाहूंगी।"

पादरी फिर बेहोश हो गया और फिर जब होश में आया तो कुछ ना पाया बेहद मुश्ताक़ होकर कोठरी का कुफ़्ल तोड़कर अन्दर आया। संदूक़ का ताला तोड़ा और सर अनवर को निकाल कर मुश्क व गुलाब से धोकर मुसल्ले पर रखा और सामने दस्त बस्ता खड़े होकर अर्ज़ की ऐ सरदार! मुझे मालूम हो गया के आप उनमें से हैं जिनका वस्फ़ तौरात व इंजील में मैंने पढ़ा हे। लीजिए गवाह रहिये मैं मुसलमान होता हूँ। चुनाँचे वहीं कलमा पढ़कर मुसलमान हो गया। (तज़्करह, सफ़ा 105)

सबक़:- अल्लाह की राह में क़ुर्बान होने वाला मरजअे अवाम व ख़्वास होता है और ये अल्लाह वाले बज़ाहिर दुनिया से तशरीफ़ ले जाते हैं, लेकिन काम उनका बदस्तूर जारी रहता है और ये भी मालूम हुआ के इमाम आली मुक़ाम ने विसाल शरीफ के बाद भी इसाईयों को मुसलमान किया। फिर किस क़द्र अफसोस का मुक़ाम है के उनके नाम लेवा आज खुद ही इसाईयों की सीरत व सूरत अपनाने लगे हैं।

हिकायत नम्बर(347) ढोल बाजे

असीरान कर्बला और सरहाए शोहदा जब दुश्मन के क़रीब पहुँचे और यज़ीद को इल्म हुआ तो उसने तमाम शहर आरास्ता करने और अहले शहर को खुशियाँ मनाने और घर से तमाशा देखने को बाहर आने का हुक्म दिया और यज़ीदी खुशियाँ मनाने लगे। एक सहाबी-ए-रसूल हज़रत सहल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह बग़र्ज़ तिजारत शाम आए हुए थे। वो दमिश्क़ के क़रीब एक क़स्बे गुज़रे तो आपने देखा के तमाम लोग खुशी करते ढोल और बाजे बजाते हैं। उन्होंने एक शख़्स से इस खुशी मनाने की वजह पूछी तो लोगों ने बताया के अहले इराक़ ने सर हुसैन यज़ीद को हदया भेजा है। तमाम अहले अहले शाम उसकी खुशी मना

रहे हैं। हज़रत सहल ने एक आह भरी और पूछा के सर हुसैन कौन से दरवाज़े से लायेंगे? कहा बाब-उल-साअत से। आप उस तरफ़ दौड़े और बड़ी दौड़ धूप के बाद अहले बैत तक पहुँच गए। आपने देखा के एक सर मुशाबह सरे रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम नेज़े पर चढ़ा है। जिसे देखकर आप बे इख़्तियार रो पड़े। अहले बैत में से एक ने पूछा के तुम हम पर क्यों रो रहे हो? उन्होंने पूछा आपका नाम क्या है? फ़रमाया। मेरा नाम सकीना बिनते हुसैन है। उन्होंने फ़रमाया और मैं आपके नाना का सहाबी हूँ मेरे लायक़ जो ख़िदमत हो फ़रमाईये फ़रमाया! मेरे वालिद के सरे अनवर को सब से आगे करा दो ताके लोग इधर मुतवज्जह हों और हम से दूर रहें उन्होंने चार सौ दरहम देकर सरे इमाम मसतूरात से दूर कराया। (तज़करह, सफ़ा 107)

सबक़:- मालूम हुआ के ढोल बाजे बजा बजा कर मोहर्रम के दिन गुज़ारने यज़ीदियों की सुन्नत है।

हिकायत नम्बर (348) गुसताख़

सरहाऐ शोहदा और असीराने कर्बला जब दमिश्क में दाख़िल हुए तो यज़ीद ने दरबार आरास्ता किया और तमाम रौसाऐ शहर और सरदाराने ममलिकत को जमा किया और फिर सब को दरबार में बुलाया। जब लाए गए तो क़ैदियों को एक तरफ़ ठहराया और सरों को अपने सामने मंगवा कर हर एक को देखना और हाल पूछना शुरू किया और हालात सुन कर यज़ीद देर तक चुपका सर नीचा किए रहा। फिर हुक्म दिया के सरे इमाम तश्त में रख कर हमारे सामने लाओ। जब तश्त में सर मुबारक रख कर लाया गया तो अपने हाथ की लकड़ी से इमाम के लब व दनदान छू कर बोला के क्या ये हुसैन के लब व दनदान हैं? ये देख कर एक सहाबी रसूल इब्ने जिनदब रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह जो उस वक़्त वहाँ वहाँ तशरीफ़ फ़रमा थे बोले और कहा *क़तअल्लाहू यदाका या यज़ीदू* तू इस जगह को लकड़ी से छू रहा है जिस जगह मैंनें बारहा आँहज़रत सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को बोसा देते देखा है। यज़ीद ने ये सुनकर उन्हें मजलिस से निकाल दिया। (तज़करह, सफ़ा 110)

सबक़:- यज़ीद फासिक़ व फाजिर और बे अदब व गुसताख़ भी था और उसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की निसबत का कुछ भी पास ना था।

हिकायत नम्बर(349) फ़रैब का रोना

जिस वक़्त अहले बैत इमाम का क़ाफ़ला कूफ़े से दमिश्क में आकर दरबार यज़ीद में पेश हुआ। तो यज़ीद की औरत हुंदा बेताब होकर बे पर्दा दरबार यज़ीद में चली आई। यज़ीद ने दौड़ कर उसके सर पर कपड़ा डाल दिया और कहा ऐ हुंदा! तू फ़रज़ंदे रसूल पर नोहा दारी कर इब्ने ज़ियाद लईन ने उनके मामले में जल्दी की। हालाँके मैं उनके क़त्ल पर राज़ी ना था। (जलाअ अलउयून और ख़ुलासत-उल-मसायब) बहवाला फैसला शरीया, सफ़ा 50)

सबक़:- यज़ीद और उसके घर वालों का ये सारा फ़रैब था के खुद ही क़त्ल कराये और फिर इंकार कर दिया।

हिकायत नम्बर(350) नक़्क़ारा-ए-खुदा

असीराने कर्बला जब दरबारे यज़ीद में पेश किए गए तो हज़रत इमाम ज़ैनुलआबेदीन को देखकर यज़ीद ने पूछा। ये कौन है? बताया गया। ये अली बिन हुसैन है। बोला मैंने तो सुना था। वो मारा गया बताया गया के हुसैन के तीन लड़के थे। अली अक्बर, अली असग़र मारे गए, ये अली औसत हैं के बवजह बीमारी के बच रहे और गिरफ़्तार करके लाए गए। यज़ीद ने हज़रत इमाम ज़ैनुलआबेदीन को बुलाकर अपने लड़के के पास बिठाया और कहा ऐ अली! मेरा लड़का तेरे बराबर है। क्या इससे मुक़ाबला कर सकते हो? आप ने फ़रमाया। एक एक तलवार दोनों को दे और मुक़ाबला करा के देख ले। इतने में नक़्क़ारा-ए-यज़ीद बजा, यज़ीद के बेटे ने बड़े फख्र से कहा ये नौबत मेरे बाप के नाम की बज रही है या तेरे बाप के नाम की? हज़रत इमाम ने जवाब में ताम्मुल फ़रमाया के मोज़्ज़न ने अज़ान कही। पस इमाम ने पुस्र यज़ीद से फ़रमाया। देख मेरे बाप दादा के नाम की नौबत बजी जो क़यामत तक यूहीं बजती रहेगी और तेरे बाप के नाम की नौबत चन्द रोज़ बज कर बन्द हो जाएगी। पुस्र यज़ीद इस जवाब से ला जवाब हो गया। और हाज़रीन फ़ुसाहत शहज़ादा से बड़े मुताज्जिब हुए। (तज़करह, सफ़ा 113, और तनक़ीह, सफ़ा 131)

सबक़:- हुसैन और अहले बैत अेज़ाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्हुम के नाम लेवा क़यामत तक बाक़ी रहेंगे और यज़ीद का कोई नाम तक लेने

को तैयार नहीं। मालूम हुआ के ज़ुल्म ज़ालिम को मिटा देता है और सब्रो शुक्र साबिर को खुदाई भर में और खुदा का मक्बूल बना देता है।

हिकायत नम्बर(351) दमिश्क़ की जामअे मस्जिद में

दरबार यज़ीद में हज़रत इमाम ज़ैनुलआबेदीन रज़ी अलाहो तआला अन्ह पेश किए गए तो यज़ीद ने हज़रत इमाम से कहा के ऐ इब्ने हुसैन! तुम्हें कोई हाजत हो तो तलब कर। शहज़ादे ने फ़रमाया एक तो ये हाजत रखता हूँ के मेरे बाप का क़ातिल को मेरे हवाले कर ताके अपने हाथ से क़त्ल करूं। यज़ीद ने इस बात से इंकार किया। फिर हज़रत ने फ़रमाया अच्छा तो सर इमाम मेरे हवाले कर ताके तन अक़्दस से मिलकर दफ़्न करूं। यज़ीद ने कहा ये मंज़ूर है और कुछ? फ़रमाया मुझे इजाज़त दे के मैं अहले बैत को लेकर मदीना चला जाऊँ। यज़ीद ने कहा ये भी मंज़ूर है और कुछ? फ़रमाया कल जुमआ है मुझे इजाज़त दे के मिंबर पर जा कर खुत्बा पढ़ूं। यज़ीद ने कहा ये ख़्वाहिश भी तुम्हारी पूरी कर दी जाएगी और कल खुत्बा तुझी से पढ़वाऊँगा। चुनाँचे दूसरे रोज़ यज़ीद ने बादिल नख़्वास्ता हज़रत इमाम को खुत्बा पढ़ने की इजाज़त दे दी। उस रोज़ मस्जिद में ख़ल्क़त का इस क़द्र हजूम था के किसी को जगह ना मिलती थी। हज़रत इमाम ज़ादा मिंबर पर रौनक़ अफरोज़ हुए और अव्वल निहायत फसाहत व बलाग़त से हम्द व नात बयान की। फिर फ़रमाया जो मुझे जानता हो जाने और जो ना जानता हो। अब जाने के मैं नूर दीदा-ए-मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम, और हसन मुजतबा हूँ। जिन्हें मैदाने कर्बला में तीन रोज़ भूका प्यासा मज़लूम शहीद किया गया। ये सुनकर मस्जिद में कोहराम पड़ा। अहले दमिश्क़ में शौर बर्पा हुआ। यज़ीद डरा। और मोज़्ज़न को अक़ामत के लिए इशारा किया। पस मोज़्ज़न ने अल्लाहो अक्बर कहा शहज़ादे ने *नअम ला शई अक्बरू मिनहू* फ़रमाया मोज़्ज़न ने *अशहदूअन्नला इलाहा इलल्लाह* कहा शहज़ादे ने *नअम शहीदू बिहा लहयी व शअेरी व दमी* फ़रमया: मोज़्ज़न ने *अशहदू अन्ना मोहम्मदन रसूल अल्लाह* कहा शहज़ादे ने अपना अमामा उतार कर मोज़्ज़न की तरफ़ फैंका और बाल सर परेशान करके मोज़्ज़न से फ़रमाया। बहक़ मोहम्मद ज़रा ठहर जा। मोज़्ज़न चुप हो गया तो शहज़ादे फ़रमाया ऐ यज़ीद! ये मोहम्मद तेरे दादा हैं या मेरे! अगर तू इन्हें अपना दादा कहेगा तो आलम तुझे झूटा कहेगा और अगर मेरे दादा कहेगा तो मेरे बाप को मज़लूम क्यों शहीद किया? मुझे यतीम किया, अहले बैत को शहर बशहर फिराया।

क़ैद करवाया। दरबार में बुलाया। मेरे बाप दादा के दीन में रख़ना डाला। बावजूद के उनका कलमा पढ़ता है। फिर भी शर्म नहीं करता है। फिर शहज़ादे ने लोगों से फ़रमाया तुम में से सिवाए मेरे कोई ऐसा है जिसका दादा पैग़म्बर हो? उस वक़्त मस्जिद में शौरे क़यामत बर्पा हुआ और लोग रोने लगे कई बेहोश हो गए। यज़ीद ने मोज़्ज़न को डांटा अक़ामत पूरी कराई, नमाज़ अदा की और फिर लोगों से बे चैनी दूर करने के लिए एक मजलिसे आम बुलाई और उसमें सब के सामने सरदाराने कूफे को बुला कर सख़्त बुरा भला कहा। गालियाँ दीं उनकी हरकात पर नफरीं और ख़फ़्गी का इज़हार किया और कहा मैं तुम पर जब राज़ी होता के तुम हुसैन को ज़िन्दा मेरे पास लाते मैं उनकी ख़िदमत में खुशामद कर लेता। लानत है इब्ने ज़ियाद जिसने ये काम किया। (तज़करह, सफ़ा 115, व तनक़ीह, सफ़ा 133)

सबक़:- यज़ीद बड़ा चालाक और मक्कार था के खुद ही सब कराके फिर करने वालों पर लानत मलामत भी करने लगा और अपने आपको बे क़सूर ज़ाहिर करने लगा।

हिकायत नम्बर (352) मदीने को वापसी

यज़ीद ने अहले बैत को मअे सरहाऐ शोहदा हज़रत नौमान बिन बशीर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हमराह मदीने मुनव्वरह जाने की इजाज़त दी और नौमान बिन बशीर निहायत ताज़ीम व अदब के साथ अहले बैत को मदीना ले चले। अहले बैत अेज़ाम नौमान बिन बशीर की इस ख़िदमत व ताज़ीम पर बड़े खुश हुए और उन्हें दुआऐं दीं। अहले मदीना को जब अहले बैत के आने की ख़बर हुई तो हर छोटा बड़ा बे क़रार होकर रोता हुआ उन्हें लेने के लिए दौड़ा। अहले बै अेज़ाम से सब से पहले रोज़ा-ए-अक़्दस पर हाज़िर हुए और दर्दनाक आवाज़ों में *वजद्दाहू* का नारा मार कर अर्ज़ गुज़ार हुए के या रसूल अल्लाह! हम यतीम ग़रीब मज़लूम मग़मूम दरे वाला पर हाज़िर हैं....

या रसूल अल्लाह! ज़रा देखो हमारा हाले ज़ार
दुश्मनों के हाथ से कैसे हुए हम ज़ुलफिगार
जो मुसीबत हम पे गुज़री क्या करें उसका बयान
कोई दुनिया में ना होगा इस तरह ज़ारो नज़ार

अहले बैत अेज़ाम यूं रो रो कर अपने प्यारे नाना जान से अर्ज़े हाल कर रहे थे के उम्मुलमोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक हाथ में शीशी जिसमें वो मिट्टी भरी हुई थी, जो हुज़ूर ने उन्हें देकर फ़रमाया

था के जब मेरा बेआ हुसैन कर्बला में शहीद होगा उस दिन ये मिट्टी खून बन जाएगी जिसका ज़िक्र हिकायत नम्बर 307 में हो चुका है। और आज ये मिट्टी खून बन चुकी थी, जिसमें खाक कर्बला खून शुदा भरी थी। लिए हुए और दूसरे हाथ से हाथ सिग़रा दुख़्तर इमाम पकड़े हुए आईं। अहले बैत ने जो उन्हें देखा और शीशी की खाक को खून शुदा पाया तो और ज़्यादा बे क़रार हुए। अलग़र्ज़ वो वक़्त भी क़यामत का नमूना था। मदीना मुनव्वरह में कोहराम पड़ा था हर छोटा बड़ा बे क़रार और अशकबार हो रहा था। (तज़करह, सफ़ा 116, व तनक़ीह, सफ़ा 136)

सबक़:- वाक़ेया कर्बला बड़ा ही दर्दनाक वाक़ेया है और मुसलमान का दिल उससे मुतास्सिर हुए बग़ैर नहीं रहता और उसमें मुसलमान के लिए सेंकड़ों सबक़, इबरतें और दर्स हैं। पस मुसलमानों को चाहिए के वो अहले बैत अेज़ाम को नक़्शे क़दम पर चल कर ईलाअे कलमत-उल-हक़ की ख़ातिर हर क़िस्म की कुर्बानी का जज़्बा पैदा करें। और उन मुनकिरात शरीआ और बिदआत से बचें। जिनसे आख़िर तक अहले बैत अेज़ाम मना फ़रमाते रहे हैं।

हिकायत नम्बर(353) ज़ैनुल आबेदीन

हज़रत इमाम हुसैन(र०अ०) के साहबज़ादे अली औसत(र०अ०) का नाम नामी तो अली था। मगर आप कसरत इबादत की वजह से ज़ैनुल आबेदीन के लक़ब से मशहूर थे। आप हर दिन रात में एक हज़ार नफिल पढ़ा करते थे। एक रोज़ आप अपने मकान में नफिल पढ़ रहे थे के आपके मकान को आग लग गई। लोग आग बुझाने लगे। मगर हज़रत इमाम उसी खुज़ू व खुशू से नमाज़ अदा करते रहे। जब आग बुझ गई और आप नमाज़ से फारिग़ हुए तो लोगों ने अर्ज़ की हुज़ूर! मकान को आग लग गई थी, हम बुझाने में मसरूफ रहे मगर आपने परवाह तक ना फ़रमाई। आपने फ़रमाया तुम लोग ये आग बुझा रहे थे और मैं आख़िरत की आग बुझाने में मशग़ूल था। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 55, व हयात-उल-हैवान, सफ़ा 117, जिल्द:1)

सबक़:- हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन जन्नती होने के बावजूद इस क़द्र इबादत फ़रमाते और आख़िरत की आग बुझाने में मसरूफ रहते थे। फिर हम लोग अगर पाँच नमाज़ें भी बाक़ादगी से अदा ना करें और जहन्नुम की आग से बचने की कोशिश ना करें तो हमारी ये किस क़द्र ग़फ़लत है।

हिकायत नम्बर (354) बुर्दबारी

एक दिन हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह घर से तशरीफ़ ले जा रहे थे के रास्ते में गुसताख़ ने आपको बुरा भला कहना शुरू कर दिया। हज़रत इमाम ने उससे फ़रमाया के भाई, जो कुछ तुम ने मुझे कहा है। अगर मैं वाक़ई ऐसा ही हूँ तो खुदा मुझे माफ फ़रमाए। ये सुनकर वो शख़्स बड़ा नादिम हुआ और बढ़कर आपकी पैशानी चूम कर कहने लगा हुज़ूर! जो कुछ मैंने कहा है। आप हर गिज़ एसे नहीं हैं, मैं ही झूटा हूँ। आप मेरी मग़फिरत की दुआ फ़रमाएँ। आपने फ़रमाया अच्छा जाओ खुदा तुम्हें माफ फ़रमाए। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 56)

सबक़:- अल्लाह वालों की ये सीरत है के बुराई का बदला कुछ ऐसे तरीक़ से देते हैं के ख़ता कार नादिम होकर अपनी ख़ता से किनारा कश हो जाता है और नेकी इख़्तियार कर लेता है।

हिकायत नम्बर (355) ख़तरनाक असदहा

ख़लीफा मनसूर ने एक दिन अपने वज़ीर से कहा के इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को बुला लाता के मैं उसे क़त्ल कर दूं वज़ीर ने कहा के एक सय्यद गोशा नशीन को क़त्ल करना मुनासिब नहीं, ख़लीफा उस पर नाराज़ हुआ और कहा जो हुक्म मैं देता हूँ तुम बजा लाओ। नाचार वज़ीर हज़रत इमाम जाफर सादिक़ को बुलाने के लिए गया और उधर ख़लीफा मनसूर ने ग़ुलामों को हुक्म दिया के जब जाफर सादिक़ आए और मैं ताज को अपने सर से उतार लूं। तो तुम उसी दम उसको क़त्ल कर देना चुनाँचे हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तशरीफ़ लाए। आप दरबार में दाख़िल हुए तो मनसूर उन्हें देखते ही उनके इसतक़बाल को दौड़ा और सद्र मुक़ाम पर आपको बिठाया और खुद मोद्दबाना तरीक़ से आपके सामने बैठ गया। ग़ुलामों को बड़ा ताज्जुब हुआ के परोग्राम तो कुछ और था और हो कुछ और रहा है। मनसूर ने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह से फ़रमाया के आपकी कोई हाजत हो तो बयान फ़रमाइये। आपने फ़रमाया के मेरी हाजत तुम से यही है के आईदा मुझे अपने हुज़ूर तलब ना करना ताके मैं खुदा की इबादत में मशग़ूल रहूं। मनसूर ने आपको इजाज़त दी और बड़ी इज़्ज़त से आपको रूख़्सत किया और उस वक़्त मनसूर का बदन कांप रहा था। हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के तशरीफ़ ले जाने के बाद

वज़ीर ने इस हाल का सबब पूछा तो मनसूर ने कहा के जब जाफर सादिक़ दरवाज़े से दरबार में दाख़िल हुए तो मैंने आपके हमराह एक बड़ा ख़तरनाक़ असदहा देखा जिसका एक लब मेरे तख़्त से ऊपर और एक नीचे था और वो बज़बाने हाल मुझ से कह रहा था के अगर तूने इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को सताया तो मैं तुम्हें तख़्त समेत निगल जाऊँगा। चुनाँचे मैंने इस असदहे के ख़ौफ से जो कुछ सलूक उनसे किया। तुम ने वो देख लिया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 15)

सबक़:- अल्लाह वालों को सताना बड़ा ख़तरनाक होता है, इसी लिए मौलाना रूमी भी फ़रमाते हैं...

गर खुदा ख़्वाहिद के पर्दा किस दर्द
मेलिश अन्दर ताना-ए- पा काँ कंद

हिकायत नम्बर (356) क़ीमती लिबास

हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को लोगों ने देखा के आप बड़ा बैश क़ीमती लिबास पहने हुए हैं एक शख़्स ने कहा के ऐ इब्ने रसूल अल्लाह! इतना क़ीमती लिबास अहले बैत को ज़ैबा नहीं। आपने उसका हाथ पकड़ा और आसतीन के अन्दर खींच कर दिखाया के देख ये क्या है? उसने देखा के नीचे आप टाट जैसा खुरदुरा लिबास पहने हुए हैं। आपने फ़रमाया के ये ख़ालिक़ के लिए है और वो ख़ल्क के वास्ते है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 17)

सबक़:- अल्लाह वालों के पास बज़ाहिर दुनिया नज़र आए तो किसी क़िस्म की बदगुमानी ना करना चाहिए। उन अल्लाह वालों का दिल जब दुनिया से बिलकुल खाली होता है।

हिकायत नम्बर (357) दीनारों की थेली

एक शख़्स की दीनारों की थेली गुम हो गई। इस नादान ने हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को पकड़ कर कहा के थेली आपने ली है। इस बेख़बर ने हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को पहचाना नहीं और इलज़ाम लगा दिया हज़रत ने फ़रमाया थेली में कितनी रक़म थी वो बोला एक हज़ार आप उसे घर ले गए और हज़ार दीनार उसे दे दिया। दूसरे रोज़ उस शख़्स को वो गुमशुदा थेली मिल गई। फिर वो हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास आया और माज़रत करते हुए वो

हज़ार दीनार वापस करने लगा। आपने फ़रमाया अब ये माल तुम्हारा ही हुआ। हम ने जो चीज़ दे दी वापस नहीं लेते। उसके बाद उसने किसी से पूछा के ये कौन हैं। लोगों ने बताया के ये इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हैं। वो शख़्स बड़ा नादिम हुआ। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 17)

सबक़:- अल्लाह वाले दुनिया को बिलकुल हैच समझते हैं और वो दुनिया का क़तअन कोई लालच नहीं रखते। फिर आज वो लोग जो मुरदार दुनिया के लिए मुख़्तलिफ हीले बहाने करते और दुनिया पर मरते हैं किस क़द्र ग़ाफिल और नादान हैं।

हिकायत नम्बर(358) हारून अलरशीद और एक आराबी

हारून अलरशीद एक मर्तबा मक्का में आया तो अवाम को तवाफ करने से रोक दिया ताके वो खुद तनहा तवाफ कर सके। और जब वो तवाफ करने लगा तो झट एक आराबी ने सबक़त करके उसके साथ तवाफ करना शुरू कर दिया। हारून अलरशीद को ये बात नागवार गुज़री और अपने हाजिब की तरफ़ देखा। हाजिब ने अपने बादशाह की मर्ज़ी पाकार आराबी से कहा मियाँ आराबी! यहाँ से हट जाओ ताके अमीर-उल-मोमिनीन तवाफ कर सकें। आराबी ने जवाब दिया खुदा के नज़दीक इस मुक़ाम में छोटे, बड़े, अदना, व आला अमीर व ग़रीब और राई व रिआया सब बराबर हैं। यहाँ कौन छोटा और कौन बड़ा है जाओ मैं ना हटता। हारून अलरशीद ने उसकी ये गुफ़्तगू सुनी तो हाजिब से कहा उसे रहने दो। उसके बाद हारून अलरशीद हज्रे असवद को चूमने के लिए आगे बढ़ा तो आराबी ने सबक़त करके हज्रे असवद को पहले चूम लिया। हारून अलरशीद जब मुक़ामे इब्राहीम में नमाज़ पढ़ने को बढ़ा तो आराबी ने सबक़त करके वहाँ पहले नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी। हारून अलरशीद जब तवाफ व नमाज़ से फारिग़ हुआ तो हाजिब से कहा के उस आराबी को मेरे पास बुला लाओ। चुनाँचे हाजिब गया और आराबी से कहने लगा। चलो तुम्हें अमीर-उल-मोमिनीन बुलाते हैं। आराबी ने कहा मुझे उन से कोई हाजत नहीं है। फिर मैं क्यों जाऊँ। हाँ अगर उन्हें मुझ से कोई काम है तो वो खुद मेरे पास क्यों नहीं आते? हाजिब ये सुनकर ग़ुस्से में आकर वापस हुआ और उसका जवाब हारून अलरशीद को सुना दिया। हारून अलरशीद ने सुनकर कहा बेशक वो ठीक कहता है। मुझे खुद उसके पास चलना चाहिए, चुनाँचे हारून अलरशीद खुद उस आराबी के पास पहुँचे और उसके सामने खड़े होकर अस्सलाम अलेकुम कहा जिसका

जवाब व अलेकुल अस्सलाम कहकर आराबी ने दिया। हारून अलरशीद ने कहा क्यों भई! इजाज़त है बैठ जाऊँ। आराबी ने जवाब दिया। ये घर ना आपका है ना मेरा। फिर मुझ से इजाज़त कैसी? और मैं इजाज़त देने वाला कौन? यहाँ हम सब बराबर हैं। आप चाहें तो बैठ जायें, चाहें तो वापस चले जायें। हारून अलरशीद इस क़िस्म की जुर्रात आमेज़ गुफ़्तगू सुनकर हैरान रह गया उसे गुमान तक ना था के ऐसी गुफ़्तगू भी कोई उससे कर सकता है। फिर वो आराबी के पहलू में बैठ गया और कहने लगा। मियाँ आराबी! मैं तुम से तुम्हारे फर्ज़ के मुतअल्लिक़ पूछता हूँ क्या तुम बता सकोगे? अगर तुम अपने फर्ज़ पर रोशनी डाल सको तो मैं तुम्हारा क़ायल हो जाऊँगा। आराबी ने जवाब दिया आपका ये सवाल मोअल्लिम बन कर है या मुतअल्लिम बन कर? हारून अलरशीद ने कहा मुतअल्लिम बन कर। आराबी ने कहा तो फिर तालिब इल्मों की तरह सामने मौद्दिब होकर बैठो। और फिर पूछो! चुनाँचे हारून अलरशीद मौद्दबाना तरीक़ से सामने बैठ गया और फिर फर्ज़ के मुतअल्लिक़ पूछा। आराबी ने जवाब दिया के एक फर्ज़ बताऊँ या पाँच, सत्रह फर्ज़ बताऊँ, चौंतीस बताऊँ या चोरानवे, चालीस में से एक फर्ज़ का बयान करूं या उम्र भर में एक फर्ज़ का?

ये तफसील सुनकर हारून अलरशीद ने तनज़न हंस कर कहा, मैंने तो तुम से एक फर्ज़ का पूछा है और तुम दुनिया भर का हिसाब ले बैठे हो। आराबी ने कहा हारून! अगर दीन में हिसाब ना होता तो क़यामत के रोज़ ख़ालिक़ मख़लूक़ से कभी हिसाब ना लेता खुदा का इर्शाद क्या याद नहीं *वइन काना मिसक़ालू हब्बाती खूऊदलिन आतैना बिहा व काफा बिना हासिबीना हारून* अलरशीद ने जब ये सुना के आराबी ने उसका नाम लेकर उसे मुख़ातिब किया है। और उसे अमीर-उल-मोमिनीन नहीं कहा तो ग़ुस्से में आ गया और जब ग़ुस्सस फरू हुआ तो कहने लगा। क़सम बखुदा अगर तुम ने मेरे सवाल का जवाब ना दिया तो मैं तुझे सफा और मरवा की पहाड़ियों के दरमियान मरवा दूंगा हाजिब ने कहा अमीर-उल-मोमिनीन जाने दीजिए। इस हरम शरीफ के तुफैल इसकी जाँ बख़्शी फ़रमा दीजिए। आराबी ये सुनकर खिलखिला कर खूब हंसा, हारून अलरशीद और भी ज़्यादा हैरान हुआ। और पूछा इस क़द्र हंसे क्यों? आराबी ने जवाब दिया तुम दोनों की मुज़ेहका खैज़ गुफ़्तगू सुनकर के एक तुम दोनों में से ऐसी मौत ले आने का मुद्दई है जो आई नहीं और दूसरा ऐसी मौत को हटा रहा है जो आ चुकी। भला ऐसी ना मअकूल बातें दाना तसलीम कर सकता है, हारून रशीद ये सुनकर

बेहद नादिम हुआ अैर मिन्नत से कहने लगा। भई! अब तो मुझे तुम्हारे जवाब का बेहद शौक़ है। बराऐ खुदा मेरे सवाल का जवाब ज़रूर दो। आराबी न कहा तो लो सुनो। तुम्हारा सवाल इस फर्ज़ के मुतअल्लिक़ है। जो खुदा ने मुझ पर किया है। तो खुदा के मुझ पर बहुत से फ़रायज़ हैं मैंने जो तुम से एक फर्ज़ का कहा था वो तो दीने इस्लाम है और जो पाँच फर्ज़ कहे थे। वो पाँच नमाज़ें हैं और जो सत्रह फर्ज़ हैं वो दिन रात की सत्रह रकआत हैं। और चौंतीस फर्ज़? दिन रात के सज्दे हैं और चौरानवे फर्ज़? वो उन सब रकआत की तकबीरात हें और जो मैंने चालीस में से एक फर्ज़ कहा था वो चालीस दीनार में से एक द।नार ज़कात है और सारी उम्र में से एक फर्ज़? वो हज है। हारून अल रशीद आराबी के हुस्ने बयाँ और तशरीह मसायल को सुनकर बेहद मसरूर हुआ और उसके दिल में बेहद क़द्र पैदा हो गई।

उसके बाद आराबी ने कहा के आपके सवाल का जवाब तो मैंने दे दिया। अब मेरे भी सवाल का जवाब क्या आप देंगे? हारून रशीद ने कहा हाँ पूछिये आराबी ने कहा। क्या फ़रमाते हैं। अमीर-उल-मोमिनीन उस शख़्स के लिए जिसने सुबह एक औरत को देखा तो वो औरत उस पर हराम थी। ज़ोहर का वक़्त हुआ तो हलाल हो गई। इशा का वक़्त आया तो फिर हराम हो गई। सुबह हुई तो हलाल हो गई उसके बाद फिर ज़ोहर का वक़्त आया तो हराम हो गई अस्र का वक़्त आया तो फिर हलाल हो गई। मग़रिब का वक़्त हुआ तो हराम हो गई। इशा का वक़्त आया तो फिर हलाल हो गई। हारून अलरशीद ये सुनकर कहने लगा के तुम ने मुझे एक ऐसे दरया में डाल दिया है जिससे बजुज़ तुम्हारे दूसरा कोई ना निकाल सकेगा तुम खुद ही उसका जवाब दो। आराबी ने कहा अमीर-उल-मोमिनीन! आप तो बहुत बड़े साहबे इख़्तियार हाकिम हैं। मेरे एक मामूली से मसले के सामने आजिज़ क्यों आ गए? हारून अलरशीद ने कहा वाक़ेया ये है के खुदा ने तुम्हारा दर्जा-ए-इल्म मुझ से बुलंद किया है। मेरी दरख़्वास्त है के इस हरम शरीफ की ख़ातिर तुम ही जवाब दो। आराबी ने कहा बहुत अच्छा तो सुनिए वो एक ऐसा शख़्स है जिसने सुबह किसी दूसरे की लोंडी को देखा जो उस पर हराम थी। ज़ोहर का वक़्त आया तो वो लोंडी उसने खरीद ली। अब वो इस पर हलाल हो गई। अस्र के वक़्त उसने उसे आज़ाद कर दिया तो वो फिर उस पर हराम हो गई। मग़रिब के वक़्त उसने उससे निकाह कर लिया तो फिर हलाल हो गई। इशा के वक़्त उसने तलाक़ दे दी तो वो फिर हराम हो गई। सुबह उसने रूजू कर लिया तो फिर हलाल हो गई। ज़ोहर का वक़्त आया तो वो शख़्स मुरतिद हो

गया। वो फिर उस पर हराम हो गई। अस्र के वक़्त वो शख़्स फिर मुसलमान हो गया तो उसकी औरत फिर उस पर हलाल हो गई। मग़रिब के वक़्त वो औरत मुरतिद हो गई फिर वो हराम हो गई, इशा का वक़्त आया तो फिर वो मुसलमान हो गई। लिहाज़ा फिर हलाल हो गई।

हारून अलरशीद ये तफसील सुनकर हैरान व शशिद्र रह गया और उस आराबी को दस हज़ार दीनार देने का हुक्म दिया। जब ये दीनार आराबी को पेश किए गए तो उसने कहा के ये दरहम उनके अहल को दे दो। मुझे ज़रूरत नहीं। हारून अलरशीद ने कहा क्या मैं तुम्हारे नाम कोई जागीर कर दूं जो उम्र भर तुम्हारे लिए काफी हो? आराबी ने कहा जिस ने तुम्हारे नाम मुल्क कर रखा है वो चाहेगा तो मेरे नाम भी कोई जागीर कर देगा तुम्हारे वास्ते की ज़रूरत नहीं।

हारून अलरशीद वहाँ से लौटा और उस आराबी के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो लोगों ने बातया के ये हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के साहबज़ादे मूसा रज़ा हैं जिन्होंने ज़ाहिदाना ज़िन्दगी इख़्तियार फ़रमा रखी है। हारून अलरशीद ये हक़ीक़त सुनकर उल्टे पाऊँ दौड़ा और हज़रत मूसा रज़ा बिन जाफर सादिक़ बिन मोहम्मद बिन अली बिन अबी तालिब रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की पैशानी को चूम लिया। (अलरोज़ अलफायक़, सफ़ा 58 ता 59)

सबक़:- अहले बैत अेज़ाम मुनब्बअे अलउलूम थे। और ये भी मालूम हुआ के पहले बादशाह भी इल्म दोस्त और बुज़ुर्गाने दीन के क़द्र शनास थे।

सातवाँ बाब

आइम्मा इक्राम

रिज़वान-उल्लाही तआला अलेहिम अजमईन

योमा नदऊ कुल्ला उनासिन बिइमामीहिम फमिन ऊतिया किताबाहू बियमीनिही फऊलाईका यक़राऊना किताबाहुम वला युज़लमूना फतीला (प 15, रूकू 8)

जिस दिन हम हर जमात को उसके इमाम के साथ बुलायेंगे तो जो अपना नामा दाहिने हाथ में दिया गया। ये लोग अपना नामा पढ़ेंगे और तागे फिर उनका हक़ ना दबाया जाएगा। (कनज़ुल ईमान)

हिकायत नम्बर (359) इमाम-उल-मुस्लिमीन अबु हनीफा (र०अ०)

हज़रत इमाम आज़म इमाम अबु हनीफा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत के लिए जब मदीना मुनव्वरह पहुँचे और रोज़ा-ए-अनवर पर हाज़िर हुए तो आपने अर्ज़ किया। *अस्सलाम अलेका या सय्यदुल मुरसलीन*

तो रोज़ा-ए-अनवर से जवाब आया

व अलेका अस्सलाम या इमाम-उल-मुस्लिमीन (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 246)

सबक़:- मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हयात-उन्नबी हैं। गुलाम का सलाम सुनते हैं और जवाब भी अता फ़रमाते हैं और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मुसलमानों के इमाम हैं और खुद सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने आपको मुसलमानों का इमाम फ़रमाया है फिर अगर कोई शख़्स हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की शान वाला में कोई बे अदबी का लफ़्ज़ कहे तो हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम क्यों ना उससे नाराज़ होंगे।

हिकायत नम्बर (360) मुक़द्दस बूढ़ा

हज़रत शेख़ बू अली बिन उस्मान जलाली रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मैं मुल्के शाम में था के एक रोज़ में हज़रत बिलाल रज़ी अल्लाहो अन्ह के मज़ार शरीफ पर सो गया। मैंने ख़्वाब में देखा के मैं मक्का शरीफ में हूँ और हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम बाब बनी शीबा से दाख़िल हुए और आप एक बूढ़े शख़्स को बड़ी शफ़्क़त से अपनी मुबारक गोद में लिए हुए और अपने सहारे चला रहे हैं। मैंने दौड़कर हुज़ूर सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम के मुबारक क़दमों को बूसा दिया और मेरे दिल में ये सवाल उठ रहा था के ये बूढ़े कौन हैं जिन्हें हुज़ूर इतनी शफ़्क़त से अपनी गोद में संभाले और अपने सहारे चला रहे हैं। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मेरे इस सवाल को सुना और फ़रमाया ये मुसलमानों का इमाम अबु हनीफा है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 252)

सबक़:- मालूम हुआ के हमारे इमामे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला

अन्ह के जुमला मसायल वही हैं जो हदीस में बयान हुए और आपका मज़हब वही है जिस पर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने चलाया और हमारे इमाम ने शरई मसायल और इसतंबात व इजतिहाद में जो क़दम भी उठाया है। हदीस नबव्वी के सहारे पर ही उठाया है।

हिकायत नम्बर(361) पैश्वा

एक दिन हज़रत इमाम आज़म(र०अ०) कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे के एक लड़के को आपने देखा के कीचड़ में चल रहा है आपने उस लड़के से फ़रमाया। बेटा! होश से चलो। ऐसा ना हो के तुम्हारा पाँव फिसल जाए और गिर पड़ो। लड़के ने जवाब दिया। ऐ अमीर-उल-मुस्लिमीन! मैं तो अकेला हूँ अगर फिसलूंगा भी तो फिर संभल जाऊँगा। और ना भी संभल सका तो मैं ही गिरूंगा। मगर आप तो मुसलमानों के पैश्वा हैं आपको इसका ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है के आपका पाँव ना फिसले क्योंके अगर आपका पाँव फिसल गया तो सारे मुसलमानों का जो आपके पीछे चल रहे हैं पाँव फिसल जाएगा और इस वक़्त सबका संभलना बहुत मुश्किल हो जाएगा। हज़रत इमाम उस लड़के की ये बात सुनकर रोने लगे। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 250)

सबक़:- इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मुसलमानों के पैश्वा हैं। और हर छोटे बड़े को उसका एत्राफ है के हज़रत इमाम आज़म इमाम-उल-मुस्लिमीन हैं और ये भी मालूम हुआ के इमाम व पैश्वा पर क़ौम व जमात की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारियाँ होती हैं।

हिकायत नम्बर(362) शब बै़दार इमाम

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हर रात तीन सौ रकात नफिल पढ़ा करते थे। एक बार आप कहीं जा रहे त्थे के रास्ते में एक शख़्स ने दूसरे से कहा। ये वो इमाम है जो हर रात पाँच सौ रकात नफिल पढ़ता है। हज़रत इमाम ने ये सुना तो उसी वक़्त ये नीयत कर ली के आज से पाँच सौ रकात ही नफिल पढ़ा करूंगा। ताके उसका गुमान दुरूस्त हो जाए। एक दिन आपके शार्गिदों ने आप से कहा के लोग कहते हैं के इमाम साहब रात भर इबादत करते रहते हैं और नहीं सोते। फ़रमाया आज से मैं ऐसा ही किया करूंगा। और सारी सारी रात जागा करूंगा। क्योंके खुदा तआला फ़रमाता है के जो बन्दे इस चीज़ की तारीफ को पसंद करते हैं जो उनमें नहीं है पस वो हर गिज़ अज़ाब से ना छूटेंगे लिहाज़ा आईंदा मैं सारी रात

जागा करूंगा ताके इस आयत की ज़द में ना आ जाऊँ। उसके बाद आपने चालीस बरस तक इशा के वज़ू से सुबह की नमाज़ पढ़ी और आपने जिस जगह वफ़ात पाई वहाँ आपने सात हज़ार बार क़ुरआन शरीफ ख़त्म फ़रमाया था। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 249। और जवाहर-उल-बयान फी तर्जुमत-उल-ख़ैरात अलहस्सान, सफ़ा 63)

सबक़:- हमारे इमाम हम्माम इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह शब बेदार इमाम थे। और अपने अल्लाह की बड़ी इबादत करने वाले और अल्लाह के बहुत बड़े मक़्बूल व मुक़र्रिब बन्दे थे। फिर जिसने कभी उमर भर वज़ू ही ना किया हो वो अगर हज़रत इमाम की शान वाला कोई गुस्ताख़ी करे तो किस क़द्र ज़ुल्म है?

हिकायत नम्बर(363) नाखुन भर मिट्टी

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह इक बार बाज़ार से गुज़र रहे थे के नाखुन भर कीचड़ उड़कर आपके लिबास पर आ पड़ा। आप उसी वक़्त दजले के किनारे गए और उस मिट्टी को खूब मल मल कर धोया। लोगों ने कहा हुज़ूर आप उसके बराबर तो निजासत को जामे पर जायज़ बताते हैं और खुद इस क़द्र मिट्टी को धोते हैं। आपने फ़रमाया। तुम सच कहते हो। मगर वो फतवा है और ये तक़वा है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 251)

सबक़:- हमारे इमाम तक़वे व परहैज़गारी के पैकर थे। फिर जिन्होंने ने कभी फ़तवे की भी परवाह ना की हो। वो अगर इस पैकरे तक़वा पर किसी क़िस्म का तान करें तो क्यों ना खुद ही मतऊन होंगे।

हिकायत नम्बर(364) ओहदा-ए-क़ज़ा

ख़लीफा मनसूर ने हज़रत इमाम आज़म(र०अ०) को बुलाकर कहा आप ओहदा-ए-क़ज़ा क़बूल कर लें। और मेरी ममलिकत के आप क़ाज़ी अलक़ज़ात यानी चीफ जज बन जायें। हज़रत इमाम आज़म ने फ़रमाया। मैं इस ओहदे के क़ाबिल नहीं हूं। ख़लीफ ने कहा। आप झूट कहते हैं। आप से ज़्यादा इस ओहदे के और कौन क़ाबिल होगा। आपने फ़रमाया अगर मैं झूट बोलता हूँ तो आपने खुद ही फैसला कर दिया के मैं जज बनने के क़ाबिल नहीं हूँ इसलिए झूटा आदमी जज नहीं बन सकता ये कह कर आप वहाँ से उठकर चले गए। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 248)

सबक़:- अल्लाह वालों में किसी दुनयवी ओहदे की लालच नहीं होती। और अगर दुनिया के पीछे भी पड़े तो वो दुनिया से हत्ता अलइमकान पीछा छुड़ाना चाहते हैं। फिर जो रूपे खर्च करके और दिन रात कोशिश कर करके किसी बड़े ओहदे पर पहुँचने की कोशिश करें। वो अगर ऐसे बड़े मुत्तक़ी इमाम की शान में गुस्ताख़ी करें तो किस क़द्र बे इंसाफी है।

हिकायत नम्बर(365) कमाल तक़वा

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक जनाज़ा पढ़ने तशरीफ़ ले गए। धूप की बड़ी शिद्दत थी और वहाँ कोई साया ना था। साथ ही एक शख़्स का मकान था। उस मकान की दीवार का साया देखकर लोगों ने हज़रत इमाम से अर्ज़ किया के हुज़ूर! आप इस साये में खड़े हो जाइये। हज़रत ने फ़रमाया के इस मकान का जो मालिक है वो मेरा मक़रूज़ है और अगर मैंने उसकी दीवार से कुछ नफा हासिल किया तो मैं डरता हूँ के इंदल्लाह मैं कहीं सूद लेने वालों में शुमार ना हो जाऊँ। क्योंके सरवरे आलम सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया है के जिस क़र्ज़ से कुछ नफा लिया जाए वो सूद है। चुनाँचे आप धूप में ही खड़े रहे। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 248)

सबक़:- मालूम हुआ के हमारे इमाम हम्माम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह में कमाल दर्जा का तक़्वा पाया जाता था। आप बड़े ही मुत्तक़ी व परहैज़गार थे और ये भी मालूम हुआ के आप हर हाल में हदीस रसूल सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को पेशे नज़र रखते थे। फिर ये कैसे कहा जा सकता है के आपने रोज़े नमाज़ वग़ैरा शरई उमूर में हदीस को मलहूज़ नहीं रखा और अपने क़यास से काम लिया।

हिकायत नम्बर(366) तासीर क़ुरआन

हज़रत यज़ीद बिन लीस जो अख़्यार में से थे, फ़रमाते हैं। मैंने एक बार इशा की नमाज़ में देखा के इमाम ने सूरत *इज़ा ज़ुलज़िलातिल अर्ज़* पढ़ी और इमामे आज़म मुक़्तदी थे। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो मैंने देखा के इमाम साहब मुतफक्किर बैठे हैं और ठंडी सांस ले रहे हैं। मैं वहाँ से उठ गया ताके आपका दिल मशग़ूल ना हो। और चिराग़ को रोशन ही छोड़ दिया। और उसमें थोड़ा सा तेल था। फिर तुलू फज्र के बाद मैंने देखा के चिराग़ रोशन है और इमाम साहब अपनी रेश मुबारक पकड़े हुए कह रहे हैं, ऐ वो

ज़ात! के बमिक्दार ज़र्रा खै़र के जज़ाऐ खै़र देगा और मिक्दार ज़र्रा शर के जज़ाऐ शर देगा। नौमान को तो अपने फज़्ल से आग से बचा ले के आग के क़रीब भी ना जाए और उसको अपनी वसी रहमत में दाखिल कर ले। जब मैं अन्दर गया तो इमाम साहब ने पूछा क्या चिराग़ लेना चाहते हो? मैंने कहा के मैं तो सुबह की अज़ान भी दे चुका। फ़रमाया। जो कुछ तुम ने देखा है। उसे छुपाना। ज़ाहिर ना करना। (जवाहर-उल-बयान फी तर्जुमात-उल-खै़रात अलहस्सान, सफ़ा 68)

सबक़:- इमामे आज़म अलेह अर्रहमत जितने बड़े इमाम थे इतने ही बड़े मुत्तक़ी और आरिफ़ कामिल थे। फिर जिस पाक हस्ती के तक़्वा व परहैज़गारी और खौ़फे खुदा का ये आलम हो कम मुमकिन है के वो किसी मसले में अल्लाह व रसूल के इर्शाद के खि़लाफ कोई अपनी राय पेश करे।

हिकायत नम्बर(367) खौ़फे क़यामत

एक बार हज़रत इमामे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का बे ख़बरी में एक लड़के के पाँव पर पाँव पड़ गया। लड़के ने कहा ऐ शेख! क़यामत के दिन के बदले से नहीं डरते? हज़रत इमाम ने ये सुना। तो आप पर ग़शी तारी हो गई। जब अफाक़ा हुआ तो फ़रमाया के मेरा ये खयाल है के ये कलमा उसे तलक़ीन हुआ है। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 69)

सबक़:- इमाम साहब अलेह अर्रहमत बावजूद इतने बड़े इमाम और मुत्तक़ी होने के क़यामत के बदले से डरते हैं। फिर किस क़द्र ग़फ़्लत है। हम लोगों की। के सरतापा गुनहगार होने के बावजूद क़यामत के दिन का हमें कोई अहसास ही नहीं। और इमाम साहब से बेख़बरी के आलम में एक लड़के का पाँव कुचला गया तो आप बेहोश हो गए मगर हम जान बूझ कर भी सेंकड़ों ज़ुल्म करते हैं। मगर कुछ परवाह नहीं करते।

हिकायत नम्बर(368) हमसाया-ए-मोची

हज़रत इमामे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के मोहल्ले में एक मोची रहता था जो निहायत रंगीन तबअे और खुश मिज़ाज था। उसका मामूल था के दिन भर मेहनत मज़दूरी करता। शाम को बाज़ार जाकर गोश्त और शराब मोल लाता। कुछ रात गए दोस्त व अहबाब जमा होते। खुद सीख पर कबाब लगाता। खुद खाता। यारों को खिलाता। खूब शराब का दौर चलता और मज़े में आकर शैर गाता...

अज़ाऊनी वअय्या फता अज़ाऊ
लियौमा करीहतिन सिदादी सग़ीरिन

यानी लोगों ने मझ को हाथ से खो दिया। और कैसे बड़े शख़्स को खोया। जो लड़ाई और रिखना बंदी के दिन काम आता।

इमाम साहब ज़िक्र व शुग्ल की वजह से रात को बहुत कम सोते थे। रात को उसकी नग़मा सबख़ियाँ सुनते और कुछ तअर्रूज़ ना करते। एक रात ऐसा हुआ के शहर का कोतवाल इधर आ निकाला और उसका गिरफ़्तार करके ले गया। और क़ैदखाने में भेज दिया। सुबह को इमाम साहब ने दोस्तों से तज़करह किया के गुज़िश्ता रात हमारे हमसाया की आवाज़ नहीं आई। ना मालूम क्या वजह हुई। लोगों ने रात का तमाम माजरा बयान कर दिया। के वो ग़रीब तो क़ैदखाने में है। आपने उसी वक़्त सवारी तलब की और दरबार के कपड़े पहन कर दार-उल-इमारत की तरफ़ रवाना हो गए। कूफ़े के गवरनर को लोगों ने इत्तिला दी के इमाम अबु हनीफा आप से मिलने आए हैं। उसने ये सुनते ही आपके इसतक़बाल के लिए अपने दरबारियों को भेजा जब आपकी सवारी नज़दीक आई तो गवरनर खुद भी ताज़ीम के लिए उठा। और निहायत अदबो एहत्राम से लाकर बिठाया और अर्ज़ किया। आपने क्यों तकलीफ फ़रमाई। मुझ को बुला भेजते। मैं खुद हाज़िर हो जाता। आपने फ़रमाया, हमारे मोहल्ले में एक मोची रहता था। कोतवाल ने उसको गिरफ़्तार कर लिया है मैं चाहता हूँ के वो रिहा कर दिया जाए। गवरनर ने उसी वक़्त हुक्म भेजा और वो रिहा कर दिया गया। इमाम साहब जैसे गवरनर से रूख़्सत होकर चले तो वो मोची भी हमरकाब हो गया। इमाम साहब ने उसे मुख़ातिब होकर फ़रमाया। क्यों हम ने तुम को ज़ाये तो नहीं किया। उसने अर्ज़ किया। नहीं आपने हक़ हमसायगी खूब अदा किया। इमाम साहब के इस ख़ल्क़ व मुरव्वत का उसके दिल पर ये असर हुआ के उसने ऐश परस्ती से तौबा की और इमाम साहब के हल्क़ा दरस में बैठने लगा। रफ़्ता रफ़्ता इल्मे फिक़ा में महारत हासिल की। और फिक़िया के लक़ब से मुमताज़ हुआ। (हयात-उल-हैवान, सफ़ा 118, जिल्द 1)

सबक़:- इमामे आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने हमसायों के एक बहुत बड़े अच्छे हमसाये थे। और मालूम हुआ के हमसायों के दुख दर्द में शरीक होना चाहिए। ओर ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमामे आज़म(र॰अ॰) की तवज्जह से एक अय्याश आदमी की काया पलट गई और वो इल्मो फज़्ल की दौलत से माला माल हो गया।

हिकायत नम्बर (369) एहसान व करम

हज़रत शफीक़ फ़रमाते हैं के मैं हज़रत इमाम आज़म के साथ जा रहा था के एक शख़्स ने आपको देखा। और छुप गया। और दूसरा रास्ता इख़्तियार किया। आपको मालूम हुआ। तो आपने उसे पुकारा। वो आया। तो आपने उससे पूछा के तुम क्यों अपनी राह से बे राह होकर चले। उसने कहा मैं आपका मक़रूज़ हूँ। दस हज़ार दरहम मैंने आपको देने हैं। जिसको काफी अर्सा गुज़र चुका है। और मैं तंग दस्त हूँ। आप से शर्माता हूँ। आपने फ़रमाया। सुबहान अल्लाह! मेरी वजह से तुम्हारी ये हालत है। जाओ मैंने सब रूपया तुम को बख़्श दिया। और मैंने अपने आपको अपने नफ़्स पर गवाह किया। अब आईंदा मुझ से ना छुपना। और जो ख़ौफ तुम्हारे दिल में मेरी वजह से पैदा हुआ। मुझे माफ कर दो। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 74)

सबक़:- हमारे इमाम हम्माम हज़रात इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह बड़े ज़ाहिद, सख़ी, मोहसिन और मख़लूक़ पर मेहरबानी फ़रमाने वाले थे। हम सबको आपके नक़्शे क़दम पर चलना चाहिए और ज़ेर दस्तों पर रहम करना चाहिए और दुनिया की मोहब्बत से दिल को खाली रखना चाहिए।

हिकायत नम्बर (370) फिरासत इमाम

चन्द लड़के गेंद खेल रहे थे। इत्तिफाक़ से एक बार उनकी गेंद हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के आगे मजमअे में आकर गिरी। किसी लड़के की ये हिम्मत ना पड़ी। के गेंद वहाँ से उठा लाए। एक लड़के ने उन लड़कों में से कहा के अगर कहो तो गेंद में उठा लाऊँ? फिर इन्तिहाई गुस्ताख़ी के साथ गया। और वो गेंद जाकर उठा लाया। हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया। मालूम होता है के ये लड़का हलाली नहीं है लोगों ने दरयाफ़्त किया तो वाक़ई वो लड़का वैसा ही निकला। जैसा के हज़रत इमाम ने फ़रमाया था। लोगों ने पूछा। हुज़ूर! आपने ये कैसे जान लिया के वो लड़का हलाली नहीं है। फ़रमाया अगर वो हलाली होती तो हया उसे मानअे होती। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 248)

सबक़:- बुज़ुर्गों से हया अैर उनका अदब करना नेक बख़्ती और शराफत व निजाबत की अलामत है।

हिकायत नम्बर (371) मसकत जवाब

हज़रत इमाम आज़म(र०अ०) के मुख़ालिफों में से एक शख़्स ने आप से

पूछा के आपका फतवा ऐसे शख़्स के बारे में क्या है? जो जन्नत का उम्मीदवार ना हो, और ना दोज़ख़ से डरता हो। ना खुदा से। और मुरदार खाता है और बे रूकू सजूद के नमाज़ पढ़ता है। और बिन देखे गवाही देता है। सच्ची बात को ना पसंद करता है। फितने को दोस्त रखता है। रहमत से भागता है। यहूद नसारा की तसदीक़ करता है।

इमाम आज़म अलेह अर्रहमत ने अपने शार्गिदों से फ़रमाया के ऐसे शख़्स के बारे में तुम क्या कहते हो? उन लोगों ने जवाब दिया। ऐसा शख़्स बहुत ही बुरा है। ये सिफात तो काफिर की हैं। आपने तबस्सुम फ़रमाया। और इर्शाद फ़रमाया नहीं बल्के ऐसा शख़्स तो अल्लाह का दोस्त! और मोमिन कामिल है। फिर आपने उस शख़्स से कहा। के अगर मैं उसका जवाब बता दूं। तो तू मेरी बदगोई से बाज़ रहेगा? उसने वादा किया के हाँ। आप ने फ़रमाया के वो रब जन्नत की उम्मीद रखता है। और रब नार से डरता है। और अल्लाह तआला से इस बात का ख़ौफ नहीं करता के वो उस पर ज़ुल्म करेगा। मुर्दा मछली खाता है जनाज़े की नमाज़ पढ़ता है। नबी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर दुरूद पढ़ता है। और अन देखी बात पर गवाही देने के ये मानी हैं के वो अल्लाह को बिन देखे उसकी गवाही देता है। और वो मौत को ना पसंद करता है। जो हक़ है। ताके ज़िन्दा रह कर अल्लाह की फ़रमाँबरदारी करे। और माल व औलाद फितना जिसको दोस्त रखता है और वो रहमत जिससे भागता है, बारिश है। और यहूद की इस बात में तसदीक़ करता है *लैसत-उल-नसारा अला शेइन* और नसारा की इस बात में तसदीक़ करता है *लैसत-उल-यहूद अला शेइन* जब इस शख़्स ने ये पुर मग़्ज़ और मसकत जवाब सुना तो खड़ा हुआ। और हज़रत इमाम साहब के सर मुबारक का बोसा दिया। और कहा के मैं क़सम खा के गवाही देता हूँ के आप हक़ पर हैं। (जवाहर-उल-बयान फी तर्जुमत-उल-ख़ैरात अलहस्सान, सफ़ा 48)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह को खुदा तआला ने दीन की ऐसी समझ अता फ़रमाई थी के बड़े बड़े मुश्किल मसायल जिनको कोई हल नहीं कर सकता था आप पल भर में हल कर लेते थे और आपकी इस *तफक़्क़ा फिद्दीन* का लोहा अग़यार भी मानते थे।

हिकायत नम्बर (372) ज़बरदस्त फ़रैब

हमारे इमाम हम्मा हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

के बाज़ हासिदों ने एक औरत को फिसला कर इस बात पर राज़ी कर लिया के वो किसी तरीक़ा से हज़रत इमाम आज़म पर तोहमत लगाए। चुनाँचे वो औरत एक रात इमाम साहब के पास आई और कहने लगी के मेरा ख़ाविंद सख़्त बीमार है और वो आपके रूबरू कुछ वसीयत करना चाहता है। आप मेरे साथ मेरे घर चलिए। इमाम साहब चल पड़े। आप जब उसके घर पहुँचे तो उसने सब दरवाज़े बन्द कर लिए और शौर मचाना शुरू कर दिया के अबु हनीफा ने तनहाई में मुझे सताया है (मआज़ अल्लाह) ये सुनकर हासिदैन इमाम फौरन वहाँ पहुँच गए। और इमाम साहब और उस औरत को ख़लीफा के पास ले गए। ख़लीफा ने इमाम साहब और उस औरत को जेल में बन्द कर दिया और कहा के सुबह फैसला किया जाएगा। इमाम आज़म सारी रात जेल में नफ़िल पढ़ते रहे। वो औरत ये देखकर बड़ी शर्मिंदा हुई और इमाम साहब के क़दमों में गिर गई और असल वाक़ेया अर्ज़ करके माफी मांगने लगी। इमाम साहब ने फ़रमाया। अब तुम यूं करो के दारोग़ा जेल से किसी बहाने इजाज़त लेकर बाहर निकलो और सीधी मेरे घर जाओ और उम्मे हम्माद (ज़ोजा इमाम) को सारा क़िस्सा सुनाओ। और अपनी जगह उसे यहाँ भेज दो। चुनाँचे वो औरत उठी और दारोग़ा जेल से किसी बहाने इजाज़त लेकर बाहर निकली और दिन चढ़ने से पहले ही हज़रत इमाम की ज़ोजा को जेल में भेज दिया। सुबह हुई तो इमाम साहब के जुमला हासिद अदालत में पहुँच गए। ख़लीफा के हुक्म से इमाम साहब और औरत को बुलाया गया और ख़लीफा ने इमाम साहब से कहा।

ख़लीफा:- ऐ अबु हनीफा! क्या आपको एक अजनबीया औरत से बन्द मकान में खलवत जायज़ थी?

इमाम आज़म:- किस औरत के साथ?

ख़लीफा:- ये जो सामने बैठी है।

इमाम आज़म:- उम्मे हम्माद के वालिद को बुलाया जाए (चुनाँचे इमाम साहब के खुस्र को बुलाया गया।)

इमाम आज़म:- (वालिद उम्मे हम्माद की तरफ़ मुख़ातिब होकर) जनाब ज़रा इस औरत का घूंघट उठा कर पहचानिए के ये औरत कौन है?

वालिद हम्माद:- (घूंघट उठा कर देखते ही) ऐ ख़लीफा ये तो मेरी बेटी है। जिसका निकाह अबु हनीफा से हो चुका है। फिर ये हंगामा कैसा?

ये बात सुनते ही हासिदैन इमाम धर लिए गए और सख़्त ज़लील हुए

और हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की इज़्ज़त व अज़मत के नारे बुलंद हुए। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 83)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के हासिद पहले भी थे। और अब भी हैं। और वो नाकाम पहले भी होते रहे और अब भी होते हैं।

हिकायत नम्बर(373) इमाम मालिक व इमाम आज़म का मुकालमा

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक दिन हज़रत इमाम मालिक रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के दर्स में तशरीफ़ ले गए। मगर हज़रत इमाम मालिक ने आपको पहचाना नहीं। और अपने असहाब के सामने एक मसले पेश किया। जिसका हज़रत इमाम आज़म ने बड़ी मुतानत के साथ जवाब दे दिया। हज़रत इमाम मालिक रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने आँख उठा कर आपकी तरफ़ देखा और फ़रमाया। ये शख़्स कहाँ से आया है? हज़रत इमाम आज़म ने खुद ही फ़रमाया जनाब मैं इराक़ से आया हूँ। इमाम मालिक न फ़रमाया। निफाक़ व शिक़ाक़ के शहर वालों में से? इमाम आज़म ने फ़रमाया। क्या मुझे इजाज़त है के क़ुरआन मजीद से कुछ पढ़ूं? फ़रमाया हाँ! हाँ!! ज़रूर पढ़ो। हज़रत इमाम आज़म ने ये आयत पढ़ी।

व मिम्मन होलाकुम् मिनल आराबी मुनाफिक़ूना व मिन अहलिल इराक़ी मराज़ू अलान्निफाक़ी हज़रत इमाम आज़म ने अहले अलमदीना की जगह अहले अलइरारक़ दानिसता पढ़ा और उससे आपकी ग़र्ज़ इमामे मालिक पर इलज़ाम क़ायम करना था। इमाम मालिक ये सुन कर झट बोल उठे। के क़ुरआन में यूं तो नहीं आया। इमाम साहब ने फ़रमाया। फिर किस तरह आया है? फ़रमाया। असल आयत यूं है *अहलिल मदीनातिल मराज़ू अलान्निफाक़ी* इमाम आज़म ने फ़रमाया। खुदा का शुक्र है के उसने आप पर खुद इसी बात का हुक्म फ़रमाया जिसकी निसबत मेरी तरफ़ की गई थी। ये कहकर आप झट पट इस मजलिस से निकल आए। इमाम मालिक को जब ये मालूम हुआ के वो इमाम अबु हनीफा थे तो आपने उन्हें बुलाया और बड़ी इज़्ज़त व तकरीम से पेश आए। (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 137, जिल्द 2)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह को अल्लाह तआला

ने हाज़िर जवाबी का एक ख़ास मल्का अता फ़रमाया था। और बड़े बडे मोहद्दिस व इमाम भी आपकी इज़्ज़त करते थे।

हिकायत नम्बर(374) दुल्हनों की तबदीली

एक शख़्स ने अपने दो बेटों का निकाह दूसरे शख़्स की दो बेटियों से किया। और दूसरे रोज़ दावत वलीमा में उलमा को भी मदऊ किया। हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह भी तशरीफ़ ले गए। उन बेटों का बाप बड़ी परेशानी के आलम में मकान से बाहर निकला और अर्ज़ करने लगा। हम लोग बड़ी मुसीबत में पड़ गए। रात ग़ल्ती से दुल्हनें बदल गईं। बड़े की दुल्हन छोटे के कमरे में और छोटे की बड़े के कमरे में ग़ल्ती से चली गई। सुबह हुई तो इस ग़ल्ती का इल्म हुआ। फ़रमाइये अब क्या हो? हज़रत सफयान ने कहा। कोई मुज़ायक़ा नहीं। ये वती बिलशुबह है। दोनों भाईयों पर सोहबत की वजह से मेहर वाजिब हो गया और आज दोनों बहनें अपने अपने शौहरों के पास चली जायें। हज़रत इमाम साहब ख़ामोश थे। मसअर ने आप से कहा। आप फ़रमाईये। सफ्यान ने कहा। इसके सिवा और क्या कहेंगे। हज़रत इमाम साहब ने फ़रमाया के मेरे पास दोनों लड़कों को लाओ। चुनाँचे दोनों लड़के लाए गए। आपने हर एक से पूछा। के रात तुम जिस औरत के पास रहे हो तुम को पसंद है। दोनों ने कहा हाँ। आपने फ़रमाया। तुम दोनों अपनी अपनी बीवियों को तलाक़ दो। और जिसके पास जो औरत सोई है वो उसी के साथ शादी कर ले। चुनाँचे उसी जगह उन दोनों ने अपनी अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी और चूंके अपनी बीवी से किसी ने भी सोहबत ना की थी इसलिए इद्दत तो उन पर वाजिब ही ना थी। इसलिए वहीं उनका निकाह भी हो गया। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 86)

सबक़:- हमारे इमम हम्माम की दानाई और दूरबीनी क़ाबिले दाद है। ग़ौर फ़रमाइये के इस मुश्किल सूरते हाल को आपने किस खुश असलूबी से सुलझाया। आपकी यही वो फिक़ह व दानाई है जिसकी बदौलत आपने अल्लाह व रसूल के इर्शादात के मुताबिक़ मसायल शरीया को मुदव्वन फ़रमाया। और आज हम आपकी खुदाद समझ की बदौलत हज़ारों मुश्किल मसायल का हल कुतब फिक़ह में पा लेते हैं फिर किस क़द्र अफसोस है इस शख़्स पर जो बजाए ममनून होने के हज़रत पर ज़बान तान दराज़ करता है।

हिकायत नम्बर(375) रोशन दान

क़ाज़ी इब्ने अबी यअला की अदालत में एक शख़्स ने दरख़्वास्त दी। के अपनी दीवार में एक रोशनदान बनाना चाहता हूँ लेकिन मेरा पड़ोसी मुझे रोकता है। पड़ोसी को बुलाकर क़ाज़ी साहब ने जब उसकी वजह दरयाफ़्त की तो उसने कुछ ऐसी वजूहात पेश कीं। जिनकी बिना पर क़ाज़ी साहब ने रोशनदान बनाने की इजाज़त ना दी। और फैसला मुद्दा अलिया के हक़ में दे दिया।

हज़रत इमाम को जब ये ख़बर हुई तो आपने उस आदमी से फ़रमाया के अब तुम अपनी दीवार गिरानी की दरख़्वास्त करो। और जिस दीवार में रोशनदान बनाना चाहते हो। उसी को गिरा दो। उस शख़्स ने यही दरख़्वास्त दी। चूंके हर शख़्स को अपनी दीवार गिराने का हक़ है। इसलिए क़ाज़ी साहब ने दीवार गिराने की इजाज़त दे दी। इस शख़्स ने इस इजाज़त के बाद दीवार गिराने का एलान कर दिया।

इस एलान को सुनकर पड़ोसी घबराया हुआ क़ाज़ी साहब के पास आया। और कहा के जनाब अब तो वो दीवार गिरा रहा है। इसलिए उसे रोशनदान बनाने की इजाज़त दे दीजिए के मेरे लिए ये उससे ज़्यादा आसान है। क़ाज़ी साहब समझ गए और खुशी से रोशनदान बनाने की इजाज़त दे दी। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 88)

सबक़:- हमारे इमाम हम्मा मरजअे ख़लायक़ थे और जो भी आता था अपनी मुराद पा लेता था। और आप बेहतरीन तदबीर व हिकमत के मालिक थे।

हिकायत नम्बर(376) तदबीर व हिकमत

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पड़ोस में एक जवान रहता था। उसने हज़रत इमाम साहब से एक रोज़ अर्ज़ किया। हुज़ूर मैं जहाँ शादी करना चाहता हूँ। वो लोग मेरी मुलाक़ात से ज़्यादा मेहर तलब करते हैं। फ़रमाइये मैं क्या करूं? आपने इसतख़ारा किया। और उसे वहाँ शादी करने की इजाज़त दे दी। चुनाँचे उस शख़्स ने शादी कर ली। उसके बाद लड़की वालों ने कुल मेहर अदा किए बग़ैर लड़की रूख़सत करने से इंकार कर दिया। इमाम साहब ने फ़रमाया। तुम किसी से क़र्ज़ हासिल करो। और मेहर अदा कर दो। चुनाँचे उसने कुछ लोगों से क़र्ज़ लिया। मिनजुमला

और क़र्ज़ देने वालों के आप ने भी उसको क़र्ज़ दिया। और उसने मेहर अदा कर दिया। और उन्होंने लड़की की रूख़्सती कर दी। दूसरे रोज़ आपने उससे फ़रमाया। के अब तुम अपने सुसराल वालों से अपना इरादा ज़ाहिर करो के मैं अपनी बीवी को लेकर एक दूरदराज़ जगह जाना चाहता हूँ। चुनाँचे उसने ऐसा ही किया। उसके सुसराल वालों ने ये सुना तो बहुत परेशान हुए और हज़रत इमाम साहब के पास हाज़िर हुए। और उस शख़्स की शिकायत की। और उस बारे में फतवा चाहा। आपने फ़रमाया के शौहर को इख़्तियार है के जहाँ चाहे अपनी बीवी को ले जाए। उन लोगों ने कहा। मगर हम से ये नहीं हो सकता के लड़की हम से जुदा हो जाए। आपने फ़रमाया। तो तुम ने जो कुछ उससे लिया है वो उसे वापस करके उसको राज़ी कर लो। वो लोग इस पर राज़ी हो गए। आपने अपने पड़ोसी जवान को बुलाया। और फ़रमाया के ये लोग इस बात पर राज़ी हैं के जो उन्होंने मेहर तुम से लिया है तुम को वापस कर दें और तुम अपने इरादे को तर्क कर दो। वो शख़्स मौक़े से नाजायज़ फायदा उठाने के लिए बोला मैं तो उससे ज़्यादा लूंगा। इमाम साहब ने जो सुना तो उससे फ़रमाया ये बात मंज़ूर करते हो। या किसी क़र्ज़ ख़्वाह का तुम पर ये दावा। के उसने मेरा क़र्ज़ देना है। और तुम जब तक उसका क़र्ज़ अदा ना कर लो बाहर जा ही ना सको। ये मंज़ूर करते हो? उसने अर्ज़ किया। खुदा के वास्ते हुज़ूर! इस बात का ज़िक्र भी ना फ़रमाइये। वरना वो लोग सुन पायेंगे तो मुझे कुछ भी ना देंगे। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 9 और लतायफ इलमिया किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 143)

सबक़:- हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्हु बहुत बड़े मुदब्बिर और हकीम थे। और आपके नाखुन तदबीर से कई उक़्दे हल हुए। ये भी मालूम हुआ के मेहर शौहर की ताक़त से ज़्यादा मुक़र्रर ना करना चाहिए। उससे कई क़िस्म की क़बाहतें पैदा जो जाती हैं।

हिकायत नम्बर(377) गुमशुदा ख़ज़ाना

इमाम आज़म अलेह अर्रहमत के ज़माने में एक शख़्स अपना कुछ माल ज़मन में दफ़्न करके भूल गया। और इमाम साहब की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और वाक़ेया अर्ज़ किया। हज़रत इमाम साहब ने फ़रमाया। जाओ। आज तुम सारी रात नमाज़ पढ़ते रहो। तुम्हें याद आ जाएगा के माल तुम ने कहाँ दबाया है। चुनाँचे वो शख़्स गया। और रात को उसने नमाज़ पढ़ना शुरू की अभी चन्द रकात ही पढ़ी थीं के उसे याद आ गया के माल कहाँ दबाया

है। बड़ा खुश हुआ और सुबह इमाम साहब की खिदमत में हाज़िर होकर कहने लगा के हुज़ूर! आपने ये तदबीर कैसे इर्शाद फ़रमाई? फ़रमाया। मुझे मालूम था के शैतान तुझे रात भर नमाज़ ना पढ़ने देगा। और तुझे तेरा माल याद दिला देगा। ताके तू नमाज़ छोड़ दे। अफसोस के तूने शुक्रिया में रात भर नमाज़ क्यों ना पढ़ी? (लतायफ इलमिया किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 144, जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 96)

सबक़: इंसान मुश्किल के वक़्त खुदा याद भी बन जाता है। मगर मुश्किल टल जाने के बाद फिर वही बेढंगी चाल इख़्तियार कर लेता है और ये बात बड़ी अफसोसनाक है ऐसा नहीं होना चाहिए।

हिकायत नम्बर(378) दामाद

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के ज़माने में एक शख़्स अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाो तआला अन्ह से बड़ी दुश्मनी रखता था। हत्ता के हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को (मआज़ अल्लाह) यहूदी कहता था। हज़रत इमाम साहब को इस बात का इल्म हुआ तो आपने उसे बुलाया। और उससे फ़रमाया के मैंने तुम्हारी लड़की के लिए एक मुनासिब रिश्ता तलाश किया है। लड़के में हर क़िस्म की खूबी मौजूद है। सिर्फ इतनी सी बात है के वो लड़का यहूदी है। उस शख़्स ने जवाब दिया। के बड़े अफसोस की बात है के आप इतने बड़े इमाम होकर एक मुसलमान लड़की का निकाह ये यहूदी से जायज़ समझते हैं। मैं तो हरगिज़ इस निकाह को जायज़ नहीं समझता। हज़रत इमाम ने फ़रमाया सुबहान अल्लाह! तुम्हारे जायज़ ना समझने से ऐसा है। जब के खुद हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अपनी दो साहबज़ादियों का निकाह एक यहूदी से कर दिया था। वो शख़्स फौरन समझ गया के हज़रत इमाम किस बात की हिदायत फ़रमा रहे हैं चुनाँचे उस वक़्त उसने हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ज़ाते पाक के मुतअल्लिक़ खयाल बातिल से तौबा की। और हज़रत इमाम आज़म की बर्कतों से माला माल हो गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 250)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म बहुत बड़े इमाम और हादी थे और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की शान में कोई गुसताखी दरअसल हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की शान में गुस्ताख़ी है।

हिकायत नम्बर (379) मियाँ बीवी

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्हु के ज़माने में एक मियाँ बीवी में किसी बात पर रंजिश पैदा हुई। तो मियाँ ने गुस्से में कह दिया के मैं तुम से कलाम ना करूंगा। जब तक तू मुझ से पहले कलाम ना करे। बीवी ने भी क़सम खा ली और कहा के खुदा की क़सम मैं भी तुम से कभी कलाम ना करूंगी जब तक तू मुझ से पहले कलाम ना करे। उसके बाद दोनों ने एक दूसरे को बुलाना छोड़ दिया। और बड़ी मुश्किल में पड़ गए। आख़िर मियाँ एक दिन इमाम आज़म के पास हाज़िर हुआ। और सारा वाक़ेया सुनाया। इमाम साहब ने वाक़ेया सुनकर फ़रमाया के जाओ एक दूसरे को राज़ी खुशी बुलाओ। तुम में से कोई हानिस ना होगा। इसलिए के जब तुम ने ये कहा था के मैं तुम से कलाम ना करूंगा। जब तक तू मुझ से कलाम ना करे। तो उसके बाद अगर औरत ख़ामोश रहती तो बेशक तुम हानिस होते। मगर जब उसने ये कहा के खुदा की क़सम मैं भी तुम से कलाम ना करूंगी। जब तक तू मुझ से कलाम ना करे। तो उसने तुम्हारी क़सम के बाद तो तुम से कलाम कर लिया। लिहाज़ा अब तुम उसे बुला सकते हो। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 95)

सबक़:- इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्हु का दिमाग़ वहाँ पहुँचता था जहाँ बड़े बड़े मोहद्दिसों का दिमाग़ भी नहीं पहुँचता।

हिकायत नम्बर (380) चोरों का सुराग़

एक शख़्स के घर में चोर घुस आए। घर वाले की आँख खुल गई और उसने चोरों को देख लिया। चोरों ने इस डर से के ये कहीं सुबह पकड़वा दे। उसे दबोच लिया। और उससे कहा के तुम यूं कहो के अगर मैंने किसी को बताया के ये लोग मे मेरे चोर हैं तो मेरी बीवी पर तीन तलाक़। घर वाला बेचारा मजबूर था। उसने ये हलफ उठा लिया और कह दिया के अगर मैं किसी को बताऊँ के ये लोग मेरे चोर हैं। तो मेरी बीवी पर तीन तलाक़ चोर ये कहलवा कर उसका माल व असबाब ले गए। अब सुबह हुई तो वो शख़्स चोरों को देखता रहा। मगर हलफ बिलतलाक़ की वजह से बोल ना सकता था। आख़िर वो हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्हु के पास आया। और पूरा वाक़ेया अर्ज़ करके कहने लगा के हुज़ूर! चोरों को मैं भी अच्छी तरह पहचानता हूँ। मगर वो ज़ालिम मुझ से ये क़सम ले चुके हैं। के अगर मैं किसी को बताऊँ के ये लोग मेरे चोर हैं। तो मेरी बीवी पर तीन

तलाक़। आपने मोहल्ले के मोअज़्ज़िज़ और ज़ी जाह लोगों को जमा किया और उनसे फ़रमाया के इस बेचारे के मामले में मदद करो और शहर के जितने बदचलन और मुतहिम लोग हैं। उनको एक हवेली में जमा करो। चुनाँचे उन लोगों ने शहर के जिस क़द्र बदचलन लोग थे। उन सब को एक हवेली में जमा किया। और फिर हज़रत इमाम ने उस शख़्स से जिसके घर चोरी हुई थी फ़रमाया के तुम हमारे साथ दरवाज़े पर खड़े हो जाओ। हम एक एक शख़्स को बाहर करते जायेंगे। और तुम से पूछते जायेंगे के क्या ये है तुम्हारा चोर? अगर वो चोर ना हो तुम "नहीं" कहते रहना। और अगर चोर हो तो चुप हो जाना। कुछ मत बताना। क्योंके तुम्हारी क़सम ये है के अगर मैं बताऊँ के ये लोग मेरे चोर हैं तो मेरी बीवी पर तीन तलाक़। उस शख़्स ने कहा। बहुत अच्छा। चुनाँचे हवेली में से एक एक शख़्स को निकाला जाने लगा और हर शख़्स के मुतअल्लिक़ उससे पूछा जाने लगा के क्या ये है तुम्हारा चोर? तो वो सबके मुतअल्लिक़ "नहीं" कहता रहा। और जब उसका चोर आ जाता तो वो चुप कर जाता। और लोग उसे पकड़ लेते। इस तरह सारे चोर पकड़े गए और वो शख़्स तलाक़ की मुश्किल से भी बच गया। (लतायफ इलमिया किताब-उल-अज़किया, इमाम इब्ने जोज़ी, सफ़ा 138)

सबक़:- हमारे इमाम हम्माम को अल्लाह ने दीन व दुनिया की बेहतरीन समझ अता फ़रमाई थी। और आप मुश्किल से मुश्किल गुथ्थी पल भर में सुलझा लेते थे।

हिकायत नम्बर(381) चाह किनारा चाह दुरवैश

ख़लीफा मनसूर का हाजिब रबीअ हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का बड़ा दुश्मन था। एक रोज़ हज़रत इमाम आज़म को ख़लीफा ने बुलाया और आप तशरीफ़ ले गए तो रबीअ ने ख़लीफा से कहा के ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! ये अबु हनीफा आपके दादा हज़रत इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की मुख़ालफत करते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास का ये क़ौल था के किसी मामले में हलफ करने वाला अगर इस हलफ से एक या दो दिन बाद भी इंशा अल्लाह कह दे। तो वो हलफ क़ायम नहीं रहता। और इमाम आज़म का ये क़ौल है के हलफ के साथ मुतासल्लन ही इंशाअल्लाह कहे। तो हलफ पर असर अंदाज़ होगा। बाद में मोतबिर ना होगा। इमाम आज़म ने फ़रमाया। ऐ अमीर-उल-मोमिनीन! रबीअ ये चाहता है के आपके लश्कर की गर्दन को आपकी बैत व इताअत से आज़ाद कर दे। मनसूर ने

पूछा। ये कैसे? आपने फ़रमाया के लोग आपके सामने तो हलफ उठा जायेंगे के हम आपकी इताअत करेंगे। और घर जाकर इंशा अल्लाह कह देंगे। और आपकी इताअत से आज़ाद हो जायेंगे। मनसूर सुनकर हंसने लगा और रबीअ से कहा। ऐ रबीअ! अबु हनीफा को कभी ना छेड़ना। फिर जब इमाम साहब बाहर आए तो रबीअ ने आपसे कहा। आज तो आप मुझे मरवाने ही लगे थे। आपने फ़रमाया इब्तिदा तो तुम ही ने की थी। (लतायफ इलमिया किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 140, अलख़ैरात-उल-हस्सान, सफ़ा 101)

सबक़:- हमारे इमाम के बड़े बड़े दुश्मन थे। और आपके साथ दुश्मनी के मुज़ाहरे करते थे। मगर हज़रत इमाम साहब अपनी खुदादाद क़ाबलियत से उनकी दुश्मनी का असर उन्हीं पर लौटा देते थे।

हिकायत नम्बर (382) तूसा का जवाब

अबु जाफर मनसूर के दरबार में हज़रत इमाम को ग़ैर मामूली एज़ाज़ हासिल था। इस सबब से मनसूर के हाशिया नशीन हज़रत इमाम साहब से सख़्त बुग्ज़ रखते थे। और इसी जज़्बे के मातेहत एक दिन अबु अलअब्बास तूसा ने दरबार में हज़रत इमाम से सवाल किया। के अबु हनीफा! बताइये के अगर अमीर-उल-मोमिनीन हम में से किसी को हुक्म दें के फलाँ आदमी की गर्दन मार दो और उसके क़सूर और जुर्म से हम लोग बिलकुल बे ख़बर हैं तो ऐसी सूरत में गर्दन मारनी जायज़ होगी या नहीं?

हज़रत इमाम बरजस्ता फ़रमाया के मैं तुम से पूछता हूँ के अमीर-उल-मोमिनीन सही हुक्म देते हैं या ग़लत?

तूसा ने कहा। भला अमीर-उल-मामिनीन ग़लत हुक्म क्यों कर दे सकते हैं।

इमाम ने फ़रमाया। फिर सही हुक्म की तामील में तरद्दुद कैसा? बेचारे तूसा इस जवाब से अपना सा मुंह लेकर रह गए। (अलख़ैरात-उल-हस्सान, सफ़ा 101)

सबक़:- अल्लाह वालों के हासिद चाहते हैं के अल्लाह वालों की इज़्ज़त घटे। मगर वो अल्लाह वालों का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। इसी तरह हमारे इमाम के हासिदैन ने बड़ी बड़ी चालें चलीं। मगर हमारे इमाम का कोई ना बिगाड़ सका।

हिकायत नम्बर (383) मोर का चोर

इमाम आज़म अलेह अर्रहमत के एक पड़ोसी का मोर किसी ने चुरा

लिया। वो हज़रत इमाम के पास आया। और मोर की चोरी का ज़िक्र किया। आपने फ़रमाया चुप रहो। फिर मस्जिद में तशरीफ़ लाए। जब सब लोग नमाज़ के लिए जमा हुए तो आप ने फ़रमाया। क्या वो शख़्स जो अपने पड़ोसी का मोर चुराता है। शर्मांता नहीं। के मोर चुराता है और फिर आकर नमाज़ इस हाल में पढ़ता है के उसके सर मोर के पर का असर होता है। ये सुनते ही एक शख़्स ने अपना सर छुपाया। आपने फ़रमाया। तू ही मोर का चोर है। उसे उसका मोर दे दे। उसने उसी वक़्त मोर ला दिया। (अलख़ैरात-उल-हस्सान, सफ़ा 102)

सबक़:- हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक बहुत बड़े सियासत व हिकमत के भी मालिक थे।

हिकायत नम्बर(384) आटा

हज़रत अेमश रहमत-उल्लाह अलेह एक बहुत बड़े मोहद्दिस थे। और इमाम आज़म रहमत-उल्लाह अलेह के हम अस्र। हज़रत अेमश का एक रोज़ अपनी बीवी से झगड़ा हो गया। आप बड़े तेज़ मिज़ाज थे। आपने तेज़ मिज़ाजी में अपनी बीवी से ये कह दिया के तुम ने अगर मुझे घर में आटा ख़त्म हो जाने की ज़बानी ख़बर दी। या लिख कर बताया। या पैग़ाम भेजा। या दूसरे शख़्स से इस बात का ज़िक्र किया। ताके वो मुझ से ज़िक्र करे। या उसके बारे में इशारा किया तो तुझ पर तलाक़! आपकी बीवी इस मामले में बड़ी हैरान हुई। तो किसी ने उनसे कहा। के इमाम अबु हनीफा की ख़िदमत में हाज़िर होकर कोई हल दरयाफ़्त कीजिए। चुनाँचे हज़रत अे[illegible]श की बीवी हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के पास आ[illegible]ई। और सारा वाक़ेया अर्ज़ किया। इमाम साहब ने फ़रमाया। के जब आटे का चर्मी थेला खाली हो जाए तो उस चर्मी थेले को उनके सोते हुए उनके कपड़ों से बाँध देना। जब बैदार होंगे और उसे देखेंगे तो आटे का ख़त्म हो जाना उनको मालूम हो जाएगा। उन्होंने ऐसा ही किया। तो हज़रत अेमश आटे के ख़त्म हो जाने को समझ गए। और कहने लगे। खुदा की क़सम ये हज़रत इमाम अबु हनीफा के हीलों में से है। आप ज़िंदा हैं। तो हम कैसे फलाह पायेंगे। आप तो हमारी औरतों के सामने हम को रूसवा करते हैं। के उनको हमारा आजिज़ होना और हमारी समझ का ज़ौफ दिखाते हैं। (जवाहर-उल-बयान फी तर्जुमात-उल-ख़ैरात अलहस्सान, सफ़ा 102)

सबक़:- हमारे इमाम हम्मा इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला

अन्ह के इल्मी व फ़िक़्ही शिकवा और दबदबे का एत्राफ बड़े बड़े मोहद्दिसों को भी था।

हिकायत नम्बर(385) पियाले का पानी

इमाम आज़म अलेह अर्रहमत के ज़माने में एक शख़्स ने अपनी बीवी से पानी मांगा। वो पियाले में पानी लाई। अभी वो ला ही रही थी के किसी बात पर रंजीदा होकर ख़ाविंद ने कहा। के मैं ये पानी ना पियूंगा। और अगर तू इस पानी को खुद भी पिये तो तुझ पर तलाक़। और अगर उसे किसी दूसरे को पीने के लिए दे तो भी तुझ पर तलाक़। और अगर उसे बहा दे तो भी तुझ पर तलाक़। वो औरत बेचारी बड़ी हैरान हुई। एक शख़्स हज़रत इमाम साहब के पास आया और ये सूरत बयान की। आपने फ़रमाया। फ़ौरन जाओ और उस पियाले में कोई कपड़ा डाल कर पानी को उस कपड़े में जज़्ब करके उसे धूप में सुखा दो इस तरह तलाक़ ना पड़ेगी। (अलख़ैरात अलहस्सान, सफ़ा 104)

सबक़:- परवरदिगारे आलम ने हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को अपने फ़ज़्लो करम से एक ख़ास समझ अता फ़रमाई थी। जिसकी बदौलत आप ऐसे ऐसे मसायल को जिनकी तेह तक आज कोई बड़े से बड़ा फलसफी भी नहीं पहुँच सकता। पल भर में हल फ़रमा लेते थे। फिर अगर कोई शख़्स जिसे "दो दूनी चार" भी ना आता हो। हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह के इल्मो फ़ज़्ल पर एत्राज़ करे तो किस क़द्र अफसोस का मुक़ाम है?

हिकायत नम्बर(386) मुर्ग़ी का अंडा

इमाम आज़म अलेह अर्रहमत के ज़माने में एक शख़्स ने क़सम खाई के अंडा ना खाऊँगा। फिर क़सम खाई के मेरे दोसत की आसतीन में जो चीज़ है वो ज़रूर खाऊँगा। और दोस्त ने आसतीन से जब वो चीज़ निकाली तो वो अंडा ही था। अब वो हैरान हुआ और हज़रत इमाम साहब के पास आया। इमाम साहब ने फ़रमाया। ये अंडा किसी मुर्ग़ी के नीचे रख दो। जब बच्चा हो जाए तो वो बच्चा पका कर खा लो। क़सम ना टूटेगी। (अलख़ैरात अलहस्सान, सफ़ा 105)

सबक़:- हज़रत इमाम आज़म की हर बात सुनकर इल्मी इनबिसात पैदा होता है और अक़्ले सलीम का मालिक पुकार उठता है के इमाम आज़म वाक़ई इमाम आज़म हैं। रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह

हिकायत नम्बर(387) अंगूठी का नक़्श

एक शख़्स के पास एक अंगूठी का नगीना था। जिस पर किसी दूसरे शख़्स का नाम "अता बिन अब्दुल्लाह" नक़्श था। वो सारा नाम इस पर से मिटाना सख़्त मुश्किल था। उसने हज़रत इमाम साहब से मशवरा लिया तो आपने फ़रमाया। तुम "बिन" का सर गोल बना दो और "बे" के नुक़्ते को ज़ेर बना लो। और अब्दुल्लाह का नुक़्ता नीचे से ऊपर ले आओ। तो "अता मिन इंदल्लाह" हो जाएगा। (अलख़ैरात अलहस्सान, सफ़ा 26)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का इल्म व फ़ज़्ल भी "अता मिन इंदल्लाह" था और आप से किसी क़िस्म की पर खाश रखना खुदा की नाराज़गी का मौजिब है।

हिकायत नम्बर(388) ग़लत परोपागंडा

एक दफ़ा हज़रत इमाम साहब रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह मदीने मुनव्वरह हाज़िर हुए तो हज़रत अली मुर्तज़ा करमल्लाहो वज्ह के पोते हज़रत मोहम्मद हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत मोहम्मद हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने फ़रमाया। आप ही वो इमाम हैं जिनके मुतअल्लिक़ मैंने सुना है के वो मेरे जद्दे अमजद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की हदीस की अपने क़यास के साथ मुख़ालफ़त करते हैं। इमाम आज़म अलेह अरर्हमत ने फ़रमाया मआज़ अल्लाह! ये कैसे हो सकता है। आप तशरीफ़ रखें। इसलिए के आपके लिए अज़मत व तौक़ीर है। जिस तरह आपके जद्दे अमजद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लिए अज़मत व तौक़ीर है। हज़रत मोहम्मद बिन हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तशरीफ़ फ़रमा हुए। इमाम आज़म ने फ़रमाया। फ़रमाइये! मर्द ज़ईफ या औरत! उन्होंने फ़रमाया औरत! फ़रमाया औरत का हिस्सा किस क़द्र है? उन्होंने फ़रमाया। मर्द के हिस्से का आधा। इमाम साहब ने फ़रमाया अगर मैं क़यास को तरजीह देता तो उसके बरअक्स हुक्म देता। और यूं कहता के मर्द चूंके क़ौमी है इसलिए उसका हिस्सा कम हो और जो ज़ईफ है उसका हिस्सा ज़्यादा हो।

फिर पूछा! नमाज़ अफ़्ज़ल है या रोज़ा? उन्होंने फ़रमाया। नमाज़! फ़रमाया! नमाज़! फ़रमाया और हायज़ा औरत जब पाक हो जाए तो वो नमाज़ें क़ज़ा पढ़ेगी। या क़ज़ा रोज़े रखेगी? उन्होंने फ़रमाया। रोज़ों की क़ज़ा

करेगी। आपने फ़रमाया। अगर मैं क़यास से काम लेता तो हायज़ा औरत को नमाज़ की क़ज़ा का हुक्म देता ना के रोज़े का।

फिर आपने पूछा। के फ़रमाइये पैशाब ज़्यादा नजिस है या मनी? उन्होंने फ़रमाया। पैशाब! आपने फ़रमाया। अगर मैं क़यास को मुक़द्दम करता तो पैशाब निकलने से ग़ुस्ल वाजिब बताता। ना के मनी निकलने से।

हज़रत इमाम मोहम्मद बिन हसन रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने आपकी पैशानी चूम ली और फ़रमाया मालूम हो गया के आपके मुतअल्लिक़ ग़लत खयाल फैलाया गया है। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 106)

सबक़:- मालूम हुआ के जो लोग ये कहते हैं के इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हदीस के मुक़ाबले में राय पर चलते और चलाते हैं और हदीस पर क़यास को तरजीह देते हैं वो बिलकुल ग़लत कहते हैं। और ये मुख़ालफीन का महज़ एक ग़लत परोपागंडा है। वरना हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का हर इर्शाद क़ुरआन व हदीस के पेशे नज़र। और आपका हर मसला क़ुरआन व हदीस ही से मुसतनबित है।

हिकायत नम्बर(389) दीनारों भरी थेली

एक शख़्स मरने लगा। तो उसने अपने एक दोस्त को बुलाया। और एक थेली उसके सपुर्द की। जिसमें हज़ार दीनार थे। और कहा के मेरा लड़का जब बड़ा हो जाए तो इस थेली से "जो तू पसंद करे" उसे दे देना। ये कह कर वो मर गया और जब उसका लड़का बड़ा हुआ तो उस शख़्स ने उसे ख़ाली थेली दे दी और हज़ार दीनार खुद रख लिए। लड़का हज़रत इमाम आज़म अलेह अर्रहमत के पास पहुँचा और सारा वाक़ेया सुनाया। आपने उस शख़्स को बुलाया। और फ़रमाया के हज़ार दीनार इसके हवाले कर दो। इसलिए के उसके वालिद ने मरते दम तुझ से ये कहा था के इस थेली से "जो तू पसंद करे" उसे दे देना। और इस थेली से तुम ने दीनारों ही को पसंद किया है। इसी लिए तुम ने उन्हें रख लिया है। लिहाज़ा दीनार जो तूने पसंद किए हैं।

हस्बे वसीयत इसे दे दो। चुनाँचे नाचार उसे वो दीनार देने पड़े। (जवाहर-उल-बयान, सफ़ा 108)

सबक़:- अमानत में खयानत ना करना चाहिए। और यतीमों का माल दबाना बड़े ज़ुल्म की बात है और ये भी मालूम हुआ के हमारे इमाम अलेह

अर्रहमा बड़े ही दाना और मुश्किलात को हल फ़रमा देने वाले थे।

हिकायत नम्बर (390) एक आराबी और सत्तू

हज़रत इमाम आज़म अलेह अर्रहमत एक मर्तबा कहीं तशरीफ़ लिए जा रहे थे असना राह में आपको पानी की ज़रूरत पड़ी। इतने में एक आराबी नज़र आया। जिसके पास पानी का एक मशकीज़ा था। आपने उससे पानी तलब फ़रमाया। तो उसने इंकार किया। और कहा। पाँच दरहम में दे दूंगा। हज़रत इमाम साहब ने पाँच दरहम देकर मशकीज़ा उससे ले लिया और आपके पास सत्तू थे। आपने उस आराबी से फ़रमाया के अगर सत्तू खाना हो तो शौक़ से खाओ। उस आराबी ने वो सत्तू ज़िन में रोग़ने ज़ैतून भी मिला हुआ था। पेट भर के खा लिए। अब उसको प्यास लगी। तो उसने कहा के एक पियाला पानी दीजिए। आपने फ़रमाया पाँच दरहम में मिलेगा। उससे कम नहीं होगा उस बेचारे को प्यास लगी थी। नाचार उसने पाँच दरम देकर एक पियाला पानी पी लिया और इमाम साहब को अपने दरहम भी वापस मिल गए और उनके पास बाक़ी भी रह गया। (लतायफ इलमिया किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 140)

सबक़:- खुदा ने जिसे इल्मो हिकमत अता फ़रमाई हो वो अपनी हकीमाना तदाबीर से मुश्किलात पर क़ाबू पा लेता है।

हिकायत नम्बर (391) खारिजी को जवाब

खारिजियों को शोरिश के ज़माने में हज़रत इमाम भी गिरफ़्तार हुए। ज़ोहाक खारिजी के सामने लाए गए। ज़ोहाक ने अपने उसूल के मुताबिक़ हज़रत इमाम से तौबा करने को कहा।

हज़रत इमाम ने फ़रमाया *"अना तायबुन मिन कुल्लि कुफरिन"* यानी मैं हर क़िस्म के कुफ़्र से तायब हूँ। ये सुनकर हज़रत को खारिजियों ने छोड़ दिया। लेकिन किसी को फिर शरारत सूझी और उसने ज़ोहाक को बावर कराया के अबु हनीफा के नज़दीक तुम्हारे अक़ायद कुफ़्र हैं और उन्होंने उसी से तौबा की है। दोबारा फिर गिरफ़्तार करके लाए गए। ज़ोहाक ने दरयाफ़्त किया के शेख! हम ने सुना है के जिस कुफ़्र से तुम ने तौबा की है वो हमारे अक़ायद हैं।

ख़ारिजी सिर्फ क़ुरआन को हुक्म मानते थे और उनका अक़ीदा था के हर चीज़ से अलग होकर सिर्फ क़ुरआन से फैसला तलब करना चाहिए।

हज़रत इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह ने जब देखा के इन जाहिलों से पीछा छूटना मुश्किल है तो क़ुरआन ही से उन पर एत्राज़ फ़रमाया और ज़ोहाक से पूछा के जो कुछ तुम कह रहे हो वो मेह ज़न और गुमान है या हक़ीक़त को भी उसमें दख़्ल है?

ज़ोहाक ने कहा। सिर्फ़ गुमान और ज़न की बिना पर कह रहा हूँ।

हज़रत इमाम ने बरजस्ता आयत तिलावत फ़रमाई के *इन्ना बाज़ाज़्ज़न्नी इसमुन* यानी बाज़ ज़न (बदगुमानी) गुनाह होता है और तुम गुनाह के इरतिकाब को कुफ्र समझते हो लिहाज़ा इस गुनाह के इरतिकाब पर तुम खुद तौबा करो। ख़ारिजी लीडर ने ये सुन कर कहा के तुम सच कहते हो और मैं तौबा करता हूँ।" (जवाहर-उल-बयान सफ़ा 107)

सबक़:- हमारे इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह इस क़द्र इल्मो फ़ज़्ल के मालिक थे के कोई बद मज़हब और दुश्मन दीन आपका मुक़ाबला ना कर सकता था और ये भी मालूम हुआ के जिस तरह अहले हक़ को अहले बातिल से तकलीफ़ें पहुँचतीं रहीं। इसी तरह हमारे इमाम रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को भी अहले बातिल ने बहुत सताया।

हिकायत नम्बर (392) सेब का राज़

हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने असहाब के साथ मस्जिद में बैठे थे के एक औरत मस्जिद में दाखिल हुई और उसके हाथ में एक सेब पकड़ा था। जिसका एक हिस्सा सुर्ख और एक हिस्सा ज़र्द था। उस औरत ने वो सेब हज़रत इमाम साहब के आगे रख दिया। और मुंह से कुछ ना बोली। हज़रत इमाम साहब ने इस सेब को चीर कर उसके दो टुकड़े कर दिए और औरत को दे दिए। औरत वो लेकर चली गई।

हाज़रीन इस उक़्दे को ना समझे और उन्होंने हज़रत इमाम साहब से पूछा के ये सेब का राज़ क्या है? आपने फ़रमाया। इस औरत ने मुझ से एक मसला पूछा था और मैंने उसे जवाब दे दिया। हाज़रीन और भी मुताज्जिब हुए और वो मसला दरयाफ़्त किया। तो आपने फ़रमाया के उसने सेब मेरे सामने रखकर मुझ से पूछा के उसे जो खून आता है उसका रंग कभी सेब के एक हिस्से की तरह सुर्ख और कभी दूसरे हिस्से की तरह ज़र्द होता है तो क्या ये खून हैज़ ही है? मैंने सेब को चीर कर उसे ये जवाब दिया के जब तक सेब के अन्दरूनी हिस्से की तरह उसका रंग बिलकुल सफेद ना होगा। वो खून

हैज़ ही है। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 119)

सबक़:- पहले ज़माने की औरतें भी बड़ी दाना थीं और मसायल शरीआ पूछती रहती थीं एक ये ज़माना भी है के औरतों को अपने मख़सूस मसायल का इल्म ही नहीं और ना उसे ज़रूरी समझती हैं

हिकायत नम्बर(393) मैदाने हश्र

हज़रत नवफ़्फ़िल बिन हयान रहमत-उल्लाहै अलेह फ़रमाते हैं के जब हज़रत इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह का विसाल हो गया तो मैंने ख़्वाब देखा के मैदाने क़यामत है और सारी मख़लूक़ हिसाब गाह में खड़ी है और मैंने देखा के हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम होज़े कोसर पर तशरीफ़ फ़रमा हैं और आप सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के दायें बायें बड़े बड़े नूरानी लोग खड़े हैं और मैंने एक बूढ़े शख़्स को देखा जो बहुत बड़े साहबे जमाल थे। और उनकी दाढ़ी और सर सफेद था और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दाईं तरफ़ खड़े थे और मैंने हज़रत इमाम अबु हनीफा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को भी देखा। जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के क़रीब ही खड़े थे। मैंने हज़रत इमाम साहब की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ किया और अर्ज़ किया मुझे पानी अता फ़रमाईये हज़रत इमाम साहब ने फ़रमाया। जब तक रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम इजाज़त ना देंगे मैं ना दूंगा। फिर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया। उसे पानी दे दो। हज़रत इमाम साहब ने एक पियाला में मुझे पानी दिया। मैंने पानी पिया और फिर हज़रत इमाम साहब से पूछा के ये जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की दाईं तरफ़ पीर मर्द साहबे जमाल हैं ये कौन बुज़ुर्ग हैं? इमाम साहब ने फ़रमाया। ये हज़रत इब्राहीम ख़लील-उल्लाह हैं और बाईं तरफ़ हज़रत अबु बक्र सिद्दिक़ अक्बर रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह हैं। इसी तरह मैं पूछता रहा और इमाम साहब बताते रहे। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 253) मुतरजिम सफ़ा 129

सबक़:- इमाम आज़म रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की क़ुर्बत हासिल है और आपकी फिक़ा एक ऐसा जामे हिदायत है जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मर्ज़ी के मुताबिक़ हदीस के सर चश्मा-ए-हिदायत से भर कर आपने हमें अता फ़रमाया है।

हिकायत नम्बर(394) हज़रत इमाम शाफई (र०अ०) का ख़्वाब

हज़रत इमाम शाफई रज़ी अल्लाहो अन्ह खुद फ़रमाते हैं के बचपन में मैंने हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम को ख़्वाब में देखा। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मुझ से फ़रमाया। ऐ लड़के! तू कौन है? मैंने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! आपकी उम्मत में से हूँ। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया के क़रीब आ मैं आपके नज़दीक गया तो आपने अपने दहन मुबारक से लुआब मुबारक मेरे मुंह में डाल दिया। फिर फ़रमाया के अब जाओ खुदा तआला तुझ पर फज़्ल व बर्कत फ़रमाए फिर उसके बाद उसी दम हज़रत अली रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह तशरीफ़ लाए और आपने अपनी अंगश्तरी उंगली से उतारी और मेरी उंगली में पहना दी। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 255)

सबक़:- इमाम-उल-मुस्लिमीन हज़रत इमाम शाफई रहमत-उल्लाह अलेह की बहुत बड़ी शान है और ये हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लुआब दहन शरीफ और हज़रत अली अलमुर्तज़ा रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की अंगश्तरी मुबारक की बर्कत है के आप इल्मो फज़्ल के आफताब बनकर चमके और इमाम-उल-मुस्लिमीन होने के शरफ़ से मुशर्रफ हुए।

हिकायत नम्बर(395) ज़हीन बच्चा

हज़रत इमाम शाफई रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह की उम्र शरीफ छः बरस की थी के आप मदरसे जाया करते थे। आपकी वालिदा माजिदा औलाद बनी हाशिम में से थीं और बड़ी आबिदा व ज़ाहिदा थीं लोग अनी अमानतें उनके पास रख जाया करते थे। एक रोज़ दो शख़्स आए और एक संदूक़ बतौर अमानत उनको सोंपा और चले गए। चन्द दिनों के बाद उनमें से एक शख़्स आया और कहने लगा के संदूक़ दे दीजिए। उन्होंने दे दिया। फिर चन्द रोज़ के बाद दूसरा आया और संदूक़ मांगने लगा उन्होंने फ़रमाया के तुम्हारा साथी आया था वो ले गया है। उसने कहा के क्या हम आप से ये ना कहा था के जब तक हम दोनों ना आएँ संदूक़ ना देना। उन्होंने कहा हाँ बेशक तुम ने कहा तो था। उसने कहा फिर आपने उसे क्यों दे दिया? हज़रत इमाम शाफई अलेह अर्रहमत की वालिद परेशान हो गईं और सोचने लगीं के अब क्या

किया जाए? इतने में हज़रत इमाम शाफई अलेह अर्रहमा मदरसे से तशरीफ़ ले आए। आपने वालिदा साहिबा से पूछा के आप परेशान क्यों हैं? उन्होंने सारा क़िस्सा सुनाया हज़रत इमाम अलेह अर्रहमा ने फ़रमाया कुछ परवा नहीं है। मुद्दई कहाँ है? ताके मैं उसको जवाब दूं। मुद्दई जो वहीं मौजूद था। बोला मैं हूँ हज़रत इमाम शाफई ने फ़रमाय के तुम्हारा संदूक़ मौजूद है। अपने साथी को बुला लाओ ताके संदूक़ तुम दोनों के हवाले किया जाए। वो शख़्स हैरान हुआ और लाजवाब होकर वापस चला गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 255)

सबक़:- हज़रत इमाम शाफई अलेह अर्रहमत बचपन ही में बड़े दाना, और इल्मो फज़्ल के मालि थे। फिर बड़े होकर क्यों ना आप इमाम-उल-मुस्लिमीन बनते।

हिकायत नम्बर(396) हारून रशीद के तख़्त पर

एक रात हारून रशीद और उसकी बीवी ज़ुबैदा में कुछ बहस व तकरात हो गई। इत्तिफाकन ज़ुबैबा के मुंह से निकल गया। ऐ दोज़ख़ी! हारून अलरशीद ने ये सुनकर कहा के अगर मैं दोज़ख़ी हूँ तो तुझे तलाक़ है और उसी वक़्त एक दूसरे से अलग हो गए। लेकिन चूंके हारून अलरशीद को ज़ुबैदा से बड़ी मोहब्बत थी। इसलिए उसकी जुदाई से बहुत बेचैन हुआ और ज़ुमला उलमा व फज़्ला को जमा करके इस मसले का फतवा चाहा। मगर किसी ने इसका जवाब ना दिया और सब ने मुत्तफिक़ होकर ये कहा के इस बात का ख़ुदा ही को इल्म है के हारून अलरशीद दोज़ख़ी है या बहिश्ती। एक लड़का उन उलमा की जमात से खड़ा हुआ और कहने लगा अगर इजाज़त हो तो मैं जवाब दूं। सब लोग हैरान रह गए के जब इतने बड़े बड़े उलमा इस मसले का जवाब में आजिज़ हैं। फिर ये लड़का क्या जवाब देगा। हारून अलरशीद ने उस लड़के को अपने रूबरू बुलाया ओर कहा के तुम ही जवाब दो। उस लड़के ने कहा के आपको मेरी ज़रूरत है या मुझे आपकी? हारून अलरशीद ने कहा के मुझे तुम्हारी ज़रूरत है। ये सुनकर उस लड़के ने कह के फिर आप तख़्त से नीचे उतर आईये और मुझे तख़्त पर बैठ कर जवाब देने दीजिए। इसलिए के उलमा का रूत्बा बुलंदतर है हारून अल रशीद ने कहा। बहुत अच्छा और तख़्त से नीचे उतर आया और वो लड़का तख़्त पर बैठ गया और तख़्त पर बैठकर हारून अलरशीद से मुख़ातिब हुआ के पहले आप मरे एक सवाल का जवाब दें के क्या आप कभी किसी गुनाह

से बावजूद उसकी क़ुद्रत रखने के सिर्फ़ खुदा के ख़ौफ की वजह से गुनाह करने से बाज़ भी रहा हूँ, ये सुनकर लड़के ने कहा मैं फतवा देता हूँ के आप दोज़ख़ी नहीं बल्के अहले बहिश्त में से हैं। सारे उल्मा पुकार उठे के किस दलील से? उस लड़के ने जवाब दिया के क़ुरआन मजीद की इस आयत से के अल्लाह तआला फ़रमाता है: *व अम्मा मन ख़ाफा मक़ामा रब्बीही व नहा अन्ननफ़्सा अनिल हवा फइन्नल जन्नाता हियल मावा* यानी जिस शख़्स ने के गुनाह का क़सद किया और फिर खुद के ख़ौफ से उससे बाज़ रहा, पस उसकी जगह जन्नत है।"

सारे उल्मा ये सुनकर वाह वाह करने लगे और कहा के जो लड़कपन में इस क़द्र फ़ेहमो ज़का का मालिक है वो बड़ा होकर नहीं मालूम किस दर्जे का आलिम होगा। ये लड़का कौन था? ये हज़रत इमाम शाफई रहमत-उल्लाह अलेह थे। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 256)

सबक़:- जिन्होंने बड़े होकर इल्मो फज़्ल का ताजदार बनना हो। उनका बचपन भी दूसरे से मुमताज़ व अफ़्ज़ल होता है। फिर जो लोग बड़े होकर भी दीन से कोई मस ना रखे और अगर इमामाने दीन की मुबारक शानों में कोई गुस्ताख़ी करें तो किस क़द्र जहालत की बात है।

हिकायत नम्बर (397) रहबानी

सुलतान रोम जो इसाई था। हर साल हारून अलरशीद को कुछ माल भेजा करता था। उसने एक साल ये हीला किया के चन्द रहबानियों को भेज कर ये कहला भेजा के इन इसाईयों रहबानियों से अगर आपके उल्मा बहस करें और उन पर ग़ालिब आ जाएँ तो माले मुक़र्ररा बराबर देता रहूंगा। वरना नहीं। चुनाँचे जब ये रहबानी हारून अलरशीद के पास पहुँचे। तो हारून अलरशीद ने दजले के क़िनारे पर उल्मा इस्लाम को जमा किया और उन रहबानियों को भी वहाँ बुलाया। इतने में हज़रत इमाम शाफई रहमत-उल्लाह अलेह भी तशरीफ़ ले आए और हारून अलरशीद ने आप से इलतिजा की के इन रहबानियों से आप बहस करें। हज़रत इमाम शाफई अलेह अर्रहमत ने ये सुनकर अपना मुसल्ला कंधे से उतार कर दरया के पानी के ऊपर बिछा दिया और उस पर जा बैठे और फ़रमाया के जो शख़्स हम से बहस करना चाहे वो यहाँ आकर हम से बहस करे। राहिबों ने जब ये हाल देखा तो सबके सब मुसलमान हो गए। सुलतान रोम को जब ये ख़बर पहुँची के वो सारे राहिब इमाम शाफई के हाथ पर मुसलमान हो गए हैं तो कहने लगा। शुक्र है के वो

इमाम यहाँ नहीं आया। अगर यहाँ आ जाता तो सारा रोम मुसलमान हो जाता। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 258)

सबक़:- अल्लाह वालों की बहुत बड़ी शान होती है। और अनासिर अरबअे भी उनके मातेहत होते हैं और उनके फ़यूज़ व बर्कात की ये शान है के उनकी अज़मत शान को देखकर ही कई लोग मुसलमान हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर(398) फिरासत

हज़रत इमाम शाफई अलेह अर्रहमत और हज़रत इमाम अहमद रहमत-उल्लाह अलेह जामअे मस्जिद में बैठे थे के एक शख़्स आया और नमाज़ पढ़ने लगा। हज़रत इमाम अहमद ने उसे देखकर फ़रमाया के ये शख़्स लोहार है हज़रत इमाम शाफई ने फ़रमाया के नहीं ये शख़्स तरखान है। फिर जब वो शख़्स नमाज़ पढ़ चुका तो उससे पूछा गया के तुम क्या काम करते हो तो वो बोला के मैं पिछले साल लोहे का काम करता था और आज कल लकड़ी का काम करता हूँ। नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 117, जिल्द:1)

सबक़:- अल्लाह वालों के मुंह से जो बात निकलती है। सच्ची ही होती है।

हिकायत नम्बर(399) विरासत अंबिया

एक बुज़ुर्ग हज़रत रबीअ ने एक रात ख़्वाब में देखा के हज़रत आदम अलेहिस्सलाम का इन्तिक़ाल हो गया है। और लोग आपका जनाज़ा मुबारक उठा रहे हैं। हज़रत रबीअ ये ख़्वाब देखकर जाग पड़े और सुबह एक ताबीर बताने वाले से इस ख़्वाब की ताबीर पूछी तो उसने बताया के इस वक़्त जो ज़माना भी में बहुत बड़ा आलिम है उसका इन्तिक़ाल हो जाएगा क्योंके *वअल्लमा आदामा अलअसमआ कल्लाहा* के मुताबिक़ इल्म ख़ासियत हज़रत आदम अलेहिस्सलाम की है, चुनाँचे चन्द दिनों के बाद हज़रत इमाम शाफई अलेह अर्रहमा का इन्तिक़ाल हो गया। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 259)

सबक़:- इमामाने दीन अंबिया इक्राम अलेहिम अस्सलाम के वारिस हैं और उनके फ़यूज़ व बर्कात अंबिया इक्राम अलेहिम अस्सलाम ही के उलूम का सदक़ा है। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत इमाम शाफई रहमत-उल्लाह अलेह अपने ज़माने में बड़े आलिम थे।

हिकायत नम्बर(400) इमाम-उल-मुस्लिमीन हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल(र०अ०)

बग़दाद में जब मोतज़लियों का ग़लबा हुआ। तो उन्होंने चाहा के हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमत-उल्लाह अलेह से ज़बरदस्ती कहलायें के कुरआन मख़लूक़ है। चुनाँचे मुख़तलिफ साज़िशों के ज़रिये वो आपको ख़लीफा के दरबारे में ले गए, दरबार के एक दरवाज़े पर एक सिपाही खड़ा था। हज़रत इमाम रहमत-उल्लाह अलेह जब उस दरवाज़े से गुज़रे तो उस सिपाही न कहा ऐ इमाम-उल-मुस्लिमीन कुरआन को मख़लूक़ हर गिज़ ना कहना और मर्दों की तरह रहना देखिये मैं एक दफा चोरी के इलज़ाम में गिरफ्तार हुआ था और हज़ार बैद मुझ पर पड़े लेकिन मैंने इक़रार ना किया था और इंकार पर ही डटा रहा था। बिलआख़िर मैं रिहा हो गया। और अपने दरोग़ व नारास्ती पर कामयाब हो गया तो जब मैं हक़ पर ना था और सब्र की बदौलत कामयाब हो गया फिर आप जब सरासर हक़ पर हैं। भला सब्र से कामयाब क्यों ना होंगे, हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमत-उल्लाह अलेह उसकी बात सुनकर बड़े मुतास्सिर हुए। और आपने फ़रमाया जज़ाकल्लाह! मैं तुम्हारी ये बात खूब याद रखूंगा और हर गिज़ हक़ को ना छोड़ूंगा। चुनाँचे आपको दरबार में पेश किया गया और आपको मजबूर किया गया के कुरआन को मख़लूक़ कहें मगर आपने ना कहा हत्ता के आपको शिकंजे में कसा गया और हज़ार कोड़े मारे गए। मगर आप ने हर दफा ये कहा के कुरआन मख़लूक़ नहीं है। इसी असना में जब के आपको शिकंजे में कसा हुआ था आपका इज़ारबंद खुल गया आपके दोनों हाथ बंधे हुए थे। सब ने देखा के दो हाथ ग़ैब से ज़ाहिर हुए और उन्होंने आपका इज़ारबंद बाँध दिया। आपकी ये करामत देखकर आपको छोड़ दिया गया। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 261)

सबक़:- हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमत-उल्लाह अलेह इमाम-उल-मुस्लिमीन थे। और हक़ के अलमबरदार दुश्मनों ने आपको बेहद सताया और तकलीफें दीं मगर आपने सब्रो शुक्र से काम लिया और मसलक हक़ को नहीं छोड़ा और आपने कुरआने पाक की इज़्ज़त की ख़ातिर अपनी जान पर सख़्तियाँ बर्दाश्त कीं मालूम हुआ के इमामाने दीन के दिलों में कुरआन व हदीस की बड़ी वक़त और ताज़ीम थी।

हिकायत नम्बर (401) ताज़ीम और सिला

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह एक बार एक नहर के क़िनारे वज़ू कर रहे थे और कोई दूसरा शख़्स आप से ऊपर की जानिब बुलंदी पर वज़ू कर रहा था। उसने जब हज़रत इमाम को वज़ू करते देखा। तो वहाँ से उठ कर ताज़ीम के लिहाज़ से नीचे उतर आया और आपसे नीचे उतर कर वज़ू करने लगा। जब वो शख़्स मर गया। तो किसी ने उसे ख़्वाब में देखा और पूछा के खुदा तआला ने तेरे साथ क्या सलूक किया। तो उसने जवाब दिया के हक़ तआला ने उस ताज़ीम का सिले में जो मैंने हज़रत इमाम अहमद रहमत-उल्लाह अलेह के वज़ू करते वक़्त उनकी, की थी। मुझ पर रहमत फ़रमाई है और मेरी निजात फ़रमा दी है। (तज़करत-उल-औलिया सफ़ा 262)

सबक़:- अल्लाह वालों की ताज़ीम से अल्लाह खुश होता है। लिहाज़ा उन अल्लाह वालों की बे अदबी व गुस्ताख़ी से हर वक़्त डरते रहना चाहिए और हमेशा उनका अदब करना चाहिए।

हिकायत नम्बर (402) ख़मीरी रोटी

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमत-उल्लाह अलेह के साहज़ादे हज़रत सालेह असफहान के क़ाज़ी थे। हज़रत सालेह हर रोज़ दिन को रोज़ा रखते और रात को नफिल पढ़ा करते थे। एक रोज़ हज़रत इमाम अहमद के ख़ादिम ने आपके साहबज़ादे के हाँ से ख़मीर लेकर आपके लिए ख़मीरी रोटी पकाई और जब आपके सामने लाया। तो आपने पूछा के इस रोटी में क्या मिलाया है के ऐसी फूली है। ख़ादिम ने अर्ज़ किया के हुज़ूर! आपके साहबज़ादे के बावरची खाने से मैंने ख़मीर लेकर आटे में मिलाया था। आपने फ़रमाया: वो तो असफहान का क़ाज़ी है ये रोटी अब मेरे खाने के क़ाबिल नहीं। अब मैं इस रोटी को क्या करूंगा। फिर फ़रमाया। जब कोई सायल आए तो उसको दे देना। और साथ ही ये भी कह देना के इसमें ख़मीर तो सालेह के घर का मिला हुआ है और आटा अहमद बिन हंबल का है। अगर तुम्हारा जी चाहे तो ले लो। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 263)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे बड़े मुत्तक़ी और परहैज़गार होते हैं के ज़र्रा भर शक व शुबह की बिना पर भी एहतियात फ़रमाते हैं फिर किस क़द्र अफसोस का मुक़ाम है के हम यक़ीनी ना जायज़ चीज़ों के

भी इस्तेमाल से बाज़ नहीं रहते।

हिकायत नम्बर(403) इल्म व अमल

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमत-उल्लाह अलेह का एक शार्गिद आपके घर आया। हज़रत इमाम साहब ने रात को उसके पास एक लौटा पानी का भर कर रख दिया। सुबह हुई तो आपने देखा के लौटा वैसे का वैसा ही पड़ा हुआ है और पानी खर्च नहीं किया गया। हज़रत इमाम ने फ़रमाया के लौटा वैसे का वैसा ही क्यों रखा हुआ है? शार्गिद ने पूछा हज़रत मैं उसको क्या करता। आपने फ़रमाया के वज़ू करते और रात भर नफिल पढ़ते वरना तूने ये इल्म क्यों सीखा? (तज़्करत-उल-औलिया, सफ़ा 264)

सबक़:- इल्म हासिल करने के बाद जब तक अमल भी ना किया जाए इल्म का कोई फायदा नहीं।

हिकायत नम्बर(404) सोने का पहाड़

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमत-उल्लाह अलेह एक बार किसी बयाबान से गुज़र रहे थे के आप रास्ता भूल गए। आपने बयाबान में एक शख़्स को देखा जो एक गोशे में बैठा हुआ था आपने सोचा के इस शख़्स से रास्ता दरयाफ़्त करूं, चुनाँचे आप उसके पास गए वो शख़्स हज़रत इमाम को देखकर रोने लगा। हज़रत इमाम साहब ने सोचा के शायद ये भूका है आपने इस खयाल से उसे अपने पास से कुछ रोटी देना चाही। वो शख़्स बहुत ख़फा हुआ और कहने लगा। ऐ अहमद बिन हंबल! तू कौन है जो मेरे और खुदा के दरमियान दख़ल देता है। क्या तू खुदा के कामों पर राज़ी नहीं है? इसी लिए तू रास्ता भी भूलता है। हज़रत इमाम अहमद उसके कलाम से बड़े मुतास्सिर हुए और दिल में कहने लगे। इलाही। गोशों में तेरे ऐसे ऐस बन्दे भी पौशीदा हैं। इस शख़्स ने कहा। ऐ अहमद बिन हंबल क्या सोचते हो। उस खुदाऐ पाक के ऐसे ऐसे बन्दे हैं के अगर खुदा तआला को क़सम देकर चाहें तो तमाम ज़मीन और पहाड़ उनके वास्ते सोने के हो जायें। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल ने जो नज़र की। तो तमाम रूऐ ज़मीन और पहाड़ उन्हें सोने के नज़र आने लगे। फिर आप ने एक आवाज़ सुनी के ऐ अहमद! ये शख़्स हमारा ऐसा मक़्बूल बन्दा है के अगर चाहे तो हम उसकी ख़ातिर ज़मीन आसमान को उलट पलट कर दें। (तज़्करत-उल-औलिया, सफ़ा 262)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों की इस क़द्र बुलंद शान होती है

के वो दिल के इसरार भी जान लेते हैं और उनकी ज़बान हिले तो पहाड़ भी सोने के बन जाते हैं और अगर वो चाहें तो अल्लाह तआला ज़मीनो आसमान को भी उलट दे फिर जो उन सबके सरदार व आक़ा हुज़ूर मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं उनकी शान को कौन अंदाज़ा कर सकता है। और उनके चाहने से क्या नहीं हो सकता है?

हिकायत नम्बर(405) इब्ने ख़ज़ीमा का ख़्वाब

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल के विसाल शरीफ के बाद एक बुज़ुर्ग मोहम्मद इब्ने ख़ज़ीमा ने ख़्वाब में देखा के इमाम अहमद बिन हंबल कहीं तशरीफ़ ले जा रहे हैं। पूछा के आप कहाँ जा रहे हैं? तो आपने फ़रमाया के दार-उल-सलाम को जा रहा हूँ। उन्होंने पूछा के खुदा तआला ने आपसे क्या सलूक फ़रमाया। तो आपने फ़रमाया के मुझे बख़्श दिया। और मेरे सर पर ताज रखा और नालैन मुझे पहनाई और खुदा ने मुझ से फ़रमाया के ऐ अहमद! ये सब इनाम तुझ पर इस सबब से है के तूने क़ुरआन को मख़लूक़ ना कहा। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 267)

सबक़:- हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रहमत-उल्लाह अलेह ने अपने इल्मो फज़्ल और अमल की बदौलत अल्लाह की रज़ा हासिल कर ली और अल्लाह की बारगाह से ताज हासिल किया पस जो कोई भी अल्लाह का काम करने लगे खुदा और खुदाई उसकी हो जाती है।

हिकायत नम्बर(406) इमाम-उल-मुस्लिमीन हज़रत इमाम मालिक रज़ी अल्लाहो अन्ह

हज़रत मोहम्मद इब्ने अबी अलसरी असक़लानी ने ख़्वाब में हुज़ूर(स०अ०स०) की ज़ियारत की और हुज़ूर से अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह कुछ इर्शाद फ़रमाईये ताके मैं हुज़ूर की जानिब से इस इर्शाद की तबलीग़ करूं। हुज़ूर(स०अ०अ०) ने इर्शाद फ़रमाया ऐ असक़लानी! मैंने मालिक बिन अनस को एक खज़ाना दे दिया है जिसे वो तुम सब में तक़सीम कर रहा हो। और वो खज़ाना मौता है। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 148)

सबक़:-हज़रतइमाममालिकरज़ीअल्लाहोअन्हइमाम-उल-मुस्लिमीन थे और हुज़ूर(स०अ०स०) के मंज़ूरे नज़र और आपकी किताब मौता इमाम मालिक एक ऐसी मुसतनिद और सही जामअे है के खुद हुज़ूर(स०अ०स०) अपना खज़ाना इर्शाद फ़रमाया है

हिकायत नम्बर(407) एहत्रामे इल्म

हारून अलरशीद एक मर्तबा मदीना मुनव्वरह हाज़िर हुआ। तो उसे मालूम हुआ के हज़रत इमाम मालिक यहाँ मौता का दर्स देते हैं। हारून अलरशीद ने इमाम मालिक को पैग़ाम भेजा के आप मौता मेरे पास लाकर मुझे यहाँ सुना जायें। हज़रत इमाम मालिक ने जवाब में फ़रमाया के हारून अलरशीद को कह दो के इल्म किसी के पास नहीं जाता। तालिबे इल्म खुद इल्म के पास आता है। हारून अलरशीद ये सुनकर हज़रत इमाम मालिक की ख़िदमत में खुद हाज़िर हुआ। हज़रत इमाम मालिक ने उसे अपने पास मसनद पर बिठा लिया। हारून अलरशीद ने अर्ज़ की के अब आप मौता पढ़िये और मैं सुनता हूँ। हज़रत इमाम ने फ़रमाया के मैंने आज तक खुद पढ़कर किसी को नहीं सुनाया लोग पढ़ते हैं और मैं सुनता हूँ। लिहाज़ा अब आप पढ़ें और मैं सुनता हूँ। हारून अलरशीद ने कहा तो फिर उन लोगों को बाहर निकाल दीजिए। ताके मैं तनहाई में पढ़ूं आपने फ़रमाया के जब ख़्वास के लिए इल्म को अवाम से रोक लिया जाए तो ख़्वास को कुछ नफ़ा नहीं पहुँचता चुनाँचे हारून अलरशीद ने मौता को पढ़ना शुरू किया। पढ़ने लगा तो हज़रत इमाम मालिक ने फ़रमाया। हारून इलम के लिए तवाज़ो की ज़रूरत है। इसलिए इस मसनिद से उतर कर मेरे सामने मुतावाज़ो होकर पढ़ो। चुनाँचे हारून अलरशीद मसनिद से नीचे उतर आए और सामने मुतावाज़ो होकर बैठा और पढ़ने लगा। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 148)

सबक़:- इल्म हासिल करने के लिए इंकिसार और तवाज़ो को इख़्तियार करना चाहिए और ये भी मालूम हुआ के पहले ज़माने क बादशाहों में भी इल्म दीन की बेहद तलब थी और उनके दिलों में हदीस रसूल का बड़ा एहत्राम था।

हिकायत नम्बर(408) क़मीस में बिछू

हज़रत इमाम मालिक रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की हदीस बयान फ़रमा रहे थे के लोगों ने देखा के आपका चेहरा किसी तकलीफ के बाइस ज़र्द हो रहा है। और बड़े बेचैन हो रहे हैं बावजूद उसके आपने हदीस का दर्स तर्क ना फ़रमाया। और बदस्तूर बयान फ़रमाते रहे और जब बयान ख़त्म फ़रमा चुके तो लोगों ने वजह दरयाफ़्त की तो आपने क़मीस उतार दी जिसमें से एक बिछू निकला

जिसने छः दफा हज़रत इमाम को डसा था। हज़रत इमाम ने फ़रमाया के हदीस बयान करते हुए ये बिछू मुझे डस रहा था। मगर मैंने एहत्राम हदीस के पेशे नज़र हदीस का दर्स ना छोड़ा। मेरा क्या है कुछ हो मगर हदीस का अदबो एहत्राम बेहरहाल मुक़द्दम है। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 149)

सबक़:- इमामाने दीन के दिलों में हदीस शरीफ का बड़ा एहत्राम था। आज हमें भी हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की हदीस पाक का अदबो एहत्राम करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(409) विसाल

हज़रत इमाम शाफई रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के मेरी फूफी ने मक्का मोअज़्ज़मा में ख़्वाब देखा के कोई शख़्स कह रहा के ज़माना हाल का सब से बड़ा आलिम विसाल पा गया। इमाम शाफई फ़रमाते हैं के हम ने उसी दिन सुन लिया के हज़रत इमाम मालिक रहमत-उल्लाह अलेह का विसाल हो गया है। *इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलेही राजिऊन* (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 150)

सबक़:- हज़रत इमाम मालिक रज़ी अल्लाहो तआला अन्ह अपने वक़्त के बहुत बड़े आलिम और मरजअे ख़लायक़ थे और उसी इल्मो फज़्ल की बदौलत वो चारों इमामों में से एक हैं।

हिस्सा दोम खत्म हुआ